डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र

संपादक
डा० वृन्दावनदास

साहित्य प्रकाशन दिल्ली-110006

संस्करण 1975

मूल्य 38 रुपया मात्र

प्रकाशक साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली

मुद्रक ब्रज का फाइन आर्ट प्रिन्टर्स, मथुरा

Dr VASUDEO SHARAN AGGARWAL KE PATRA

Edited by Babu Vrindawandass - Price Rs 38-00

शुभाशंसा

(कविवर श्री अमृतलाल चतुर्वेदी)

जामें भेद न ठुर सुहाती ।
प्रिय बनारसीदास सही है लिखि लिखि पाती ध्याती ॥
नीतम नाय नवीन योजना लिखति न कलम पराती ।
सुन्दर स्वच्छ लिखावट इनकी पढ़ि छाती उमगाती ॥

हिन्दी औ अंगरेजी भाषा स्याही हू द्व भाँती ।
दस पचासक प्रति महीना में यह बीमारी खाती ॥
चित्र खेंचियो दूजी व्याधा जेऊ सब खराती ।
जब देखो तब लिपटत रहत हैं इनकें ना दिन राती ॥

जानें कसें यह सब इनकों सहज भाव पुसियाती ।
नव लेखक नवीन कवियन की सदां बढ़ावत छाती ॥
एक गधा के बोझ डाक इन नित प्रति आती जाती ।
इनकें पत्रन कौ संग्रह लखि तबियत खुश है जाती ॥

देसभक्त, नेता, कवि, कोविद, लेखक, ऊँचे पाँती ।
सबके पत्र भरे ट्रंकन में सुरुचि सुरक्षित भाँती ॥
अमृत इनके जीवन भर की जई कमाई थाती ।
विन्द्रावन जू पात्र बधाई छाप्यो संग्रह पाती ॥



श्रीयुत पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी दीर्घजीवी हों।

[श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी, गताश्रमटीला मथुरा]

कलाकार पत्रकार साहित्यिक सत्रकार,
सदाचार सद्विचार पालक महान हैं।
गांधीजी रवीन्द्र अरविन्द के उपासक हैं
मित्र एंड्रूज के, स्वयं चरित्रवान हैं॥
गुणी गतिशील गुण ग्राहक निवाहक हैं
पीड़ितों के परम सहायक प्रधान हैं।
विश्व बंधुत्व भाव प्रेरक बनारसी जी
विप्र चतुर्वेदियों के गौरव के गान हैं॥

दोहा— हिन्दी भाषा का किया, तुमने अधिक विकास।
जन-जन के हित चिर जियो ! श्री बनारसीदास॥

स्वस्थ रहो सच्ची कहो, गहो न्याय की राह।
बहा न समय प्रवाह में रखिये उर उत्साह॥

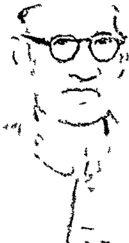
शिक्षाविद शिक्षा प्रवर, सम्पादक शिर मौर।
ग्रन्थकारिता में नहीं तुमसा कोई और॥

जन-सेवक तुमको सदा, है दुखियों से प्यार।
किया सतत श्रीमान ने, दीनों का उपकार॥

विविध कला साहित्य में, हो तुम निष्ठावान।
सत्य अहिंसा का तुम्हें प्रिय सिद्धान्त महान॥

मिला केन्द्र से आपको, राजकीय सनमान।
जनपद के साहित्य का, किया अधिक उत्थान॥

सदा सुखद जीवन रहे जन-सेवा से प्यार।
'भगवन्!' मन वच कर्म से, करो लोक उपकार॥





डा० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा बाबू वृन्दावनदास

अनुक्रमणिका



पुस्तक परिचय

पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व अनायास ही प्रतिबिम्बित हो जाता है—खासतौर से उन चिट्ठियों में जो कभी छपने के ख्याल से न लिखी गई हों बल्कि सर्वथा स्वाभाविक ढङ्ग पर ही जिनमें हृदय के भाव प्रकट कर दिये गये हों।

बकौल डाक्टर जानसन किसी लेखक की आत्मा को नग्न रूप में आप उसके पत्रों में ही देख सकते हैं।

चतुर्वेदी जी को पत्र लिखने का व्यसन रहा है और शायद कोई ऐसा दिन जाता हो जब उन्होंने चार पत्र न लिखे हों और यह क्रम पचास पचपन वर्ष से निरन्तर चलता रहा है।

आज भी ४० ४५ रु० महीने के इसी व्यसन पर खर्च कर देते रहे हैं। पर यह शौक घाटे का नहीं रहा। परिणाम स्वरूप उनके संग्रहालय में सहस्रों उपयोगी पत्र इकट्ठे हो गये हैं सौभाग्य से जिनका मुख्य भाग दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार (National archives) जनपथ नई दिल्ली में सुरक्षित हो गया है।

पर स्वयं चतुर्वेदी जी के सहस्रों ही पत्र यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। उनमें से कुछ का ही संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। चतुर्वेदी जी की अपनी ब्रज भूमि के प्रति अनन्य भक्ति है। उसके पशु, पक्षी वृक्ष वन, उपवन, नदी नद, सरोवर मानव व्यक्ति में और उनके जनपद प्रेम की एक मनोहर झांकी पाठकों को इस पत्र-संग्रह में मिल जायगी।

—प्रकाशक

प्राक्कथन

एक अंग्रेज लेखक का कथन है कि वे ही पत्र वास्तव मे सुरक्षित रहने योग्य हैं जो कभी न लिखे जाने चाहिये थे और जिन्हे तुरत नष्ट कर दिया जाना चाहिये। ए जी गाडनर ने अपने एक निबन्ध म पत्र-लेखन कला की सफलता का रहस्य बताते हुए कहा था कि वह घरेलूपन से भरी छोटी छोटी बातो म ही छिपा हुआ है। डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रो की उत्कृष्टता का रहस्य उनके पत्रो की सहज स्वाभाविकता मे निहित है।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी पत्र लेखन कला के आचार्य हैं। अनेक विद्वान् मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर चुके हैं कि चतुर्वेदी जी पत्र लिखन म अग्रगण्य एव अद्वितीय हैं। चतुर्वेदी जी के महान व्यक्तित्व की झलक उनके पत्रा म स्पष्ट दिखाई देती है वास्तव म चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुभ्र विचारा के दपण हैं। चतुर्वेदी जी ने अपने पत्रो की सततधारा से साहित्योद्यान का अविरल सिंचन किया है।

चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुद्ध मनोभावो की सात्विकता के प्रतिबिंब हैं। समाज मे शुभ सस्कारो और सद्वृत्तियो की स्थापना एव विकास के लिए चतुर्वेदी जी के पत्र सहायक हो सकते हैं। साहित्यिक महत्व तो इन पत्रा का है ही।

चतुर्वेदी जी न अपना सात्विक जीवन बडे उन्मुक्त भाव से बिताया है। उनके मनमौजीपन की प्रकृति ने हास्य व्यग को खूब अपनाया है। पाठका को इन पत्रो मे मनोरजन की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध होगी।

चतुर्वेदी जी के पत्रो की पक्ति-पक्ति मे उनकी उत्कट देशभक्ति उद्भासित होती है। विदेशो म की गई चतुर्वेदी जी की प्रवासी सेवा से प्रभावित होकर एक बार राइट आनरेबिल श्रीनिवास जी शास्त्री जी ने जो स्वय एक विश्वविख्यात महान पत्र लेखक थे चतुर्वेदी जी का लिखा था, जीवन म आप सदृश देशभक्त मुझे कोई विरला ही मिला होगा, यह बात बावन तोल पाव रत्ती सही है, इसे मैं आपकी खुशामद करन के लिये नही लिख रहा हूँ।"

एक ग्रन्थ का मुद्रण छोटे पैमाने पर एक भवन के निर्माण के समान है। जिस प्रकार एक भवन के निर्माण होने पर ही उसका स्वरूप दिखाई देता उसी प्रकार एक ग्रन्थ के छप चुकने पर ही उसके विषय म पाठका को ज्ञातव्य

जानकारी भी पा सकता है। स्थिति के इस सन्दर्भ में पाठकों के लिए लिखा गया प्राक्कथन वास्तव में पुस्तक का मुद्रणापरान्त कथन है।

इस पुस्तक में हमने १५० पत्र तो वे ही लिए हैं जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमको समय-समय पर भेजने की कृपा की है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ७१ उन पत्रों को स्थान प्राप्त हुआ है जो चतुर्वेदी जी ने अन्य साहित्यिक बन्धुओं को भेजे हैं। चतुर्वेदी जी के मित्रों में अनेक एसे सौभाग्य शाली हैं जिनको उनके जीवन में चतुर्वेदी जी से इनसे भी उत्तम दादगुन पत्र प्राप्त हुए हैं। यदि इन बन्धुओं में से किसी का पत्राध सग्रह और भी प्रका शित हो तो हिन्दी के लिए बड़ा लाभ होगी। मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापना की दिशा में भी चतुर्वेदी जी के पत्रों की उपयोगिता असंदिग्ध है।

पत्र सग्रह की पुस्तकों में हिन्दी और हिन्दीतर साहित्य की पत्र विधाओं पर विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। हमने उन्हीं बातों की पुनरावृत्ति कर टिप्पणी को उचित न समझा और अपनी २२ पृष्ठीय भूमिका में चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व और उनके पत्र साहित्य की सुविधा पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

जैसा कि भूमिका में लिखा है पहिले हमारा विचार पुस्तक में केवल पत्रों को देने का था जो हमें प्राप्त हुए हैं परन्तु वस्मत्र स्वयाधा भवति स्वतानी (जो अकेला खाता है पाप खाता है) के न्यायानुसार हमने कुछ पृष्ठ अन्य साहित्यिक बन्धुओं को प्राप्त पत्रों को भी दिये हैं। जैसा कि देखने से ज्ञात होगा इन बन्धुओं में हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् सम्मिलित हैं।

इस संक्षिप्त प्राक्कथन को हम आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के इस छन्द के साथ समाप्त करते हैं—

अति दुरूह विस्तृत जीवन जो ग्रन्थों में है नहीं समाता।
वही किसी के एक पत्र में, ज्यों का त्यों पूरा बँध जाता॥

आशा है प्रस्तुत पत्र-सग्रह का हिन्दी जगत का स्नेह मिलेगा।

मथुरा
दि० १५-५-७१

—वृन्दावनदास



बाबू वृन्दावनदास
सम्पादक

भूमिका

आजकल कुण्ठाओं का युग है। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक सभी क्षेत्रों में कुण्ठाएँ वर्तमान हैं। समाज ही कुण्ठाग्रस्त है। चारित्रिक ह्रास युद्धोत्तर समस्याओं में सबसे बडी समस्या है। हम नैतिक अधःपतन और क्षुद्र स्वार्थपरता के गह्वर गर्त में गिर चुके हैं। पारस्परिक सौहार्द की अत्यन्त कमी है। देश तथा जाति के प्रति प्रेम का अभाव है। राष्ट्र, देश, समाज की चाहे जितनी हानि हो जाय, हमारा पडोसी, भाई मित्र भले ही नष्ट हो जाय पर हमारे स्वार्थ की सिद्धि होनी चाहिये। जिस समाज ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर इतनी प्राणाहुतियाँ दीं उसी में आज स्वार्थपरता का यह नग्न नृत्य देखते हुए दुःख और विस्मय दोनों ही होते हैं।

आज देश-सेवा का नाम लेकर केवल स्वार्थ सिद्धि ही हमारा ध्येय रह गया है। आज हम जनता को अनेक प्रलोभन देकर अनेक वायदे करके विधान सभाओं और लोक सभा में जाते हैं किन्तु वहाँ जाकर किस प्रकार अपना सारा समय और ध्यान केवल पदप्राप्ति और निजी स्वार्थों को साधने में लगा देते हैं यह सब किसी से छिपा नहीं रह गया है। हमारा न कोई सिद्धान्त है और न हमारी कोई आत्मा। हमारी आत्मा की आवाज स्वार्थसिद्धि के लिए केवल दल-बदल करने को ही प्रेरित करती रहती है। आजकल किसी पद के लिए योग्यता का कोई माप दण्ड नहीं है। आजकल केवल दल-बदल और धमकी ही मन्त्रिपद तक के लिए सबसे बडी योग्यता है। हम यह भी नहीं देखते कि एक राज्य में कितने मन्त्री बनने चाहियें सभी मन्त्री पद प्राप्त करने को आतुर हो जाते हैं। परिणाम में मत्स्य-न्याय की सी स्थिति हो जाती है और सतुलन के अभाव में अक्सर विघटन ही होता नजर आता है। इस प्रवृत्ति ने राजनीतिक क्षेत्र में कितनी अव्यवस्था और अस्थिरता उत्पन्न कर दी है यह किसी से छिपा नहीं है।

क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए सिद्धान्तविहीन दौड के परिणाम स्वरूप ही देश में अनेक दलों का विभाजन हो गया है। एक कांग्रेस की दो कांग्रेस, एक समाजवादी दल के दो समाजवादी दल तथा इसी प्रकार कई अन्य दलों के भी टुकडे हो गये हैं। झूठे नारे देकर जनता को भुलावे में डालते रहने के अतिरिक्त इन दलों के अनेक प्रतिनिधियों ने कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे देश की पीडित मानवता को कोई राहत पहुँचती अथवा देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होता।

साहित्यिक क्षेत्र में पारस्परिक सौहार्द कम ही दृष्टिगोचर होता है। हमारे साहित्यिक बन्धु आत्मकेन्द्रित हो गये हैं। ... छोटे भाइयों को प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति का अभाव है। उदीयमान प्रतिभाओं की चिन्ता किसी को नहीं है। हिन्दी की संस्थाओं की दशा शोचनीय है। वे आर्थिक अभाव से ग्रस्त रहती हैं ... उनसे साहित्यिकों का कल्याण भी सम्भव नहीं हो रहा है। हमारी निष्क्रियता और प्राणहीनता का यही सब से बड़ा कारण है। हमारे श्रीमानी बन्धु साहित्यिक कार्यों पर व्यय करना अपना कर्तव्य नहीं मानते, वे इस पुण्य कार्य में ... इस पर व्यय करना नहीं चाहते। उनकी ... की परिधि में तो ईंट चूने से बनी धर्मशालाएँ और मन्दिर ही आते हैं। साहित्यिक अनुष्ठानों पर उनकी कानी कौड़ी भी खर्च करना दूभर है।

समाज की इस बिगड़ी हुई दशा के सन्दर्भ में चतुर्वेदी जी के पत्र अपना एक विशेष महत्व रखते हैं। चतुर्वेदी जी के पत्र जिन मनोभावों से प्रेरित होकर लिखे गये हैं उनसे मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना होती है। चतुर्वेदी जी की परदुःख कातरता, उनकी हृदय की ..., उनकी परोपकार वृत्ति, उदीयमानों का प्रोत्साहन और प्रश्रय देने का गुण, ... की साहित्यिकों के लिए सद्भावना, इच्छा ... के ... लिए तड़पन, हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए भावनाएँ तथा व्रजभूमि के पुनर्निर्माण के स्वप्न आदि अनेक ऐसे तत्व हैं जिनका प्रभाव उनके पत्रों में मिलती है। चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुभ्र विचारों के दर्पण हैं। इन पत्रों का केवल साहित्यिक महत्व ही नहीं है अपितु इनसे समाज में शुभ संस्कारों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

चतुर्वेदी जी के पत्र सम्पादक के ... के रूप में परखने के साथ-साथ उनके महत्वपूर्ण स्वरूप का अध्ययन करने की भी आवश्यकता है। चतुर्वेदी जी के परहित चिन्ता की प्रवृत्ति प्रेरणादायक है। चतुर्वेदी जी का पत्र साहित्य उनका ... चिन्तन एवं दर्शन प्रस्तुत करता है। नागार्जुन जी ने उनको 'योजना विहारी महास्थविर' की उपाधि दी। चतुर्वेदी जी की योजनाएँ तो भूले बिसरे देश भक्तों अथवा साहित्य सेवियों के जीवन वृत्तों से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करने की थी। उनकी योजनाओं के ... से उदीयमान उपेक्षित अथवा ... हुए लोग आये जिन्होंने अपनी साधनाओं और प्रयोगों में जीवन का ... दिया और प्रत्युपकार स्वरूप कभी कोई इनाम न चाहा।

चतुर्वेदी जी की अपनी लेखनी से अथवा उनकी प्रेरणा से जिस साहित्य का सृजन हुआ उसमें हिन्दी साहित्य में तपःपूत साधना, बलिदान, आत्मत्याग,

देशभक्ति, साहित्य सेवा आदि पर गौरवमय पृष्ठ ही सम्मिलित हो गये हैं। बहुत लोगों को इस बात का आभास भी नहीं कि चतुर्वेदी जी के अथक प्रयासों से ऐसा साहित्य निर्मित हो गया है जिसने न केवल हिन्दी की ही वृद्धि की है अपितु अनेक मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी कर दी है और देश के वर्तमान और भावी साहित्यकारों को एक दिशाबोध प्रदान किया है।

योजनाएँ बनाकर उनको कार्यान्वित करते हुए आगे बढ़ने की क्षमता कुछ प्रखर मस्तिष्क वाले व्यक्तियों में होती है। संसार में सदैव कुछ ऐसे व्यक्ति होते आये हैं जिन्होंने अपने प्रखर मस्तिष्क की विलक्षण सामर्थ्य से जीवन में बड़े-बड़े काम किये हैं। ईश्वर प्रदत्त इस गुण के बल पर अपने जीवन में कोई व्यक्ति बड़ा उद्योगपति बन जाता है तो कोई महान साहित्यिक कोई महान नेता अथवा कोई महान् सत्ताधीश। परन्तु चतुर्वेदी जी तो योजनाएँ बना बनाकर प्रवासियों शहीदों, उपेक्षितों अथवा छुटभइयों को ही संसार के सम्मुख लाये हैं उनके इस ध्यानाकर्षण प्रयास से उनके इन प्रियभाजनों का कितना कल्याण हुआ है वह वर्णनातीत है।

चतुर्वेदी जी की इन योजनाओं के प्रति श्रद्धावनत होकर एक बार बाबू शिवपूजन सहाय ने उन्हें लिखा था, "जान पड़ता है आपका मस्तिष्क असंख्य योजनाओं का भाण्डार है और आपका हृदय उनको कार्यान्वित करने के लिए व्यग्र है। अपनी भाषा और साहित्य की सच्ची उन्नति के लिए इसी तरह दस बीस के हृदय में भी लगन और व्यग्रता होती तो कितना बड़ा काम होता। मगर मैं देखता हूँ कि आजकल लोग साहित्य और कला की परिभाषा तथा व्याख्या एवं विश्लेषण करने में ही व्यस्त हैं ठोस काम करने की प्रवृत्ति बहुत ही कम दिखाई देती है। मैं आपके कार्य क्रम को श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखता हूँ। हिन्दी का भविष्य मंगलमय है क्योंकि आप जैसा अनन्य सेवक उसे मिल गया। परमात्मा आपको दीर्घायु करे कि हिन्दी का उपकार हो, यही कामना है।" चतुर्वेदी जी की योजनाओं द्वारा हिन्दी की किस प्रकार ठोस सेवा होती है इसका वर्णन जिन मधुर शब्दों में बाबू शिवपूजनसहाय ने किया है उससे अधिक कुछ कहने की हमारे भीतर सामर्थ्य नहीं है।

प्रेरक साधक—

जब चतुर्वेदी जी के प्रशंसकों, मित्रों और साहित्यिक बन्धुओं ने उनके सम्मान में उनको एक ग्रन्थ समर्पण करने का निश्चय किया तब बन्धुवर यशपाल जैन ने हमसे लिखकर पूछा कि ग्रन्थ का क्या नाम रखा जाय। हमने सीधे

जाय और दूसरे महाविद्यालय की पत्रिका का विशेषांक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर निकले। यद्यपि यह सुझाव बहुत अच्छा है रघुवर बालकृष्ण जी गुप्त तथा हम इस विकल्प पर अभी सहमत नहीं हो रहे हैं, हम लोगों को आशा है कि देर-सबेर ग्रंथ का प्रकाशन ही सम्भव हो सकेगा।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में अनेक ऐसी योजनाएँ विद्यमान हैं जिनमें से अनेक का कार्यान्वयन तो वे अपने जीवन में ही देख चुके हैं। ऐसी अन्य भी बहुत सी हैं जिनको यदि क्रियान्वित किया जाय तो हिन्दी के हित की बात होगी। चतुर्वेदी जी का मस्तिष्क योजनाओं की उर्वराभूमि है। चतुर्वेदी जी ने सख्यातीत मौलिक विचार दिये हैं। परन्तु ये विचार उन्हीं लोगों के पास तो हैं जिनके पास उनके पत्र सुरक्षित हैं। हम चाहते हैं कि वे विचार जनता की सम्पत्ति बन और उन पर काम हो। कोई तो उत्साही कर्मठ व्यक्ति कभी मैदान में आवेंगे ही जो उन विचारों के कार्यान्वयन की दिशा में अपना योगदान देंगे।

स्वयं चतुर्वेदी जी ने अनेक विद्वानों के पत्र छपाये हैं। उन्होंने स्वर्गीय प० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों को पुस्तक के रूप में तथा स्वर्गीय डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों को सम्मेलन पत्रिका के दो अङ्कों में प्रकाशित कराया है। बाबू शिवपूजनसहाय के लगभग ३० पत्र भी चतुर्वेदी जी ने 'व पत्र द न्नि' के शीर्षक से छपाये हैं। आज ही चतुर्वेदी जी का एक लेख सम्मेलन पत्रिका के नवीनतम अङ्क में देखा जिसमें स्वर्गीय प० माखनलाल जी चतुर्वेदी के ३६ पत्र सकलित हैं। इनके अतिरिक्त चतुर्वेदी जी (१) सय्यद अमीर मीर (२) पीर मुहम्मद यूनिस (३) मुशी अजमेरी जी (४) रामनरेश त्रिपाठी (५) नवीन जी आदि के पत्रों को मुद्रित करा चुके हैं।

पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता

चतुर्वेदी जी ने मुझको लिखा कि उनके पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन का समय अभी नहीं आया है। परन्तु मेरी भावना यह है कि चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य तो एक महोदधि के समान है (चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में ६० ७० *हजार पत्र तो लिखे ही होंगे*) उनके सब पत्रों को एक दम एक ही सग्रह में छापा जाना तो एक असम्भव कार्य है। चतुर्वेदी जी के पत्रों पर तो पद ग्र थ निकल सकते हैं। ऐसी दशा में इस साहित्य पर भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा अनेक सग्रहों के प्रकाशन की आवश्यकता है। स्थिति में इस सदर्भ में एकाध सग्रह यदि अभी प्रकाशित हो जाय तो कोई हानि नहीं अपितु जैसा कि हमारे कुछ वरिष्ठ मित्रों का मत है अग्रगामी यह सग्रह अन्य सग्राहकों का एक

उदाहरण प्रस्तुत करेगा। आवश्यकता तो साहित्यिक बन्धुओं में वांछित आकर्षण उत्पन्न करने की है और इसकी पूर्ति इस संग्रह से होगी ऐसी आशा है।

ऐसी बात तो नहीं है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों का प्रकाशन अबतक हुआ ही न हो। स्वयं प्रेरक साधक में उनके लगभग १५० पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों के प्रकाशन के सम्बन्ध में मुझे जानकारी उस समय ही हो पाई जब कि ग्रन्थ मेरे हाथ में आ गया। उससे पूर्व मुझे पता ही न था कि ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के कुछ पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं।

यद्यपि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ की योजना में पहल हमारी ही ओर से हुई थी और बन्धुवर यशपाल जी जिस समय उस समय आये जब कि हम इस प्रस्ताव को लेकर उनके पास पहुँचे थे तथापि जब एक बार काम हाथ में ले लिया गया और ग्रन्थ निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया तब यह बन्धुवर यशपाल जी की कार्यकुशलता और प्रबन्ध पटुता को ही श्रेय है कि उन्होंने हमारे ऊपर तो केवल ब्रजभूमि खण्ड का भार डाल रखा और शेष कार्य की व्यवस्था स्वयं ही की अथवा अन्य साहित्यिक बन्धुओं से कराई। ब्रजभूमि खण्ड के अतिरिक्त अन्य खण्डों की लघुता के रूप में जो सामग्री हमारे पास आई हम तो केवल उसे उनके पास भेजते रहे। ब्रजभूमि खण्ड का सारा काम बहैसियत सम्पादक हमारे ही द्वारा हुआ था। ऐसी दशा में अभिनन्दन ग्रन्थ में पत्रों को भी प्रकाशन हो रहा है यह हम पता भी न था अन्यथा हम भी अपने पास आये चतुर्वेदी जी के महत्वपूर्ण पत्रों का समावेश करा देते। प्रसिद्ध साहित्य ममज्ञ डा० रामविलास शर्मा का तो अभिमत यह था कि यदि अभिनन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के पत्र ही अधिकांश रूप में रहते तो ग्रन्थ अद्वितीय बनता।

अभिनन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के जो भी पत्र प्रकाशित हुए हैं उनका विषय उन पत्रों में कुछ भिन्न ही है जिनको कि पाने का सौभाग्य हम प्राप्त हुआ है। हमारे लिखे पत्रों में चतुर्वेदी जी ने अन्य विषयों के अतिरिक्त ब्रजमण्डल सम्बन्धी समस्याओं और इसके सर्वांगीण विकास पर अधिक प्रकाश डाला है। पौष्य ग्रंथि का शल्य क्रिया के बाद उन्होंने अपना यह संकल्प लगभग घोषित ही कर दिया था कि शेष जीवन में वे ब्रजभूमि की सेवा में ही अपना चिन्तन व मनन अर्पित करेंगे।

चतुर्वेदी जी के पत्रों के विषय में किसी किसी विद्वान् का मत है कि उन्होंने लाख सवा लाख से भी ऊपर पत्र लिखे होंगे। श्री शिवनारायण जी श्रीवास्तव का मत है कि चतुर्वेदी जी ५५ वर्ष से पत्र लिखते रहे हैं तथा महीने

में २५ दिन वे पत्र-लेखन पर व्यय करते हैं इस हिसाब से उन्होंने जीवन में लगभग सवा दो लाख पत्र लिखे होंगे। साधारणतया लोगों का ख्याल है कि उनके पत्रों की संख्या ६० ७० हजार तक अवश्य पहुँचेगी। बहरहाल पत्रों की संख्या बहुत बडी है। ऐसे भी अनेक व्यक्ति है जिनको चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में तीन-तीन सौ चार चार सौ पत्र लिखे हैं। हम भी उन सौभाग्य शालियों में एक हैं। भाई विद्याशंकर जी ने एक स्थान पर लिखा है कि उनके पिता जी (स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा) ने ४५ वर्ष की अवधि में चतुर्वेदी जी को लगभग ३०० पत्र लिखे होंगे परन्तु चतुर्वेदी जी ने उनको इससे ड्योढ़े तो लिखे ही होंगे।

हमारी धारणा है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन की प्रक्रिया चलती ही रहेगी। उनके पत्र साहित्य पर अनेक ग्रन्थों का निर्माण हो सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ से यदि अन्य बन्धुओं को भी एतदर्थ प्रेरणा मिली तो हम अपने प्रयास को धन्य समझेंगे। हिन्दी में पत्र-साहित्य का अभाव हृदय को खटकने वाली चीज है। चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में जितने पत्र लिखे हैं उतने शायद ही अन्य किसी साहित्यिक ने लिखे हों। ऐसी दशा में चतुर्वेदी जी के पत्रों के कई संग्रह प्रकाशित कर क्यों न इस अभाव की पूर्ति की दिशा में एक ठोस कदम उठाया जाय।

चतुर्वेदी जी परदुःख कातरता, सौहार्द और सदाशयता की प्रतिमूर्ति हैं। उनकी लेखनी से निकले हुए उनके उच्चभाव जन साधारण में अधिकाधिक प्रचलित हों और शुभ संस्कारों का निर्माण हो इन्हीं कारणों से उनके पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता है।

आज परोपकार और त्याग की भावना का अभाव है, आज तो क्षुद्र स्वार्थपरता का नंगा नाच है, आज स्वार्थ की पूर्ति के लिए हम कितने निम्न स्तर पर उतर आते हैं कि देश और जाति का हित किसमें है इसकी हम कतई परवाह ही नहीं है। जिन शुद्ध विचारों से प्रेरित होकर चतुर्वेदी जी ने अपने मित्रों को अगणित पत्र लिखे उनके प्रचार प्रसार की आज महती आवश्यकता है। चतुर्वेदी जी ने अपने हित की कामना से तो कभी-कोई काम किया ही नहीं यहाँ तक कि परोपकार की धुन में लगे हुए चतुर्वेदी जी ने अपनी लिखी कई पुस्तकों को भी अधूरी छोड रक्खा है। लोग यह तो जानें कि विश्व में ऐसे प्राणी हैं जो अनेक कष्ट सहकर भी अपने स्वार्थ की कभी कोई बात न सोचकर परहितचिन्तन में ही रत रहते हैं। हमारी तो यही

जाएगा कि चतुर्वेदी जी के पत्रों का प्रकाशन आज के सन्दर्भ में एक वांछनीय ही नहीं आवश्यकीय कार्य है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में प्रतिबिम्बित उनकी विचारधारा साहित्यिकों के लिए आदर्श है, उनका मनन अवगाहन करने योग्य है। आजकल कितने साहित्यकार ऐसे हैं जो निःस्वार्थ भाव से बिना किसी आकांक्षा के पत्र तो क्या एक शब्द भी लिखने को तैयार हैं? और फिर चतुर्वेदी जी ने तो सहस्रों पत्र लिखे हैं।

अभिनन्दन ग्रंथ

चतुर्वेदी जी अपने अभिनन्दन को अत्याचार समझते थे। उन्होंने अनेक पत्रों में लिखा कि इसमें किसी को कष्ट [illegible]। उन्होंने इस सम्बन्ध में कुछ नियमावलि बनाने का सन्देश भेजा थी। उदाहरण – उन सभी सज्जनों को जिन्होंने इस ग्रंथ के निमित्त आर्थिक सहायता दी उनको वचन दिया था निःस्वार्थ पत्र लिखें और उस ग्रंथ को पुस्तकालय में सम्मिलित करने से मना किया। परन्तु चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की महानता के प्रति उनके सभी मित्र और प्रशंसक साहित्यकारों में चतुर्वेदी जी के प्रति इतनी श्रद्धा आदर था। चतुर्वेदी जी के इस कथन पर किसी ने ध्यान न दिया और अभिनन्दन ग्रंथ सम्बन्धी योजना पूर्णरूप से सम्पन्न हो गई किसी प्रकार का कोई विघ्न अथवा व्यवधान उपस्थित न हुआ।

कुछ लोग चतुर्वेदी जी पर आत्मविज्ञापन प्रिय होने का आरोप लगाते हैं। अभिनन्दन ग्रंथ सम्बन्धी उपर्युक्त घटना के परिप्रेक्ष्य में यह आरोप कितना दूर तक सत्य है इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस युग में जो कुछ जनजागृति एवं संस्कृति के लिए सक्रिय थे चतुर्वेदी जी उन्हीं के प्रबल समर्थक थे। अपने ऊपर लिखे गए परिचित और कवित्त सम्बन्धी लेखों को वे अब भी [illegible] हैं।

अपने अभिनन्दन ग्रंथ के बदले में वे कम से कम व्यय करने के पक्ष में थे। बहुत हास्य के बदले पर उन्होंने अपना विरोध प्रकट किया था उनसे कुछ अधिक पड़ता। वे इस प्रकार के समारोहों पर कम से कम खर्च करने के पक्षपाती हैं।

इस बात को मानते हुए कि वर्तमान भाषा में अच्छी गुण भाषा का विकसित करना कठिन कार्य है उन्होंने आप विज्ञापन से सर्वथा दूर रहकर अपनी गुण चिकित्सा हो करना बाद आभार आप नहीं इन्होंने भी

चन्द्रगुप्त और यशपाल जी के आग्रह पर आत्म चरित लिखना स्वीकार कर लिया। यह आत्म-चरित उस अभिनन्दन ग्रन्थ का एक विशिष्ट अंग है।

कविरत्न सत्यनारायण

सत्यनारायण कविरत्न के प्रति चतुर्वेदी जी का विशेष लगाव रहा है। कविरत्न ब्रजकोकिल के नाम से विख्यात थे तथा अपने समय के ब्रजभाषा के सर्वोत्कृष्ट कवि थे। उन्होंने बडी सरस एव हृदयग्राही कविताओं की रचना की। चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी की जीवनी के रूप में एक अमूल्य साहित्यिक कृति हिन्दी ससार को भेंट की है। चतुर्वेदी जी की लेखनी से यह कृति बडी ही सुन्दर बन पडी है। चतुर्वेदी जी रेखा चित्र संस्मरण और जीवनी लेखन में अद्वितीय हैं अत यह स्वाभाविक ही है कि कविरत्न की जीवनी साहित्येतिहास की एक अनुपम निधि है। सत्यनारायण के ग्राम धाधूपुर में उनकी स्मृतिरक्षार्थ उनके घर का जीर्णोद्धार हो जाय और उस भूमि का सत्यनारायण जी के स्मारक के रूप में विकास हो यह चतुर्वेदी जी की हार्दिक इच्छा है। उन्होंने सत्र रूप से अपने उद्गार अनेक पत्रों में व्यक्त किये हैं। देखिये, उनकी यह अभिलाषा कब पूर्ण होती है?

चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी के जीवन सबधी महत्वपूर्ण सामग्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन को सुरक्षित रखने के हेतु भेंट कर दी थी। वह सामग्री वहां से लुप्त हो गई। चतुर्वेदी जी को इससे मार्मिक कष्ट हुआ और उन्होंने अपनी यह वेदना अनेक पत्रों में व्यक्त की है।

चतुर्वेदी जी के ही अथक प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राङ्गण में एक विशाल भवन का निर्माण हुआ था जिसका नाम सत्यनारायण कुटीर रक्खा गया। सत्यनारायण जी की हिन्दी-सेवा के प्रति इससे अच्छी श्रद्धाजलि क्या हो सकती थी कि उनकी स्मृति में एक भव्य भवन सम्मेलन के कार्यालय से सटा कर ही बना दिया जाय, सम्मेलन अनिवार्यत हिन्दी की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है।

चतुर्वेदी जी ने कविरत्न सत्यनारायण की स्मृति रक्षार्थ तीन काम और सोचे (१) कविरत्न की कविताओं का संग्रह (२) भारती भवन फीरोजाबाद में उनके चित्र का उद्घाटन (३) उनके समस्त ग्रन्थों का एक साथ प्रकाशन। उनके सोचे हुए यह काम किसी हद तक पूरे भी हुए।

शहीदों तथा क्रान्तिकारियों की सेवा

शहीदों का श्राद्ध चतुर्वेदी जी का अत्यन्त प्रिय व्यसन है। अनेक शहीदों के परिवारजन चतुर्वेदी जी के द्वारा लाभान्वित हुए हैं। यह तो हाल की ही घटना है कि चतुर्वेदी जी के आग्रह पर उत्तरप्रदेश सरकार के तत्कालीन वित्तमन्त्री श्री लक्ष्मीरमण आचार्य ने शहीद अशफाक उल्ला के भतीजे को ५०) मासिक की पेंशन दिला दी थी।

चतुर्वेदी जी क्रान्तिकारियों को सहायता मिले इस बात के तो पक्षपाती हैं परन्तु स्वाभिमान के विपरीत अपमानजनक तरीके से सहायता प्राप्त करने के सर्वथा विरोधी हैं। स्वाभिमान की तिलांजलि देकर क्रान्तिकारी कातर होकर सरकार के आगे भीख माँगें यह उन्हें स्वीकार नहीं है। वे उस प्रणाली को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जिस माध्यम से क्रान्तिकारियों को अपने जीवन निर्वाह के निमित्त सहायता लेने के हेतु सरकार को [illegible] भेजना पड़ता है। इन्होंने अपने पत्रों में उस प्रणाली में आवश्यक परिवर्तन करने के हेतु अनेक बार लिखा है।

यह चतुर्वेदी जी के अगणित पत्रों का ही श्रेय है कि वे अनेक क्रान्तिकारियों और उनके सम्बन्धियों को पेंशन आदि के रूप में सरकारी प्रश्रय दिलवाने में समर्थ हुए। इस कार्य में चतुर्वेदी जी को सफलता अपने अनवरत पत्र-व्यवहार के कारण ही प्राप्त हुई। जिन क्रान्तिकारियों अथवा उनके सम्बन्धियों को चतुर्वेदी जी पेंशन दिलवाने में समर्थ हुए उनकी नामावली इस प्रकार है —

१ अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की माताजी को पचास रुपए मासिक की पेंशन दिलवाई और चन्दे द्वारा पच्चीस सौ रुपया भी।

२ शहीद बिस्मिल की बहन को चालीस रुपए मासिक तथा कई सहस्र की सहायता।

३ बाबा [illegible] को पचास रुपए की पेंशन तथा दस हजार की सहायता।

४ कविवर [illegible] को डेढ़ सौ रुपए मासिक की पेंशन तथा कुछ आर्थिक सहायता भी।

५ श्रीमती [illegible]—पचास रुपए मासिक पेंशन।

६ श्री [illegible]—[illegible] रुपए मासिक पेंशन।

७ श्री [illegible]—[illegible] रुपए मासिक पेंशन तथा शाहजहाँपुर स्टेशन पर चाय की दुकान।

८ राजस्थान के एक साम्यवादी कार्यकर्ता को ७५) मासिक पेंशन।

६ काशीराम जी की पेंशन ४०) से ७५ रु० करादी गई।

१० शहीद मवाराम की पत्नी फूलवती की पेंशन ३०) से ४५) कराई

उपयुक्त पेंशनो को चतुर्वेदी जी अपने जीवन की सबसे बडी कमाई मानते हैं। राज्यसभा की अपनी सदस्यता के काल में किये गये कार्यों में चतुर्वेदी जी क्रांतिकारियों की इस सेवा को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं।

पत्रिकाओं के विशेषाङ्क

आगरा तथा बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों की अनेक शिक्षा संस्थाओं के प्रधानाचार्य चतुर्वेदी जी से सम्पर्क बनाए रखते हैं। वे अपनी संस्थाओं की पत्रिकाओं के लिए चतुर्वेदी जी से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं। चतुर्वेदी जी से सदैव उन लोगों को उत्तम परामर्श प्राप्त होता है। चतुर्वेदी जी ने शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से अनेक शहीदों और साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व सम्बन्धी विशेषाङ्क ही प्रकाशित करा दिये। हिन्दी साहित्य को चतुर्वेदी जी का यह अप्रतिम योगदान है। सामान्यतया स्कूलों की पत्रिकाएँ बचकाने ढङ्ग की कहानियों कविताओं और निबन्धों से भरी रहती हैं और छोटे विद्यार्थियों के क्षणिक मनोरंजन के अतिरिक्त उनकी उपयोगिता ही सन्दिग्ध होती है। परन्तु चतुर्वेदी जी ने इस दिशा में एक क्रान्ति ही उपस्थित कर दी है। उन्होंने अनेक क्रांतिकारियों, साहित्यकारों आदि की ऐतिहासिक महत्वपूर्ण जीवनियाँ इन पत्रिकाओं के विशेषाङ्कों के रूप में प्रकाशित करा दी हैं। कई विशेषाङ्कों के सम्पादक स्वयं चतुर्वेदी जी ही रहे हैं। इस महत्वपूर्ण साहित्योद्यान का सिंचन चतुर्वेदी जी की अविरत पत्र धारा द्वारा ही सम्भव हुआ है।

चतुर्वेदी जी अनेक सम्पादकों को विशेष रूप से साप्ताहिक एवं पाक्षिक पत्रों के सम्पादकों को अपने पत्रों के जनपदीय अंक निकालने के लिए प्रेरित करते रहते हैं परिणाम स्वरूप कई महत्वपूर्ण विशेषाङ्क निकले भी हैं। उन्होंने कई पत्रों से बुन्देला लोक संस्कृति अंक निकलवाए हैं। वे बुन्देली लोक संस्कृति को ब्रज संस्कृति का पूरक मानते हैं।

शहीदों पर अब तक जितने ग्रन्थ तथा विशेषाङ्क छप चुके हैं उनका ब्यौरा इस प्रकार है।

शहीद ग्रन्थमाला (आत्माराम एण्ड सन्स) ६ किताबें

विशेषांक नर्मदा— शहीद अंक, आजाद अंक, गणेशशंकर स्मृति अंक

मौलवी अब्दुलहक साहब के ४० पत्र
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के ३० पत्र
नवीन जी के ८ पत्र
प्रेमचन्द जी के २० पत्र
श्रीधर पाठक के जीवन चरित्र की सामग्री
स्व० गुप्त बन्धुओं के रचना पत्र
डा० नरेन्द्र शर्मा के ३०० पत्र
वंशीधर जी के [illegible]०० पत्र
डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के सभी पत्र

स्व० वासुदेव शरण जी, [illegible] जी, माखनलाल जी और मुहम्मद यूनिस, शिवपूजनसहाय जी, [illegible] आदि प्रभृति के पत्र मुद्रित हो चुके हैं। अन्य लेखकों के सहस्रों पत्र हैं। चतुर्वेदी जी के निवास स्थान के ८ कमरे पत्रादि से भरे पड़े हैं। चतुर्वेदी जी के भवन में हिन्दी लेखकों के ६० वर्ष तक की अवधि का हस्तलिखित उस भवन के कमरों में सुरक्षित है।

चतुर्वेदी जी के घर का अधिकांश भाग उस साहित्य एवं सामग्री से भरा पड़ा है जिसे चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन भर की कमाई के रूप में एकत्रित किया है। चतुर्वेदी जी के संग्रहालय का ऐसा चिरस्थायी प्रबन्ध होना चाहिए जिससे भविष्य में राष्ट्र की यह निधि नष्ट न होने पाये तथा इसकी सामान्य जनता के लिए उपयोगिता बनी रहे।

चतुर्वेदी जी ने हाल ही में निश्चय किया है कि उनके पास सुरक्षित महत्त्वपूर्ण पत्रों को राष्ट्रीय संग्रहालय National archives को समर्पित कर दिया जाय। इसके लिए आवश्यक पत्रव्यवहार का क्रम चल रहा है और आशा की जाती है कि वे पत्र शीघ्र ही राष्ट्रीय संग्रहालय को भेंट कर दिये जायेंगे।

चतुर्वेदी जी का व्यापक प्रभाव

वर्षगाँठ पर छोटी पुस्तिका निकाल कर साहित्यकार की स्मृति रक्षा की पद्धति भी हिन्दी में चतुर्वेदी जी ने चलाई। ता० १०/५१ को बाबू शिवपूजन सहाय ने चतुर्वेदी जी को लिखा—

पं० पद्मसिंह जी की जन्म गाँठ पर जो यादगार के तौर पर एक छोटी सी पुस्तिका निकली है, उसकी एक प्रति मुझे भी आपने भेजने की कृपा की है। उसे देखकर मन में हुआ कि हर साल की जयन्ती या निधन तिथि

पर यदि स्वर्गीय साहित्यकार की स्मृति मे ऐसी छोटी पुस्तक माला भी निकला करे तो कुछ दिना बाद सब मिलाकर एक सजिल्द ग्रन्थ तैयार हो जाय। थोडा थोडा काम भी हर साल होता चले तो बहुत सा काम हो सकता है। विशाल ग्रन्थ मे अधिक समय, परिश्रम और द्रव्य लगने की सम्भावना है, परन्तु प्रतिवर्ष पुस्तकमाला का एक गुच्छ तयार करने मे विशेष प्रयास और खर्च नही है। आपने श्रद्धाजलि पुस्तिका निकाल कर माग दशन कर ही दिया। अब आगे बराबर उसका क्रम जारी रखना है। जिस प्रकाशक स आपने वह पुस्तिका छपवाई है उससे आप साहित्यिका के स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करा सकते हैं और प्रतिवर्ष की तिथि पर पुस्तकमाला के क्रमश खण्ड निकलवा सकते हैं। आपका सरोकार और प्रभाव बहुत व्यापक है। आप ही यह कर और करा सकते हैं। अब ऐसे ग्रन्थो अथवा पुस्तकमालाओ के एक दो हजार ग्राहक थोडे ही प्रयास से मिल सकते हैं। इनकी बिक्री का क्षेत्र अब धीरे धीरे उवर होता जा रहा है।"

बाबू शिवपूजन सहाय ने इस पत्र म एक बात बडे मार्के की लिखी और वह यह है आपका सरोकार और प्रभाव बडा व्यापक है आप ही यह कर और करा सकते हैं।" वास्तव मे चतुर्वेदी जी न अपन शील सौजन्य सद्व्यवहार और सपक से एक प्रभाव अर्जित किया है जो बडा व्यापक है और अपन प्रभाव की इस व्यापकता का उन्होने सावजनिक हित मे भरपूर उपयोग किया है। अपन इस व्यापक प्रभाव के कारण ही वे शान्ति निकेतन म हिन्दी भवन, कुण्डेश्वर म गाँधी भवन प्रयाग मे सत्यनारायण कुटीर और दिल्ली म हिन्दी भवन बनवा सके। चतुर्वेदी जी इन महान सस्थाओ के निर्माण का समस्त श्रेय अपन ऊपर नही लेते परन्तु तथ्य यह है कि इनका अस्तित्व चतुर्वेदी जी के अथक प्रयासो के फल स्वरूप ही सम्भव हुआ। ये चारो ही सस्थाएँ निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं। ब्रजसाहित्य मण्डल की स्थापना भी चतुर्वेदी जी के आन्दोलन का शुभ परिणाम थी।

चतुर्वेदी जी ने पत्रो द्वारा अपने प्रभाव को काम मे लाकर एक और महान् काय किया और उसे श्री भगवानसिंह जिलाधीश रायबरेली की जुबानी सुनिये, 'द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद सेना से मुक्त होकर मैं भारतीय प्रशासन सेवा म चला आया। सन् १९५०-५१ के दौरान जब मैं रायबरेली के जिलाधीश पद पर काम कर रहा था तब चतुर्वेदी जी के साथ अनेक वर्षों के बाद फिर स मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। चतुर्वेदी जी के बारे मे एक

बात प्रसिद्ध है और वह यह कि उन्होंने स्वर्गीय साहित्यकारों, कलाकारों, क्रान्तिकारियों और अनेक देशसेवकों के श्राद्धकर्म पर एकाधिपत्य कायम कर रखा है। रायबरेली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के स्मारक के निर्माण के लिए चतुर्वेदी जी बड़े व्यग्र थे। वह द्विवेदी जी के गाँव में एक पंचायत घर भी बनवाना चाहते थे। यह बात बहुत कम लोगों को ज्ञात होगी कि आचार्य द्विवेदी जी अपने गाँव के पंचायत के सरपंच थे और इस हैसियत से उन्होंने जो फैसले लिखे थे वह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व का नया पहलू उनके लिखे इन फैसलों से प्रकट होता है। चतुर्वेदी जी की इच्छा थी कि इन फैसलों को एकत्र करके उस पंचायत घर में रखा जाय। मुझे उन्होंने अनेक बार इस बारे में पत्र लिखे। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि इस साहित्यिक यज्ञ में जो कुछ मुझसे संभव था मैंने अपना योग दिया। इसके परिणाम स्वरूप रायबरेली में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के स्मारक के रूप में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई और उनके गाँव में पंचायत घर का जिसमें द्विवेदी जी के लिखे फैसले सुरक्षित हैं।

अब इन्हीं महाशय की जुबानी एक दूसरी कहानी भी सुनिये। इससे हिन्दी भवन दिल्ली के निर्माण का रहस्योद्घाटन होता है। श्री भगवानसिंह लिखते हैं सन् १९५२ में केन्द्रीय ट्रैक्टर संगठन का अध्यक्ष होकर मैं दिल्ली आ गया था। इन्हीं दिनों चतुर्वेदी जी राज्यसभा के सदस्य होकर दिल्ली में विराजमान थे। दिल्ली आकर उन्हें यह बात खटकी कि राजधानी में कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ साहित्यकारों का स्वागत-सत्कार किया जा सके। इस उद्देश्य से उन्होंने हिन्दी भवन की स्थापना की चर्चा चलायी। इस सम्बन्ध में सबसे पहली बैठक कनाट सर्कस में श्रीमती सत्यवती मलिक के यहाँ हुई जिसमें मुझे भी निमन्त्रित किया था। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी ने चतुर्वेदी जी के इस काम में पूरा सहयोग दिया और उनकी कृपा से हिन्दी भवन की स्थापना का स्वप्न साकार होने लगा। फिर सरकार से थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिंग में हिन्दी भवन के लिए कमरे लेने का सवाल सामने आया। सरकार ने हिन्दी भवन के लिए जमानत माँगी। चतुर्वेदी जी ने इस काम के लिए मुझे ही आगे कर दिया। वह तो अब दिल्ली छोड़कर फिरोजाबाद जा बसे किन्तु हिन्दी भवन के जमानती के रूप में मेरा नाम ऐसा पक्का लिखा गया है कि काटे न कटे।

श्री भगवानसिंह जी जिलाधीश के सुन्दर शब्दों में जानते हैं कि चतुर्वेदी जी किस प्रकार रायबरेली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम

पर पुस्तकालय और द्विवेदी जी के गाँव म पचायतघर बनवाने मे समथ हुए। हिंदी भवन दिल्ली की भीतरी कहानी भी कुछ इससे ज्ञात हो जाती है।

चतुर्वेदी जी की आत्मीयता

प्रस्तुत पत्र सग्रह के अनेक पत्रो म आपको विदित होगा कि चतुर्वेदी जी ने मेरा परिचय अनेक महानुभावो से कराया है। व्रजभारती की प्रति अनेक सज्जनो को भिजवाने मे चतुर्वेदी जी का उद्देश्य केवल उनसे मेरा साहित्यिक परिचय कराना है।

व्रजसाहित्य मण्डल के एक विनम्र कायकर्ता और व्रजभारती के सम्पादक की हैसियत से जो कुछ सेवा मुझसे बन पडा है चतुर्वेदी जी ने मुझे उसका वडा भारी पुरस्कार दे डाला है। उन्होंने मुझे साहित्यिक कमिश्नर की उपाधि से विभूषित किया है जसा कि उनके अनेक पत्रो मे तद्विषयक उल्लेख से विदित हो जाता है। चतुर्वेदी जी के पत्रो मे आप व्रजभूमि की अनेक नवोदित प्रतिभाओ पुरातन साहित्यिको, सामाजिक कायकर्ताओ और हिन्दी सेवियो के नामो की चचा देखेंगे, अनेक सस्थाओ, विद्यालयो, वनो, उपवनो का उल्लेख पाएँगे और उनके लिए क्या करना चाहिये इसके लिए वडे बहुमूल्य सुझाव भी। व्रज की अनेक सस्थाओ के प्रति चतुर्वेदी जी का ममत्व दशनीय है। चतुर्वेदी जी का मत है कि व्रजभूमि म जहा कही कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसका लेखा जोखा रखना चाहिये और उसकी चर्चा होनी चाहिये। चतुर्वेदी जी बाटला इण्टर कालेज जिसके प्रबन्धक श्री बालकृष्ण गुप्त हैं और हालीपुरा के दामोदर इण्टर कालेज जिसके प्रबन्धक श्री शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी हैं से बडे प्रभावित हैं और अपने पत्रो म अक्सर उनकी चचा करते रहते हैं। वे आगरा के सेकसरिया कालेज और रत्नमुनि जन कालेज के भी प्रशसक हैं। आचाय जीवनदत्त शर्मा नरवर के सस्कृत महाविद्यालय के सस्थापक थे। चतुर्वेदी जी ने उनके स्मृतिग्रन्थ प्रकाशित करने का विचार सस्कृत भाषा के विद्वानो के समक्ष रक्खा है। उस दिशा म कुछ सफल प्रयत्न भी हो रहे दिखाई पडते हैं। मेरे माध्यम से उन्होंने स्व० डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के पत्रो का सग्रह भी किसी हद तक करा ही दिया है। चतुर्वेदी जी इटौरा के उद्यान की भी अपने पत्रो म अक्सर चर्चा करते हैं। इस समुन्नत उद्यान के स्वामी बा० प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू हैं)।

चतुर्वेदी जी मेरे निजी सग्रहालय म भी बडी रुचि रखते हैं उन्होंने कई पत्रो म एसे उपयोगी और महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं जिनको यदि कार्यान्वित

कर लिया जाय तो संकलन निश्चय अत्यन्त समृद्ध बन सकता है। चतुर्वेदी जी ने कुछ पत्रों में मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ की भी चर्चा की है। इस विषय में तो मेरा उनसे यही नम्र निवेदन है श्रीमान्! [illegible] धन्यवाद! मैं इस योग्य नहीं।

चतुर्वेदी जी का सम्मान

चतुर्वेदी जी ने आत्मगत अपने गौरव और सद्व्यवहार से अर्जित हिन्दी जगत पर अपना एक पूर्ण अधिकार जमा लिया है। उनसे प्रखर और प्रांजल प्रेम कर सैकड़ों साहित्यिक बन्धुओं ने अपने जीवन को सफल बनाया है। जो मान जीवन में चतुर्वेदी जी से उन्हें हुआ है उसका वर्णन करना कठिन है। चतुर्वेदी जी ने बड़े-बड़े काम तक बड़ी आत्मीयता से सफल किया है। कोई आश्चर्य नहीं कि चतुर्वेदी जी की दीर्घ साहित्य सेवाओं से प्रभावित जन कृतज्ञता ज्ञापन में एक साथ तत्पर हो उठे और चतुर्वेदी जी के अनुपम कार्यों का सर्वत्र समादर होने लगा। संवत् [illegible] में उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित हुआ। ग्रन्थ के सम्मान्य लेखकों ने अपनी श्रद्धा और सम्मान की जो झाँकी प्रस्तुत की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। फिर एक वर्ष के भीतर ही अनेक प्रमुख संस्थाओं ने उन्हें अपनी-अपनी सर्वोच्च उपाधियों से विभूषित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति, उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वारिधि और आगरा विश्वविद्यालय ने डी० लिट० की उपाधि से चतुर्वेदी जी को अलंकृत किया। चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व महान् है वह इन अलंकारों से ही प्रकाशित होता हो ऐसी बात नहीं है। मेरी तो धारणा है कि ये अलंकार ही चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की ज्योति से प्रकाशित होते हैं।

चतुर्वेदी जी की संवेदनशीलता

अभिनन्दन ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़ने के उपरान्त मुझे उस ग्रन्थ में एक अभाव बड़ा खटका। चतुर्वेदी जी के आत्म चरित में प्रातःस्मरणीया उनकी श्रीमती का कहीं भी उल्लेख न था। मैंने यह सोचकर कि चतुर्वेदी जी की महान साधना उस महिमामयी महिला के अद्भुत सहयोग के बिना असम्भव ही होती चतुर्वेदी जी को लिखा कि आत्मचरित में यह कमी मुझे उनका दोष प्रतीत होती है। चतुर्वेदी जी ने मुझे तुरन्त लिखा कि मेरा यह प्रश्न प्रासङ्गिक था तथा निस्सन्देह यह एक खटकने वाली कमी रह गई। उन्होंने मुझे एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी पत्र लिखा जो कि इस ग्रन्थ में वर्तमान है और जिसका इस

संग्रह म सम्मिलित करने की उन्होंने मुझे अनुमति भी द दी है। वास्तव म वे निर्दोष हैं परन्तु सवन्नशील हान के कारण उनका निश्छल व्यक्तित्व दूसरा के दाप भी अपने ऊपर ओटन को तयार रहता है।

व्रजभारती मे प्रकाशित लेख

हमने व्रजभारती के अक ३ सम्वत् २०२४ मे प्रकाशित अपन एक लेख म जिसका शीर्षक था प० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" चतुर्वेदी जी के कुछ पत्रा पर विचार प्रस्तुत करत हुए उनके अनक पत्रा को उद्धृत कर दिया है। पुनरावृत्ति के भय स उन पत्रा को अब हम इस संग्रह मे स्थान नही दे रहे है। हाँ इस पुस्तक म हम परिशिष्ट म उस लेख को ज्या का त्यो मुद्रित कर रहे हैं।

हमारे इस सग्रह म सामान्यतया उन्ही पत्रा की विद्यमानता है जिन्ह चतुर्वेदी जी न हमारे पास भेजन की कृपा की है। कुछ अन्य पत्र भी जिनकी प्रतिलिपिया चतुर्वेदी जी न हमार पास भेज दी हैं इस सग्रह म सम्मिलित कर लिए ह। जसा कि पहले बताया जा चुका है चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन म लगभग एक लाख पत्र लिखे होंगे। अपने वतमान प्रयास म हमारा लक्ष्य व्यापक रूप स अनक स्रोतो से पत्र इकट्ठा करने का न था। चतुर्वेदी जी के सभी पत्रा को जा यत्र तत्र सवत्र बिखरे पडे हैं एकत्रित करना एक कठिन काय है। हा, यदि काई महानुभाव अथवा सस्था इस महान काय का अपने हाथ मे ले ता हम उन्ह अपन सक्रिय सहयोग के प्रति आश्वस्त करत हैं।

व्रजभूमि का पुनर्निर्माण

व्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी का मुख स्वप्न है। उन्होंने हम अनेक पत्र इस सम्बन्ध म लिखे है और उन पत्रा म व्रजभूमि की उन्नति और विकास से सम्बन्धित अनेक सुझाव विद्यमान हैं। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ म इस विषय पर एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'व्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि म।' वस्तुत वह लेख उनके उन पत्रा पर ही आधारित सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जो चतुर्वेदी जी न हमे समय-समय पर लिखे हैं। हमन उस लेख मे उनके तद्विषयक अनक पत्रा का उल्लेख किया है तथा उनमे स प्रचुर उद्धरण भी दिये हैं। हम उस लेख को अक्षरश इस ग्रन्थ के परिशिष्ट व म छाप रहे हैं। उस लेख म चतुर्वेदी जी के जिन पत्रा का उल्लेख हो चुका है उन्ह हम पुनरावृत्ति के भय से इस ग्रन्थ म नही दे रहे हैं।

कर दिया जाय तो संग्रहालय निस्सन्देह अत्यन्त समृद्ध बन सकता है। चतुर्वेदी जी ने कुछ पत्रों में मेरे अभिनन्दन ग्रंथ की भी चर्चा चलाई है। इस विषय में तो मेरा उनसे यही नम्र निवेदन है, 'श्रीमान्! शत शत धन्यवाद! मैं इस योग्य नहीं।''

चतुर्वेदी जी का सम्मान

चतुर्वेदी जी ने आजन्म अपने सौजन्य और सद्व्यवहार से अगणित हृदयों पर अपना स्नेहपूर्ण अधिकार जमा लिया है। उनसे प्रश्रय और प्रोत्साहन प्राप्त कर सैकड़ों साहित्यिक बन्धुओं ने अपने जीवन को सफल बनाया है। जो लोग जीवन में चतुर्वेदी जी से उपकृत हुए हैं उनकी संख्या बहुत बड़ी है। चतुर्वेदी जी ने बड़े दीर्घ काल तक बड़ी आत्मीयता से सर्वत्र स्नेह बिखेरा है। कोई आश्चर्य नहीं कि चतुर्वेदी जी की दीर्घकालीन सेवाओं से उपकृत जगत् कृतज्ञता ज्ञापन में एक साथ सस्वर हो उठे और चतुर्वेदी जी के अनुपम कार्यों की सर्वत्र सराहना होने लगी। सबसे पहले उन्हें अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित हुआ। ग्रंथ के सम्पादकगण व लेखकों ने स्नेह, श्रद्धा और सम्मान की जो त्रिवेणी प्रवाहित की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। फिर एक वर्ष के भीतर ही तीन सम्मान्य संस्थाओं ने उन्हें अपनी-अपनी सर्वोच्च उपाधियों से विभूषित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'साहित्य वाचस्पति', उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'साहित्य वारिधि' और आगरा विश्वविद्यालय ने डी० लिट्० की उपाधि से चतुर्वेदी जी को अलंकृत किया। चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व महान् है वह इन अलंकारों से ही प्रकाशित होता हो ऐसी बात नहीं है। मेरी तो धारणा है कि ये अलंकार ही चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की ज्योति से प्रकाशित होते हैं।

चतुर्वेदी जी की संवेदनशीलता

अभिनन्दन ग्रंथ का आद्योपान्त पढ़ने के उपरान्त मुझे इस श्रेष्ठ ग्रंथ में एक अभाव बहुत खटका। चतुर्वेदी जी के आत्म चरित में प्रातःस्मरणीया उनकी श्रीमती का कहीं भी उल्लेख न था। मैंने यह सोचकर कि चतुर्वेदी जी की महान् साधना इस महिमामयी महिला के सम्पूर्ण सहयोग के बिना असम्भव ही होती चतुर्वेदी जी को लिखा कि आत्मचरित में यह कमी मुझे उनका दोष प्रतीत होती है। चतुर्वेदी जी ने मुझे तुरन्त लिखा कि मेरा यह प्रश्न प्रासंगिक था तथा निस्सन्देह यह एक खटकने वाली कमी रह गई। उन्होंने मुझे एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी पत्र लिखा जो कि इस संग्रह में वर्तमान है और जिसका इस

सग्रह मे सम्मिलित करने की उन्होंने मुझे अनुमति भी दे दी है। वास्तव मे व निर्दोष हैं परन्तु सवेदनशील होने के कारण उनका निश्छल व्यक्तित्व दूसरो के दोष भी अपने ऊपर ओढने को तयार रहता है।

ब्रजभारती मे प्रकाशित लेख

हमने ब्रजभारती के वर्ष ३ सम्वत् २०२४ मे प्रकाशित अपने एक लेख म जिसका शीर्षक था "प० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" चतुर्वेदी जी के कुछ पत्रो पर विचार प्रस्तुत करते हुए उनके अनेक पत्रो को उद्धृत कर दिया है। पुनरावृत्ति के भय से उन पत्रो को अब हम इस सग्रह मे स्थान नहीं दे रहे हैं। हा इस पुस्तक मे हम परिशिष्ट मे उस लेख को ज्यो का त्यो मुद्रित कर रहे हैं।

हमारे इस सग्रह म सामान्यतया उन्ही पत्रों की विद्यमानता है जिन्हे चतुर्वेदी जी न हमारे पास भेजने की कृपा की है। कुछ अन्य पत्र भी जिनकी प्रतिलिपियाँ चतुर्वेदी जी न हमारे पास भेज दी हैं इस सग्रह म सम्मिलित कर दिये ह। जसा कि पहले बताया जा चुका है चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन म लगभग एक लाख पत्र लिखे होगे। अपने वतमान प्रयास मे हमारा लक्ष्य व्यापक रूप स अनेक श्रोतो मे पत्र इकट्ठा करने का न था। चतुर्वेदी जी के सभी पत्रो को जो यत्र तत्र सवत्र बिखरे पडे हैं एकत्रित करना एक कठिन काय है। हाँ, यदि कोई महानुभाव अथवा सस्था इस महान काय को अपने हाथ म ले तो हम उन्हे अपने सक्रिय सहयोग के प्रति आश्वस्त करते हैं।

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी का सुख स्वप्न है। उन्होंने हमे अनेक पत्र इस सम्बन्ध मे लिखे हैं और उन पत्रो मे ब्रजभूमि की उन्नति और विकास से सम्बन्धित अनेक सुझाव विद्यमान हैं। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ म इस विषय पर एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीषक है 'ब्रजभूमि का पुनिर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि मे।' वस्तुत वह लेख उनके उन पत्रो पर ही आधारित सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जो चतुर्वेदी जी न हमे समय-समय पर लिखे हैं। हमने उस लेख म उनके तद्विषयक अनेक पत्रो का उल्लेख किया है तथा उनमे स प्रचुर उद्धरण भी दिये हैं। हम उस लेख को अविकल इस ग्रन्थ के परिशिष्ट ब म छाप रहे हैं। उस लेख म चतुर्वेदी जी के जिन पत्रो का उल्लेख हो चुका है उन्हें हम पुनरावृत्ति के भय से इस ग्रन्थ म नही दे रहे हैं।

मेरी यह पक्की धारणा बनी है कि हमारे वतमान समाज के प्रखर लेखकों ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया होता तो आज हमारे समाज का वातावरण ही कुछ और होता।"[1]

श्री विष्णु प्रभाकर—"(चतुर्वेदी जी के पास) पत्रों का सचमुच अद्भुत संग्रह है। किसी दिन उनका प्रकाशन हो सका तो पत्र साहित्य की निधि प्रमाणित होंगे। (उनसे) पत्र पढ़ते-पढ़ते पत्र लिखने की कला पर भी बहुत बातें हुई। पण्डित पर्मसिंह शर्मा श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री और महात्मा गांधी आदि कुछ एस व्यक्ति हैं जो सचमुच पत्र लिखना जानते हैं। बहुत दिन बाद एक साहित्यकार ने मुझसे कहा था कि पत्र लिखते समय शायद चतुर्वेदी जी भी इस बात को नहीं भूलते।"[2]

श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'—"श्री बनारसीदास चतुर्वेदी न माली हैं न किसान, वह बादल है और (पत्र रूपी मेघों द्वारा) जीवन भर विचार सुझाव और सहयोग के बीज बरसाते रहे हैं।

वह योजना-पुरुष हैं पर कभी योजना पूर्वक नहीं जिये, यह उनके जीवन की अनिष्टता है और यही उनके जीवन की विशिष्टता है। उनका विश्वास है जीवन की उन्मुक्तता और इसके लिए वह जीवन भर पूरी कीमत चुकाते रहे—सुख सुविधाओं की कीमत, अवसरों की कीमत, यह कीमत इतनी अधिक है कि करोड पति का भी दिवाला निकल जाय पर उनके अट्टहासों का खजाना कभी खाली न हुआ और उनकी मस्ती की तिजारी सदा भरी रही, यही उनका व्यक्तित्व है।'[3]

पं० रूपनारायण व्यास—"पत्र व्यवहार में तो चौबे जी बेजोड़ रहे हैं। ढेरों पत्र लिखे और संगृहीत भी किये। चौबे जी ने कई पत्र बड़े सुन्दर और अपनी आलस्य वृत्ति पर लज्जा व्यक्त करने वाले लिखे। चौबेजी की तरह मुझे भी पत्र संग्रह का शौक है। सात आठ हजार पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। चौबे जी के पत्र भी उस पत्र-सागर में कहीं डुबकी लगाये हुए पड़े हैं।"[4]

श्री भगवानसिंह—' चतुर्वेदी जी पत्र-लेखन कला के आचार्य ही कहे जा सकते हैं। जब कभी चतुर्वेदी जी के पत्र आते हैं दफ्तर की मशीनी दुनिया से

---

१ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ४६
२ „ „ पृ० ५०
३ „ „ पृ० ५३
४ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ५७

निकाल कर वे गहन मानवीय उदात्त भावनाओं के सागर में ले जाते हैं।'[1]

श्री सीताराम सेकसरिया— 'चतुर्वेदी जी ने शायद जितने पत्र लिखे हैं, जितने लोगों को लिखे हैं तथा जितने कामों और विषयों के लिए लिखे हैं उतने किसी और ने लिखे हों यह मैं नहीं जानता। उनका पत्र व्यवहार हिन्दी अंग्रेजी में और देश के प्रायः सभी लोगों से होता रहा है। पूज्य गांधी जी और गुरुदेव से लेकर देश विदेश के अनेक लोगों के साथ उनका पत्र व्यवहार रहता रहा। उनके पास इन पत्रों का अभूतपूर्व संग्रह है। यह इतनी अधिक और महत्वपूर्ण सामग्री है कि वह एक इतिहास है जिससे पचास वर्षों की हलचलों का चित्रण का परिचय मिलता। चतुर्वेदी जी की इच्छा रही है कि इसका कोई सांगोपांग उपयोग होता और उसकी सुरक्षा होती। इसका प्रकाश मिलता वह सार्वजनिक उपयोग की चीज बनता। चतुर्वेदी जी की पचास वर्ष की जीवन साधना का प्रसाद और फल है यह सद्भावना और यदि कोई सम्मानित कहा या माना जाय तो यही है चतुर्वेदी जी का स्मारक। पर, इसके अलावा मेरी निगाह में हजारों हृदय मन भी हैं, जो आज जो किसी न किसी रूप में उनके साथ जुड़े हैं।[2]

श्री रामइकबालसिंह राकेश— चतुर्वेदी जी एक उत्तम कुशल लेखक हैं। उनके पत्रों में काल्पनिक उड़ान नहीं बल्कि होती है मनमून की सच्चाई और हृदय में जोड़ देने वाली एक कड़ी। उनके पढ़ने से प्रतीत होता है, जैसे वे सदा चिर दिन के आत्मीय हैं। अपने २/६/५३ के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था— सुरम्य प्रकृति के निकट मैं किसी एक आश्रम की कल्पना कर रहा हूँ जहाँ के मिल द्वार में भारत के भिन्न जातियों के नर नारी और प्रत्येक जनपद के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ता का विवरण (सचित्र) जहाँ सुरक्षित होगा जहाँ कभी शुभ्र थकी आत्माओं की शान्ति विश्राम की व्यवस्था होगी जहाँ उनकी यादगारों की रक्षा करेगा और जहाँ का द्वार प्रत्येक समझदार पथिक के लिए खुला रहेगा और जितनों के मायके के समान वहाँ उनका हार्दिक स्वागत होगा। इस आश्रम भारतवर्ष में और पाकिस्तान में कहा न कभी स्थापित होंगे। प्रारम्भ में वे भले असफल भी हों पर आगे चलकर उनमें अवश्य सफलता मिलेगी। मैंने छोटी सी चीज यहाँ स्थापित की

---

१ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ६१
२ " " पृ० ६२

थी, वह नष्ट हो गई, पर बकौल कविवर बच्चन 'नीड का निर्माण फिर फिर।' अगले अक्टूबर या नवम्बर म मैं ब्रज म किसी नीम के नीचे बठकर अपनी क्षुद्रतम साहित्यिक साधना का पुन आरम्भ करूँगा। यहाँ का उपवन तो अब छोड ही रहा हूँ—पर 'मन चगा तो कठौठी मे गगा'। मुझको बुला रही है ब्रज की करील कुज।'

मेरी राय म यदि सिर्फ उनके ऐसे पत्रा का ही ठीक रूप म सपादन किया जाय, जिन्हें अपनी कलम से उन्होंने दूसरो को लिखा है तो यह उनके साहित्यिक जीवन तथा भावना के अध्ययन की दृष्टि स एक तथ्य पूर्ण वस्तु होगी तथा हिन्दी ससार के लिए एक रोचक और सजीव कृति। हिन्दी ससार म एसे कितने हैं जो अपने जीवन के चिन्तनशील क्षणो म व्यस्त रहते हुए भी दूसरा को स्नेह पूवक सबोधन करते हैं और जो माग से अनभिज्ञ अपन छुट-भइया को ईमानदारी के साथ बतलाते हैं कि उनकी अपनी सफलता क भद तथा साहित्यिक कार्यों के तरीक क्या हैं ?''[1]

श्री धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री— 'चतुर्वेदी जी को पत्र सग्रह का शौक है। अभी कुछ दिन हुए उन्होंने मेरे तीस चालीस पुराने पत्र दिखलाए। उनके पास गाधीजी क रवीन्द्रनाथ ठाकुर क और सी एफ एन्ड्र्यूज के न जाने कितने पत्र सग्रहीत हैं। मैं बहुधा सोचता हूँ चतुर्वेदी जी के साथ एसी आत्मीयता का क्या कारण हो सकता है ? खास कर आजकल की दुनियाँ म यह होता है कि परस्पर आदान प्रदान से घनिष्ट सम्बन्ध बढ़ने पर आत्मीयता हो जाती है। कभी कभी यह आदान प्रदान सच्चाई के आधार पर होता है, अर्थात् जब कभी कोई व्यक्ति हमारे साथ भलाई या उपकार करे तो कृतज्ञता पूवक उसे याद रखते हुए उसके लिए प्रत्युपकार करने की चेष्टा करने की प्रवृत्ति होती है। एसे स्थल पर किया गया आदान-प्रदान भी एक अनुकरणीय बात है, क्योंकि कृतज्ञता सच्चे मानव हृदय का एक विशेष गुण है। हाँ, जहाँ यह आदान प्रदान केवल इसी स्वाथ बुद्धि से होता है कि हम किसी का काम करें और वह हमारा कर और उससे दोनों को ही पारस्परिक लाभ हो वहाँ वह *आदान-प्रदान केवल दुकानदारी की ही बात होती है, उसम कोई सुन्दरता* नहीं होती। चतुर्वेदी जी के विषय म इस सिद्धान्त को मैंने इसलिए कुछ स्पष्ट किया है कि चतुर्वेदी जी के साथ तो मेरा किसी प्रकार भी (उत्कृष्ट या निकृष्ट) आदान प्रदान का सम्बन्ध रहा ही नही। जहाँ तक मुझे याद पडता है,

---

१ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ७० ७१।

मैंने उनसे कभी अपने निजी काम के विषय में प्रार्थना नहीं की और चतुर्वेदी जी मुझसे कभी कोई निजी काम कराने इसलिए प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिए यह प्रश्न स्वाभाविक होता है कि चतुर्वेदी जी के प्रति इतनी आत्मीयता का अनुभव क्यों कर हुआ ?

"ऊपर जो आदान प्रदान की बात लिखी गई है उसमें जो उत्कृष्ट प्रकार का है अर्थात् कृतज्ञता पर आश्रित आदान प्रदान वह भी एक प्रकार से निकृष्ट ही है, क्योंकि उसमें भी प्रदान के साथ साथ आदान भी लगा रहता है। जीवन का सर्वोत्कृष्ट रूप विशुद्ध प्रदान ही है जहाँ हम दूसरों के प्रति भलाई केवल भलाई करने के भाव से करते हैं, जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ की गन्ध भी नहीं रहती। संसार में ऐसे महान् पुरुष पैगम्बर संत हुए हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के लिए अर्पण कर दिया था। परन्तु ऐसे महापुरुषों को छोड़कर साधारण व्यक्तियों में भी यह बात बहुधा पाई जाती है। दूसरों के प्रति भलाई करना कष्ट में पड़े हुए व्यक्ति का कष्ट दूर करना यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। केवल निजी स्वार्थ की भावना इस प्रवृत्ति को रोके रहती है। साधारण व्यक्तियों में भी कुछ व्यक्ति ऐसे पाये जाते हैं जिनके अन्दर सर्व जन हित की भावना ओत प्रोत रहती है जो निजी स्वार्थ की बिना सोचे मन से वचन से और कर्म से दूसरों के हित के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रति प्रत्येक मनुष्य के अन्दर आत्मीयता की भावना उत्पन्न हो जाती है यदि वह उन्हें गहराई से देख ले। चतुर्वेदी जी के विषय में मेरे ऊपर इसका गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपनी कलम को किसी निजी स्वार्थ के लिए नहीं उठाया, प्रत्युत सदैव किसी विशेष आदर्श के लिए उसका उपयोग किया। इसीलिए चतुर्वेदी जी के प्रति मेरे जैसे कितने ही व्यक्तियों के हृदय में आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाता है और विशेषकर साहित्यिक क्षेत्र के व्यक्तियों में।[1]

श्री रामधन राम— चतुर्वेदी जी प्रतिदिन इतनी चिट्ठियाँ लिखते हैं कि पचास साठ रुपये मासिक पोस्टेज में खर्च हो जाते हैं। किसी नये आदमी को भी चतुर्वेदी जी इस तरह पत्र लिखते हैं मानो वर्षों से जान पहिचान हो। परिचित अपरिचित शत्रु मित्र सब को आत्मीयता के साथ चिट्ठी लिखते हैं।"

श्री विद्याशङ्कर शर्मा— अपने साहित्य मित्रों में पिताजी (स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा) स्वर्गीय पं० श्रीराम शर्मा और दादा जी (पं० बनारसीदास चतुर्वेदी)

1 श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ८६

को अपना परम आत्मीय मानते थे, और दिल खोलकर इनके साथ बातचीत करते थे। ४५ वर्ष की अवधि मे पिताजी ने कोई ३०० पत्र दादाजी को भेजे थे, जो उनके पास सुरक्षित हैं, मेरा ख्याल है इसमे ड्यौढ़ी संख्या मे दादाजी ने पिताजी को पत्र भेजे होंगे। इनमे कितने सुरक्षित हैं मैं सम्हाल कर गिनती नही कर पाया। पत्रो मे साहित्य चर्चा अधिक रहती थी, घरेलू बातें कम। लेकिन दादाजी के साथ घरेलू सम्बन्ध बराबर बने रहे। १० वर्ष पूर्व जब बड़े भाई डा० दयाशंकर शर्मा ने अपना मकान बनवा लिया तो पिताजी ने उसके उद्घाटन के लिए दादाजी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। वह अपने साथ पितामह (महाकवि शंकर) का एक बड़ा चित्र दिल्ली से बनवा कर लाये जिसका नवीन 'शंकर सदन' मे उन्होंने उद्घाटन किया। उसी दिन नये मकान मे वृक्षारोपण भी हुआ। बाउन्ड्री के सहारे, एक कतार मे जो अशोक के पौधे लगाये गये उनमे पहला दादाजी ने लगाया था और दूसरा स्वर्गीय प० श्रीराम शर्मा ने। अन्तिम गुलमुहर का पौधा पिताजी ने लगाया था। १० वर्ष के अन्दर ये पौधे बढ़कर अब पेड़ बन गये हैं। दादाजी के अशोक के पेड़ और पिताजी के गुलमुहर की अपनी विशेषता है। हरीतिमा से आच्छादित 'शंकर सदन' इन दोनों की छत्रछाया मे अपने को धन्य मानता है।"[1]

स्वय चतुर्वेदी जी का श्री रामनारायण उपाध्याय खंडवा को लिखा हुआ पत्र दिनांक १२ १-६१ दिल्ली से —

'आपका कृपा पत्र मिला। बात दर असल यह है कि पत्र-व्यवहार मेरे लिए एक व्यसन हो गया है और बावजूद घोर प्रयत्नो के मैं उसे छोड नही पाता। महीने मे २४ २५ दिन चिट्ठियों को लिखने मे ही व्यतीत कर देता हूँ। स्व० पद्मसिंह जी शर्मा का जीवन चरित कई वर्षों से अधूरा ही पड़ा है। तुर्गनेव जब मरणासन्न थे तब भी उन्होंने किसी युवक ग्रन्थकार के लिए सिफारिशी चिट्ठी किसी प्रकाशक को लिख दी थी और स्टीफन ज्विग भी इसी आदर्श का पालन करते रहे थे। रोम्याँ रोलाँ को भी सहस्रो पत्र लिखने पडे थे। मैं इन तीनों का प्रशंसक हूँ, इसलिए यह सम्भव नही कि मैं किसी संकटग्रस्त सज्जन के पत्रों का उत्तर न दूँ, बल्कि नवीन प्रतिभाओं के स्वागतार्थ तो मैं और भी प्रयत्नशील बनना चाहता हूँ, पर फालतू चिट्ठियों का जवाब देना मेरे लिए असम्भव हो गया है।

१ श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १३२।

अनन्त नगरीय परिषद् का उद्धार होना चाहिए। उसकी मीटिंग भले ही न हो, पर पत्र-व्यवहार तो निरन्तर होते ही रहना चाहिए।[1]

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव—'श्री चतुर्वेदी जी का सम्पर्क महापुरुषों से रहा है। इतना ही नहीं बल्कि वह विश्व विख्यात साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों में महाकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोर, रोम्यां रोलां, स्टीफन ज़्विग, टालस्टाय, एमर्सन, थोरो, चेखव, मैक्सिम गोर्की, तुर्गनेव, क्रोपाटकिन इत्यादि मनीषियों के ग्रन्थों का अध्ययन करके उनकी विचारधाराओं से प्रभावित बन चुके हैं। पत्र-लेखकों में चतुर्वेदी जी श्रेष्ठ माने जाते हैं। पत्रों के उत्तर टाइप में कराकर नीली और कहीं-कहीं लाल स्याही में स्वयं अपने हाथ से सुन्दर अक्षरों में लिखकर भेजते रहते हैं। पत्रों का उत्तर भेजने में वह किसी प्रकार की ढिलाई नहीं करते, बल्कि तत्काल उत्तर भेजते हैं।

पत्र-व्यवहार का व्यसन उन्हें लगभग ५५ वर्ष से है। यदि हिसाब लगाया जाय तो इस अनुपात से उन्होंने अब तक सवा दो लाख के लगभग पत्र लिखे होंगे।

पत्र-लेखन के विषय में वह एक जगह लिखते हैं 'कोई भांग पीता है कोई तमाखू खाता है, किसी को अफीम की लत है तो किसी को गांजे का शौक है। सुरा के प्रिय सुरा पीने वालों का क्या कहना। और चाय के पियक्कड़ों की संख्या तो दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

पर इन सब नशों की तरह उतना ही मादक, एक नशा और भी है और वह है चिट्ठियों का भेजना।' (पद्मसिंह शर्मा के पत्र भूमिका पृ० १५)

नवीन लेखकों को सहयोग देने में चतुर्वेदी जी रूस के दो महान साहित्यकारों मैक्सिम गोर्की और टालस्टाय का उदाहरण देते हुए एक जगह लिखते हैं

'मैक्सिम गोर्की किसी लेखक के पास भोजन भिजवाते थे, किसी के पास किताबें, किसी को पैसा और प्रोत्साहन-पत्र तो उन्हें सैकड़ों लिखने पड़ते थे। टालस्टाय के बत्तीस पृष्ठीय पत्र ने जो रोम्यां रोलां को अपनी कुमार अवस्था में मिला था, उनके जीवन को अत्यन्त प्रभावित किया।"

नये पत्रकारों और साहित्यकारों को चतुर्वेदी जी अपने पत्रों द्वारा लगातार उपयोगी सूचनाएँ देते रहते हैं। यहाँ हम उनका एक मात्र पत्र,

---

१ श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १३७।

जा उन्होंने टीकम गढ निवासी श्री भयालाल जी को जिखा था, उद्धृत कर रहे हैं

नाथ एवे यू, नइ दिल्ली
१४ ४ ५८

प्रियवर,

वन्दे, कृपापत्र तथा लेख मिला। कृतज्ञ हूँ। गाडनर के निबन्ध के क अनुवाद का आप कही और छपा मक्ते है, पर इस रूप म तो शायद कोई नही छापेगा, क्योंकि कागज के दानो आर लिखा होन से कम्पोजीटर को बडी कठिनाई होती है।

पत्रकार का प्रथम नियम आप नोट कर लीजिये कि आपको अपनी रचना अच्छे से अच्छ ढग से स्वच्छ अक्षरो म लिखनी चाहिये, घसीट कर लिखा हुई चीज का पढते हुए चित्त म एक प्रकार की ग्लानि होती है। जब आप मनचाहे ढग से अत्युच्च कोटि के मनुष्य या प्रभावशाली लेखक बन जाय तब आप मनचाहे ढग से घसीट सक्त हैं। अभी तो आपको इस विषय म अत्यन्त सावधानी से काम लेना पडेगा।

कागज चाह मामूली तरीके का हो पर अक्षर तो ठीक होने चाहिए और हाशिया छोड कर लिखने की जरूरत है। स्याही के फीके पन की क्षमा चाहन पर सम्पादक की असुविधा थोडे ही दूर हो जायगी। अध्यापक होकर भा आप ऐसी भूल क्या करत हैं ? यद्यपि मेरे पास इतना समय नही कि अग्रेजी से मिलाकर आपके अनुवाद को देखू, तथापि किसी न किसी प्रकार मैं ऐसा कर भी देता, यदि चीज साफ ढङ्ग स लिखी गइ होती।

मुझे विश्वास है कि आप बुरा न मानेंगे और भविष्य म अपने लेख इत्यादि सुन्दर अक्षरो म लिख कर भेजेंग। अपने बारे मे इम्प्रेशन क्या खराब करते हैं ? हस्त कम्पन के कारण मैं अधिक नही लिख सकता, फिर भी आप जसे उत्साही व्यक्ति को लिखे विना रह नही मक्ता।

जो थोडी सफलता मुझे अपन पत्रकार जीवन मे मिली है उसम अक्षरो का विशेष हाथ है। लापरवाही से लिखी हुई कोई रचना मैंने पिछल तीस वर्षों स किसी सम्पादक को नहा भेजी। इस स्पष्टवादिता के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

विनीत
बनारसीदास चतुर्वेदी

चतुर्वेदी जी का पत्र संग्रह बड़ा समृद्ध है। वह विख्यात व्यक्तियों के अलावा साधारण व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार करते हैं। उन्होंने शांति निकेतन (कलकत्ता) की हरियाली में विश्वबन्धु कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टाकुर को निकट से देखा ही नहीं बल्कि उनसे कुछ पत्र भी प्राप्त किये। साबरमती आश्रम में गाँधी जी के सहवास में रहकर न केवल उनकी आत्मीयता पाई, अपितु बाद में उनके लगभग सौ पत्र भी।

फ्रांस के अमर साहित्यकार रोम्यां रोलां से पत्र-व्यवहार किया और उस महान लेखक के तीन पत्र उनके पास सुरक्षित हैं। इसी तरह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुंशी प्रेमचन्द, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, पण्डित पद्मसिंह शर्मा, श्रीधर पाठक इत्यादि के अनेक पत्र उनके संग्रहालय को ऐतिहासिक महत्व प्रदान करते हैं।

हम कह सकते हैं कि हिन्दी के ही नहीं, बल्कि भारत की किसी भी भाषा के पत्रकार साहित्यकार के पास इतने मूल्यवान पत्रों का संग्रह नहीं है।"[1]

श्री यशपाल जैन—"पत्र-लेखन में दादाजी का कोई मुकाबिला नहीं कर सकता। पत्र-लेखन को वह एक कला मानते हैं और वह उस कला के महान आचार्य हैं। उन्हें महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टाकुर, महावीरप्रसाद द्विवेदी पद्मसिंह शर्मा, प्रतापनारायण मिश्र प्रभृति के निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। उनके पास भारतीय नेताओं, साहित्यकारों, समाज सेवियों तथा अनेक विदेशी विद्वानों के पत्रों का संग्रह है। इतना ही नहीं, उन्होंने स्वयं एक लाख से अधिक पत्र लिखे हैं। अपने पत्रों में वह अपना हृदय खोलकर रख देते हैं। उनके पत्रों ने न जाने कितने निराश व्यक्तियों को आशा का सन्देश दिया है। उनके पत्र हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। उनका जैसा प्रखर और तेजस्वी पत्रकार आज के युग में ढूँढे भी नहीं मिलता। इस क्षेत्र में उनकी सेवाएँ अद्वितीय हैं।"[2]

श्री शिवपूजन सहाय— 'जागरण और हिमालय की परम्परा आप नहीं चला रहे, बल्कि आपकी ही विशाल भारत वाली परम्परा को 'जागरण और हिमालय' ने अपनाया था। पथप्रदर्शक तो आप ही हैं। आत्मकथा

१ श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १४५ ४६

२ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० २०३

रेखा चित्र सस्मरण, पत्रावली आदि के प्रकाशन की परम्परा हिन्दी म बस पहले पहल आपकी ही चलाई हुई है। इतिहास इस बात का साक्षी रहेगा '[1]

स्वर्गीय साहित्य सेवियो के श्राद्ध कम म आप दिन रात व्यस्त रहत हैं यह आपके ही योग्य है। जितना कुछ आप कर जायेंग उतना ही स्थड रहेगा। आपके इस पवित्र कम मे मैं यथायोग्य सहयोग करने को तैयार हूँ। जिन चार सस्थाओ की स्थापना आपके द्वारा हुई, उनसे आग की पीढी सदा प्रेरणा लेती और लाभ उठाती रहेगी। सस्मरण और इन्टरव्यू तथा साहित्यिक पत्र सग्रह की प्रथा आपने ही चलाई है। इन कामा मे अब तक साहित्य का महान् उपकार हुआ है।[2]

श्री भयालाल शर्मा—"पत्रा के लिखने म वह (चतुर्वेदी जी) बडे उदार हैं और उनके पत्रा का यदि सग्रह किया जाय, ता उनकी सख्या हजारा तक पहुँच सकती है। उनके पचासो पत्र ता मरे पास सुरक्षित हैं। यदि उनके सपादकीय लेखा का सग्रह किया जाय ता कई बडे ग्रन्थ बन सकत हैं।

चतुर्वेदी जी ने एक पत्र म मुझ लिखा था—'हास्यरस हमारे जीवन के लिए षट् रसा स भी अधिक आवश्यक है, लोगा को आनन्द देना और सदव प्रसन्न रहना, इसी म दीर्घायु का नुसखा है।

'सस्था किसी एक व्यक्ति की विस्तृत छाया का नाम है यदि अकला एक आदमी भी जम कर बैठ जाय और अपनी अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार काम करे ता यह विशाल ससार उसके निकट आ जायगा।" एमसन के इस कथन का उन्ह विश्वास है, फिर भी लोग उन्ह केवल प्रोपेगण्डिस्ट ही समझते हैं।

चतुर्वेदी जी सीधी-साधी भाषा लिखने के पक्षपाती हैं। उनकी भाषा बोझिल नहीं है उसमे प्रभाव तथा प्रसाद गुण है। उनकी लेख शली पाठको के लिए भार स्वरूप नही। एक अच्छे अध्यापक के समान उनके लेख खेल-खेल म ही बडा सन्देश दे जात हैं। वह अपनी बात जबरदस्ती गले उतारने का व्यथ प्रयत्न नही करते। उन्ह जो कुछ कहना होता है सरल भाषा म स्वाभाविक ढङ्ग से कह देते हैं।"[3]

---

१ श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित ता० १८ ५ ५१ के पत्र से

२ श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित १९ १०-५४ के पत्र

३ श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १९३

हो तो पिछले पचास वर्षो मे उनके द्वारा लिखे गये साठ हजार से ऊपर के व्यक्तिगत पत्रो को पढना अलम् होगा। पर इन अनेकानेक व्यक्तियो को इतना लम्बी अवधि म लिखे गय इन सहस्रा पत्रा का सकलन कहाँ सुलभ हागा ? "भारतीय सस्कृति के विविध परिदृश्य" पुस्तक म बाबू वृदावनदास जी ने प्रथम बार उनके कतिपय महत्वपूण पत्रो की झाकी हम दी थी। 'अभिनन्दिनी' म चतुर्वेदी जी की विचारधारा का मैंने उन्ही थोडे से पत्रो स आकलित किया था। बाबू वृन्दावनदास जी अब चतुर्वेदी जी के शताधिक पत्रा का सकलन पुस्तककार निकालने जा रहे हैं। यह हिन्दी के लिए एक अपूव देन हागी। गाधी, टैगोर प्रेमचन्द, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महान् व्यक्तियो एव यशस्वी साहित्यकारा के पत्र चतुर्वेदी जी के पास सग्रहीत हैं। उन पत्रा का अपना मूल्य है। पर स्वय चतुर्वेदी जी न जो पत्र लिखे हैं उनकी उदात्त प्रेरणा जीवन के चिरन्तन मूल्या की पोषिका है। हिन्दी अग्रेजी दोनो म साथ साथ नीली और लाल स्याही म लिखे गय उनके पत्र सीधा सहज पर अचूक, जागरूक शैली के प्रतीक तो हैं ही, जीवन का मनमौजीपन और बडी-बडी चीजा को करने कराने और कर गुजरने की हास म भरा वचस्व उनका अद्भुत आकषण है। उनका सग्रह एक विशाल युग के विशाल हृदय की जीवन्त प्रेरणाओ का देदीप्यमान भाण्डागार है। हिन्दी जगत बाबूजी की इस कृति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगा।"

साहित्याचाय श्री श्यामसुन्दर बादल—'प्राचीनकाल मे—रेला के प्रचलन के पूव—समुचित सुविधा न होने के कारण सन्देशो का आदान प्रदान विश्वस्त दूता द्वारा सम्पन्न किया जाता था सो भी बडी आवश्यकता होने पर। अत सस्कृत साहित्य म पत्रा की चर्चा बहुत कम हुई है। महाकवि बाण (वि० स० ६२६ ६४४) ने कादम्बरी म कुछ पत्रा की चर्चा की है और डाकिए को लेख हारक कहा है। पत्र की शैली सक्षेप म इस प्रकार है

स्वस्ति। उज्जयिनीत परम माहेश्वर महाराज तारापीड सव सम्पदा आयतन चन्द्रापीड उत्तमाङ्गे चुम्बन् नन्दयति। कुशलिय प्रजा। कियानपि काल भवना दृष्टस्य गत। बलवदुत्कण्ठित नो हृदयम्। तत लेखन-वाचन विरतिरेव प्रयाणकालता नेतव्या।"

हिन्दी मे पत्रा का प्रारम्भ इसी शैली म हुआ। धीरे धीरे पत्रा म नई शली का प्रादुर्भाव हुआ। इसमे अनावश्यक शिष्टाचार प्रदशन का नितान्त हा अभाव रहता है। छोटे से प्रिय सबोधन के साथ—कभी उसे भी छोडकर काम की बात लिखदी जाती है। इस प्रकार कभी-कभी एक ही पक्ति म पत्र

श्री मोहनसिंह सेंगर—"चतुर्वेदी जी से मेरा पत्र-व्यवहार 'विशालभारत' के प्रकाशन के साथ १९२८ से ही शुरू हो गया था। उन दिनों मैं हाईस्कूल का छात्र था। 'विशाल भारत' केवल हिन्दी मासिकों में एक नया इजाफा ही न था, वरन वास्तव में जैसे ताजा हवा का एक नया झोंका था। न जाने कितने साहित्य रसिकों और पिपासुओं को उसने परम्परागत साहित्य-दुनिया के मुकाबले कुछ बेहतर किस्म का मानसिक भोजन दिया। मैं उसका ग्राहक तो बना ही, लेखकों में भी पाँचवाँ सवार बनने का हौसला रखता था। सो विशाल भारत में प्रकाशित सामग्री को लेकर चतुर्वेदी जी से पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। छपे तो शायद एकाध चीज ही पाई होगा—बाकी सारी चीजें सधन्यवाद वापस लौट आईं पर जिस धैर्य, सांत्वना, सहानुभूति और अपनत्व से चतुर्वेदी जी मेरे अज्ञतापूर्ण पत्रों का उत्तर देते थे, उससे मैं बड़ा प्रभावित हुआ और कभी उनके दर्शन करने की लालसा पालने लगा। एक बार तो मजाक में मैंने लिख भी दिया था कि यदि मैं इसका संपादक होता तो इस और भी अच्छे रूप में निकालता। पता नहीं चतुर्वेदी ने इसे कैसे लिया होगा।"[1]

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे—"पत्र लेखन की विधा साहित्यकों द्वारा जानी पहिचानी विधा है। परन्तु निजी सामान्य पत्र जो साहित्य सृजन के उद्देश्य से नहीं अपितु अपने परिचित एवं निकटस्थ व्यक्तियों को तात्कालिक आवश्यकताओं अथवा आकांक्षाओं से प्रेरित होकर लिखे जाते या उन तक पहुँचाने के लिए लिखे जाते हैं मूल रूप में इन्दिरा संध्या का साधारण सूचा में होते हुए भी कभी कभी साहित्य की मूल्यवान् निधि बन जाते हैं। तब हमें मालूम होता है कि उनको लिखने वाला व्यक्ति कितना महान्, कितना प्रेरणाप्रद, कितना सवेदनशील और कितने हृदय स्पर्शी व्यक्तित्व वाला था। पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी गाँधी टैगोर, राम्या रोला, दीनबन्धु एण्ड्रूज तथा अन्य न जाने कितने स्वनामधन्य महापुरुषों के सम्पर्क में आये हैं। अपने दीर्घ जीवन में साहित्य और समाज की सेवा के अनगिनत मसलों से उन्होंने जगाये और पूरे किये, कराये। पीड़ा और करुणा ने कहाँ-कहाँ उनके कोमल हृदय को कचोटा, किन किन तेजस्वी भावनाओं ने, किन किन जीवन मूल्यों ने, किन किन श्रद्धास्पद आत्माओं की अन्तरंग चिन्ताओं ने उनके महामानवीय व्यक्तित्व में प्रतिपालित होकर उनकी जीवन को धुरी को उच्चविचारों और उदात्त भावनाओं के ज्योतिस्फुलिंगों को सतत विकीर्ण करने वाली प्रकाश की ज्योति रखा बना दिया यह यदि जानना

---

[1] बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १४२-४३

हो तो पिछले पचास वर्षों मे उनके द्वारा लिखे गये साठ हजार से ऊपर के व्यक्तिगत पत्रो को पढना अलम् होगा। पर इन अनेकानेक व्यक्तियो को इतना लम्बी अवधि म लिखे गये इन सहस्रो पत्रा का सकलन कहा सुलभ होगा ? 'भारतीय सस्कृति के विविध परिदृश्य" पुस्तक म बाबू वृन्दावनदास जी ने प्रथम बार उनके कतिपय महत्वपूण पत्रो की झांकी हमे दी थी। 'अभिनन्दनी' मे चतुर्वेदी जी की विचारधारा को मैंने उन्ही थोडे से पत्रो से आकलित किया था। बाबू वृन्दावनदास जी अब चतुर्वेदी जी के शताधिक पत्रो का सकलन पुस्तकाकार निकालने जा रहे हैं। यह हिन्दी के लिए एक अपूव दन होगी। गाधी, टैगोर प्रेमचन्द, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महावीर प्रसाद द्विवदी आदि अनक महान् व्यक्तियो एव यशस्वी साहित्यकारो के पत्र चतुर्वेदी जी के पास सग्रहीत है। उन पत्रो का अपना मूल्य है। पर स्वय चतुर्वेदी जी न जो पत्र लिख हैं उनकी उदात्त प्रेरणा जीवन के चिरन्तन मूल्यो की पोषिका है। हिन्दी अग्रजी दोना म साथ साथ, नीली और लाल स्याही म लिखे गय उनके पत्र सीधी सहज पर अचूक, जागरूक शैली के प्रतीक तो हैं ही, जीवन का मनमौजीपन और बडी-बडी चीजो को करने कराने और कर गुजरने की हास से भरा वचस्व उनका अदभुत आकषण है। उनका सग्रह एक विशाल युग के विशाल हृदय की जीवन्त प्रेरणाओ का देदीप्यमान भाण्डागार है। हिन्दी जगत बाबूजी की इस कृति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगा।"

साहित्याचाय श्री श्यामसुन्दर बादल—'प्राचीनकाल म—रेलो के प्रचलन के पूव—समुचित सुविधा न होने के कारण सन्देशो का आदान प्रदान विश्वस्त दूना द्वारा सम्पन्न किया जाता था सा भी बडी आवश्यकता हाने पर। अत सस्कृत साहित्य मे पत्रा की चर्चा बहुत कम हुई है। महाकवि वाण (वि० स० ६२६ ६४४) ने कादम्बरी म कुछ पत्रो की चर्चा की है और डाकिए को 'लेख हारक' कहा है। पत्र की शैली सक्षेप मे इस प्रकार है

स्वस्ति! उज्जयिनीत परम माहेश्वर महाराज तारापीड सव सम्पदा आयतन चन्द्रापीड उत्तमाङ्गे चुम्बन् नन्दयति। कुशलिन्य प्रजा। कियानपि काल भवतो दृष्टस्य गत। वलवदुत्कठित नो हृन्यम्। तत लेखन-वाचन विरतिरेव प्रयाणकालता नेतव्या।"

हिन्दी म पत्रो का प्रारम्भ इसी शली मे हुआ। धीरे धीरे पत्रो मे नई शली का प्रादुर्भाव हुआ। इसमे अनावश्यक शिष्टाचार प्रदशन का नितान्त हा अभाव रहता है। छोटे से प्रिय सबोधन के साथ—कभी उसे भी छोडकर काम की बात लिखदी जाती है। इस प्रकार कभी कभी एक ही पक्ति मे पत्र

की समाप्ति हो जाती है। आवश्यकतानुसार इस शैली में भी बड़े-बड़े सुन्दर पत्र लिखे गये हैं। पत्रों के सम्बन्ध में एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि जिस हार्दिकता का परिचय विस्तृत ग्रन्थ भी नहीं करा सकते हैं उसे पत्र सामने उपस्थित कर देते हैं। पत्रों आधा मिलन है वाली बात सार्थक आना सत्य है।

सौभाग्य से अब पत्रों ने साहित्य के क्षेत्र में भी प्रवेश किया है एवं थोड़े ही समय में निम्न रचनाएँ सामने आ गई हैं—

बापू के पत्र, विनोबा के पत्र, द्विवेदी पत्रावली, स्वामी विवेकानन्द पत्रावली, श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पद्मसिंह शर्मा के पत्र, नेहरू जी द्वारा सम्पादित कुछ पुरानी चिट्ठियाँ एवं पिता के पत्र पुत्री के नाम, श्री बैजनाथ सिंह विनोद द्वारा सम्पादित द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र एवं स्व० जमनालाल जी बजाज का पत्र व्यवहार जो पाँच भागों में प्रकाशित है। *इसके पूर्व 'धन्य ज्योतियों के पुनीत तथा और पवित्र—अलंकार'* में पत्रों में लिखी गई विनय-पत्रिका एवं सूरविनय पत्रिका भी पत्र विधा के ही एक रूप थे।

इस प्रकार हिन्दी गद्य के इस युग में इस नवीनतम पत्रविधा का भी उत्थान हो रहा है। राष्ट्रभाषा की समुन्नति में यह विधा भी अपना महत्त्वपूर्ण योग देगी। सौभाग्य से अखिल भारतीय ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावनदास जी विख्यात पत्र-लेखक दादा जी (श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी) के पत्रों का सम्पादन कर रहे हैं। चतुर्वेदी जी के पत्र कितने शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाप्रद होते हैं यह बात 'प्रेरक साधक' ग्रन्थ के पाठकों से छिपी नहीं है। अब यह संकलन पत्र-लेखन कला में हिन्दी प्रेमियों का मार्ग-दर्शन करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। सौ क्या सौ पत्र तो उनके मेरे पास भी होंगे—अन्य अनेक महानुभावों के पास बहुमूल्य पत्र होंगे पर अग्रगामी दान का श्रेय तो सौभाग्यशालियों को ही मिलता है। माननीय बाबूजी के इस सौभाग्य पर हमें गर्व है।

पत्रों का तिथिक्रम—प्रस्तुत संग्रह में चतुर्वेदी जी के वे पत्र हैं जो हमें सन् १८६७ से अविराम रूप में प्राप्त होते रहे हैं, इनसे पहिले प्राप्त हुए पत्रों पर हम एक लेख ब्रजभारती में प्रकाशित कर चुके हैं जिसको कि हम इस पुस्तक के परिशिष्ट ४ में पुनः मुद्रित कर रहे हैं।

प्रकाश भवन, मथुरा —वृन्दावनदास

दिनांक २६ जनवरी सन् १६७१

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के
पत्र
श्री वृन्दावनदास के नाम

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

(१)

फीरोजाबाद

११ १० ६७

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

कृपापत्र मिला और व्रजभारती का अक भी। बन्धुवर स्व० अग्रवाल जी को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए श्री श्रीराम शर्मा को मेरी ओर से हार्दिक बधाई भेज दीजिये। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि आगरा युनिवर्सिटी ने अग्रवाल जी पर शोधग्रन्थ तयार करने की स्वीकृति इसलिये नही दी कि उनकी सृजनात्मक कृति क्या है? आगरा विश्वविद्यालय वालो के इस अक्ल अजीरन रोग का इलाज होना चाहिये। शायद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा था "चूरन खाते लाला लोग, जिनको अक्ल अजीरन रोग पर अब व्यापार क्षेत्र के अतिरिक्त साहित्य क्षेत्र मे भी यह रोग व्याप रहा है।

हिन्दी की ओजस्वी लेख शैली के प्रवर्तक गणेश जी पर भी शोधग्रन्थ तयार करने की अनुमति नही मिली। मैंने सुना है कि इन अपराधो की जिम्मेदारी कुछ सुपरिचित महानुभावो पर है पर पक्की तौर पर पता लगाये बिना नाम कैसे लिए जा सकते हैं?

अमृतलाल जी तथा श्यामसुन्दर जी की कविताएँ छाप दीजिये। श्री बन्शीधर शुक्ल मियोरा पा० आ० कमहरा, खीरी लखीमपुर की अवधी कविताएँ मजे की हैं।

सरस्वती ने अमृतलाल जी की कविता छाप दी है। मनोरजन जी की भोजपुरी कविता फिरगिया ओजस्वितापूर्ण थी। मित्र जी की बुन्देली कविताएँ बडी सजीव हैं।

मेरा स्वास्थ्य ठीक नही।

बनारसीदास

(२)

फीरोजाबाद
१२ १० ६७

प्रियवर

पत्र आपका ६ १० ६७ का प्राप्त हुआ। आप पूज्य वल्लभ गुरु से मिल आये यह बहुत अच्छा हुआ और ११) भाया के लिए जो आपने यह और भी अच्छा किया। आप उनके पास ब्रजभाषा की बराबर भेजते रहिये।

श्री श्यामसुन्दर वात्सल्य (राठ) का धन्यवाद का पत्र आया है। वे सम्मेलन के साहित्य महोपाध्याय हैं। कुन्ती पाल पर उन्होंने अच्छा नाटक लिखा है और स्वयं छपाया भी है।

विनीत
बनारसीदास

(३)

फीरोजाबाद
१६ १० ६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

स्व० पं० पद्मसिंह जी शर्मा के संग्रह में नवनीत जी के दो पत्र मिले हैं। उनकी नकल आपको भेज दूँगा। यदि चाहें तो उनके फोटो भी तैयार कराये जा सकते हैं—एक पत्र दो पृष्ठ का है दूसरा चार है। कुल मिलाकर १०) १२) में कैबीनेट साइज के फोटो तैयार हो जायेंगे।

उनका स्वामी कवि विषयक लेख जिसे मीतल जी ने लिपिबद्ध किया था और जो विशाल भारत में छपा था आपने देखा होगा। उसकी टाइप की हुई प्रति भी भेज सकता हूँ।

दिल्ली से उत्तरराम चरित (स० ना० कविरत्न) पर आधारित एक रूपक श्री रामनारायण जी अग्रवाल ने प्रकाशित किया था। अच्छी चीज थी। मैं उन्हें बधाई का पत्र भेज रहा हूँ। आप भी भेजिये। मेरे मित्र श्रीव्रजबहादुर वर्मा (सम्पादक योगी) अस्वस्थावस्था में हरिदास कम्पनी में पड़े हैं। वे कलकत्ते में मेरे साथ रहते थे। काम के आदमी हैं। उन्हें मिलकर मेरा आशीर्वाद कहिये। वे बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान रह चुके हैं।

मैं चिन्तित हूँ। मेरे भानजे की बहू का पथरी का आपरेशन परसों आगरे में होने वाला है।

विनीत
बनारसीदास

(४)

फीरोजाबाद
२३ १० ६७

प्रियवर

आप एक पत्र सादाबाद निवासी श्री पाराशर जी एम ए हिन्दी-विभाग एस० आर० के० कालेज फीरोजाबाद को डाल कर पूछ सकते हैं कि उन्होंने डा० वासुदेव शरण अग्रवाल पर शोध ग्रन्थ तयार क्या नहीं किया यह सम्भव है कि वे सकोचवश स्पष्ट उत्तर न द सकें। उन्हें अवधी विषयक कोई नीरस मजमून दिया गया है। उन्होंने मुझे बतलाया कि यह तक विश्व विद्यालय वालो ने ही किया कि अग्रवाल जी म सृजनात्मक शक्ति नहीं थी। ठीक-ठीक शब्द वे ही बनावेंगे।

श्री सरदारसिह 'सनिक' की पुत्री जो एम ए हैं गणेश जी पर शोध करना चाहती थी। उनसे कहा गया, गणेश जी का कोई भी पाठ पुस्तको म नही आता। सरदारसिह का पता आगरे म लग जायगा—शायद स्वदेशी बीमा नगर म रहते हैं।

सत्यनारायण कविरत्न पर अपना लेख भेज रहा हूँ। द्विवेदी ग्रन्थ भिजवाऊँगा। आजकल अशफाकुल्ला पर काम चल रहा है।

बनारसीदास

(५)

फीरोजाबाद
२५ १० ६७

प्रियवर

यह आपने अच्छा किया कि श्री मिश्र जी से मिल आये। अर्द्ध शताब्दी का कार्यक्रम व्ययसाध्य न होना चाहिये, क्योकि चन्दा करना आजकल बहुत कठिन है। सवासौ पृष्ठ की एक पुस्तक सत्यनारायण जी पर छप जाय तो गनीमत है।

हाँ, पन्द्रह-पन्द्रह रुपये के एनलाजमण्ट (कविरत्न जी के चित्र के) ब्रजमण्डल के अनेक केन्द्रों पर रखवाये जा सकते हैं। भाषण भी हो सकते हैं। यू० पी० सरकार धांधूपुर म उनकी कोठरी का जीर्णोद्धार ही करा दे तो बहुत समझिये। तुला (धांधूपुर के पास के ग्राम) में हाईस्कूल की नीव

पर जानी चाहिए और उन कविरत्न जी का नाम लिया जा सकता है। उस अवसर पर ब्रजभाषा तथा ब्रजमण्डल की उन्नति के लिए भी कोई ठोस कदम उठाया जाय।

बिचारे हरियाणा का तूफान कदमीजी बढ़ रहा है। उन लोगों ने ब्रजभूमि को कोई अनाथ विधवा समझ लिया है जिसे चाहे जहाँ ढकेला जा सकता है। उन लोगों के इस अतिक्रमण का विरोध तो होना ही चाहिए। इस बहाने ब्रजवासियों में कुछ जाग्रति की जा सकती है।

श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी ने भी मिल लिए, यह अच्छा हुआ। ब्रजसाहित्य मण्डल के लिए जो भी कार्य आप कर रहे हैं वह कुर्सी के काम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

शेष फिर

बनारसीदास

(६)

फीरोजाबाद
१ ११ ६७

प्रियवर

डा० सत्येन्द्र जी की पुस्तक की Free frank and fair आलोचना होनी चाहिए—विनम्रतापूर्ण, पर साथ साथ पावरनी सही। 'सा वाच्या गुरावपि।'

हम जल्दी में कोई भी चीज न छापनी चाहिए। महत्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रेस में देने के पहिले समानशील अधिकारी व्यक्तियों से परामर्श करने में कोई घाटा नहीं। जब मैं ब्रजसाहित्य मण्डल का सभापति बना था तो अपने भाषण को मैंने पचासों बड़े व्यक्तियों को सलाह मशविरे के लिए भेज दिया था। श्री विजय राघवाचार्य ने नागपुर के कांग्रेस प्रेसिडेण्ट बनने के पहिले मी० एफ० एन्ड्रूज से परामर्श लिया था।

आलोचना के पूर्व यह लिखना न भूलिए कि पुस्तक के महत्व को देखते हुए हमने इस कसौटी पर कसना ही उचित समझा। दरअसल यह पुस्तक आलोचनार्थ ब्रजभारती में पहुँचनी चाहिए थी।

आगरे वालों ने सत्यनारायण कविरत्न पर सभी वाला सपाट थी। मैंने अपना लेख जो पोद्दार ग्रन्थ में छपा था, टाइप कराके भेज दिया। उसमें मैंने

ब्रजसाहित्य मण्डल का भी उल्लेख कर दिया है। निस्म देह सत्येन्द्र जी ने मण्डल की उल्लेखयोग्य सेवा की है, पर मण्डल के सहयोग से उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास म सहायता भी मिली है।

श्री हजारीप्रसाद जी द्विवेदी आगरे गये थ और सैण्टजान्स कालिज मे आपकी सुपुत्री से भी उन्होंने बात की थी। मेरा भी उन्होंने उल्लेख किया।

विनीत
बनारसीदास

(७)

फीरोजाबाद
१४ ११ ६७

प्रियवर,

पत्र मिला। एक प्रश्नावली आप छपा लें—(१) ब्रज प्रान्त का अलग निर्माण होना चाहिये या नही ? (२) यदि नही तो क्यो नही ? यदि हाँ तो उसके लिए क्या क्या उपाय किय जान चाहिये।

भूमिका मे विशाल हरियाणा तथा विशाल दिल्ली का जिक्र आप कर सकते हैं। इस प्रकार कुछ चर्चा हो चलेगी। एक सौ पत्रो म यदि दस उत्तर भी छापने लायक आ गये तो ठीक।

श्री राजेन्द्र रजन जी का कार्ड मिला है। उत्तर दे दिया है।

मेरा स्वास्थ्य कुछ ऐसा ही चल रहा है। यदि आप इसी प्रकार काम करते रहे तो ब्रजभूमि के सवश्रेष्ठ साहित्यिक तथा सास्कृतिक कार्यकर्ता बन जायेंगे पर उसमे समय तो लगेगा ही।

विनीत
बनारसीदास

(८)

फीरोजाबाद
४ १२ ६७

प्रियवर,

अलग बुकपोस्ट द्वारा ३ दिसम्बर के सैनिक म प्रकाशित अपना लेख भेज रहा हूँ। चूँकि आगरे म मीटिङ्ग भी उसी दिन होने वाली थी, इसलिय समय पर लेख का निकल जाना जरूरी था। भेजा तो था अमर उजाला को भी, पर वह नही छाप सका।

(३) श्री मीतल जी के काय पर कुछ Notes मुझे लिख भेजिये।

(४) चर्चिल के पास ६ सहायक लेखक थे, पर मेरे पास एक भी नही। हाँ, दो घण्टे के लिए एक सज्जन पधारते हैं, जो कुछ नकल कर देते हैं।

(५) ब्रज का साहित्यिक तथा सास्कृतिक सर्वेक्षण तो कर ही डालना चाहिये।

(६) श्रीधर पाठक जी सत्यनारायण जी तथा वासुदेव शरण जी के कबीनेट साइज के चित्र जगह जगह होने चाहिय।

बनारसीदास

(११)

फीरोजाबाद

३० १२ ६७

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी

नवीन वष आपका सुखप्रद हो।

आपको मरा लेख पसन्द आया, यह जानकर सन्तोष हुआ। चिरजीव वुद्धि प्रकाश ने जो नैनीताल म इतिहास का अध्यापक है ब्रजप्रान्त निर्माण आन्दोलन के विरोध म मुझे लिखा है। उसे इस आन्दोलन मे राजनतिक गडवड घोटाला की गन्ध आती है। दरअसल कारण यह है कि इस प्रकार के आन्दालन प्राय महत्वाकाक्षी निराश या Frustrated राजनतिक नेताओ द्वारा ही उठाये गये है। मैं स्वय ब्रजप्रान्त के अलग बनने का विरोधी था और मैंने मथुरा मे यह बात कही भी थी पर इस बारे म मुझे पुनर्विचार करना पडा है। मैं कोई राजनतिक आदमी नही। शुद्ध साहित्यिक तथा सास्कृतिक दृष्टि से ही विचार करता हूँ।

लोग प्रान्तीयता और प्रान्त प्रेम म भेद नही कर पाते। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर प्रदेश आगे चलकर दो भागो म बटे बिना नही रह सकता। तब पश्चिमी भाग का नाम ब्रजप्रदश किया जा सकता है। पर केवल नाम रखने से तो कुछ काम नही चल सकता। ब्रज की जनता म अपने जनपद के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है। जब तक हम लोग जो बुद्धिजीवी हैं, पारस्परिक विचार परिवतन करके एक दूसरे के निकट नही आते तब तक प्रान्त निर्माण की बात हवा मे ही रह जायगी। हम म से सभी को कुछ न कुछ त्याग कुछ न कुछ परिश्रम अपने जनपद के लिये करना पडेगा। जिसके प्रेस हैं वह कुछ

छपाई का काम करे लेखक या कवि कुछ लेख या कविता कर धनवान धन दें और शारीरिक श्रम करने वाले कुछ मेहनत ही करें।

ब्रज के लेखकों तथा कवियों की एक Directory भी तैयार करनी है।

Regionalism पर जो भी साहित्य आपको हिंदी अंग्रेजी में मिले उसे पढ़िये। आचार्य वासुदेव शरण जी की पृथिवी पुत्र तो हमारी बाइबिल ही है। PROF Gedd s इसके महान प्रवर्तक थे। उनका रेखाचित्र मैंने हमारे आराध्य में प्रस्तुत किया था। उसे कृपया पढ़ लीजिये।

हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक दिशा में प्रवर्तित करना चाहिये, पर कौन सुनेगा? राजस्थान, उत्तर प्रदेश बिहार मध्य प्रदेश तथा हरियाना और दिल्ली मिलकर कोई रचनात्मक काम क्या शुरू नहीं कर देते? अकेले यू पी का बजट ही १ अरब २८ करोड़ का था। क्या वह अग्रसर होकर इन ७।६ राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की मीटिङ्ग नहीं कर सकता? अकेले प्रयाग तथा काशी की संस्थाओं को कुछ मदद देने से काम नहीं चल सकता। नागरी प्र सभा आगरा ब्रज साहित्य मण्डल इत्यादि संस्थाओं को भी भरपूर सहायता मिलनी चाहिये।

मेरा यह सुझाव है कि सत्यनारायण कविरत्नकी मृत्यु की अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर इस बारे में एक विस्तृत आयोजना तैयार करली जाय। बम्बई में जो ब्रजवासी रह रहे हैं उनमें भी चर्चा कीजिये। और कुछ नहीं तो दस बीस ग्रन्थ ही ब्रजभारती के बनादें। ब्रजवासी जहाँ जहाँ रह रहे हैं वहाँ ब्रज मान लेना चाहिये। बकौल नजीर

जो पड़े याद में उस शोख की जिस बस्ती में
वही गोकुल है हम और वही वृन्दावन।
वही है तख्त, वही फर्श, वही सिंहासन

अलीगढ़ के अभय कुमार जी जैन और यशपाल जी जैन से भी इस आन्दोलन में मदद लेनी है—मेरा अभिप्राय नैतिक सहायता से है।

और कुछ लाभ भले ही न हो, पर ब्रजभाषा का Revival या पुनर्जीवन अवश्यम्भावी है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के श्री रामप्रसाद त्रिपाठी तो ब्रजभाषा के अनन्य प्रेमी हैं। उन्हें भी फाँसना (!) है—प्रेम जाल में।

मैनपुरी का चतुर्वेदी पुस्तकालय—वहाँ के श्री उमरावसिंह जी पाण्डे—और डा० सत्येन्द्र (जयपुर) से सम्पर्क स्थापित करना है।

डा० अग्रवाल जी के कुछ पत्र सम्मेलन पत्रिका मे छप गये हैं। उनको तथा अन्य पत्रो को भी संग्रह करके छपवाना है। श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार को मैंने पत्र लिखा था, पर वे अस्वस्थ हैं। उत्तर नही दे सके। उनके सुपुत्र ने भी उत्तर नही दिया। हा उनमे से एक मेरी गैर हाजिरी मे यहा पधारे अवश्य थे। श्री वल्देवगुरु जी को 'पद्म श्री' दिलवाना तो अब निरर्थक होगा।

अम्ब—बागची साहब, हरिशङ्कर शर्मा, दिव्यजी प्रभृति से निरन्तर सम्पर्क स्थापित रखे, क्योंकि सनाढ्य कविरत्न की अर्द्धशताब्दी के यज्ञ में उनसे मदद मिलेगी। भाई महेन्द्र जी तो बीमार रहते हैं।

इधर मेरा दिमाग भी चकराने लगा है पर मैं Sir Thomas Lipton का अनुयायी हूँ। लिप्टन साहब एक जहाज मे यात्रा कर रहे थे कि उसके डूबने की आशङ्का हो गई। वे सोडावाटर की बोतलो मे 'लिप्टन की चाय पियो' लिप्टन की चाय पियो भर भर कर समुद्र में फेंकने लगे— इस उम्मेद मे कि व बोतल कहीं न कहीं किनारे लगेंगी और उनकी चाय का प्रचार होगा। मैं भी पत्रो द्वारा अपने स्वास्थ्य की इस दशा मे भी यही काम अपनी ब्रजभूमि के लिये करना चाहता हूँ। ब्रजभूमि मेरी पितृभूमि भी है। मेरे पिताजी का जन्म सन् १८५२ में चूना कंकड़ मुहल्ले मे हुआ था। हमारा मकान अब वकील महेन्द्र जी के पास है।

मैं अपनी डाक्टरी परीक्षा कराने दिल्ली जाने की मांग रहा हूँ। प्रातःकाल कुछ पत्र लिख देता हूँ—बस! मुझे विश्राम चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—हमें लोक संग्रह की भावना से काम लेना है।

एटा के Arya Inter College के प्रिंसीपल श्री मलखान सिंह सीसादिया उत्साही व्यक्ति हैं। उनसे सम्पर्क स्थापित करें।

यहाँ सनाढ्य कविरत्न के इकरंगे Enlargement ८ ८, १० १०) रुपयो मे तयार हो सकते हैं। अप्रैल में जगह-जगह उनका उद्घाटन कराइये और ६५) मे तिरंगा चित्र भी अपने कार्यालय मे टांगिये।

भरतपुर की हिंदी साहित्य समिति को भी खट-खटाइये। प्रान्त बने या न बने, पर हमे ब्रजवासियो मे पारस्परिक सौहार्द्र तो रखना ही चाहिये।

ब्रज मे जितने प्रेसाध्यक्ष हैं क्या वे मिशनरी ढङ्ग पर प्रचार बुलेटिन भी नही छाप सकते ?

बिना स्वार्थ त्याग के ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण नहीं हो सकता।

छतमर का बयूल वन आप जरूर-जरूर देखें और उस पर लिखें भी गोवर्द्धन के वन के विषय में भी लिखिये।

बनारसीदास

(१२)

फीरोजाबाद
२५ १ ६८

प्रियवर

पत्र* छाप देने के लिए कृतज्ञ हूँ। आपके लेख की प्रशंसा में दो चिट्ठियाँ भी मुझे मिली हैं। मैं तो गुप्रासिन्धु या सागर के बालामृत का तरह निष्कासित हो चुका हूँ।

अमर उजाला तथा सैनिक का एक छोटा सा लेख—प्रसन्नताय परम्परा देकर भेजा है। वह स्थानीय कवियों तथा लेखकों के अभिनन्दन के विषय में है।

सत्यनारायण कविरत्न की श्रद्धाञ्जलि के पत्र की अब विधिवत शुरू कर दीजिये। श्री घातक जी C/o श्री कृपाशंकर चतुर्वेदी चौर जा की कटरा किनारी बाजार आगरा को निश्चित हाट-म की प्रति भेंट कर दीजिये। श्री श्यामसुन्दर खत्री को भी। क्या फीरोजाबाद में ब्रजभारती के १० १२ ग्राहक नहीं बन सकते ? भाई आउम् यदि प्रयत्न करें तो मुश्किल नहीं।

आगरा (बाग मुजफ्फर खाँ) के श्री तोताराम पंकज मर बार में माहि बाजार का एक छोटा सा अङ्क ही निकाल रहे हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१३)

फीरोजाबाद
२८ १ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं नवीन पत्र-ब्रजप्रान्त निकालने के पक्ष में नहीं क्योंकि वह चल नहीं सकेगा। इस प्रकार के घाटे के सौदे करने में साहित्य प्रेमियों की शक्ति

* इससे आशय उस लेख से है जो 'श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक से ब्रजभारती में छपा था और जो इस ग्रन्थ का परिशिष्ट 'ख' है।

चाहिये। हाँ उनके उत्साह की प्रशंसा अवश्य की जाय। जो महानुभाव ऐसा करना चाहें, वे चार छै पृष्ठ ब्रजभारती के सप्लीमेण्ट के तौर पर अपने खर्च में निकाल सकते हैं, अलग से पैसा क्यों बर्बाद करें?

ब्रजभारती के घाटे की पूर्ति कैसे होती है? कहीं आप पर ही तो सारा बोझ नहीं पड़ता? मण्डल को अपना मकान कब तक मिलेगा?

कभी यहाँ पधार कर सत्यनारायण जयन्ती के लिये क्षेत्र तैयार कीजिये। मैं यात्राएँ नहीं कर पाता। कविरत्न जी की जयन्ती में क्या श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी से सहयोग नहीं मिल सकता है? श्री शिवदत्त चतुर्वेदी एम ए छिवेटी इटावा से सम्पर्क कीजिये।

एक पत्र केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री के के शाह को ब्रजसाहित्य मण्डल की ओर से तुरन्त जाना चाहिये जिसमें रेडियो द्वारा सत्यनारायण कविरत्न पर विशेष प्रोग्राम रखवाने का अनुरोध किया जाय। 'ब्रजभारती' का विशेषाङ्क तो उस समय छपना ही चाहिये। उसकी तयारी अभी से कीजिये। तीन महीने ही बाकी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१४)

फीरोजाबाद
३० १ ६८
बापू निर्वाण दिवस

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! 'ब्रजभारती' में आपका सुन्दर लेख पढ़ा। आप एक बात भूल गये, जो व्रज में उत्पन्न एक महापुरुष—भगवान श्री कृष्ण ने कही थी

"दरिद्रान भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वर धनम्।

'हे कुन्तीनन्दन गरीबों का पालन करो ऐश्वर्य वालों को धन मत दो"

सो आपने तो मेरे जैसे विज्ञापित व्यक्ति का और भी विज्ञापन देकर भगवान के आदेश की अवहेलना की है! पेट भरे चौबे को मिठाई खिलाई है।

ब्रजप्रदेश मिल गया है। उसे जीवित रहना चाहिये।

आपका विस्तृत पत्र परसों मिला था आज फिर मिला है।

अब मेरे पास इतनी चिट्ठियाँ आने लगी हैं कि उनका उत्तर बिना किसी पूरे वक्त काम करने वाले सहायक के लिए न सकता। क्या किया जाय लाचार हूँ।

शेष बातें अगले पत्र में लिखूंगा आपका भाषण सर्वथा उचित रहा।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—डा० नगेन्द्र Hindi Dept Delhi University की मारफत वह पुरानी कविता भेजता हूँ।

इसे आप उन्हें भेज सकते हैं और ब्रजभारती में छापने की अनुमति भी माँग सकते हैं। उसमें कविरत्न सत्यनारायण पर सम्पादकीय भी दीजिए। वे भी अलीगढ़ जिले के ही थे जहाँ कविरत्न ने जन्म लिया था।

इसर पत्र भी भेजूँगा।

कविरत्न जी के विषय में मुख्य मीटिंग तो आगरे में ही होनी चाहिए पर पुस्तक सभाएँ सभी जगह हो सकती हैं।

डा० महेन्द्र ने हृदय तरंग की भूमिका लिखा था। उन्हें भी लिखिए। बागची जी को भी साथ लेना है।

डा० नगेन्द्र से पूछिए तो कि मर्यनारायण के उत्तर रामचरित तथा मालती माधव को क्यों छपाया जाय। दोनों बार सम्मान के लिए चला गुरु कर दें।

सेठ अमृतलाल चतुर्वेदी का अभिनन्दन होना चाहिए। यह भी बहुत आवश्यक है बहुत काम किया है इन्होंने। और इनका विस्तृत परिचय डा० राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी शीतला गली आगरे से लिखवाइए। वे श्री अमृतलाल जी के जामाता हैं। बहुत योग्य हैं। वो प्र सभा में जाने वाले हैं।

बनारसीदास

अंजलि*

आज हृदय में स्पन्दन-मंथन है उठता भाव निराट।
किस अज्ञात की ओर बढ़ती है जगत की ओर॥
कम मेरे व्यक्ति हृदय में इतर बहता आठ।
जिसकी मधु मूरति आत्मा में बनकर चित्र समाट॥

* पत्र में उल्लिखित डा० नगेन्द्र जी की कविता

जाना ! जाना ! तुझे अरे जीवन असार ! पहचाना !
तुझे सदा रहता है बनना बनकर बिगड़ सताना ।।

हे हिन्दी के लाल ! कंत कविता कामिनि के प्यारे !
विद्यालय के गर्व ! सदा ही प्रात पूज्य हमारे ।।
ब्रजभाषा की मधुर काकिले । हे भवभूत्यवतार !
दीन हीन हम तुझे चढ़ाते अश्रुकणों का हार ।।

कविवर ! तेरा चित्र खींच कर चतुर चितेरा लाया !
माना सौम्य सुशील प्रेम ही स्वयं मूर्तिधर आया ।।
अथवा हिन्दी प्रीति अनूठी यहाँ सनी लिपटी है।
किम्वा पुंजीभूत माधुरी ब्रज की चित्रपटी है ।।

चुन चुन अनुपम कुसुम विधाता गूंथ रहा है हार !
शीघ्र राष्ट्रभाषा हिन्दी को दे देगा उपहार ।।

'नगेंद्र अमल'

(सेन्टजान्स कालेज आगरा मे कविरत्न प० सत्यनारायण के चित्रोद्घाटन के सुअवसर पर पढ़ी हुई)

(१५)

C/o डाक्टर रामगोपाल चतुर्वेदी
मकान न० १११७ सक्टर ८ रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२
१ ३ ६८

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! मैं यहाँ १८ को आ गया था । Prostrate glands की डाक्टरी जाच करानी थी, सो करा ली । पौरुष ग्रंथि तो बढ़ी हुई है ही किडनी मे तीन पथरी भी हैं । खैर यह तो शरीर की व्याधियां हैं—लगी ही रहती है और ७६ वा वर्ष मे स्वाभाविक भी हैं पर हिन्दी जगत जिस आधि व्याधि मे पीड़ित है वह निसन्देह चिन्ता का विषय है । हिन्दी संसार का नेतृत्व गलत हाथो मे पहुँच गया है । इस समय हम सबको मिलकर ध्वंसात्मक या खण्डनात्मक नीति का परित्याग करके रचनात्मक काय प्रारम्भ कर देने चाहिये । आप संक्षेप मे अपने विचार साप्ताहिक हिन्दुस्तान को लिख भेजें । मैं अभी दो चार दिन यहाँ हूँ । ब्रजसाहित्य मंडल के मकान या कोठी का

क्या हुआ? भाई हरिशङ्कर जी की बीमारी से चिन्ता रही। यह पढ़कर सन्तोष हुआ कि उनकी हालत अब धीरे धीरे सुधर रही है।

विनीत

बनारसीदास

उपरोक्त पत्र के साथ चतुर्वेदी जी ने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', २३ फरवरी, १९६९ के अंक में प्रकाशित अपने लेख का पुनर्मुद्रण भेजा था उसे हम ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं। इस लेख के माध्यम से हमें चतुर्वेदी जी के उन विचारों का बोध हो जाता है जिनके द्वारा वे हिन्दी आन्दोलन को एक रचनात्मक मोड़ देना चाहते हैं। —सम्पादक

हिन्दी-आन्दोलन को नया मोड़

हमें मातृभाषा हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि करनी होगी

—बनारसीदास चतुर्वेदी

गतवर्ष हिन्दी के पक्ष तथा विपक्ष में जो आन्दोलन उत्तर तथा दक्षिण भारत में हुए उनके विरोध अथवा समर्थन में हम कुछ नहीं कहना फिर भी हम इतना निवेदन अवश्य करेंगे कि वे दुर्भाग्यपूर्ण थे और उनसे शक्ति का अपव्यय तो हुआ ही—देश के धन तथा समय की भी जबरदस्त क्षति हुई—पर हां सबसे अधिक भयंकर दुष्परिणाम यह हुआ कि उत्तर तथा दक्षिण की जनता के बीच मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया। इस वक्त किसी पर भी दोषारोपण करने से कुछ भी लाभ न होगा। सर्वोत्तम तरीका यही है कि हम हिन्दी भाषा भाषी हिन्दी प्रचार की चिन्ता छोड़ कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगा दें।

सन् १९३८ में भी, जब मद्रास में हिन्दी विरोध की आवाज उठाई गई थी हमने एक लेख इसी आशय का 'प्रताप' में लिखा था। हम यह दावा नहीं करते कि उस समय जो कुछ हमने कहा था वह बिल्कुल ठीक था, अथवा जो प्रस्ताव हम इस समय रख रहे हैं वही वर्तमान परिस्थिति का सर्वोत्तम इलाज है। हमें विनम्रतापूर्वक इतना ही कहना है कि हिन्दी आन्दोलन के ध्वंसात्मक तरीके को हमने आजमा लिया, अब रचनात्मक तरीके को भी मौका दिया जाए। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हमारे नवयुवकों में हिन्दी के प्रति जो उत्साह उत्पन्न हुआ है, उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में कर देना चाहिए।

सबसे प्रथम हम गम्भीरतापूर्वक वर्तमान परिस्थिति पर विचार कर लेना चाहिए। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि कितने ही प्रतिष्ठित अहिन्दी भाषा भाषियों के मन में हिन्दी वालों की सद्भावना में ही सन्देह रहा है। उनके मन में यह आशंका रही है कि हम अपनी भाषा को दूसरों पर लाद देना चाहते हैं। स्वयं गुरुदेव (कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर) ने हमसे कहा था—

"आप हिन्दी की तलवार हमारे सिर पर क्यों लटकाते हैं ? अपनी भाषा में आप सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि कीजिए फिर हम सब लोग हिन्दी पढ़ेंगे।"

स्वर्गीय रामानन्द चटटोपाध्याय के विचार भी इससे मिलते जुलते थे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था—

"कराची कांग्रेस में जब एक सिंधी सज्जन सिंध के विषय में भाषण देना चाहते थे, तब कुछ हिन्दी वालों ने हिन्दी हिन्दी चिल्ला कर उन्हें बोलने से रोका! यह तो बहुत गलत बात है कि किसी सिन्धी को अपने प्रदेश में ही अपनी भाषा में न बोलने दिया जाए, और सो भी तब, जब वह सिंध के पृथक करण के प्रश्न पर बोलना चाहता हो।"

यह बात ध्यान देने योग्य है कि कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिन्दी के समर्थक थे, उसके शुभचिन्तक थे और रामानन्द बाबू को तो हिन्दी पत्र 'विशाल भारत' में पचहत्तर हजार रुपया का घाटा सहना पड़ा। ऐसे महापुरुषों की सद्भावना में हमें कोई आशंका न करनी चाहिए। स्वयं गुरुदेव ने कबीर की एक सौ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया था और वह हिन्दी के सन्त कवियों के अत्यन्त प्रशंसक थे। शान्ति निकेतन में उन्होंने हिन्दी भवन की स्थापना में भरपूर सहयोग दिया था।

गुरुदेव की चुनौती

गुरुदेव की इस चुनौती को 'आप लोग अपनी भाषा में महत्वपूर्ण साहित्य की सृष्टि करें तो हम सभी हिन्दी पढ़ लेंगे' हमें श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए।

आज से पांच छह वर्ष पूर्व दिल्ली में बन्धुवर चन्द्रगुप्त विद्यालंकार से इसी विषय पर हमारी बातचीत हुई थी और हमारे आग्रह पर उन्होंने रचनात्मक कार्य के लिए एक आयोजना तैयार की थी, उसकी एक प्रति हमने राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री सम्पूर्णानन्द की सेवा में भेज दी थी।

उनका जो उत्तर आया, उसका आशय इस प्रकार है। 'आप दिल्ली में बैठे-बैठे राज्यपाल पर हुक्म चलाते हैं कि यह कर दीजिए, वह कर दीजिए। यहाँ आकर काम क्यों नहीं करते?' खेद है कि अपने प्रमादवश मैं जयपुर नहीं जा सका और मामला जहाँ का तहाँ पड़ा रहा! अब पाँच वर्ष बाद उसी प्रश्न को फिर से उठाना आवश्यक हो गया है।

इस पत्र को प्रारम्भ करने के पहले हम कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लेने चाहिए।

(१) जो लोग खण्डनात्मक प्रवृत्तियों को जारी रखना चाहते हों वे खुशी से उन्हें जारी रखें, हम उन्हें रोकना नहीं चाहते, क्योंकि हमारे कहने से वे रुकेंगे भी नहीं। हाँ, हम इस रचनात्मक पत्र में उनका सहयोग नहीं लेना चाहते। राजनीतिक दलबन्दी से हम इसे बिल्कुल दूर ही रखना चाहते हैं।

(२) इसका संचालन मुख्यतया साहित्यिक तथा सांस्कृतिक व्यक्तियों के हाथ में रहना चाहिए।

(३) पक्षपातपरता से बचने के लिए यही सर्वोत्तम होगा कि किसी एक व्यक्ति को संयोजक बना लिया जाए और वह अपने समानशील तथा परस्पर-पूरक सहयोगियों को चुन ले।

(४) हमारे यहाँ एक कहावत है 'तालाब सूखा नहीं कि मगर आ कूदे।' इस साहित्य-सरोवर को मगरमच्छों से बचाने का भरपूर प्रयत्न किया जाए।

कुछ प्रारम्भिक काम

दिल्ली में साहित्यिकों की एक छोटी-सी सभा बुला ली जाए, पर उस से भी पूर्व एक गश्ती चिट्ठी घुमा दी जाए, ताकि हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखकों, कवियों, प्रकाशकों और शुभचिन्तकों के विचारों का पता लग जाए। वाद-विवाद से बचने का सर्वोत्तम तरीका यही है कि समानशील व्यक्तियों का ही सहयोग लिया जाए।

पहले तो हम सम्पूर्ण हिन्दी जगत की रचनात्मक शक्तियों का सर्वेक्षण कर लेना चाहिए। जो महान कार्य हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग तथा नागरी प्रचारिणी-सभा काशी द्वारा हुआ है, वह तो जग-जाहिर है, पर देश भर में फैली अन्य संस्थाओं ही द्वारा भारी हिन्दी-संस्थाओं के कार्य की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया। उदाहरण के लिए इन्दौर की मध्यभारत-हिन्दी साहित्य-समिति, हैदराबाद की हिन्दी प्रचार-सभा, मुजफ्फरपुर का सुहृद संघ

टीकमगढ की वीरेन्द्र केशव-साहित्य परिषद् आगरे की नागरी-प्रचारिणी-सभा, आरा की नागरी प्रचारिणी-सभा और मथुरा का ब्रजसाहित्य मडल तथा भरतपुर की हिन्दी साहित्य-समिति आदि के नाम लिए जा सकते हैं। उनके सिवा हिन्दी-जगत मे बीसियो ही ऐसी सस्थाएँ विद्यमान हैं, जिनके द्वारा भूतकाल म काफी काम हुआ है और जिनकी अन्त निहित शक्ति का यदि सदुपयोग किया जाए तो हिन्दी जगत मे युगान्तर उपस्थित हो सकता है।

ब्रज साहित्य मण्डल के हाथरस वाले अधिवेशन के समय जो जनपदीय परिषद् कायम हुई थी, उसे भी पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। वस्तुत वह तो अखिल भारतीय सस्था थी। आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल हमारे पथ-प्रदर्शक थे। उनके निधन से केवल हिन्दी जगत की ही नहीं समस्त देश की बडी हानि हुई है। सौभाग्य से उनका लिखा ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' मौजूद है और उसमे हम बहुत प्रेरणा मिल सकती है। बिहार की राष्ट्रभाषा परिषद ने और उत्तर प्रदेश क सरकारी प्रकाशन-गृह ने जो साहित्य-सृष्टि की है उसकी शतमुख से प्रशसा करनी चाहिए। यदि अन्य हिन्दी भाषी राज्य भी उनका अनुकरण करें तो बहुत काम हो सकता है।

हिन्दी-जगत के विश्वविद्यालयो म जो हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं, व यदि चाह तो हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक मोड देने म बहुत सहायक हो सकत हैं। यदि पूरी पूरी तयारी क साथ इस शुभ काय को प्रारम्भ किया जाए तो सवश्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी, धीरेन्द्र वर्मा नगेन्द्र जी, सत्येन्द्र जी, विनय मोहन शर्मा दीनदयाल गुप्त प्रभृति विद्वान इस यज्ञ के होता बन सकते हैं।

श्रद्धेय प० झाबरमल्ल शर्मा, भाई हरिशकर शर्मा और बन्धुवर हरिभाऊ जी उपाध्याय अपन घर के आदमी हैं और उनका सहयोग सुनिश्चित है। पर प्रश्न यह है कि इस यज्ञ का प्रारम्भ कौन कर ? दिल्ली मे राष्ट्रकवि दिनकर जी बन्धुवर बच्चन जी, डा० प्रभाकर माचवे श्री विष्णु प्रभाकर श्री यशपाल जैन श्री मन्मथनाथ गुप्त, भाई जगदीश चतुर्वेदी और श्रीमती सत्यवती मलिक को आग बढकर इस प्रश्न पर विचार तो कर ही लेना चाहिए। भाई चन्द्रगुप्त विद्यालकार तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति इस यज्ञ मे लगा सकते है। हमे विश्वास है कि सभा इत्यादि के लिए दिल्ली की हिन्दी सस्थाओ की सेवाएँ इस यज्ञ को समर्पित हो सकेंगी।

हम किसी से झगडा नही करना। यदि तमिल प्रदेश वाले अथवा बगाली भाई अग्रेजी को अनन्त काल के लिए अपने यहा रखना चाहें तो खुशी

से सख्त बचना है। हमें पूर्ण सहिष्णुता तथा दूरदर्शिता की नीति से काम लेना है। किसी पर भी हमें जोर-जबर्दस्ती नहीं करनी और सब की निस्स्वार्थ सेवा में ही अपना कल्याण मानना है।

भारत की सभी मुख्य मुख्य भाषाएँ राष्ट्रभाषा हैं और उनका गौरव भी सर्वथा समान ही है, पर हिन्दी उनकी बड़ी बहन है और उसका कर्तव्य है कि वह छोटी बहनों की सेवा करे लेकिन सेवा करने से पूर्व उसे सशक्त तथा समृद्ध बनना है। समस्त हिन्दी जगत में क्या पचीस-पचास व्यक्ति भी ऐसे न निकलेंगे जो अपना समय तथा शक्ति का एक अंश इस महान यज्ञ को अर्पित कर दें? अपनी मातृ भाषा हिन्दी में हमें सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि करनी है और भारत की अन्य भाषाओं से ही नहीं वरन संसार की मुख्य मुख्य भाषाओं से भी उच्च कोटि के ग्रन्थों का अनुवाद कराना है। यदि हम तन मन धन से काम करें और इस पवित्र कार्य में लग जाएँ तो सारे वातावरण में परिवर्तन आ जाएगा और तब हिन्दी के विरुद्ध भावना समाप्त हो जाएगी और अन्य भारतीय भाषाएँ भी हमारा हाथ बँटाने लगेंगी। तब निरर्थक शत्रुता का स्थान स्वस्थ प्रतिस्पर्धा ले लेगी।

हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक मोड़ देने का यही एक मार्ग है। नान्यः पन्था विद्यते।

(१६)

मकान नं० १११७ सेक्टर ८
रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली २२
३ ३ ६८

प्रियवर,

श्री देवेन्द्रसिंह विद्यार्थी एम० ए० २५१०/१९ सी चण्डीगढ़ (पंजाब) ने ग्वाल कवि पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत किया है। कृपया उनसे सम्पर्क स्थापित कीजिए। अगर उन्हें किराया देकर ग्वाल कवि वाले उत्सव पर बुलाया जा सके तो जरूर बुलावें। उन्हें भी आपका पता भेज रहा हूँ।

XRays have revealed 3 Stones (पथरी) in kidney Prostrate glands and piles are already there डाक्टर ने तो आपरेशन की सलाह दी है। फिलहाल मैं एक भी नहीं कराना चाहता। जो होगा, देखा जायगा। भाई हरिशङ्कर जी की तबियत सुधर रही है। उनकी बीमारी से चिन्तित रहा। पत्र लिखना अब कठिन है।

विनीत
बनारसीदास

(१७)

फीरोजाबाद
१६ ३ ६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

प्रणाम। कार्ड मिला भाई हरिशङ्कर जी का प्रयाण निस्सन्देह बड़ी साहित्यिक दुर्घटना है। अन्तिम सन्देश जो उन्होंने मुझे श्री कुसुमाकर जी के हाथ भेजा था, वह यह था कि अर्द्धशताब्दी पर जरूर जरूर आगरे पहुँचना है। यद्यपि स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति में मुझे यात्राएँ अत्यन्त कष्टप्रद होती हैं, तथापि आगरे तो पहुँचूगा ही। आप एक दिन के लिये यहाँ पधारिये। प्रथम बात तो यह है कि आप अपना भाषण लिखकर तैयार कर लें। यदि भाई हरिशङ्कर जी होते तो उनसे उसका संशोधन, परिवर्द्धन करा लिया जाता। अब कोई उस कोटि का विद्वान है ही नहीं—कम से कम अपने ब्रज जनपद में। इस अवसर को ऐतिहासिक महत्त्व देना है। ब्रज प्रेमी जितने भी व्यक्तियों को बुला सकें बुलावें। राजा महेन्द्रप्रताप भी पधार सकते हैं।

श्री उमरावसिंह जी पाण्डे C/o चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी को जरूर बुलाइये। मंडल के प्रारम्भ से ही वे उसके समर्थक रहे हैं।

डाक्टर सत्येन्द्र (जयपुर) को भी आना चाहिए। डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी से सन्देश तो आना ही चाहिए। एटा, भरतपुर अलीगढ़ हाथरस मैनपुरी, इटावा, शिकोहाबाद आदि की यात्रा भी आप कर लें। पालीवाल जी तो उन दिनों आगरे रहेंगे ही। जहाँ-जहाँ ब्रजसाहित्यमंडल के अधिवेशन हो चुके हैं वहाँ के चुने हुए साहित्यिक आने चाहिये। 'सैनिक' तथा 'अमर उजाला' दोनों के सम्पादकों से आप खुद मिलिये। Reporting ठीक हो। यहाँ कविरत्न जी के Enlargement में ८ ८) १० १०) में तैयार कराये जा सकते हैं—तैल चित्र ६०) में। उत्सव पर तो तैल चित्र रहना ही चाहिये। सत्यनारायण और उनके गुरुजी के चित्र का Enlargement मैंने भाई हरिशङ्कर जी के यहाँ रखवा दिया था।

मालती माधव तथा उत्तम रामचरित के छपाने का क्या प्रबन्ध होगा? हृदय तरङ्ग का भी संक्षिप्त रूप में छपाया जा सकता है। क्या आगरे के प्रकाशक कुछ भी सहयोग न देंगे?

ब्रजभूमि में स्थित कालेजों के हिन्दी अध्यापकों को अवश्य निमन्त्रित किया जाय।

ling people Genuine praise given at the proper time is a great stimulant

6 Do visit the मशहूर आम्रवन of स्व० प्रयाग नारायण अग्रवाल वकील of रावतपाड़ा। His son श्री प्रकाशनारायण (राजा बाबू) will take you in his jeep to the place It is only 8 miles off 7 on the Agra Gwalior Road and 1 mile kachcha road Go early in the morning ऊसर too desevers a visit Put your self in touch with D F O Sahib Possibly he has his quarters in विजय नगर colony Write about tree plantation in गोवर्द्धन also

7 I shall try to get a Copy of the photo of वन्दरगुरु with राष्ट्रपति

8 Note down all the anecdotes of वन्दरगुरु about [illegible]

9 Send the श्रद्धांजली material to Mr Chernishov Moscow

10 My Agra speech should be given immediately to the press and 250 extra copies taken send 100 to me

11 Could you sell ten copies of ग० ना० s biography ?
ग० ना० स्मारिका अभी तक नहीं मिला।

विनीत
बनारसीदास

(१९)

फीरोजाबाद
२ ४ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपका विस्तृत कृपापत्र मिला। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि साहित्यिक संस्थाएँ जनमत के आधार पर चलाई ही नहीं जा सकतीं। आप केवल उन्हीं आत्मीयों को साथ रक्खें जो आपके पूरक हों और आग्रही न हों। चुनाव की प्रथा ने कांग्रेस आर्यसमाज और साहित्य सम्मेलन सभी का खात्मा कर दिया।

मेरे पास कविरत्न जी की जीवनी की प्रतियाँ हैं। प्रत्येक प्रति का मूल्य ४) चार रुपया है यदि वे तीन चार रुपया में भी बिक सकें तो मैं उन्हें बेच देना चाहता हूँ।

(१) इसमें स्वयं अमृतलाल जी के श्रीमुख से स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता (पुनर्जन्म) का अनुवाद छपवाना ठीक होगा।

(२) स्वय आपके मकान के Hall म ब्रजमण्डल के लेखको तथा कवियो के चित्र होने चाहिय। दो तीन तल चित्र शेष साधारण।

(३) आपका सग्रहालय सवथा निजी ही होना चाहिये।

मुख्य स्वास्थ्य सपादन करना है।

विनीत
बनारसीदास

(२०)

फीरोजाबाद
२ ५ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

पत्र मिला।

(१) सग्रहालय* की बात पढकर बहुत खुशी हुई। सम्पूण ब्रजभूमि के लेखको कवियो, कलाकारो, पहलवानो इत्यादि के चित्र आपके यहा सुरक्षित रहने ही चाहियें। उर्दू वालो के तथा खडी बोली के कवियो के भी चित्र रखिय।

(२) जो भी काम आपने किया है तथा कर रहे हैं उसका महत्व आगे चलकर ही आँका जा सकेगा।

(३) चर्नीशाव को अभी तक न आपकी भेजी सामग्री मिली, न मेरी। कल उनका खत आया है।

(४) समय के देखत आगरे के उत्सव अत्यन्त सफल और महत्वपूर्ण रहे। एकाध त्रुटि तो हो ही जाती है।

(५) सबसे जरूरी काम स्वस्थ रहना है। In tiptop condition of health ज्यादा यात्राएँ (सो भी इस ऋतु म) आपकी तन्दुरुस्ती को हानि पहुँचा सकती हैं। Beware !

मेरा भाषण तो जल्दी कम्पोज हो जाना चाहिय।

बनारसीदास

---

* मैंने चतुर्वेदी जी को ब्रज मे एक सावजनिक पुस्तकालय एव सग्रहालय स्थापित करने के अपने विचार से अवगत कराया था। प्रस्तुत पत्र मे तथा और भी अनेक पत्रों मे चतुर्वेदी जी ने उसके सम्बन्ध मे बडे महत्वपूर्ण मौलिक सुझाव दिये हैं। एतदथ मैं उनका आभारी हूँ।

(२१)

फीरोजाबाद
६ ५ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपकी पुस्तक की भूमिका मैंने तैयार करली है और उसे मैं कल आपकी सेवा में रजिस्ट्री से भेज दूँगा। प्रूफ बहुत सावधानी से देखिये।

अगर कोई त्रुटि या कमी रह गई हो तो कृपया ठीक कर लीजिये। उस भूमिका के एक सौ 100 Reprints मुझे जरूर चाहिये। किसी अच्छे रचना के लिए तो / ७ दिन का सत्सङ्ग अनिवार्यतः आवश्यक है। उसका अवसर भी कभी न कभी मुझे मिलेगा किन्तु तब यह भूमिका ही पर्याप्त होगी। मैंने इसे यह प्रातःकाल के परिश्रम से लिखा है और उससे मुझे संतोष है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

निरन्तर वजन घटते जाने से मैं चिन्तित हो गया था और दिल्ली जाने का निश्चय सा कर चुका था पर अब यहीं ही रहने का सोच रहा हूँ।

(२२)

फीरोजाबाद
१८ ५ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

स्वर्गीय भाई हरिशङ्कर जी शर्मा के उन पत्रों की तलाश कर रहा था जिन्हें वे पिछले चालीस वर्षों से मेरे पास भेजते रहे थे। अब वे पत्र इकट्ठे कर लिये गये हैं और उनकी संख्या २७८ है। शायद ऐसी कुछ चिट्ठियाँ और भी निकलेंगी पर उनकी प्रतीक्षा किये बिना इन २७८ पत्रों को टाइप कराने के लिए मैं दिल्ली भेज रहा हूँ। प्रत्येक पत्र की पाँच-पाँच प्रतियाँ टाइप होंगी।

विनीत
बनारसीदास

(२३)

फीरोजाबाद
२२ ५ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

व्रजभूमि के साहित्यिकों से आपका सम्पर्क बना रहना चाहिये। अन्य जनपदों के कार्यकर्ताओं से भी सम्बन्ध रखना ही पड़ेगा।

विशाल हरियाणा वालो की महत्वाकांक्षा पर एक छोटा सा पत्र नवभारत टाइम्स मे जा सकता है। "अपनी बात" शीर्षक के नीचे।

इस मौसम म आप यात्राएँ यथासम्भव न कीजिये। Conserve every bit of your energy for the great cause मेरे पूज्य पिताजी जिनका जन्म मथुरा म ही हुआ था ६२ वष जीवित रहे थे। आपको भी शतायु होना चाहिये। अत्यधिक काम (Over work) करना भी एक भयकर दुगुण है और झगडे स हम दूर ही रहना चाहिये।

लोक सग्रह की भावना से काम लेना है, पर साथ ही साथ फालतू समय बर्बाद करने वालो स दूर ही रहना है। हमारे देश मे ऐसे युवक बहुत हैं जो कुछ काम न करके दूसरो से लाभ उठाने की बात निरन्तर सोचा करते है।

एक बात और भी—हिन्दी जगत के अधिकाश नेता जिनके नाम पत्रो म छपते रहते है आत्म-केन्द्रित व्यक्ति हैं। दूसरो का शोषण करके अपना उल्लू सीधा करन म वे कुशल हैं। हम लोग उनके चक्कर से बचें, इसी म हमारा कल्याण है।

हिन्दी प्रचार काय के साथ-साथ आपका साहित्य रचना का काय भी चलता रहे। और घर वालो की उपेक्षा हरगिज न हो।

हम अपने उत्सव सर्वोत्तम ऋतुओ म ही रखने चाहिये। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है।

विनीत
बनारसीदास

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे चतुर्वेदी जी के पत्रकी प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
२२ ५ ६८

प्रिय श्री दुबे जी

सादर प्रणाम।

करा कविरत्न स्मृति ग्रन्थ की दस प्रतियाँ मिली, अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

श्री गिरिजा शङ्कर दुबे ने मुझे तीस रुपये अभी तक नही दिये। ऐसी भूल उन्होने क्यो की मैं कह नही सकता। आप उन्हे एक पत्र तो भेज ही दीजिये।

स्मृति-ग्रन्थ धीरे धीरे पढ़ूँगा। सत्यनारायण तथा सरसरी निगाह से देखनी है। आपने खूब लिखा है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि आपके सदुप्रयत्न से सनेही के ग्रन्थों का भी उद्धार हो जायगा। बड़ा पुण्यकार्य है।

ना प्र सभा ने शायद हृदय तरङ्ग को छपाने के लिये पूरा पूरा प्रयत्न नहीं किया। कितनी प्रतियाँ वहाँ बची हैं?

आप श्री वृन्दावनदास जी के सहयोग से ब्रजमण्डल में साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य को आगे बढ़ावें। अधिकारी वर्ग यदि चाहें तो वे बहुत उत्कृष्ट काम कर सकते हैं। पर हमारी सरकार में इतनी कल्पनाशक्ति नहीं कि वह इस दिशा में प्रोत्साहित करे। मुझे तो यह आशङ्का है कि कहीं सरकार की ओर से आप जैसे सदुद्देश्ययुक्त हिन्दी सेवी के मार्ग में कोई बाधा न आवे। अपनी परिस्थितियों पर ध्यान रखते हुए जो भी कार्य आप कर सकें करते रहें।

साथ वृन्दावनदास जी का रेखा चित्र मधुकर में छपवा दिया है। कृपया पढ़ लीजिये।

सत्यनारायण जी के प्रति आपकी भक्ति से मैं गद्गद् हो गया हूँ। धाँधूपुर तथा आगरा में उनकी स्मृति रक्षा के लिये कुछ प्रयत्न होना ही चाहिये।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(२८)

फीरोजाबाद
८-६-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बिना किसी तरतीब के जैसे विचार मन में आते जायेंगे लिखता रहूँगा।

बिना यजमान-समूह के कोई यज्ञ सफलता पूर्वक नहीं हो सकता और यजमानों (जिजमानों) का Humour करना पड़ता है।

अभी हाल में श्री श्यामसुन्दर गर्ग (पता Hindi Printing Press १८६६ शिवाश्रम Queen's Road Delhi) ने उग्र जी की स्मृति में मतवाला का वार्षिक अङ्क निकाला है। वे अलीगढ़ जिले के हैं। अपने प्रेस द्वारा शुभ कार्यों में वे मदद भी देते रहते हैं। Try to rope him in for our ब्रज साहित्य मण्डल में। ना० कविरत्न का जन्म तो अलीगढ़ जिले में ही हुआ था।

यहां आपके रिश्तेदार आउम् भी समझदार आदमी है। सो पचास रुपये खर्च कर सकते हैं।

मालूम नहीं श्री मीतल जी अपने प्रेम द्वारा कुछ सेवा करेंगे भी या नहीं।

हां अमृतलाल जी चतुर्वेदी का इस शुभ अवसर पर सम्मान हो जाय तो अत्युत्तम हो। वे ७० के करीब पहुँच चुके हैं। काफी अच्छा लिखते हैं। Handle him through his son in law डाक्टर राजेश्वर प्रसाद Who belongs to मथुरा। तोरा में हाईस्कूल (स० ना० कविरत्न के नाम पर) कायम होने की बात थी। उसका क्या हुआ ? उत्तर रामचरित, मालती माधव और हृदय तरङ्ग तो अब कोई भी छाप सकता है। यदि ब्रजमंडल में ब्रजभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाय तो इन पुस्तकों को छापने में घाटा न रहेगा।

स० ना० जी के चित्र Cabinet Size से लगाकर वृहदाकार भी इस समय तैयार कराये जा सकते हैं। 'जो मोसा हूँमि मिलै होत मैं तासु निरंतर चेरो" तो उनके हस्ताक्षर में ही विद्यमान है। कुछ प्रति स० ना० जीवनी की विक्रयार्थ मेरे पास हैं। हृदय तरङ्ग की प्रतियाँ ना० प्र० सभा में होंगी।

I have returned rather shoken form Delhi It is very dangerous for me to move out of my place Whether I go to Agra or not my heart will be there in your function

बकौल इकबाल—

"समझो हम वहाँ ही दिल हो, जहा हमारा"

With prostrate glands three stones in the kidney, as well as old piles I can not afford to waste my energy now

विनीत
बनारसीदास

(२५)

फीरोजाबाद
१३ ६ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

चिट्ठी मिली। अभी उस दिन राजा बहादुर श्री मधुकर शाह (स्व० महाराज वीरसिंह जू देव के पौत्र, और वर्तमान ओरछा नरेश के पुत्र) यहां

कुछ घंटों के लिए पधारे थे। दिल्ली वि॰ वि॰ से इतिहास में M. A. पास किया है और अब Regular किसान बन गये हैं। उन्होंने अपने खेतों में ३५० क्विंटल गेहूँ पैदा किया है। बड़ी मीठी बुन्देलखंडी बोलते हैं तबीयत खुश हो गई। वे कहते थे 'टीकमगढ़ में युवक अब बुन्देली बोलने के बजाय खड़ी बोली बोलने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बुन्देली बीस वर्ष में खतम हो जायगी।''

यह सुनकर हृदय को धक्का लगा। ब्रजभाषा बोलने वाले भी कम होते जाते हैं। इस अनाचार को रोकना चाहिए। घर पर और आपस में ब्रजभाषा का व्यवहार करना ही चाहिए।

आप अपने गाजियाबाद वाले भाषण में इस बात का भी जिक्र करें।

गाजियाबाद के भाषण की तैयारी के लिए समय तो कम रह गया है फिर भी सहयोगियों तथा मित्रों से परामर्श तुरन्त मँगावें। श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी सरस्वती सम्पादक को लिखें। श्री उमराव सिंह पाण्डे चतुर्वेदी पुस्तकालय मैनपुरी को भी। सीतल जी से मिलकर बातचीत कर लें और श्रद्धेय प्रद्युम्न जी ब्रह्मचारी जी से भी। श्री श्यामसुन्दर गर्ग (हिन्दी प्रेस, दिल्ली) अनागर के रहने वाले हैं। भले आदमी हैं। बहुत बढ़िया प्रेस है। उनसे भी कभी मिलें। उनको परिचय पत्र श्री अजय कुमार जैन को भेज दिया जायगा। वे भी अलीगढ़ जिले के हैं और यशपाल जैन भी। दिल्ली जाने पर आप मो॰ बहिन सत्यवती मलिक 5/90 कनाट सर्कस नई दिल्ली में जरूर जरूर मिलें। Rivoli Cinema के सामने जो सड़क सरगम शहर को जाती है उसी पर दूसरा मकान है ताला चक्कर जाना होता है। दिल्ली के हिन्दी भवन की स्थापना में सबसे बड़ा हाथ इन्हीं का था। उनके पूज्य पति श्री रामलाल मलिक वकालत करते थे। कान्त मलिक उनका सुपुत्र स्टूल योग्य है, दूसरा सुभाष मलिक आर्कियोलाजिकल विभाग में उच्चपद पर है। श्री कपिला वात्स्यायन (लड़की) शिक्षा विभाग में उच्चपद पर हैं। मेरी पुस्तक रेखा चित्र में सत्यवती जी का स्केच पढ़ लें। यशपाल जी (सस्ता साहित्य मण्डल) आपको उनसे मिला न लावेंगे।

श्री रामराज्य ने भी आपका स्केच छाप दिया है। इसके सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त—राय नगर कानपुर—उत्तम आदर्शवादी पत्रकार हैं। मिलने लायक आदमी हैं। कभी होने पर कभी कानपुर जाकर उनसे जरूर मिलें।

(१) एक पत्र श्री मधुकर शाह (राजा बहादुर) M. A. कुण्डेश्वर टीकमगढ़ को भेजें। उन्हें ब्रजभारती का पिछला अङ्क भी। यह भी कहें

लिखें कि उनके पितामह महाराज वीरसिंह जू देव न व्रजभाषा के लिय जो कुछ किया, हिन्दी जगत तदथ उनका ऋणी है। उनके पूवज महाराज वीरसिंह जू देव न मथुरा मे जो कुछ किया था उसका भी हाल सुनाएँ। उन्हे मथुरा निमंत्रित भी करें। व २२-२३ वष के हाग।

(२) कैमरे का प्रयोग शीघ्र ही सीखिये। जापानी Reflex कैमरा ४०० ५००) म आवेगा। किसी विशेषज्ञ का मारफत ही खरीदें। क्षणो को स्थायी बनाने का सर्वोत्तम तरीका है।

(३) जहाँ कही भी जावें वहाँसे लौटत वक्त निकटस्थ Best natural Scenery के दशन करत हुए आवें। यह विचार स्व० भाई माखनलाल चतुर्वेदी का है।

(४) यजमान सग्रह निरन्तर होता रहना चाहिये। चूकि आपको अपने लिये कुछ भी नही चाहिये, इसलिए यह अपेक्षाकृत आसान भी है। और Last but not the least do not over strain your self हर हालत मे पूण स्वस्थ रहना ही है। भोजन के मामले म अत्यन्त सावधान रहें। बल्कि Cooker साथ रक्खें। Henry Ford अरबपति होने पर भी तीन दिन के भोजन का सामान सदव अपन साथ रखता था और डाक्टर रघावा I C S अपना घी साथ लेकर चलते हैं। बाहर भोजन करने म अत्यन्त खतरा है। निकृष्ट भोजन मिलता है। Yon must be able to say 'No to any one, when they give you हानिकारक भोजन। मुझे लेटे रहन के लिये कहा गया है, फिर भी आप जैसे सुहृदों का पत्र लिखे बिना नही रह सकता।

बनारसीदास

पुनश्च—

भाई वाचमुकुन्द जी चतुर्वेदी म कहदें कि यद्यपि उस समय मुझे बुरा लगा था, पर मेरे हृदय में उनके प्रति सद्भावना ही है। गलत फहमियाँ होती ही रहती हैं। श्री राजाबाबू (प्रतापनारायण अग्रवाल रावतपाडा) का इटौरा Garden अवसि देखिये देखन जोगू।

(२६)

फीरोजाबाद

८ ७-६७

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मैं अब तारनुमा पत्र ही लिखूँगा, क्योंकि समय अब कम मिल पाता है—ज्यादातर विश्राम ही करना होता है—और मतलब की बात

सागर में निराला का अभ्यास शुरू करता है। नव भारत टाइम्स के बम्बई सम्मेलन ने आपका स्वागत छाप दिया है यह बड़ी खुशी की बात है।

स्वागत अच्छे ग्वालियर के लिए एक सप्ताह साथ रहना जरूरी है। वह मौका कभी न कभी आवेगा ही।

मेरी तबियत सुधर रही है। वजन भी पौण्ड बढ़ा है—पहले तो २०-२५ पौण्ड कम हो गया था। और तीन चार महीने में स्वस्थ हो जाने की आशा बँध गई है। आप सब की सद्भावना तथा आपका सत्संग साथ में हैं ही।

आवश्यक काम

(१) एक पत्र श्री डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी M A Ph D D Lit मानता गली आगरा को लिखकर स्वर्गीय श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी के स्वास्थ्य की बाबत पूछिये। राजेश्वर जी उनके जामाता हैं। उन्हें शिकायत है कि उन्हें गाजियाबाद अधिवेशन का निमंत्रण भी नहीं मिला। अमृतलाल को भी नहीं मिला। वे तो मथुरा के ही हैं। निमंत्रण पत्र उन्हें जाना ही चाहिये। उनकी तबीयत अब ठीक नहीं रहती है।

(२) एक पत्र श्री प्रतापनारायण अग्रवाल (राजा बाबू) रावतपाड़ा आगरा को लिखिये। उनके २३० पत्रक बाँध वाला उत्तर आपको लिखना है। उस पर मनिक में मेरा एक लेख १० ११ दिन पहले छपा था। उस पर गौर करिये। राजाबाबू के पास जीप है। वे उसे आपको लिखना होगा। ६½ हजार आम के पेड़ हैं। नीचे सूचना है। अवधि लिखिये स्वयं याद"।

(३) नरवर में राजघाट के पास एक संस्कृत महाविद्यालय है। वहाँ का भी तीर्थयात्रा आप को करना है। स्वर्गीय जीवनदत्त की अमर कीर्ति का वह स्मारक है। संस्कृत के अनेक विद्वान वहाँ से निकले हैं।

(४) श्री अजय जी के पिताजी के ग्रंथ मिल सकें तो ज़रूर करके रख लीजिये। उन्होंने अपने पत्र में इस बात पर बहुत दुःख प्रकट किया है कि आपके साथ उनका सम्बन्ध इतना पुराना निकला।

(५) ब्रजभूमि में जहाँ जहाँ जो भी अच्छा काम हो रहा हो उस पर आपकी दृष्टि जानी ही चाहिये। सिरमागंज में एक गुरुकुल खुला है। ६० विद्यार्थी पढ़ते हैं। २८० बीघा जमीन एक जमींदार ने दी है। छलेसर का बहुत वन (आगरे से ७ मील दूर) जरूर देखिये। वह का स्थान है। श्रीराम जी शर्मा की दुसायनी का नव जीवन धाम आगरे से २१ मील की दूरी पर है—

फीरोजाबाद से ७ मील। हरिभजन शर्मा वल्का बस्ती आगरा से पत्र व्यवहार कीजिए, श्रीराम जी उनके बहनोई थे।

(६) भाई हरिशङ्कर जी का एक महत्वपूर्ण पत्र नकल कराके Reg भेजता हूँ। ५ प्रतियाँ टाइप करा लीजिये। एक प्रति श्री विद्याशङ्कर शर्मा, शङ्कर सदन, लोहामंडी Agra को भेज दीजिये।

अभी भाषण को इधर उधर से देख लिया है। आपने मेरी जो प्रशंसा की है उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(२७)

फीरोजाबाद
१० ७ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। ब्रज के पचासों फलत फूलत वृक्षों की पुकार आप तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। मैं तो चौकीदार मात्र हूँ— कमिश्नर तो आप ही हैं। चाहे परिणाम कुछ न निकले पर 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' की बात तो ब्रजराज ने ही कही थी।

मेरी तीर्थ यात्रा शीघ्र ही नख सनग्न है।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी का लेख डा० प्रयागनारायण अग्रवाल के उपवन पर

मेरी तीर्थयात्रा

आगरा जनपद का सर्वोत्तम उपवन

—बनारसीदास चतुर्वेदी

कई वर्ष पहले की बात है जब भाई श्रीराम जी शर्मा ने मुझसे बाबू प्रयागनारायण जी वकील के इटौरा वाले बाग का जिक्र किया था और यह बतलाया था कि आगरा जिले का वह सबसे बड़ा बगीचा है। तभी मेरे हृदय में उसके दर्शन करने की इच्छा उत्पन्न हो गयी जो गत अप्रैल महीने में पूरी हो सकी।

उद्यानों को मैं मन से सुन्दर मन्दिर मानता रहा हूँ। मैंने बौद्ध ग्रन्थों में पढ़ा था कि भगवान गौतम बुद्ध अपना समय अधिकतर आम्र उद्यानों में ही व्यतीत करते थे। [illegible] गणतन्त्रवाले आम्र [illegible] में रहा करते थे। [illegible] वर्णित है जिसमें सात हजार आम के पेड़ खड़े हैं। मैं उसके दर्शन के लिए जाना चाहता था और उसके मालिक से मैंने पत्र-व्यवहार भी किया था पर मैं वहाँ जा न सका।

इस बार मैंने भाई अमृतलाल जी चतुर्वेदी से जब [illegible] बाग का ज़िक्र किया तो उन्होंने बतलाया कि वे उसके मालिक [illegible] बाबू को भली भाँति जानते हैं और सब यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे। तदनुसार मैंने वहाँ की यात्रा की। श्री [illegible] बाबू स्वयं ही अपनी कार में आये थे। अमृतलाल जी भी साथ में थे। [illegible] से आठ मील की दूरी पर है जिसमें सात मील तो पक्की सड़क है और तदनन्तर एक मील कच्चा।

उद्यान का क्षेत्रफल मैं भूल गया। इस बाग का क्षेत्रफल २३० एकड़ बीघा है। जिसमें कुछ [illegible] बोया भी जाता है और बाकी में आम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिना बीज का [illegible] [illegible] मिश्री [illegible] [illegible] इत्यादि के वृक्ष हैं। [illegible] भी [illegible] हैं। [illegible] [illegible] पेड़ भी है और [illegible] भी [illegible] हो जाता है। [illegible] १५ वर्ष में होते हैं और [illegible] २४ वर्ष में।

मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि इस उद्यान में कोई सौ मन गुलाब हर साल उतरता है। नाम लिख लिये थे आम कई तरह के हैं—

[illegible] [illegible] [illegible] (गोला) [illegible] [illegible] [illegible] गुलाबजामुन [illegible] बम्बई फजली [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बम्बई और [illegible]। इस उद्यान में आमों के छः हजार पेड़ हैं।

पर जिस चीज़ को देखकर मैं सबसे अधिक प्रभावित हुआ वह है कई फर्लांग लम्बी जामुनों की कतार। यह [illegible] में [illegible] जाने वाली [illegible] की सड़क के किनारे है।

यह बात आश्चर्यजनक है कि इतने बड़े बगीचे में कुल बारह आदमी पक्के नौकर हैं। हाँ फलों की तुड़ाई के वक्त सौ-सौ आदमी तक रख लिये जाते हैं। यह उद्यान स्वावलम्बी है अर्थात् अपना खर्चा स्वयं ही चलाता है।

कृषिशास्त्र म ट्रेण्ड कोई बी० एस सी० यहाँ नही है और न कोई फाम सुपरिण्टेण्डेंट। यह सारा काम राजाबाबू खुद ही कर लेत हैं।

शहतूत की लम्बी कतारों को देखकर मैं पूछ बठा कि इतने शहतूत क्या लगा दिय हैं तो श्री राजाबाबू न बतलाया कि शहतूत का पेड जल्दी लग जाता है और अपनी घनी छाया द्वारा दूसरे पौधो को लू स बचान मे सहायक होता है।

इस उपवन के लिये सबस बडा सवाल पानी का है। यद्यपि आज सारे गाव म टयूब वल की व्यवस्था हो गयी है और बिजली स पानी मिल जाता है, लेकिन इस बडे बगीचे के लिये यह सम्भव नही हो सका।

एक बात सुनकर बहुत आश्चय हुआ कि किसी भी सरकारी अफसर ने यहाँ आज तक पधारने की कृपा नही की। हाँ, एक बार श्री चरनसिंह जी अवश्य पधारे थे और वह भी उन्हें यहा मजबूरन आना पडा था। उनकी मीटिंग तो किसी दूसरी जगह रखी गयी थी, पर वहाँ इन्तजाम नहीं हो सका, तो उन्ह यहाँ आना पडा। यदि कोई दूसरा देश होता तो इस उपवन की कीर्ति मुल्क भर मं फल जाती। पर इस अभाग देश मे ऐसे रचनात्मक कार्य की कद्र करने वाला कोई भी नही। एक बार आल इण्डिया रेडियो, देहली ने श्री राजाबाबू को रेडियो पर बुलाया था पर बगीचे के बारे मे बातचीत करन के बजाय उनसे अन्य अनावश्यक बातो पर चर्चा कराते रहे।

सबसे अधिक दुख मुझे यह जानकर हुआ कि पास पडोस के गाँव वाले इस उपवन के महत्व को अब तक नही समझ पाये। और उन्होंने इसे नष्ट करने के लिए भरपूर प्रयत्न भी किया। पौने दो वष सशस्त्र पुलिस का प्रबन्ध रखना पडा। एक बार तो कारिंदे को बन्द कर वे सारा अनाज लूट ले गय। भला हो कलक्टर रना साहब का जिनकी बदौलत यह बाग बच गया।

बाग के सामने एक सकट उपस्थित हो गया है। बाग सट्रल रेलवे के किनारे है और सरकार की आर से उसे नोटिस मिला है कि डबल रेलवे लाइन पडने के कारण इस बगीचे की ५ फर्लांग लम्बी और बीस पच्चीस फीट चौडी भूमि पर सरकार अधिकार कर लेगी। मिटटी खोदने के लिये बने बनाये उपवन को खन्ति करने की यह मूर्खता रेलवे विभाग करने जा रहा है, जब कि वह दूसरी ओर की जमीन से काम चला सकता है।

मैंने उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महोदय की सेवा में निवेदन किया है कि वे इस उत्कृष्ट उपवन को नष्ट भ्रष्ट होने से बचावें यद्यपि मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि हमारी सरकार बिना धनघोर आन्दोलन किये कुछ भी नहीं करती। आज के युग में जब कि फलों तथा सब्जी के उगाने पर इतना जोर दिया जा रहा है, किसी फलते फूलते बगीचे की हत्या करना घोर जघन्य अपराध है।

मैं इस बात के लिये बहुत लज्जित हूँ कि इस उपवन की तीर्थ यात्रा मैंने इतने वर्ष बाद की और अब प्रायश्चित स्वरूप प्रतिवर्ष वसंत ऋतु में उसे प्रणाम करने के लिये जाया करूँगा। और स लगे ६ हजार आम्रवृक्षों को मैं पगगा नमस्कार करता हूँ।

आगरा जनपद के जिन सुशिक्षित व्यक्तियों ने इस उपवन को नहीं देखा उन्हें मैं अभागा मानता हूँ और उनके ज्ञान को बिलकुल अधूरा।

(२८)

फीरोजाबाद
१३ ७ ६८

प्रियवर,

पत्र मिला। ये काम आप कीजिये।

(१) डाक्टर राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी एम ए पी एच डी डी लिट नानना गली आगरा से उनके भाई श्रीनारायण जी चौबे का पता मँगा लीजिये।

(२) श्री प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू) रावतपाड़ा आगरा से पूछिये कि क्या उनके बाग में जामुन अब भी आ रहे हैं, यदि आते हों तो उन्हीं के भोज के लिए उस उपवन की तीर्थयात्रा कीजिये।

(३) श्री शिवप्रतापसिंह गुरुकुल सिरसागंज जिला मैनपुरी से उनकी संस्था का हाल पूछिये।

(४) श्री कुसुमाकर जी, आर्यनगर फीरोजाबाद और श्री बालकृष्ण गुप्त हनुमान गंज फीरोजाबाद से पूछिये कि स्व० हरिशङ्कर जी की स्मृतिरक्षा का कार्य कहाँ तक आगे बढ़ा है।

(५) श्री श्यामसुन्दर गर्ग हिन्दी प्रेस वर्ी गरोह हिन्दी अपनी व्रजभूमि अलीगढ़ के ही हैं। उनसे अनुरोध कीजिये कि सत्यनारायण कविरत्न तथा हरिशङ्कर शर्मा की कीर्तिरक्षा में सहायक हों। वे दोनों अलीगढ़ के ही थे।

(६) श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी तथा मातन जी से स्वय मिलकर मेरा प्रणाम कहिये और उनसे यह भी कहिये कि मेरा स्वास्थ्य अब सुधर रहा है। कभी मथुरा वृन्दावन की तीर्थयात्रा करूँगा। मीतल जी के पत्रै वसूल करने ही हैं।

Matter of fact पत्र लिख रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(२८)

फीरोजाबाद
१८ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे। कल मैं सिरसागंज गुरुकुल को देख आया। तबियत खुश हो गई। दो पौधे लगा आया—एक गुलमुहर का दूसरा हारशृङ्गार का। वह एक ग्रामीण संस्कृत पाठशाला है और उसके पास जमीन भी है। विद्यार्थी ८० ८२ हैं। कई परामर्श भी दे आया हूँ। ट्यूबवैल होने के कारण हरियाली काफी है। कुछ फोटो भी मैंने लिये थे। शायद २/१ ठीक आवें, क्योंकि धूप अच्छी नहीं थी। कभी आप भी देखें।

आप इन्दौर वाले उपवन को तो यथासम्भव शीघ्र ही देखें। नरवर की संस्कृत पाठशाला को भी। साहित्यिक कमिश्नरों का यह कर्तव्य भी है। आप अवश्य ही मेरे इन परामर्शों से तंग आ गये होंगे। पर क्या करूँ लाचार हूँ। सत्परामर्श देने की बीमारी मुझे विरासत में मिली है।

हाँ श्री श्यामसुन्दर जी सुमन को बुलाकर समझा दीजिये कि ना समझी से भरे पत्र न लिखा करें। उन्होंने टाइप कराकर ८, १० पत्तियाँ लिख भेजी थी और यह उम्मेद रखते थे कि मैं उन पर हस्ताक्षर कर दूँ। किसी भी प्रतिष्ठित लेखक का यह अपमान है। जब मैंने उस पर हस्ताक्षर न किये तो मुझे खरी खोटी सुना रहे हैं 'आप नवयुवकों की उपेक्षा करते हैं,' इत्यादि। हालाँकि इस अस्वस्थावस्था में भी मैंने कुछ पत्तियाँ लिख भेजी थीं। इस तरह के सर्टीफिकेट पाने का मोह वे छोड़ दें।

विनीत
बनारसीदास

(३०)

फीरोजाबाद
१४-८-६८

प्रिय भाई वृन्दावन दास जी,

कृपापत्र मिला।

महात्मा गांधी जी एक एक पत्र में चार चार चिट्ठियाँ भेज दिया करते थे, यद्यपि वे छोटी छोटी हो जाती थीं। उन्होंने अपने जीवन में एक लाख पत्र तो लिखे ही होंगे जिनमें कुल जमा २०-२५ हजार सुरक्षित रह गये हैं। [उनमें १०१ मूल पत्र मेरे पास हैं। पत्रों की दृष्टि से मैं लखपती हूँ। सौ वर्ष बाद इन पत्रों का मूल्य कितना हो जायगा।]

१९६९ में गांधी शताब्दी मनाई जा रही है। बापू की नकल करके हम मैं भी तीन चार पत्र इसी लिफाफे में रखे देता हूँ। तब हिन्दी प्रचार समाचार में आपके शुभनाम का उल्लेख है।

चि० नरेश को ६०)७०) में अच्छा कमरा शायद मिल जायगा। श्री मोहन जी का भी कृपापत्र मिला है। शंकर राठौर साहब का भी। डा० राठौर अत्यन्त कुशल सर्जन हैं। मथुरा का यह सौभाग्य है कि ऐसे प्रतिष्ठित सिविल सर्जन वहाँ पहुँच गये हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

(१) श्री पंकज (नानाराम जी बाग मुजफ्फर खाँ) से तो कविरत्न के समस्त ग्रंथों का संग्रह छाप रहे हैं। साधनहीन होने पर भी उनका यह सत्साहस अत्यन्त प्रशंसनीय है। कृपया उनको सहयोग दीजिये। क्या श्री दुबे जी से सहयोग नहीं मिल सकता? कार्य महत्वपूर्ण है।

(२) चि० नरेश के स्वर्गीय पिता (स्व० रामनारायण चतुर्वेदी) का नवनीत जी विवरण स्वयं पढ़वा दीजिये। इससे शायद वे परिचित हों। वे प्रतिभाशाली थे। नरेश सिर्फ तीन वर्ष का ही था—(सन् १९२६ में) जब रामनारायण का स्वर्गवास २८ वर्ष की उम्र में हो गया था। वे History में First Class first थे—आगरा कालेज में इतिहास के अध्यापक थे। नरेश पितृ प्रेम से बिल्कुल वंचित रहा।

(३) एक पत्र श्री हरिभजन शर्मा (श्रीराम शर्मा का मकान बल्का बस्ती, आगरा) को भेजिये। स्व० श्रीराम जी के सारे हैं। उन्हें प्रेरित कीजिये कि वे श्रीराम जी विषयक सामग्री का व्यवस्थित कर दें। नव जीवन फार्म का भी हाल उनसे पूछ लीजिये।

(४) डा० दयाशङ्कर शर्मा, न्यू राजामंडी Agra से स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा की जीवनी के काम को सुचारु रूप से करने के लिए कहिये।

(५) श्री प्रकाशवीर जी को मेरा प्रणाम कहिये।

(३१)

फीरोजाबाद
१९ ८ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

स्वर्गीय शिवपूजन जी तथा स्व० अग्रवाल जी के पत्रों की नकल आपकी सेवा में रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से कल भेज दूँगा। चूँकि आप साहित्य के प्रेमी हैं इसलिए इसे अपने संग्रह में सुरक्षित रक्खेंगे और पत्र भी समय समय पर भेजता रहूँगा। आज अखबारों में पढ़ा कि आपके यहाँ बड़े जोर की वर्षा हुई है। आशा है कि आप सकुशल हैं।

विनीत
बनारसीदास

(३२)

फीरोजाबाद
४ ९ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

अपने प्रातःकालीन चायामृत पान के बाद मैं अपने सहयोगियों का ध्यान किया करता हूँ और आज आपके बारे में सोचता रहा।

चूंकि ब्रजमण्डल के विषय में मेरी आशाएँ मुख्यतया आप पर केन्द्रित हैं इसलिए आपकी अस्वस्थता मेरे लिये चिन्ता का कारण बन जाता है। चाय के नशे पत्ते में मैं न जाने क्या ऊट जलूल लिख जाता हूँ। उसमें कुछ सार हो तो उसे ग्रहण कीजिये। नहीं तो मेरे पत्रों को रद्दी की टोकरी में डाल दीजिये। आपको राजाबाबू (रावतपाड़ा के श्री प्रतापनारायण अग्रवाल) के इटौरा बाग को अवश्य शीघ्र देखना चाहिये। सब रेलवे अधिकारी उनकी ५५ फीट

चौड़ी और ६ फर्लांग लम्बी जमीन काट लेना चाहते हैं। इसके बारे में कुछ न कुछ कार्रवाई हमें करनी ही चाहिए। राजाबाबू काफी समझदार व्यक्ति हैं पर वे सरकारी अधिकारियों की खुशामद नहीं कर सकते। आप जब स्वस्थ हो जायँ उनसे अवश्य भेंट करें और तब तक केन्द्रीय रेलवे द्वारा किए गए निन्दनीय अतिक्रमण के विषय में उनसे पूछ-ताछ करें।

विनीत
बनारसीदास

(२३)

फीरोजाबाद
१७-६-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

ब्रजभाषा की कविताओं को मिलाकर अगली वसन्त पंचमी पर एक विशेषांक निकाला जा सकता है। ब्रजभूमि में जो भी साहित्यिक सांस्कृतिक, कृषि सम्बन्धी अथवा अन्य कार्य हो रहा हो उसका उसमें विस्तृत वृत्तान्त दीजिए। उदाहरण स्वरूप आप एक लेख नन्दगाँव के संस्कृत महाविद्यालय पर दे सकते हैं। श्रद्धेय करपात्री जी तथा अन्य कई आधुनिक विद्वान् वहाँ शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। वह एक महान संस्था है। गुरुकुल सिकन्दराराव सिकन्दराबाद पर भी एक छोटा लेख चाहिए। [illegible] सती आश्रम और आश्रम भवन फीरोजाबाद पर भी छोटे छोटे लेख [illegible] चाहिए। उसमें [illegible] के बबूल वन और टीलों के उद्यान का सचित्र विवरण दें। आप श्री बालकृष्ण गुप्त हनुमानगंज फीरोजाबाद से हनुमानगंज काँच उद्योग पर एक लेख के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। निम्नलिखित चित्र अथवा स्केच तो संस्थाओं द्वारा प्राप्त होने चाहिए। ब्रजसाहित्य मण्डल को इस अंक पर विशेष व्यय न करना पड़े यह आपको देखना है। चूँकि संस्थाओं की [illegible] और पुस्तकों का महत्त्व अधिक है [illegible] प्रद्युम्न जी [illegible] और [illegible] जैसे [illegible] के रचयिता तो इसमें शामिल होने चाहिए। ब्रज के साहित्यिक कार्य के लिए एक सर्वांगीण योजना का [illegible] एक [illegible] होगा। इस [illegible] को [illegible] भी पड़ेगा—जो [illegible] के समान है।

ब्रजभूमि में ऐसे भी जो भी अछूते [illegible] रह गए हैं—जिनमें [illegible] वर्णन की सम्भावना हो—उन्हें प्रकाशित करना हमारा कर्तव्य है।

अत्युक्तिमय प्रशंसा किसी की भी न हो। लेख विश्वसनीय तथ्यों तथा आँकड़ों से परिपूर्ण हो।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

एक महिने में १५ पौंड वजन कम हो जाना चिन्ता का विषय बन सकता है इसलिये मुझे पूर्ण विश्राम लेना चाहिये परन्तु मैं आप सदृश मित्रों का विचार देने का लाभ संवरण नहीं कर सकता। जहाज जब डूबने वाला होता है तब भी जहाज का रेडियो वाला S C S message भेजता रहता है। परन्तु मैं अभी कुछ दिन तक और जीवित रहने की आशा करता हूँ।

हरिशङ्कर शर्मा स्मृति ग्रन्थ की तवसीना श्री प्रकाशवीर शास्त्री, एम पी १ कैनिंग लेन, नई दिल्ली को भेजा जा चुका है। अब आप उनसे शीघ्रता करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

बनारसीदास

(३४)

फीरोजाबाद
१८ ९ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

ब्रजभारती के दो अंकों को मिलाकर एक विशेषांक निकालने की बात मैं कल लिख चुका हूँ। उस अंक में ब्रज के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के सचित्र रेखा चित्र होने चाहिए यद्यपि वे संक्षिप्त ही हो सकते हैं।

शिकोहाबाद के श्री भोजराज चतुर्वेदी (Glass Factory), मैनपुरी के श्री उमरावसिंह पाण्डे इत्यादि का भी लिखिये। स्वर्गीय कौशलेन्द्र तथा स्व० हरदयालसिंह को तो श्रद्धांजलि अर्पित होनी ही चाहिये।

हैदराबाद के श्री मधुसूदन चतुर्वेदी से भरपूर सहयोग लीजिये। वे काम के आदमी हैं।

ख्यातनामों लोगों के भी वृत्तान्त दीजिये।

अंक चाहे साल भर बाद निकले पर मसाला तो अभी से इकट्ठा करना शुरू कर दीजिये। It may serve as a directory for Braj It will not be a losing business at all विज्ञापन खूब लीजिये।

"खिये तो एक 'ब्राह्मण' वैश्य को व्यापार सिखाता रहा है। परन्तु यह न भूलिये कि मेरे बाबा चौबे लक्ष्मणदास चूना कंकड़ मथुरा में एक बजाज थे। गजी गाढ़े की उनकी दूकान थी गदर के दिनों में। So I am spiritually a वैश्य। शेष कुशल।

बनारसीदास

(३५)

फीरोजाबाद
२७-९-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

भारतेन्दु के विषय का अन्तिम अंक निकल जाने पर कुछ विलम्ब हो जाय। इस बीच में ब्रजभाषा के विशेषांक निकालने का उद्योग हो। त्रैमासिक पत्रिका को तो वक्त पर निकलना ही चाहिए। अपने लेखों की पुस्तक निकलवाइए।

सम्भवतः मैंने आपसे एक बार कहा था दीनबन्धु श्री एन्ड्रूज पर छपी है। उसमें महात्मा गांधी का लेख होगा और मेरा श्रद्धांजलि भी। मैं डा० एन्ड्रूज का चित्र भेजना चाहता हूँ और कृतज्ञता स्वरूप स्व० रतनलाल जी वाय का भी।

श्री रामनारायण जी के बाग के विषय में स्वतंत्र भारत का पत्र मैंने भेजा है। मिट्टी भारत के लिए एक विभाग उसका बाट जोह रहा है जब कि मिट्टी दूसरी ओर से भी लाई जा सकती है। हमारे सर्वोत्तम स्थान का यह विनाश सर्वथा असह्य है। आप भी ब्रजसाहित्य मण्डल के प्रधान की हैसियत से राज्यपाल महोदय को लिखें। अपने पत्र की नकल आगरे से मिलवा दूंगा। अपने लेख की प्रति अलग से भेजता हूँ। स्व० रामनारायण के लेख के Reprints इकट्ठे रजिस्ट्री से भेजिए।

मैं स्वास्थ्य के विषय में सावधानी बरत रहा हूँ। चिन्ता करने की जरूरत नहीं। [illegible] पर [illegible] चि० बुद्धिसागर ननिहाल से आये।

बनारसीदास

(३६)

फीरोजाबाद
८-१०-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

कल स्व० रामनारायण के लेख का Reprint मिला और श्रीयुत मगन चौबे के लेख का भी। कृतज्ञ हूँ।

भाई आनन्द अपने सुपुत्र तथा आपकी भतीजी के साथ पधारे थे। धन्य हुए घर। दीनबन्धु श्री एन्ड्रूज की शताब्दी के लिए २ काम का एक पुस्तिका छपाने का वचन भी श्री आनन्द ने दिया है। आपकी भतीजी

पी एच डी , के लिए शोधकाय करना चाहती है। मध्ययुगीन रीतिकालीन कवियों के समय मे सामाजिक अवस्था विषय बहुत अच्छा है। शायद चि० बुद्धिप्रकाश कुछ परामर्श दे सके। मध्यकालीन भारत ही उसका मुख्य विषय रहा है।

बनारसीदास

(३७)

फीरोजाबाद
१३ १० ६८
५ बजे प्रात काल

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! अभी मैंने आपकी वह श्रद्धाजलि, जो आपने रघुवर अभय जी के पिताजी को अर्पित की है पढ़ी। मुझे इस बात का बिलकुल पता न था कि वे इतने परिश्रमी और सात्विक ग्रन्थकार थे। न तो यशपाल जी ने उनका कभी जिक्र किया और न अभय जी ने ही। क्या उनका चित्र प्राप्य है उसका तल चित्र बनवा लेना चाहिये।

ऐसा प्रतीत होता है कि अलीगढ जिला अपने साहित्य सेवियो की कीर्ति रक्षा म बहुत पिछड़ा हुआ है। स्वर्गीय महाकवि नाथूराम 'शकर' शर्मा के स्मारक के लिये अलीगढ वालो ने क्या किया है और सत्यनारायण कविरत्न के लिये जिनका जन्म अलीगढ म ही हुआ था। रघुवर हरिशकर जी के लिये भी वे लोग कुछ भी नही कर रहे। श्री यशपाल जैन (सस्ता साहित्य मडल) से जवाब तलब कीजिये। कभी फुरसत मिलने पर आप अलीगढ जिले का दौरा कीजिये। हरदुआगज की तीर्थयात्रा तो आपको करनी ही है। भाई विद्याशकर जी को आगरे से साथ ले लीजिये। यदि भाई हरीशकर जी के जीवन मे आप यह कर सकते तो क्या ही अच्छा होता।

लोग शोध ग्रन्थो के लिये उपयुक्त विषयो की तलाश म रहते हैं। अलीगढ जनपद द्वारा अपने साहित्य साधको की उपेक्षा ' यह एक सजीव विषय होगा।

नरवर के सस्कृत महाविद्यालय को भी आप देख आइये। स्व० जीवनदत्त जी आचार्य भी एक महापुरुष थे। वे भी निस्सन्देह एक स्मृतिग्रन्थ के अधिकारी है।

मैं आज ७॥ बजे कपावली ग्राम के एक वयोवृद्ध सज्जन से मिलने जा रहा हूँ, जिन्होने एक सौ से अधिक वृक्ष लगाये हैं। इस अभागे नगर ने चूडी

की भट्टियों में लगा हो तृणों को भस्म कर दिया है। उसका प्रायश्चित्त करने वाले व्यक्ति इस जनपद में उत्पन्न होने ही चाहिये।

अब कुछ काम की बातें —

(१) आगरा के बन्धु हमारे प्रिय कवि श्री अमृतलाल चतुर्वेदी का सम्मानित करने का विचार कर रहे हैं। कृपया श्रीनारायण जी चतुर्वेदी गुरु बाग लखनऊ और डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी को पत्र लिख कर पृष्ठपोषण करें।

(२) श्री नाथूराम पंकज, बागमुजफ्फर खाँ आगरा के पुत्र का क्या हाल है? पंकज जी बड़े काम के आदमी हैं पर विज्ञापनहीन औघड़ दानी। आगरे के रंगिस्तान में उनका सम्मान है।

(३) अमर उजाला के सम्पादक डोरीलाल जी अग्रवाल को श्री राजाबाबू के इन्दौर वाले उपवन पर एक सम्पादकीय लेख लिखने को कहें।

(४) डी ए वी कालेज फीरोजाबाद में शंकर सदन की स्थापना के लिये वहाँ के प्रधानाचार्य और कुसुमाकर जी को लिखें।

(५) अपने ममेरे आउम् जी को सी एफ एण्ड्रूज पर पुस्तक छापने के लिये धन्यवाद दीजिये।

(६) 'रीतिकालीन समय में सामाजिक स्थिति' नामक ग्रन्थ पर अपनी भतीजी की मदद करने के लिए चि० बुद्धिप्रकाश को लिखिये।

(७) श्री जगन्नाथ चतुर्वेदी को मैंने आपकी पुस्तक की एक प्रति भेंट कर दी है।

जल्दी में घसीट देने के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

बनारसीदास

(३८)

फीरोजाबाद
१४ ११ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

अमरीका के महान लेखक (Dewis Mumford) ने अपनी पुस्तक Condition of man में लिखा है—

Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe It is rather the region one knows and

loves best re apportioned reshaped and recultivated for perma nent human occupation

हमारे जनपदीय कार्यक्रम का यह सर्वोत्तम समर्थन है।

Please look after Naresh considering him as your own nephew, please! Thus you will be doing great service to me

आपका मैं बस भी बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च —

श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है।

चतुर्वेदी जी द्वारा श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१४-११ ६८

श्रद्धेय ब्रह्मचारी जी,

सादर प्रणाम।

आपके फीरोजाबाद पधारने की सूचना यदि मुझे मिल जाती तो सेवा मे उपस्थित होकर दर्शन ही कर लेता। मुझे २ बातें निवेदन करनी थी।

(१) स्व० हरीशंकर शर्मा का स्मृति ग्रंथ निकल जाना चाहिये। आप अपने संस्मरण तो लिख ही दें। श्री प्रकाशवीर शास्त्री, १ कैनिंग लेन नई दिल्ली को भी प्रेरित करें कि वे इस श्राद्ध कार्य के लिए साधन जुटा दें।

(२) व्रजभूमि के पुनर्निर्माण के लिये आपसे बहुत सी आशायें हैं। बाबू वृन्दावनदास जी को आपका सहयोग यदि मिल जाए तो बहुत काम हो।

(३) अपना पत्र निकालने का विचार क्या अब भी है? मैं तो उसके विपक्ष मे हूँ। उसमे तो घाटा ही घाटा रहेगा। मौजूदा पत्रों का आश्रय लेना ही ठीक होगा।

(४) हाँ, छोटी छोटी पुस्तिकाओं तथा ट्रैक्टों को छपाया जा सकता है। आपके पास तो प्रेस है। यजमानों की मदद से ट्रैक्ट छपवाना कठिन न होगा। अधिक क्या लिखूं।

विनीत
बनारसीदास

(३९)

फीरोजाबाद
१२ ६ ६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

५१ ५१ रु० प्रति भाषण व रेल किराया लेकर कुछ भाषण पत्रकारिता पर तीन चार केन्द्रों पर कराये जा सकते हैं।

मथुरा, आगरा, फीरोजाबाद इटावा।

भाषण लिखित लाये जावें और फिर उन्हें पुस्तकाकार भी छपाया जा सकता है। १२ व्याख्यानों में ६१२ रु० व ०० रु० यात्रा व्यय-लगभग एक हजार का खर्च लगेगा। जहाँ जहाँ व्याख्यान सब प्रथम हों वहाँ वहाँ से पैसा उगाह लिया जाय। इस व्यावहारिक योजना पर भी विचार कीजिए।

२१ २१ रु० तो कम होगा। आज की महंगी के युग में ५१ रु० तो भेंट करने ही चाहिए। जो न दे उनकी बात दूसरी है।

एक भाषण पत्रकारिता और की नीति इस विषय पर श्री जगन्नाथ प्रसाद भूतपूर्व एम एल ए ...... फीरोजाबाद में कराया जा सकता है। उन्होंने हजारों रुपये फीरोजाबाद में ..... में खर्च किये थे।

उन्हें आप पत्र तो लिखें ही। इस नगर की वे विभूति हैं। Best Worker

विनीत
बनारसीदास

(४०)

४, लाजपत कुंज सिविल लाइन्स
आगरा
१६ १२ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

वन्दे। मैं कल शाम को आदि जैनप्रेमी हाउस नाजगंज आगरा में श्री मथुरादत्त शास्त्री एम ए से मिला जो ८ वर्ष से कुछ रोग से पीड़ित हैं। उनकी हालत देखकर हार्दिक पीड़ा हुई। हमारे अभाग देश में ४० लाख कुष्ठ रोगी हैं। शास्त्री जी मथुरा जिले में ही संस्कृत अध्यापक रह चुके हैं। वह रहने वाले बनमाल के हैं।

शिवनाथ अग्रवाल एडवोकेट के श्री राधे मोहन जी ने २१ रु० शास्त्री जी को भेंट किए थे और श्री पद्मचन्द्र प्रकाशक ने ५१ रु०। शास्त्री जी से

'आपबीती' लिखवा रहा हूँ। उसे पत्रा मे छपवाऊँगा। आपको जब कभी आगरा आना हो तो ताजगज जाकर शास्त्री जी से जरूर जरूर मिल लीजिये। उन्हे ब्रज भारती इत्यादि भेट भी कीजिये। उन्हे मानसिक भोजन देने की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले ली है। उनके ४ बच्चे हैं। जिनमे बडे बच्चे को जो १४ वर्ष का है, यही बीमारी हो गयी है।

मूकों को वाणी देना यही लेखक का पवित्र कर्तव्य है। अधिक क्या लिखूं। शाम तक घर पहुँच जाऊँगा।

श्री रमेशचन्द्र दुबे के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप २३ को फीरोजाबाद पधारने वाले हैं। २४ की शाम को ठीक रहेगा। क्योंकि तभी श्री बालकृष्ण गुप्त के यहाँ सबसे मिलना हो जायेगा।

गुरू जी भगवानदत्त द्वारा आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिल गया था।

विनीत
बनारसीदास

(४१)

फीरोजाबाद
२०-१२ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

६ ता० का लिखा गया पत्र पडा रह गया। अकेले काम करना कठिन ही है। भाषण देने वालो मे कुछ तो बिना कुछ लिये ही भाषण दे देंगे, इसलिये कुछ किफायत हो जायगी। इसके सिवाय ५१ रु० के बजाय ३१ रु० ही प्रति भाषण रक्खे जा सकते हैं। हर हालत में भाषण लिखित लाना चाहिये यह अगले वर्ष का कार्यक्रम है।

१ श्रमजीवी पत्रकार सगठन
२ आचार्य द्विवेदी जी
३ शहीद गणेश शकर जी
४ विलायती पत्रकारों का सगठन जगदीश चतुर्वेदी
५ बाजपेयी जी पराडकर जी, गर्दे जी
६ स्वाधीनता सग्राम और हिन्दी पत्रकार बनारसीदास
७ बालमुकुन्द गुप्त और भूर्मोबल केसरी बद्रीदत्त पाडे बनारसीदास चतुर्वेदी

ऐसे ही और भी विषय चुने जा सकते हैं।

प० झाबरमल्ल जी शर्मा जसरापुर वाया खेतडी राजस्थान से भी

पत्र व्यवहार कीजिये । श्री शर्मा जी मुझसे भी ४ वर्ष बड़े हैं । उनसे 'हिन्दू संसार' तथा कलकत्ता समाचार के बारे में भाषण दिलाये जा सकते हैं ।
राजस्थान में पत्रकारिता पर भी वे लिख सकते हैं ।

विनीत
बनारसीदास

(८२)

फीरोजाबाद
१७ १ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

खैर । बीमार पड़ना एक अभिशाप है । जुर्म है—और मैं मुजरिम बन गया । शायद अनिद्रा या रक्तहीनता के कारण पैरों में सूजन आ गई । रक्तहीनता दूर है । Liver Extract के Injections दिये जा रहे हैं । चिन्ता की कोई बात नहीं । १५ दिन में तबियत ठीक हो जायगी ।

इस बार मैं आप लोगों का चिन्तन करता रहा । इस बसन्त ऋतु को ब्रज मंडल के लिये चिरस्मरणीय बनाना है । बसन्त पंचमी से रामनवमी तक का एक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम बना लेना चाहिए । केवल मथुरा में ही नहीं फीरोजाबाद, एटा, मैनपुरी, इटावा, अलीगढ़ इत्यादि में साहित्यिक उत्सव होने चाहिए । ये उत्सव कम से कम खर्च में हों । ज्यादा खर्च हम ब्रजवासी कर ही नहीं सकते ।

1 बसन्त व्याख्यान माला
२ आसपास के सुन्दर स्थलों में गोष्ठियाँ ।
छोटे छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन ।
४ हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों तथा स्मृति ग्रन्थों की तैयारी ।
५ स्वयंसेवी लोगों का संगठन ।
इत्यादि विषयों पर विचार कीजिये ।

सबसे जरूरी चीज धन संग्रह है । अच्छे कार्यकर्ताओं को जुटाना है । यजमानों का भी संग्रह करना है । स्व० हरिशंकर जी का श्राद्ध कार्य इसी बसन्त ऋतु में पूरा कर देना चाहिए । श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री जी ने मुझे पत्र भेजा है कि उनके मित्र स्वयं स्वीकार किन्हीं दूसरे साहित्यिक को भेजें ताकि पत्रों के सम्पादन करने का काम शुरू करा दिया जाए । कृपया आप भी कृपा

यहाँ हमने सामूहिक अभिनन्दन की एक योजना बनाई है। सविस्तर उस पर लिखूँगा। केवल राजनैतिक लीडरों या साहित्यकारों का ही अभिनन्दन न होना चाहिये—अच्छे कलाकारों का भी चाहे वे किसी क्षेत्र के क्यों न हों हम अभिनन्दन करना है।

आपके रिश्तेदार श्रीयुत ओउम् ने सी एफ एन्ड्रयूज पर एक ट्रेक्ट छपाने का भार अपने ऊपर ले लिया है। जब एन्ड्रयूज सन् १९२० में यहाँ पधारे थे, श्री रतनलाल जी के मकान में ही ठहरे थे। श्री लहरी जी को आपका पत्र मिल गया है।

अबकी बार जब आप आगरा जायें तो श्री मथुरादत्त शास्त्री, एम ए पुराना कुष्ठ चिकित्सालय ताजगंज, आगरे से जरूर मिलें। उनको कुष्ठ रोग है। अपने घर के Hall को चित्रों से सुसज्जित कीजिये। १०-१० रु० में Enlargements यहाँ तैयार कराये जा सकते हैं।

बनारसीदास

(४३)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

कार्ड मिला। ब्रजभूमि के साहित्योपवन में जहाँ कहीं भी आपको प्रतिभा के अंकुर दीख पड़ें, उन्हें पल्लवित कीजिये। जिन किसी से जो कुछ सेवा सहायता मिल सके लीजिये। यह बड़ा पुण्यकर्म है। जिस पथ पर आप चार पाँच वर्ष से चल रहे हैं वह निस्संदेह कल्याणकारी है।

स्व० हरिशङ्कर जी के पत्र टाइप हो रहे हैं। २४ पृष्ठ कल भिजवा दूंगा। शेष भी ज्यों ज्यों आते जावेंगे भिजवाता रहूँगा।

पंकज जी निस्संदेह बड़े त्यागी कार्यकर्त्ता है— पर उनमें विवेक की कमी है। अपनी सामर्थ्य की बाहर के काम वे उठा लेते हैं और अपने घर वालों की उनके द्वारा उपेक्षा ही होती होगी। ना० प्र० सभा से उन्हें शायद १३०) ही मिलते हैं। उनकी पत्नी बीमार है और बच्चा कालेज में पढ़ रहा है। ईश्वर के यहाँ जब विवेक बँट रहा था पंकज जी कुछ देर से पहुँचे। फिर भी उनका दम गनीमत है। जहाँ लोग कुछ भी दान नहीं करना चाहते वहाँ पंकज जी जैसे उदार व्यक्ति का अस्तित्व अत्यन्त आशाप्रद है।

वे स्वस्थ रहें और दीर्घ काल तक अपनी साधना कायम रख सकें हमारी यही कामना होनी चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(४४)

फीरोजाबाद
२४ १ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे ! कल डा० सत्येन्द्र से मुझे मालूम हुआ कि आप मेरे अभिनन्दन की बात सोच रहे हैं। उसके दो दिन पहिले तक मैंने ब्रज अभिनन्दन पत्र की आयोजना आपकी सेवा में तथा सैनिक पत्र को भी प्रकाशनार्थ भेज दी थी। इस प्रकार हम लोगों के विचार टकरा गये।

गुण ग्राहकता या Appreciation की मैं कद्र करता हूँ। पर हमें विवेक से काम लेना चाहिए। 'रुद्रान् मेरे कौन्तेय मा प्रपञ्चाम्बर बन' यह उक्ति एक महान् ब्रजवासी—भगवान कृष्ण की ही है। मेरे जैसे अत्यन्त विज्ञापित व्यक्ति को कीर्तिरूपी मिठाई खिलाने का कोई पुण्य नहीं। यदि ब्रजमण्डल की डाइरेक्टरी आप बना सकें तो वह बड़े काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि से और व्यावहारिक दृष्टि से वह सफल होगी। तारीफों के पुल बाँधने से कोई फायदा नहीं। हमारे जनपद ब्रज की विभूति के सामने हम सब नगण्य हैं। ब्रज का सर्वाङ्गीण रूप हमारे सामने आना चाहिए युग धर्म का यही तकाजा है। ब्रजभूमि का हमें पुनः निर्माण करना है। इस रेगिस्तान में जहाँ कहीं भी हमें हरियाली दीख पड़े उसकी रक्षा करना है। फिर चाहे वह साहित्यिक हरियाली हो या कृषि सम्बन्धी। छुटभइयों को प्रोत्साहन सबसे प्रथम मिलना चाहिए। मुझे तो बहुत सम्मान मिल चुका है। और अब उसका अजीर्ण हो जाने की आशंका है।

सम्पूर्ण ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण (सर्वे) हो जाना चाहिए पर उसके साथ साथ कृषि व्यापार तथा उद्योग धन्धों को भी हमें नहीं भूलना है। जिस किसी क्षेत्र में जो कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसकी कद्र होनी चाहिए। यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तैयार कर दी जाय तो भविष्य में वह बड़े काम की चीज बन जायगी। न जाने कितने व्यक्तियों की कीर्तिरक्षा उससे हो जायगी। और कितनों का मार्ग प्रदर्शन होगा।

इसलिए मैं आपसे और आपके मित्रों से करबद्ध प्रार्थना करूँगा कि आप लोग मेरा अभिनन्दन न करके ब्रजजनपद का अभिनन्दन करें। इस दृष्टि से आप १०-१२ ब्रजसेवकों को सम्मानित कर सकते हैं। और इन बारह में मेरा नाम भी रख सकते हैं। वेद का एक मंत्र है कवनाधा नवति

केवलादी जो अकेला खाता है, पाप खाता है। आप मुझ पाप क्या खिलाना चाहते हैं।

जस खायो सब जगत को भयो अजीरन तोइ।
अपजश की गोली दऊँ खात तुरत फल होय।

यह बात किसी दिल जले ने कही थी। सो मुझे तो वसे ही अजीण हो चुका है ?

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च —

बसल जी को यह पत्र मैंने पढ़वाया सो उन्होंने कहा कि इससे बुद्धि भेद ही पैदा होगा। यह भी न होगा, वह भी न होगा। इसलिये जैसा भी आप लोग मुनासिब समझ करें। मैंने अपनी रुचि की बात लिख दी। मरा विश्वास नहीं कि कोई व्यक्ति मेरे अभिनन्दन के लिये चन्दा दे सकेगा। सारी स्कीम टाइ टाइ फिस्स हो जायगी। फिर भी आप प्रयोग करना चाहते हैं तो करें। हाँ, हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थ तो २००) २५०) मे ही बढ़िया तयार हो सकता है। मरे नाम का सहारा लेकर ब्रजजनपद का अभिनन्दन भी हो जाय तो मुझे विशेष आपत्ति न होगी।

(४५)

फीरोजाबाद
५ २ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कृपा पत्र मिला। मैंने चिरजीव बुद्धिप्रकाश को जो कानपुर मे इतिहास का अध्यापक है, आप लोगो के प्रस्ताव के बारे म लिखा था। वह भी मुझसे पूर्णतया सहमत है कि मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ के काय को प्रारम्भ भी न किया जाय। मरी अब भी यही दृढ सम्मति है कि यह ' गुनाह बलज्जत है। मुझे इतना विज्ञापन मिल चुका है कि उससे तबियत ऊब गई है। मैं ईर्ष्या का पात्र नही बनना चाहता। जिन्हे कीर्ति की आवश्यकता हो उन्हें वह अवश्य प्रदान कीजिये। ब्रजभूमि के उस महापुरुष की वाणी को आप क्यो भूल जाते हैं जिसने कहा था—

दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वर धनम्"

हम ऐश्वय वालो को धन न देकर दरिद्रो का ही पालन पोषण करना है।

आचार्य प० पद्मसिंह जी ने मुझे लिखा था—हम बूढ़े म भी मुझे मुस्ताज हैं बगल में मा उनको अन्तद्दृष्टि का प्रवन्ध कीजिये। सर्वप्रथम ब्रजभूमि के स्वर्गीय सेवकों तथा कवियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्य हम लोगों को करना चाहिए। मेरे जैसे अत्यन्त विवादित व्यक्तियों का विज्ञापन देकर उन्हें बन्दूकची क्यों बनाना चाहते हैं। जहाँ मैं अन्य को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किये जाने के विरुद्ध हूँ। मैं अभी कुछ बातें तय और आदि न करना चाहता हूँ। मेरे जाने के बाद लोग जो चाहें करें मैं अपनी अत्युक्तिमय प्रशंसा सुनना पसन्द नहीं करता। यह बड़ा कटु अनुभव है निस्सन्देह। श्री हरिशंकर शर्मा स्मृति ग्रन्थ में आप मुझे सम्मिलित कीजिये। श्री सम्पूर्णानन्द स्मृति ग्रन्थ में भी। श्री बालकृष्ण गुप्त को छोड़कर यहाँ अन्य किसी से भी आपको मदद मिलना सम्भव नहीं। मामला टॉय टॉय फिस्स हो जायगा। उसमें आपके गौरव की हानि होगी और मेरा भी मजाक बन जायगा। लोगों को यह भ्रम हो जायगा कि यह सब मेरी स्वाहिश से हो रहा है।

श्री अाप्पू ने C F Andrews पर एक ट्रैक्ट छपवा दिया है। भेजूँगा। भूमिका आपको भजाकर ने लिखी थी। छपाई उत्तम है। दीनबन्धु की शताब्दी १२ फरवरी १९७१ से १२ फरवरी १९७२ तक मनायी जानी चाहिए।

"यदि मेरे पास शक्ति तथा साधन होते" शीर्षक लेख मनिक में पहला होगा। श्री बलदेव गुप्त भी चले गये। उन पर लिख रहा हूँ। राष्ट्रपति के साथ उनका चित्र मैंने खिंचवाया था। अवश्य पधारियेगा। बहुत सी बातें करनी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(४६)

फीरोजाबाद
८-२-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

मैंने सम्पादक स्वराज्य वल्लभगढ़ आगरा को अपने पत्र को आगरा जनपद (कमिश्नरी) अंक निकालने को कहा है और उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है हम ब्रजमण्डल को पत्र प्रस्तुत करने का हर सम्भव उपाय ढूँढना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि वह विस्तृत एवं सन्दर्भ ग्रन्थ ही बन जाय

स्वराज्य के सम्पादक महोदय इस बारे में आपसे भी परामर्श माँगेंगे। मेरा उनसे कोई निजी परिचय तो है नही, पर जब अमर उजाला तथा सैनिक ऐसा नही कर सकते तो फिर जो कोई भी करे उसी को सहयोग देना चाहिए। भाई यशपाल जी के बहनोई का स्वर्गवास हो गया। यह बड़ी भारी दुर्घटना है—वज्रपात है। डा० नरेश चन्द्र (भतीजे) का पत्र मिला है। उनकी पत्नी को रक्तहीनता का रोग है—फिक्र है।

विनीत
बनारसीदास

(४७)

आजाद शहादत दिवस
फीरोजाबाद
२७ २ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! श्री रतनलाल जी बंसल शायद दिल्ली से आज लौटेंगे। उन्हे पत्र भेजकर आप यहाँ पधार सकते हैं। एक पत्र श्री बालकृष्ण गुप्त जी को भी हनुमानगज, फीरोजाबाद के पते पर भेजिये। उनका कोटले वाला बगीचा भी जरूर देखिये। वहाँ पर वे एक गान्धी-कुटीर का निर्माण कराना चाहते हैं। फीरोजाबाद के पाँच सौ लखपतियो मे केवल उनका दम गनीमत है। मुझे विश्वास है कि उनके द्वारा ब्रजमंडल की उल्लेख योग्य सेवा भविष्य में बन पड़ेगी।

बजाय इसके कि आप मेरा अभिनन्दन करें, आप अपने घर पर एक ब्रज संग्रहालय की नीव डाल दें तो अत्युत्तम हो। आपका भवन ब्रजवासियो के लिये कभी तीर्थ बन सकता है। यही बात आप श्री बालकृष्ण जी गुप्त से कह सकते हैं। वे एक इन्टर कालेज जो कोटला में चल रहा है के सर्वेसर्वा हैं।

१९७१ की १२ फरवरी से १९७२ की १२ फरवरी तक दीनबन्धु C F Andrews की जन्मशताब्दी मनाई जावे, इसका आन्दोलन मुझे करना है। आपके रिश्तेदार श्री आदम् ने मेरी पुस्तिका छपाकर बड़ी मदद की है। उस शताब्दी के लिये मुझे जीवित रहना है यद्यपि बारबार बीमार पड जाने से कुछ आशंका हो जाती है। जो भी सामग्री मेरे पास है उसकी नकल आपके निजी संग्रहालय में रहनी चाहिये। यह कोई बहुत व्ययसाध्य कार्य भी नहीं है। चित्रों का तो पूरा-पूरा संग्रह आपको रखना ही है। श्री जगन्नाथ लहरी से मैंने फीरोजाबाद संग्रहालय की नीव डलवादी है।

सरकारी संग्रहालयों में जो कारीगरी रहती है उससे इस प्रदेश में घरमू संग्रहालय का प्रबंध प्रमाणकारी बन गया है और सबसे अधिक आवश्यक काम है— 'सार संग्रह'। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक Dr Johnson ने कहा था—

'श्रीमन्! जिस दिन मैं कोई नवीन मित्र नहीं बना पाता उस दिन को मैं व्यर्थ नष्ट हुआ मानता हूँ।' सो हम भी नवीन मित्र बनाते रहना है—जो हमारे काम के पुरक हों। एक पत्र श्री जगन्नाथ महरी मुन्तजिमा फीरोजाबाद को भी भेजिये। फिरोजाबाद तरफ से मिलते हुए आइये। ८ मार्च को विद्याशंकर जी ने आगरे बुलाया है पर मेरा पहुँचना बहुत मुश्किल है। आगरे में मेरी पुत्री का आपरेशन होने वाला है, निश्चित है।

विनीत

बनारसीदास

(४८)

फीरोजाबाद

१३ ३ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपका पत्र मिला। यदि आप वास्तव में किसी सम्पादक से मिलना चाहते हैं तो यहाँ आइये और यहाँ पुष्पाञ्जलि आवास में मिलिये। ३ बजे तक आयें और अगर रविवार तक रहेंगे। यथासंभव श्री बालकृष्ण गुप्त के यहाँ ठहरेंगे।

बनारसीदास

(४६)

फीरोजाबाद

१३ ४ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे। अस्वस्थ होने पर भी मैं मित्रमंत्री महोदय की सेवा में उनसे निवेदन करने के लिये मीटिंग में गया था। जो कुछ मैंने कहा साथ में नत्थी है। ब्रजसाहित्य मंडल का निज का भवन कभी न कभी बाबू से आ जायगा।

चि० नरेश को कोई अच्छा मकान मिल जाय तो मैं भी २ ४ दिन के लिये मथुरा की यात्रा की बात सोच सकता हूँ। अभी परसों जौनपुर म्युनिसिपल बोर्ड के अधिशासी अधिकारी श्री बटुकनाथ अग्रवाल मेरे पास पधारे थे। उनका वृत्तान्त शायद रविवार के संस्करण में छपेगा। कृपया पढ़ लीजिए।

ताजगंज के Old Leprosy Hospital में श्री मथुरादत्त जी पाण्डे जी रहते हैं। उनकी पुस्तिका भी छपवा दी है कभी आगरे जाना हो तो उनसे जरूर मिलिये। श्री आचार्य जी मुझसे मिलने आने वाले थे, पर मैं खुद ही उनकी मीटिंग में हाजिर हो गया। मैं उनकी सहृदयता का कायल हूँ।

विनीत

बनारसीदास

(५०)

फीरोजाबाद

१५ ४ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। कार्ड अभी मिला। यदि कभी बम्बई जाना हुआ तो अवश्यमेव श्री रणछोड़दास जी के फ्लेट पर चाय पिऊँगा। उन्हें मेरा आशीष कहिये। आशा है कि आपके घर वालों की चिकित्सा ठीक तरह हो जायगी। ईंट चूना कंकड़ पत्थर को मैं भी महत्व नहीं देता।

श्री आचार्य लक्ष्मीरमण जी के सामने जो भाषण मैंने दिया था, उसकी प्रति अलग से भेजता हूँ। आप भी आचार्य जी को उसके Support में लिखें। जौनपुर नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी श्री बटुकनाथ अग्रवाल यहाँ एक दिन के लिये पधारे थे उन्होंने ७ शहीदों की मूर्तियाँ स्थापित की है। और आजाद की जीवनी दो जिल्दों में छपाई है। मूल्य ८ रु० है। मिशनरी स्पिरिट के आदमी है। उन्हें पत्र लिखिये जरूर जरूर।

विनीत

बनारसीदास

(५१)

फीरोजाबाद

प्रिय भाई वृन्दावन दास जी,

वन्दे। मैं १७ ता० की शाम को यहाँ आ गया। विस्तृत पत्र तो फिर लिखूंगा, इस समय दो एक आवश्यक बातें लिखे देता हूँ।

१ कृपया ब्रज भारती की फ्री लिस्ट में आप श्री राधेश्याम वर्मा 'श्याम', टैलीफोन एक्सचेंज, बुलन्दशहर का शुभ नाम लिख लीजिये। ब्रजभाषा काव्य का बड़े ही मधुर स्वर से वे पाठ करते हैं। विभूति हैं।

२ कल यहाँ आध घन्टे के लिये श्री भक्तदर्शन जी (मंत्री) पधार रहे है। उनसे अपने संग्रहालय की रक्षा के विषय में बातचीत करूंगा। दिल्ली में

मैं एक लेख 'अपनी ब्रजभूमि म ८ वष लिखना चाहता हूँ। मुझे खेद बस इस बात का है कि मैं पूरे ८१ वष बाद ब्रजभूमि को लौटा। १८१३ म निकला तो १८६४ म लौट सका। हम लोगो को मिलकर ब्रज के सर्वांङ्गीण निर्माण की एक व्यावहारिक योजना तो बना ही लेनी चाहिए। जनगणना म मातृभाषा, "ब्रजभाषा" अवश्य अवश्य लिखाई जाय। इसम डर किस बात का है? आखिर मनुष्य जान लने का दूसरा उपाय है ही क्या? इस पवित्र कतव्य म सकोच किस बात का? इसम राष्ट्रभाषा हिन्दी को कोई हानि नहीं पहुँचती। कालम म हिन्दी लिखाए जा सकती है। जो लोग ब्रजभाषा को मातृभाषा लिखाने म भी डरते हैं या सकोच करते हैं उनकी माटी अन्त पर मुझ तरस आता है। व व्यथ का भूत खड़ा करते हैं। ब्रजभाषा तो खड़ी बाली की मा है। उस सौत समझना अव्वल नम्बर की नासमझी है। आपका पक्ष इतना प्रबल है कि उसकी विजय निश्चित है।

विनीत
बनारसीदास

(५४)

४ लाजपत कुंज सिविल लाइन्स
आगरा
२५ ६ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! श्रीयुत बालकृष्ण जी गुप्त तथा श्री कमल जी यहाँ पधारे थ। आप शायद फिरोजाबाद नहीं जा सके।

श्री हरत्यागुसिंह जी के रिश्तेदार श्री ज एन गुप्त हैण्ड क्राफ्टस ताजमहल आगरा यहाँ Piles के Operation के लिय पड़ोस म रह थ। उनसे कुछ संस्मरण लिखाय जा सकते हैं।

मेरी डाक्टरी जाँच शायद कल समाप्त हो जायगी। आपरेशन तो पानी बरसने पर—कुछ ठण्ड हो जाने पर ही—हो सकता है। फिर सूचित करूँगा। स्व० डा० अग्रवाल के सुपुत्र पृथ्वी अग्रवाल को लिखिये कि व पूज्य पिताजी के पत्रों को छपा दें। राजाबाबू के वकील के सामने म हम लोगों क प्रयत्न सफल हो जायेंगे। इंजीनियर न उन्ह बुलाकर कहा कि हम थाड़ी सी जमीन लेंगे, अपनी ओर स हम्तान्तरित कर देंग आप मुआवजा कुछ भी न माग। यह मौखिक वार्तालाप हुआ है। लिखी हुई चीज अभी नहीं मिली। आप इस बार म राजाबाबू स ही तलाश कर लीजिय।

"ब्रज मडल म ५ वष" Talk म लिख देना चाहता हूँ।

नहरू सग्रहालय वाला की दृष्टि मेरे सग्रहालय पर है। अपने सग्रहालय के भविष्य के विषय म चिन्तित हूँ। इतनी बहुमूल्य सामग्री का सदुपयोग होना चाहिय।

बनारसीदास

(५६)

४ लाजपत कु ज, सिविल लाइ स
आगरा
३ ७ ६९

प्रिय भाई व दावनदास जी,

व दे! मेरे लिय आपको किसी स भी हाथ पसारना पडे यह बात मुझे बहुत खटकती है। खास तौर पर इसलिये भी, कि मैं अपने अभिन दन को बिल्कुल ही निरथक चीज मानता हूँ। उम अ यापार ममझता हूँ। अ यापार का किस्सा आपने पचतत्र मे पढा होगा।

No a thousand times no I entirely disagree with this ABHINANDAN business that leaves me cold

अभी तक हम हि दी वाले स्व० रामान द बाबू के लिये कुछ भी नही कर सक, जब कि उ होन तथा उनके कुटुम्ब न १ लाख का घाटा विशाल भारत म सहा था। शहीद गणेश जी के लिय जो कुछ भी किया गया उसका वृता त आप जानत ही हैं। भी बाइ चितामणि की पुण्य तिथि १ जुलाई को थी। उ ह भी लोग भूल गय। तब फिर मेरे जसे नाचीज आदमी को सम्मानित करने की बात लगा है। It is worse them useless positively harmful

अपनी स्पष्ट सम्मति आप स क्या छिपाऊँ फिर जैसा आप समझें करें। डाक्टरी जाच समाप्त हो गई। आपरेशन तो कुछ ठडक हाने पर ही होगा।

विनीत
बनारसीदास

(५७)

२१, प्राईवेट वार्ड, एस० एन० हास्पीटल,
आगरा
६ ७ ६९

प्रिय श्री व दावनदास जी

व द। मैंन उन सभी यजमानो स, जिनसे आपने मरे अभिन दन ग्र थ क लिय पमा मागा है, प्राथना कर दी है कि व इस (अन्यापार) के लिये एक

पैसा भी न दें। मैं दम्भ नहीं करता पर इस अवसर पर अपने हृदगत भावों को छिपाना भी नहीं चाहता। मेरे लिए किसी का हाथ पसारना पड़े यह विचार ही मेरे लिए अत्यन्त कष्टप्रद है। इसके सिवाय मुझे तो बहुत काफी विज्ञापन मिल चुका है। मैंने यशपाल जी, बालकृष्ण जी, बसन्त जी, आउम्, राजाबाबू और शम्भुनाथ जी को स्पष्टतया अपनी दृढ सम्मति लिख भेजी है और उससे मेरे मन पर का बोझ उतर गया है। आप जैसे मित्रों की गुण ग्राहकता की मैं कद्र करता हूँ पर इस उम्र में किसी गलतफहमी का शिकार नहीं बनना चाहता।

आप ब्रज अभिनन्दन ग्रन्थ निकालिए मेरी सेवायें आपको अर्पित हैं।

विनीत
बनारसीदास

(५८)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे! मैंने अभी यशपाल जी को पत्र भेजा है जिसका सारांश यह है 'I have all along b en opposed to the idea of presenting me an अभिनन्दन ग्रन्थ and to day I am more than ever convinced of its positive harmfulness इससे गलतफहमी भी उत्पन्न हो सकती है और मेरा अहित होगा। लोगों के मन में यह भ्रम उत्पन्न होगा कि चौबे जी स्वयं ही इस बेवकूफी को प्रोत्साहन दे रहे हैं। Please give up this mad adventure at your earliest

यदि आप ब्रज का अभिनन्दन करें तो मैं भी आपको भरपूर सहयोग दूँगा और तदर्थ १०१) रुपया भी भेंट कर दूँगा। लेकिन अपने अभिनन्दन का विचार ही मुझे सख्त नापसन्द है। आशा है कि आप लोग मेरी हृदगत भावनाओं की कद्र करेंगे।

मेरे आपरेशन में अभी कुछ देर है। आशा है कि वह सफल होगा, पर कुछ भी क्यों न हो मैं बिल्कुल निश्चिन्त हूँ। ब्रजभूमि के लिए आप लोग प्रयत्नशील हैं इस आशाप्रद भावना के साथ मैं परलोक यात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो ब्रजभूमि की सेवा में ही उसे बिता दूँगा।

अन्य साथियों को भी ऐसा ही पत्र लिख रहा हूँ। राजा बाबू को भी लिख दिया है।

बनारसीदास

(५६)

४, लाजपत कुंज, सिविल लाइंस,
आगरा
८ ७ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मैं कल सबरे यहाँ अपनी डाक्टरी जाँच के लिये आ गया था। शायद अभी ५, ६ दिन और भी ठहरना पडे। अस्पताल के २१ नम्बर प्राइवेट वार्ड म ठहरा हुआ हूँ।

एक खत फीरोजाबाद म आपके लिये लिखा था। पर वहाँ ही पडा रह गया। मधुसूदन जी चतुर्वेदी के काय का उत्तम प्रशमा थी। उनकी ग्रन्थ माला में ६०० स्थायी ग्राहक हैं। यह करिश्मा उन्होंने कर दिखाया है। इधर के जनपदा म यह बहुत कठिन है।

स्व० हरिशकर जी के स्मृति ग्रन्थ के विषय म व्यावहारिक काय यह होगा कि रत्नमुनि जैन कालेज तथा सक्सरिया कालेज की पत्रिकाओं के Special हरिशकर अक निकाल दिय जायें। व दोनों कालेज दो दो हजार खच कर सकत हैं और वहाँ की प्रधानाचार्याए हरिशकर जी की पुत्रवधूएँ ही हैं।

उनके अतिरिक्त जो दो शोध ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं उनम मदद दी जाए। आय मित्र का विशेषाक भी निकाला जा सकता है।

अभी तक केवल एक सौ रुपये आयमित्र के प्रेस की ओर से हमारे टाइपिस्ट श्री जय किशन ८७ गुप्ता कौलोनी दिल्ली ६ मे भेजे गये हैं। 'जा बनि आव सहज मे ताही म चित देइ" यही हमारा मोटो होना चाहिये। आपने तो पचास रुपये दे ही दिये थे।

अपने अभिनन्दन के विषय म मैं क्या कहूँ। जो भी आप लोग उचित समझें करें। Some how I cannot reconcile myself to the idea of my अभिनन्दन। यदि ग्रन्थ का मुख्य भाग ब्रजभूमि की सर्वांगीण उन्नति को अर्पित कर दिया जाए और मेरे बारे म कम स कम रहे तो मैं उसे सहन कर सकता हूँ। अत्युक्तिमय प्रशसा बिल्कुल फालतू चीज है। यह मैं मान सकता हूँ कि मेरे द्वारा थोडी बहुत सेवा हुई है पर उसका ब्यौरा इकट्ठा करने का वक्त अभी नहीं आया है। हम लोग—मेरे जैसे आदमी—आते हैं और चले जाते हैं पर हमारा जनपद—ब्रजभूमि—तो रहेगी ही। Let us concentrate on

ब्रजमण्डल and its problems, अभी मैंने एक Interview श्री कान्तिचन्द्र मिश्र कमरा हरिजन निवास Kingway Delhi 9 का भेजा है। उसकी typed copy मेरे टाइपिस्ट द्वारा आपके पास परामर्शार्थ पहुँचेगी—अभी छपने के लिये नहीं—छापेंगे तो कमरा जी जिसमें उन्हें कुछ पैसा शायद कहीं से कुछ मिल जाए। आप और दुबे जी वन दस-पाँच व्यक्तियों पर ही मेरी आशाएँ केन्द्रित हैं।

अभी अमृतलाल जी चतुर्वेदी के घर तक टहल कर आया हूँ। उनकी सर्वोत्तम रचनाओं के सर्वोत्तम अंश सौ सौ पृष्ठों में छापे जा सकते हैं। मेरे किताबें तो छपने से रहीं।

मध्य प्रदेश सरकार से चिट्ठी पत्री करके देव पुरस्कार के नियमों को ठीक कराना है। महाराज ओरछा ने उसे Alternate years में ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के लिये रक्खा था। उस नियम को बदलने का कोई भी नैतिक आधार या कारण मध्य प्रदेश सरकार के पास कदापि नहीं। दरअसल महाराज साहब तो इसे ब्रजभाषा के लिये ही रखना चाहते थे पर मैंने ही जिद करके उसे एक साल ब्रजभाषा और दूसरा साल खड़ी बोली करा दिया था अब मध्यप्रदेश सरकार ने उस नियम को भी तोड़ दिया है। इस अनाचार का विरोध जगह जगह से कराना चाहिए। दस बीस पत्र पहुँचेंगे तो शायद शासन के कान पर जूँ रेंगेगा।

आप बद्रीनाथ की यात्रा पर जा रहे हैं यह देखकर हर्ष हुआ। बहुत सुन्दर प्राकृतिक स्थान सुना जाता है। यशपाल जी भी गंगोत्री तक जा रहे हैं।

मेरी पुस्तक प्रिंस क्रोपाटकिन की आत्मचरित छप रही है। जल्द ही छपेगा। भूमिका उसकी कल लिखी भेज दी है। युवक का शरीर अब भी छप रहा है। काशी विद्यापीठ की पत्रिका का विशेषांक भी छपेगा। श्री बालकृष्ण गुप्त की कृपा से कार द्वारा फ़ीरोजाबाद से आगरा १ घंटे में आ गया तथा पैसा भी बचत हो गया।

इस बीच में बाबा पृथ्वीसिंह आजाद (पोस्ट लालरू जिला पटियाला) के निकट सम्पर्क में आया है। What a marvellous Man with a capital M Do make a point to pay your respects to him personally His आत्मचरित क्रान्ति पथ का पथिक is a great book indeed बाबा साहब उम्र में ८ महान बड़े हैं पर काफ़ी स्वस्थ हैं। He can make a century उनको नवयुवक बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनमें कई उच्च विचार भी हैं। क्रान्ति पथ का पथिक तो अभी अप्राप्य है पर पान

मडल, काशी ने राहुल जी द्वारा लिखित उनकी जीवनी छापी थी। मूल्य ४ रु० होगा। उसे अवश्य पढ़िये। स्व० जुगलेश का पता लगवाइये। वे पहिले सम्मेलन प्रयाग म काम करते थे। बहुत बढ़िया ब्रजभाषा लिख लेते थ। शायद डा० रामप्रसाद त्रिपाठी उनके बारे म कुछ बतला सकें। उन्होंने अपना काव्य ग्रथ स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को अर्पित किया था।

अपने घर के Central Hall को चित्रों से सुसज्जित कीजिये। बल्देव गुरु तथा राष्ट्रपति का चित्र ५, ६ रुपये म बन जायगा। बनवा दू गा। ब्रज के लेखकों, कवियों, पहलवानों तथा अ य विषयों के ज्ञाताओं के चित्र आपके संग्रहालय मे रहने ही चाहिये। अक्षय जी न अपने पिताजी का चित्र मुझे अभी *तक नहीं भेजा। अभी ७३ बज रहे हैं। बल्कि ८—और मैं राजाबाबू की* कार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उनके उपवन के दर्शन एक बार फिर भी करने हैं। अमृतलाल जी उनसे कह आये थे। स० ना० कविरत्न के समस्त ग्रथों का संग्रह छप जाना चाहिये। धाँधूपुर म भी उनके मदिर का जीर्णोद्धार हो जाए, तो क्या कहना है। शेष फिर।

विनीत

बनारसीदास

(६०)

४, लाजपत कुंज सिविल लाइंस
आगरा
२४ ७ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

प्रणाम! आपका २१ जौलाई का कृपापत्र मिला। उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन के उद्धार के लिये जो आप कर रहे हैं वह बहुत ठीक कर रहे हैं। उसे जीवित जाग्रत संस्था बनाना ही है। वहाँ काय करने वाले कौन सज्जन हैं, उनके विषय मे कुछ लिखिये।

मेरा आपरेशन अभी स्थगित हो गया। अब आपरेशन अगस्त के दूसरे सप्ताह म होने की आशा है। डा० अग्रवाल जी की पुस्तक पृथिवी पुत्र की समीक्षा लिखिये। वह तो हमारी बाइबिल है। ब्रजमडल के सर्वांगीण विकास पर हम अब पूरा पूरा ध्यान देना है। क्षेत्रीय विकास ही हमारा मुख्य ध्येय है। आप सबका मैं बहुत-बहुत ऋणी हूँ।

विनीत

बनारसीदास

(६१)

४, लाजपत कुंज
आगरा
८-७-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

वन्दे! कृपापत्र मिला। जन अपनी विनम्र सम्मति आप सबको निःस[illegible] भेजी—यह मेरा कर्तव्य था—फिर जैसा भी आप उचित समझें करें। हमारा मुख्य कर्तव्य इस समय ब्रज जनपद की सर्वाङ्गीण उन्नति करना है और मेरे क्षुद्र व्यक्तित्व का उपयोग यदि तन्त्र किया जा सके तो मैं अपने ऊपर जुल्म भी सहन कर लूंगा। मैं स्वयमेव यह अनुभव करता रहा हूँ कि मेरा बहुत विज्ञापन मिल गया है। भाई आत्म् की उपासना का मैं कायल हूँ। उन्हें धन्यवाद का पत्र भेज दूंगा।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च —

पानी कुछ पड़ गया है ठण्ड भी हो गई है। अब शायद आपरेशन होगा। डा० राजेन्द्र अवस्थी कुशल सर्जन हैं। गांधी जी से हम क्या सीख सकते हैं? इस विषय पर विशेषाङ्क निकालने के लिए मैंने श्री पंकज जी से कहा है।

बनारसीदास

(६२)

४, लाजपत कुंज
आगरा
२६-८-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

वन्दे! कृपापत्र मिला। आप जिस प्रकार सक्रिय बन रहे हैं उससे हर्ष होता है—सन्तोष भी।

Please continue your missionary work as vigorously as you have been doing so far My operation takes place on 20th and I have every hope that it will succeed I have, however decided to retire now and enjoy my life of course it will be an enjoyment with a Purpose

ब्रजभूमि की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए यह जरूरी है कि हम लोग कुछ भ्रमण करें। अब की बार फिरोजाबाद यात्रा के अवसर पर कोटला

जरूर जावें। वहा भाई बालकृष्ण जी का बढ़िया बगीचा है, जिसके आम गतवर्ष बीस हजार म बिके थे। भाई बालकृष्ण ने फीरोजाबाद मे घर से एक मील दूर एक उपवन की नीव डाली है। उस पर वे ५० हजार व्यय करेंगे। स्नानागार भी उसम होगा। उन्ह बधाई का पत्र तो भेज ही दीजिये। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथिवीसिंह यहाँ पधारे थे। फीरोजाबाद गये हुए हैं। मिलने लायक आदमी है। चि० ओउम् स बहुत काम लिया जा सकता है। उनम क्षमता है।

विनीत
बनारसीदास

(६३)

फीरोजाबाद
१०-१० ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मुझे इस बात की शिकायत है कि अपनी अस्वस्थता की कोई सूचना आपने मुझे नही भेजी। मैं इधर उधर से सुनता रहा कि आपका आपरेशन हुआ है। मधुमेह मे शक्कर त्याज्य हो जाती है सो आप उसे छोड ही दीजिये। प्रातःकालीन भ्रमण आपके लिये अनिवार्यत आवश्यक है। डाक्टरो के आदेश का पालन करना चाहिये।

मैं अब सबेरे ४ फर्लाङ्ग टहल लेता हूँ। स्वस्थ होने म तीन महीने तो लग ही जावेंगे।

भाइ चन्द्रगुप्त जी का कहना है कि मैं खुद ५०/६० पृष्ठो का आत्म-चरित इस ग्रन्थ के लिये लिख दूँ पर सयत भाषा मे अपने गुण दोषो का विवेचन अत्य त कठिन काय है। आत्म विज्ञापन स सर्वथा दूर रह कर अपनी शल्य चिकित्सा खुद ही करना कोई आसान काम नही।

चि० बुद्धिप्रकाश १२ ता० को छुट्टियो म घर आ रहा है वह कुछ लिख सकेगा। आप सब का मैं बहुत ऋणी तथा कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(६४)

फीरोजाबाद
११-१० ६६

आशीष।

पत्र मिला। आप लोग श्रम कर रहे हैं। मुझ पर अहसान का बोझ लदता जाता है। आप सबका ऋण कैसे चुका सकूगा?

मरे नाम के मन्दिरे यदि ब्रजभूमि की कुछ सेवा न जाय तो वन मर लिए सब से अधिक हर्ष की बात होगी। इस बीमारी म मुझे अपने विस्तृत साहित्यिक कुटुम्ब के स्नेह का पता लग गया। कितने व्यक्ति मेरे स्वस्थ हो जाने के लिए चिन्तित रहे हैं। इससे मेरे मन म शेष जीवन की प्रबल इच्छा होती है। पर मैं जीवन का कला नहीं जानता। अब सीख रहा हूँ।

आत्म चरित्र मेरे ५० पृष्ठ लिखने का प्रयत्न करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(६४)

एस एन अस्पताल
आगरा

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

कलकत्ता म श्री सीताराम जी सेकसरिया तथा श्री भागीरथ कानोडिया य दो महानुभाव मेरे यजमान हैं और उन्होंने मेरे अनेक यत्नों म यथेष्ट सहायता प्रदान की थी।

यदि आप और प्रभुदयाल जी कलकत्ता की यात्रा करें तो उन दोनों उदार सज्जनों से वहाँ म आपको मिल सकते हैं।

इस बार ब्रज अभिनन्दन ग्रन्थ और निकाल सकें तो कुछ बात भी है। मुझ तो स्वयं का अभिनन्दन दोष भाग रहा है।

मित्र के एक भावना लिखिक्कर जो के पत्र दिनांक की तमाम आजकल यहाँ कर रहे हैं।

स्व० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के पत्रों का छपना के लिए उनके सुपुत्र पर जोर डालें। श्री पृथ्वी अग्रवाल तो पत्र का उत्तर भी नहीं देते। मैंने उनके लगभग सौ पत्र सम्मेलन पत्रिका म छपा दिए थे। और भी सैकड़ों पत्र यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं।

श्रीराम शर्मा जी की पुत्रिका के पास दादा बना म बहुत से पत्रों का सन्दूक अव्यवस्थित पड़ा है।

विनीत
बनारसीदास

(६६)

फीरोजाबाद
२५ १० ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

क्या ही अच्छा हो यदि अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए मेरे सग्रहालय पर दुबे जी (श्री रमेशचन्द्र जी दुबे) एक छोटा सा लेख लिख दें। परन्तु इसके लिए उन्हें किसी रविवार को यहाँ आना होगा।

आत्म चरितात्मक ५० पृष्ठ तयार कर रहा हूँ आपने जो यत्न प्रारम्भ किया है वह सफल हो तदर्थ प्रयत्न करना मेरा कर्तव्य है, यद्यपि मैं उसका पात्र नहा हूँ। चित्र छाट लिए हैं भेजूगा।

हरिशकर जी शर्मा की ३०० चिट्ठिया टाइप होने दिल्ली भेज दी हैं। एक टकित प्रति आपके सग्रहालय को भी भेंट कर दूँगा। मधुसूदन जी आगरे म मिले थ।

बनारसीदास

(६७)

फीरोजाबाद
२८-११ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मैंने जो पत्र आज डा० कमलेश अग्रवाल को भेजा है उसकी नकल आपकी सेवा म अर्पित है। उनका पता है राम लक्ष्मण भवन, पथवारी, बेलन गज, Agra उनको २८ नवम्बर को पी एच डी की उपाधि मिलेगी। यह बहुत ही अच्छा हुआ। दुर्भाग्यवश उनके गाइड डा० हरिशङ्कर शर्मा अब इस ससार म नहीं हैं।

उत्तर प्रदेश की राजनीति म जो भूकम्प आया हुआ है उसम श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य जैसे ब्रज भक्त की भी स्थिति खतरे मे पड गई है नहीं तो म ना कविरत्न के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिये उनसे कुछ काम लिया जा सकता था। उन्होंने शहीद अशफाक के भतीजे को ५०) महीने की पेंशन दिला दी, यह बहुत अच्छा किया।

कृपया आप मेरी ओर स श्री लक्ष्मीरमण जी को इस पुण्य काय के लिये धन्यवाद द दीजिये।

भाई यशपाल जी की माता जी का स्वर्गवास हो गया है। व ८० वर्ष की थीं। उनके जाने का वक्त था, फिर भी मातृ विछोह दुर्घटना है।

सनाढ्य जी सम्पूर्ण सामान था (अभिनन्दन ग्रन्थ सम्बन्धी) सम्मेलन कार्यालय प्रयाग को भेज देंगे। [illegible] भाई मुजफ्फर रहे। यद्यपि मैंने अपने अभिनन्दन के इस रूप का विरोध किया था, तथापि आप लोगों की श्रद्धा के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा।

यह ग्रन्थ उसके बाद संग्रहालय पर खर्च होना चाहिए। उसकी मुझे सबसे अधिक चिन्ता है। भाई महेन्द्र जी ने इस बार म [illegible] में एक नाटक लिखा है जो श्रद्धा से परिपूर्ण है पर किताब की जिल्द भयंकर बनी है। ८० हजार के चन्दे की बात बिल्कुल अत्यावश्यक है—लगी है। पर संग्रहालय के सुरक्षित स्थान के लिए मैं चिन्तित अवश्य हूँ।

श्री मोहन जी को मेरा नमस्ते कहिए। इस शुभ अवसर पर मैं वरवधू को बहुत-बहुत आशीष भेजता हूँ। उन्होंने ब्रजभाषा साहित्य के लिए जो महान कार्य किया है उसके कारण हम सब उनके ऋणी तथा कृतज्ञ हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

मेरे संग्रहालय पर भी एक लेख आ सकता है। उसी की मुझे सबसे अधिक चिन्ता है। संग्रहालय पर भी दूर जा लिख सकते हैं।

चतुर्वेदी जी द्वारा डा० कमलेश अग्रवाल को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

श्रीमती डा० कमलेश अग्रवाल आगरा,

यह पढ़कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपको Ph D की उपाधि मिलने वाली है। मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।

कविरत्न सत्यनारायण के स्वर्गवास के बाद लगभग इस वर्ष तक मैं उनकी कीर्ति रक्षा के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न करता रहा। उसका विस्तृत ब्योरा आपने उनके जीवन चरित की भूमिका में पढ़ा ही होगा।

मैं तो न जाने कब से जानता हूँ सात्त्विक सेवा से एक पैसा भी नहीं कमाया और जो कुछ किया सर्वथा निस्वार्थ भाव से। उनके लिए—उनकी स्वर्गीय आत्मा के लिए—यह आनन्द तथा सन्तोष की बात होगी कि उनके विषय में शोध करने वाले व्यक्ति को Ph D की उपाधि मिले।

अब मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप जो कुछ भी कर सकें स्व० सत्यनारायण जी की कीर्तिरक्षा के लिए अवश्य करें। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे

तथा श्री पंकज जी और सर्वोपरि श्री वृन्दावनदास जी (अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा) को पूर्ण सहयोग देकर स ना के ग्रन्थों के पुन मुद्रण के लिय प्रयत्नशील हों।

आप यदि उचित समझें तो धांधूपुर की तीर्थयात्रा करके स ना के मन्दिर पर कुछ पुष्प जरूर चढावें। एक प्रार्थनापत्र आगरे वालों की ओर से जरूर जाना चाहिये कि धांधूपुर वाले उनके मन्दिर का जीर्णोद्धार करा दिया जाय। श्री लक्ष्मीरमण आचार्य को इस बारे म लिखा जाय।

यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता तो मैं अवश्य सेवा म हाजिर होता पर यात्राएँ मेरे लिय अत्यन्त ही कठिन हैं। गैर हाजिरी के लिय क्षमाप्रार्थी हूँ।

अपने ग्रन्थ को छपवाने के लिये विनोद पुस्तक भंडार वालों से कहिये। वे शायद कुछ रुपये मांगेंगे। प्राय ये लोग ऐसा ही करते हैं। अगर रुपया का प्रबंध आप कर सकें तो कीजिये। शोधग्रन्थ यों ही पड़ा न रह जाय। पुन पुन आपको हार्दिक बधाई भेजता हूँ। लोहामंडी जाकर भाई विद्याशङ्कर जी को कुछ फल अवश्य भेंट करें।

विनीत
बनारसीदास

(६८)

फीरोजाबाद
१६-१२ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

माननीय शिक्षामन्त्री उ प्र को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

जो ड्राफ्ट गुरु जी ने बनाकर भेजा था उसका कुछ संशोधन करके मैंने यह पत्र लिख दिया है और आज सीधे लखनऊ भेज भी दिया है। नकल गुरु जी को भी सीधी भेज रहा हूँ। बिचारे यशपाल जी पर वज्रपात हुआ है। उनके बहनोई का आकस्मिक देहान्त हो गया।

मेरा ख्याल है कि इस परिस्थिति म उन्हें इलाहाबाद फिलहाल नहीं जाना चाहिये। पौष सुदी २ [मेरा जन्मदिवस] शायद ९ जनवरी को पडेगा। अगर जन्म दिवस पर ही उत्सव करना जरूरी समझा जाय तो २४ दिसम्बर के बजाय ९ जनवरी ठीक रहेगी। वैसे कोई जल्दी तो है नहीं। मैं उन्हें इस बारे म लिख रहा हूँ। वे पहले स्वस्थ चित्त हो लें, उसके बाद अन्य बातें सोची जा सकती हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

आप सम्पादक स्वराज्य बेलनगंज आगरा को उनके आगरा कमिश्नरी ग्रन्थ के लिए कुछ सुझाव भेज सकते हैं। वे आपके शिष्य थे।

प्रतिलिपि पत्र जो चतुर्वेदी जी द्वारा शिक्षामन्त्री को भेजा गया

सेवा में,

श्री शिक्षामन्त्री महोदय
सचिवालय
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ

श्रीमान्

सविनय निवेदन है कि मैं बहुत वर्षों से गुरुवर श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी (मथुरा) से व्यक्तिगत तौर पर परिचित हूँ। वे एक वयोवृद्ध साहित्यकार हैं और खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों पर उनका असाधारण अधिकार है। उनकी गद्य तथा पद्य की रचनाएँ हिन्दी के प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित होती रही हैं। स्वयं मैंने विशाल भारत में उनके लेख छापे थे।

अनेक बार उनके श्रीमुख से उनकी कविताओं को सुनने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ है। उनमें ओज है और प्रसाद गुण भी। श्री भगवानदत्त जी का सम्पूर्ण जीवन साहित्य के लिए ही अर्पित रहा है।

उनका सम्मान करके उत्तर प्रदेश सरकार स्वयं अपने को भी गौरवान्वित करेगी।

विनीत

फीरोजाबाद आगरा
६ १० ६६

बनारसीदास
भूतपूर्व संसद-सदस्य

(६८)

फीरोजाबाद
१० १२ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री पन्नालाल दूसरे झाँसी से भारती नामक पत्रिका निकालते हैं जिसका वृन्दावन विशेषांक अभी हाल ही में उन्होंने निकाला था। उसकी प्रति शीघ्र ही भिजवाऊँगा। उनका शोधपत्र पर वे लोक संस्कृति जैसे

(बुन्देली का) निकालना चाहते हैं और उसके लिए मैंने उन्हें कुछ परामर्श भेजे हैं। नकल आपको भेज रहा हूँ। क्षेत्रीय विकास में ही हमारा कल्याण है। इसका मतलब संकीर्ण दृष्टिकोण को विकसित करने का हर्गिज नहीं है। उदाहरणार्थ 'भूमि कटन' का सवाल लीजिये। वह अन्तर्राष्ट्रीय है। केवल चम्बल तथा जमना के खारों तक सीमित नहीं। अमरीका में भी भूमि कटन का सवाल मौजूद है। प्रेसीडेन्ट आइजन होवर ने उस पर कहा भी था।

बुन्देली लोक संस्कृति अंक ब्रज लोक संस्कृति अंक का पूरक ही होगा। यह भी अन्तर्जनपदीय परिषद् के दायरे में आता है।

मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में ब्रज के लिये जो पृष्ठ दिये गये होंगे वे ही लाभदायक होंगे। उनके Reprint से पुस्तिका तैयार हो जानी चाहिये। मेरी प्रशंसा के जो पुल बाँधे गये होंगे, उनके विषय में क्या कहूँ। सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक H G Wells को उनकी ७० वीं वर्षगाठ पर जब अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया (या अभिनन्दन ही किया गया) तो उन्होंने अपनी बाल्यावस्था का एक किस्सा सुना दिया। जब वे छोटे बच्चे ही थे तो उनकी धाय रात शुरू होते ही कहती थी 'Henry it is time to sleep now' सो मेरे भी रिटायर होने का वक्त आ गया है, यही अभिनन्दन का तात्पर्य है।

ब्रजसाहित्य मंडल की भूमि के विषय में क्या हुआ ?

छः रुपये की कीमत की पुस्तक 'मध्यप्रदेश और गान्धी जी' सूचना विभाग, मध्यप्रदेश भोपाल से जरूर मंगा लें। मेरे भेजे बापू के ११ पत्रों के ब्लाक उसमें हैं।

सवेरे पौने चार बजे उठकर चाय बना लेता हूँ। फिर इसी प्रकार के पत्र घसीट दिया करता हूँ। कम से कम एक लाख फालतू चिट्ठियाँ तो मैंने लिखी ही होंगी।

I burn my candle both the ways
It gives a beautiful light
But oh ! my friends and oh ! my foes
It gives a great delight

ये कविता शायद Lawrence की है। मुझे शुद्ध याद नहीं। किसी से पूछिये। Burning the candle both the ways वाला expression अर्थपूर्ण है।

यशपाल जी पर पूरी विपत्ति आ गई। उनके बहनोई का स्वर्गवास हो गया। यदि तिथि तारीख को ही [illegible] माना जाय तो ६ जनवरी (पौष शुक्ला २) क्यों न रक्खा जाय। हिन्दू हिसाब से वही मेरी जन्मतिथि है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

श्री सीताराम धूसर को लिखे पत्र की नकल भेजता हूँ।

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री सीताराम धूसर को भेजे गये पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद

१० १२ ६६

प्रियवर,

कार्ड मिला। लोक संस्कृति अङ्क का विचार बहुत अच्छा है। अवश्य निकालिये।

चूँकि विशेषाङ्कों के लिये विज्ञापन प्राय मिल ही जाते हैं इसलिये शान से भी विशेषाङ्क निकालने के प्रश्न पर विचार किया जा सकता है पर यही मुश्किल यह है कि 'भारती' के मामूली अङ्क प्राय साधारण कोटि के ही होते हैं, इस कारण उसे विज्ञापन ज्यादा मिल नहीं सकते। यह सवाल खूब आपके गौर करने का है।

लोक संस्कृति अङ्क—

आप अभी से लेखकों तथा कवियों से सम्पर्क स्थापित करें।

श्री कृष्णानन्द गुप्त गरौठा झाँसी
श्री श्यामसुन्दर बादल राठ, हमीरपुर
श्री मित्र जी झाँसी
श्री विद्यार्थी जी भोपाल
श्री दुर्गेश जी कुण्डेश्वर
श्री [illegible] जी [illegible]
श्री चतुरेश जी [illegible]
श्री रामइकबालसिंह राकेश [illegible], मुजफ्फरपुर Bihar
श्री देवेन्द्र सत्यार्थी दिल्ली (पूरा पता तलाश करना है)

इनके अतिरिक्त श्री गौरीशंकर द्विवेदी तथा श्री माहौर जी से भी परामर्श लेने हैं। चित्र इन लोगों से मंगा लेने हैं। मधुकर की पुरानी फाइलें

म कुछ नाम और भी मिल जावेंगे। बादल जी तथा कृष्णानन्द जी से कहिये कि सम्पादकीय मडल मे वे अपन नामो का प्रयोग कर लेने दें। उस विशेषाङ्क में स्व० डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल का चित्र जरूर रहे। स्व० वीरसिंह जू देव का भी।

श्री बाबू वृन्दावनदास जी ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा मे भी सलाह ले लीजिये, इन सबको मेरा नाम लिख सकते हैं कि मेरे आग्रह पर आप उन्हे पत्र लिख रहे हैं। २० पैसे का टिकट लगाकर लिफाफा रख दें तो उत्तर पाने म कुछ आसानी होगी। इस प्रकार प्रत्येक पत्र पर ४० चालीस पैसे खर्च हो जायगे। पासल अभी नहीं मिली। आज फिर तलाश कराऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

(७०)

फीरोजाबाद
१६ १२ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मेरा भानजा [डा० मिथिलेश चन्द्र] यह पत्र आपके पास ला रहा है। चि० नरेसी की पत्नी के बाल बच्चा होन वाला है इसलिये मेरी पुत्रवधू को लेकर वह मथुरा गया है। नरेसी अब Dampier park में रहता है।

भाई यशपाल जी ने ८ जनवरी को वह Function रक्खा है और श्रीमान् गिरि साहब से प्रार्थना की है। मुझे शायद २-४ दिन पहिले ही दिल्ली पहुँच जाना चाहिये। ग्रन्थ ६०० छ सौ पृष्ठों का है यह बात यशपाल जी ने लिखी है। इसको तैयार करने मे—तथा तथ्य साधन जुटाने म भी—आप सबको कितना परिश्रम करना पडा है। मैं भला इस ऋण से कैसे उऋण हो सकूगा ?

सम्पादक 'स्वराज्य' बेलन गंज आगरा से मैंने आगरा कमिश्नरी पर जनपदीय-अङ्क निकालने का अनुरोध किया है। शायद वे कुछ करें। आगरा कालेज अङ्क भिजवाऊँगा। झाँसी की भारती का बुन्देलखण्ड अङ्क मिल गया ? ब्रजभारती के दो तीन पुराने अङ्क श्री महेन्द्र शास्त्री रतनपुरा जिला सारन को भिजवा दें। वे भोजपुरी के अच्छे कवि हैं। [illegible] के बारे में सहयोग माँगिये।

यू पी सरकार इस वक्त कुछ करने के Mood में प्रतीत होती है। ब्रजसाहित्य मंडल की ओर से एक प्रार्थना पत्र आर्थिक सहायता के लिये शीघ्र ही भिजवाइये। ना प्र सभा आगरा को भी मैंने यही अनुरोध किया है।

लगे लगाये में कुछ काम स्व ना चतुर्वेदी के धौलपुर वाले मन्दिर के लिये भी हो जाय तो क्या कहना है। मैंने श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य को लिखा तो है।

६) के मूल्य का एक ग्रन्थ मध्य प्रदेश और गांधी जी सूचना विभाग M P Govt भोपाल ने छापा है। उसकी प्रति जरूर मंगाइये।

डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के सुपुत्रों ने पत्रों का उत्तर न देने की कसम खायी है। अग्रवाल जी के सौ पत्र मैंने छपवा दिये थे और सैकड़ों ही पत्र बिखरे पड़े हैं—दिल्ली जगत में—पर उसकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं। डा० सत्येन्द्र को भी याद दिलाइये। उनके पास बहुत से पत्र हैं। श्री मोहन जी का ग्रंथ जल्द नहीं छप सकता।

श्री मोहन जी को मेरा नमस्कार कहिये। हम सबको आचार्य वासुदेव शरण जी अग्रवाल के ऋण से उऋण होना है। यथाशक्ति जो जितना बन पड़े, करे। जिनके पास प्रेस है वे तो बहुत काम कर सकते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(७१)

फीरोजाबाद
२१ १२ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मुझे उत्तर प्रदेश सरकार की अदूरदर्शिता का पता नहीं था जिसने कुल जमा २००) की सहायता प्रदान की है। पिछली बार जब श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य पधारे थे तो चुंगी की सार्वजनिक मीटिङ्ग में मैंने उनसे अनुरोध किया था कि ब्रजसाहित्य मंडल तथा ना प्र सभा आगरा को आर्थिक सहायता दिलवावें। उसी के कारण यह पत्र-व्यवहार चल पड़ा है। शायद इसका कुछ भी परिणाम न निकले। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय सभी पार्टियाँ कुछ कर गुजरने के Mood में हैं। सम्भवतः वे इस वक्त कुछ विशेष उदारता से काम लें। श्री लक्ष्मीरमण जी ने एक प्रार्थना तो मेरी स्वीकार कर ही ली—याने शहीद आजाद के भतीजे को १०) पचास रुपये मासिक की पेंशन दिला दी। इसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

पुराने जमाने से एक प्रश्नावली चली आ रही है—वह अग्रेजी म है और Indigent मुफलिस साहित्य सेवियो को उससे मदद मिलती है। वह निस्सन्देह अपमान जनक है। कोई भी स्वाभिमानी साहित्यसेवी खपरा लेकर किसी सरकार के सामन इस प्रकार भीख नही माँग सकता। सरकार यदि किसी साहित्यसेवी की कुछ सहायता करना ही चाहती है तो निजी तौर पर उसकी स्थिति का पता लगाया जा सकता है और सारी चीज gracefully की जा सकती है।

श्री सम्पूर्णानन्द जी ने बिना मेरे कहे और बिना मुझे सूचित किये श्रीमती सुचेता कृपलानी को लिख दिया था कि यू पी सरकार मुझे पेंशन दें। साल भर वह मुझे १५०) महीने के हिसाब स मिली भी। श्री सम्पूर्णानन्द जी का आग्रह था कि मैं उसे अस्वीकार न करूँ। फिर वह प्रश्नावली मेरे पास लखनऊ से आई, जिसका उत्तर देना अगौरवजनक होता। इसलिये वह पेंशन बन्द हो गइ। मैं उसके जारी करने के लिये नही कहता। मेरा काम तो किसी न किसी प्रकार चल ही जाता है पर दूसरे साधनहीन साहित्य सेवियो की सहायता उनके गौरव की रक्षा के साथ होनी चाहिय। क्यो न इस बारे मे आप आचाय जी को लिखें? इसमे तो पसे का सवाल है नही। उस प्रश्नावली को मसूख कर देना चाहिये, दूसरा काम और भी जरूरी है। देव पुरस्कार के नियम स्वय ओरछा नरेश से मैंने ही बनवाये थे—यानी वह एक वष ब्रजभाषा काव्य पर मिलने का था दूसरे वष खडी बोली काव्य पर। चूकि मध्य प्रदेश सरकार न ओरछा तथा अन्य राज्यो को विलीन कर लिया था, इसलिये उनकी जिम्मेवारियो का निभाने का नतिक कतव्य उस पर पडा।

काफी प्रयत्न करन पर मध्यप्रदश सरकार न देव पुरस्कार तो चालू कर दिया पर नियमो म परिवतन कर दिया। यह चीज बहुत गलत हुई। ओरछा महाराज काव्य प्रेमी थे—विशेषत ब्रजभाषा के पक्षपाती—दरअसल वे देवपुरस्कार ब्रजभाषा काव्य पर ही देने के पक्षपाती थे। मरे आग्रह पर उन्होंने alternate year पर उसे देना स्वीकार किया था। उनके बनाये हुए नियमो म परिवतन करने का कोई भी नतिक अधिकार M P govt को नही है। आप ब्रजसाहित्य मडल के प्रधान की हैसियत से श्री श्यामाचरण शुक्ल को लिखें। मैं भी लिखूगा। भाई श्रीनारायण चतुर्वेदी स भी लिखवावें। गरज यह कि हाँका होना चाहिये। यह शब्द शिकार क्षेत्र का है। तीन तरफ स जब हाँके वाले खुट्ट खुट्ट की आवाज करते हैं तो जानवर घबरा कर चौथी तरफ (जहाँ स आवाज नही आ रही) जाता है और वहाँ खडे शिकारी उस पर निशाना लगा देते हैं।

श्री रामचरण ह्यारण मित्र की पुस्तक 'बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य' छप गई है। मूल्य १५) है। राजकमल ने छापी है। मैंने मित्र जी को लिखा है कि आपको भिजवावें। वह निष्पक्ष विस्तृत आलोचना की अधिकारी है।

हाँ ८ जनवरी के दिन यशपाल जी ने राष्ट्रपति महोदय को लिखा है। उनका उत्तर अभी नहीं मिला।

६०० पृष्ठों के ग्रन्थ की सामग्री में क्या क्या है उसका मुझे बहुत कम पता है। हाँ श्री प्रकाश जी ने अपने लेख की नकल मुझे भी भेज दी थी। श्री अमृतलाल चतुर्वेदी का लेख मेरे द्वारा भेजा गया था। सुना है कि अमृतलाल जी की पुस्तक गालिब अमृत छप गई है। मुझे अभी तक नहीं मिली।

भाई आउम ने तीन तैल चित्र (हरिश्चन्द्र शर्मा श्रीराम शर्मा और C F Andr ws) के बनवाने का आर्डर दे दिया है। श्रीराम जी तथा हरिश्चन्द्र जी के चित्र भारती भवन में लगेंगे और एण्ड्रयूज का उनके घर पर ही।

नौ तारीख के उत्सव में विशेष तौर पर बालकृष्ण जी मुझे आउम् राजाबाबू शम्भुनाथ जी प्रभृति व्यक्तियों को निमंत्रित करना है। यह काम आपके सुपुर्द है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

२० ता० का कार्ड अभी मिला। मेरा ख्याल है कि हम तिथि इत्यादि के झंझट में न पड़ना चाहिए सप्रू हाउस इत्यादि में तो बहुत खर्च पड़ जायगा। व्यय में एक पैसा भी व्यय न किया जाय। आप डा० नगेन्द्र से मिल आये यह अच्छा किया। कृतज्ञ हूँ।

विनीत

बनारसीदास

(७२)

फारोजाबाद (आगरा)

६ १२ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे। यशपाल जी को मैंने लिख दिया है कि उत्सव पर अधिक खर्च न करें। किसी बड़ी जगह के किराये पर लेने में बहुत खर्च पड़ जायगा। यदि

राष्ट्रपति गिरि जी को फुर्सत न हो तो श्री जगजीवनराम जी से प्रार्थना की जा सकती है। वे भी मुझे जानते हैं। यशपाल जी का आदेश मिलने पर मैं तीन दिन पहिले दिल्ली पहुँच जाऊँगा।

बन्धुवर रामचरण हयारण 'मित्र' की पुस्तक 'बुन्देलखण्ड का साहित्य और संस्कृति' मूल्य १५) निकल गई है। अच्छी चीज है। मैंने उन्हें लिखा है कि एक प्रति आपकी सेवा में भिजवा दें। भाई अमृतलाल जी की गालिब *अमृत अभी देखने में नहीं आई। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे का तबादिला प्रजमंडल* के लिये एक दुर्घटना है। Stefan Zweig की 'परिवर्तन' नामक एक कहानी मधुसूदन जी छाप रहे हैं। वह मेरी अत्यन्त प्रिय कहानी है। छपने पर अवश्य पढ़िये। वे भेजेंगे।

श्री श्यामचरण शुक्ल जी को देव पुरस्कार के मूल नियमों के बारे में आप लिखिये—मैं भी लिखूँगा। वह Alternately ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के काव्य पर दिया जाने वाला था। उस नियम में परिवर्तन करने के माने है स्व० ओरछेश की अन्तरात्मा का सर्वथा विरोध। यह तो एक नैतिक अपराध है।

श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य की Indigent वाली प्रश्नावली की ममूल करने के बारे में लिखना है। वह तो किसी भी स्वाभिमानी साहित्यिक के लिये घोर अपमानकारक है।

सम्भव है कि वर्तमान बदली हुई परिस्थिति में यू० पी० सरकार कुछ उदारता से काम ले। श्रीमती इन्दिरा जी ने बुद्धि जीवियों का आह्वान किया है पर उनकी प्रायः उपेक्षा ही होती है—हाँ राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के जमाने में उनकी ओर अवश्य कुछ ध्यान दिया गया था—सो भी चोटी के साहित्य सेवियों के प्रति। साधारण बुद्धिजीवी तो घोर संकट में दिन व्यतीत करता रहा है। पोस्टेज की बढ़ी हुई दरों ने पुस्तक व्यवसाय का चौपट ही कर दिया है। 'स्वराज्य' नामक एक साधारण साप्ताहिक बेलनगंज Agra से निकलता है। *मैंने उसके सम्पादक आनन्द शर्मा से आगरा कमिश्नरी का जनपद अङ्क* निकालने के लिये कहा है। वे राजी तो हो गये हैं।

इटावे के श्री सूर्यनारायण जी अग्रवाल यहाँ पधारे थे। वे श्रीमन् नारायण जी के चाचा हैं। पुराने लेखक हैं—८० वर्ष के होंगे इटावे में अच्छा काम करते रहे हैं। Eye Hospital खोल दिया है और स्कूल भी चला रहे हैं।

उन्हीं दिनों में स्व० शिशु जी के सुपुत्र [illegible] जी पधारे थे। ११ जनवरी को शिशु जी की जन्मतिथि है। मैंने उन्हें लिखा है कि उनके विषय में संस्मरण इकट्ठे करें। क्या Kotla College Magazine का विशेषाङ्क मिला? साथ की कविता भाई श्यामसुन्दर जी खत्री ने भेजी है। अत्युक्ति-अलङ्कार का यह जीता जागता उदाहरण है। इसे छपने के लिये नहीं भेज रहा, आपके देखने भर के लिये है।

विनीत
बनारसीदास

(७३)

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

वन्दे। उत्सव फरवरी के प्रथम सप्ताह तक के लिये टल गया यह अच्छा ही हुआ। तब तक दिल्ली में Influenza का प्रकोप भी कम हो जायगा।

स्व० हरिशंकर जी के [illegible]०० पत्रों की टाइप की हुई ५ प्रतियाँ चिरंजीव रामगोपाल मकान नं० १११७ सेक्टर ८ रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली २२ के पास पहुँच गई हैं। श्री प्रकाशवीर जी ने १०० रु० अपने मित्र के द्वारा भिजवा दिये थे। ११० रु० और भेज देंगे। ४०० से ऊपर पृष्ठ हैं। एक टाइप्ड प्रति आप अपने संग्रहालय के लिये रख लीजिये। भाई हरिशंकर जी के लिए स्मृति ग्रन्थ तैयार कराना इस समय तो अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी से ही चर्चा करने की इच्छा है सो वे कुछ नहीं कर सके। अब व्यावहारिक बात यही होगी कि [illegible]मुनि जैन कालेज आगरा तथा [illegible] कालेज आगरा की वार्षिक पत्रिकाओं के हरिशंकर अंक निकलवा दिये जावें। उन दोनों महाविद्यालयों में हरिशंकर जी की पुत्रवधुएँ ही प्रिंसीपल हैं। यह श्राद्ध कम आसान है। भिण्ड के पास अध्यापक उन पर Research भी कर रहे हैं। उन्हें भी सहायता दी जानी चाहिये।

क्या ब्रजखण्ड (अभिनन्दन ग्रन्थ) के Reprints न लिये गए? मुझे तो पता भी नहीं कि ग्रन्थ में क्या क्या छपा है। श्री बालकृष्ण गुप्त तथा शरद [illegible] की [illegible] उत्पन्न करने की थी। वे कुछ असन्तुष्ट हैं। [illegible] जी का [illegible] का पत्र भी भेजा है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

श्री मिश्र जी के लिये पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

चतुर्वेदी जी द्वारा डा० सुधाकान्त मिश्र, अदलो बाजार वाराणसी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१० १ ७०

प्रिय मिश्र जी,

प्रणाम ! सदस्यता फाम भर कर भेज रहा हूँ । इस उम्र म मैं अधिक सवा ता नहीं कर सकूगा फिर भी समय समय पर कुछ परामश—यदि आप जरूरी समझें तो—भेज सकता हूँ ।

यदि आप अय जनपदीय भाषाओं के कायकत्ताओ स सम्पक स्थापित करें तो उमस लाभ ही हागा । राष्ट्रभाषा के कुछ हिमायती लोग अपनी नासमझी के कारण अपन Steam Roller से जनपदीय भाषाओं का कुचल डालने का असम्भव प्रयत्न करते रहे है, यद्यपि इसम उनकी सफलता मिलना सवथा असम्भव है । मेरा ख्याल है कि मैथिली की Position जनपदीय भाषाओं म काफी ऊँची है और उस भारतीय सविधान म पृथक् भाषा का स्थान मिलना ही चाहिय । पर आमरण अनशन की बात मुझे बिलकुल नहीं जचती । प्रबल सावजनिक मत तयार करन की जरूरत है । डा० सुनीति कुमार चटर्जी ता आपक समथक हाग ही । आचाय द्विवेदी जी स भी पूछिय । श्री रामइकबालसिंह राकेश स भी सहायता लीजिय । श्री नागाजुन जी का वतमान पता क्या है । उनका कृपापत्र बहुत दिना स नहीं मिला ।

पूज्य पिताजी के सस्मरण ता तुरत लिखना लिखाना शुरू कर दीजिये । ४, ५ वष पर्याप्त हैं, पर जितनी जल्दी यह श्राद्ध कम सम्पन्न हागा उतना ही नतिक बल आपकी सस्था को मिलेगा । धमयुग अथवा साप्ताहिक हिन्दुस्तान म उन पर लेख छपना चाहिए । मिथिला-आलाक वाले लेख का ही पुन लिख दीजिय ।

बाबू वृदावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल, मथुरा को मैं आपके बार म लिख रहा हूँ । वे बडे कुशल कायकत्ता हैं । आपका पूरा-पूरा सहयाग उनसे मिलेगा ।

विनीत
बनारसीदास

(७४)

रामकृष्णपुरम्
वसंतपंचमी

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। आपके द्वारा दिये गये पत्र को अद्भुत सफलता मिली। तदर्थ मैं आपका बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। पर जितनी कीर्ति रूपी मिठाई मुझे परोसी गयी है, उससे निस्सन्देह मुझे अजीर्ण हो सकता है।

जस खायो सब जगत को भयो अजीरन सोइ।
अपजस की गोली दऊँ, खाइ तुरत पच होइ॥

किसी मनचले कवि ने बारहठ को यह दोहा लिख भेजा था। मुझे भी अपजस की गोली खानी चाहिए। यशपाल जी को भोपाल जाना पड़ा। अब लौट आये हैं। ग्रन्थ की प्रतियाँ अब भेजेंगे। पहले तो मैंने अभिनन्दन का घोर विरोध किया था पर अब मैं समझता हूँ कि जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ यद्यपि उसकी कीर्ति का अधिकारी मैं अपने को हरगिज नहीं मानता। बस इतना ही मानता हूँ कि लोग मुझे किस रूप में देखना चाहते हैं। उनकी सद्भावनाओं तथा आशीर्वादों के अनुरूप जन्म जन्मान्तर में भी बन सकूँ तो बड़ी बात हो।

ब्रज का पुनर्निर्माण आपका लेख बहुत बढ़िया रहा। मेरी आकांक्षाओं का ठीक चित्रण आपने किया है।

बनारसीदास

(७५)

नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। आशा है कि आप बम्बई से लौट आये होंगे। ४-५ दिन बाद मैं फिरोजाबाद लौट जाऊँगा। भेंट स्वरूप ग्रन्थ माँगने वालों के पत्र आ रहे हैं। मैं विनम्रतापूर्वक उन्हें नकारात्मक उत्तर ही दे रहा हूँ। कोई ३-४ तीन चार रुपए की किताब होती तो खरीदकर भेज देता। पहला कर्तव्य ग्रन्थ की बिक्री कराना है ताकि मण्डल को घाटा तो न रहे। यशपाल जी को अभी पत्र भेजा है कि श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को प्रति उन्हें शीघ्र ही [illegible] मिल जाय।

श्राद्ध अभिनन्दन मुद्रण कम्पनी एतन्निमित्त के मैनेजिंग डाइरेक्टर पं० झाबरमल्ल जी शर्मा मेरे अग्रज हैं—८ वर्ष बड़े। एक प्रति उनको भेंट

स्वरूप जानी चाहिए। वे आना चाहते थे पर हरियाणा के आन्दोलन के कारण न पहुँच सके। दरअसल वे और श्री श्रीप्रकाश जी मुझसे पूर्व अभिनन्दन के हकदार थ। अपने सग्रहालय के विषय म श्री भक्तदर्शन जी से बातचीत करनी है। वे National Archives के द्वारा कुछ आवश्यक कागजात Preserve करा सकते हैं। सी एफ एन्ड्रयूज की शताब्दी पर नेहरू म्यूजियम एक प्रदर्शिनी करना चाहता है, उसमे भी मुझे सहयोग देना है। अब कई महीन विश्राम अनिवार्य हो गया है। आपरेशन के बाद आराम नहीं कर सका। आगरे २ दिन ठहरता हुआ फीरोजाबाद पहुँचूगा।

विनीत
बनारसीदास

(७६)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! आशा है कि आप बम्बई से लौट आये होगे। मेरा विचार १५ ता० रविवार को Taj Express से आगरे पहुँचने का है। भाई हरिशंकर जी के पत्रो की टाइप्ड प्रतियाँ साथ लेता जाऊगा। मुश्किल यह है कि पृष्ठो को छाँट छाँटकर अलग ५ प्रतियाँ नहीं बनाई गई। एक प्रति आपको भेंट करनी है २ प्रतियाँ विद्याशंकर जी को तथा २ प्रतियां मूल के साथ मेरे पास रहगी।

आगरे म दो दिन रहूँगा—४ लाजपत कुज पर। प्रात काल १६ को राजाबाबू के उपवन को देखने का विचार है। और १७ ता० को फीरोजाबाद लौटने का। गुरुवर श्री भगवान दत्त जी चतुर्वेदी एक प्रति चाहते हैं। मैंने राजाबाबू म अनुरोध किया है कि यदि वे भेंट कर सकें तो अच्छा हो। नरेशो ने प्रति दी या नहीं। उसे एक प्रति यशपाल जी द्वारा भिजवाऊँगा। इस बीच वह आपसे एक प्रति उधार लेकर पढ सकता है। उसम मेरे अनुज स्वर्गीय स्व० रामनारायण का रेखा चित्र है। आपने उसे पढ़ा या नहीं। श्री बालकृष्ण जी यहाँ पधारे थ। ८ को भी आने वाले थे और १५ को भी। आपके अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये ब्रज के मुख्य मुख्य स्थानो की तीर्थयात्रा करनी है। रेखाचित्र प्रस्तुत करने हैं।

होली की परवा म शरद पूनो तक फर्मो स्टडी मनाऊँगा। शेष कुशल।

बनारसीदास

(७७)

रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली २२
१३ २ ७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

व० । बन्धुवर अमृतलाल जी ने मुझसे फीरोजाबाद में आग्रहपूर्वक अनुरोध किया था कि अब एक दूसरे अभिनन्दन ग्रन्थ का काम हाथ में ले लेना चाहिए। और उन्होंने आपका शुभ नाम suggest किया था।

मुझे अमृतलाल का यह विचार बहुत पसन्द आया था और मैं उस कार्यक्रम में परिणत करने के लिए अत्यन्त उत्सुक भी हूँ। आपके नाम के सहारे व्रजभूमि के विषय में एक नवीन Reference Book well illustrated तैयार हो जायगा।

मथुरा म्यूजियम में उन सब प्रतिमाओं का जिनके अंकुर व्रजभूमि में प्रस्फुटित हो रहे हैं सजीव चित्रण ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। व्रजमण्डल में जहाँ जहाँ जो उल्लेखनीय साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य हो रहा हो उसका लेखा जोखा इकट्ठा कर लेना चाहिए।

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि इस समय सम्पूर्ण व्रजमण्डल में आपकी सेवाएँ अद्वितीय हैं और इस कारण इस यज्ञ को भरपूर नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिल जायगा। मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में जो अनुभूतियाँ दूर हो उनका सदुपयोग इस द्वितीय ग्रन्थ में हो सकता है।

जो भी मसाला चित्र सामग्री इकट्ठा हो वह आपके निजी संग्रहालय में सुरक्षित किया जा सकता है। जो ३ ४ वर्ष मेरे शेष जीवन के रह गए हैं उनको मैं अपनी व्रजभूमि के लिए ही मुख्यतया अर्पित कर देना चाहता हूँ। भाई सीतल जी तथा सत्येन्द्र जी प्रभृति का पूरा सहयोग तो निश्चित ही समझिए। फीरोजाबाद के साहित्य प्रेमी तथा सार्वजनिक मुझे यथेष्ट सहायता देंगे ही। आगरे वालों का सहयोग मिलेगा और मथुरा तो आपका निजी केन्द्र ही है। मैं उस ग्रन्थ को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने के पक्ष में हूँ। अखाड़ा बाग-बगीचा गायकों तथा पहलवानों को क्या छोड़ा जाय? गोवर्द्धन तथा छटीकरा के प्रयोग क्या न उचित स्थान पावें? नरवर का संस्कृत विद्यालय क्या उपेक्षित रहे? मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपके अभिनन्दन ग्रन्थ से समस्त व्रजभूमि में उत्साह की लहर फैल सकती है। दक्षिण में षष्ठिपूर्ति पर—६० वर्ष समाप्त होने पर ऐसे उत्सव होते हैं और मेरा अनुमान है कि आप भी साठ के आसपास

and out of season on that question ! पर इस समय उस दिशा में आन्दोलन नहीं उठाना है।

आपके अभिनन्दन के सम्बन्ध में ब्रजभूमि के नवीन अंकुरों को प्रस्फुटित होने देने की अभिलाषा है। मशहूर अंग्रेज कवि—'Pope, 'The proper study of mankind is Man' मतलब यह कि गुरु के नाम के साथ पढ़नेवालों के चित्र तथा चरित्र अंकित किए जा सकते हैं। अपने गुरु के नाम के साथ शायरों के। राजकुमार श्रीमन्नारायण के पितृव्य श्री सूर्यनारायण अग्रवाल ने ओझा का एक शुद्ध अनुवाद ही भेज दिया है। श्री बालकृष्ण गुप्त ने यजमानों में अग्रणी बनकर अपने जीवन का एक नया अध्याय।

भाई आदम् भी कुछ आदेश रखते हैं। उन्होंने तीन तीन चित्रों का Order किया था—श्रीराम, हरिशंकर जी और C. F. Andrews का। साथ के बालक को भी तीर्थयात्रा भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी के साथ करनी ही है। गरज यह कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों को केन्द्र बनाकर उनके चारों ओर आसपास चित्र बनाये जा सकते हैं। इस भाषा में Dulness सबसे बड़ा अपराध है इस बात को हम मद्देनजर रखें।

फीरोजाबाद के प्रयागदास नरमा का चित्र हमने आज से ४० वर्ष पहले विशाल भारत में छापा था। एक कुम्हारिया—छत्तीमाबाद का भी चित्र दिया था। मैं जानता हूँ कि ब्रज में भाई मानसिंह जी जैसे अन्य प्रतिष्ठित बन्धु भी हैं जिनका साहित्यिक कार्य आपसे कहीं अधिक है, पर उनके नाम का प्रभाव सीमित ही है। केवल आपका ही नाम ऐसा है, जो दरअसल व्यापक प्रभाव रखता है। अपने ८-१० पत्र रोज ब्रज भाषा में—यह करने वाला कोई दूसरा है भी तो नहीं।

हम सभी को जाना है, आज न सही कल, पर हमारी प्रिय भूमि—ब्रजमण्डल तो सदैव जीवित तथा जागृत रहेगी। मैं कुछ जल्दी में जरूर हूँ। आखिर ७८वीं वर्ष में मेरे पास अधिक वक्त नहीं बचा। हाँ आप सबका आशीर्वाद तथा सद्भावना मुझे कुछ वर्ष और भी जीवित रख सकती हैं। मैं अभी यहाँ के पानी से adjust करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। पानी भारी तो है ही बस चिरंजीव गुप्तजी ने प्रत्येक सुविधा कर रखी है।

डा० नगेन्द्र को यशपाल जी से एक प्रति भेंट करानी ही है। भाई हरिशंकर जी के पत्रों की नकल की एक प्रति आपके निजी संग्रहालय का

अवश्य भेंट करूँगा । आपके Hall को सुचित्रित करने की जिम्मेदारी मेरी रही । वह मन यथासम्भव अल्प व्यय मे ही होना चाहिए ।

हिन्दी टाइपराइटर अब फिर खरीदना चाहता हूँ । पहला तो ५०० रु० का ५०० रु० म ही बेच दना पडा था । नरेसी की बहन की शादी के वक्त । कृपया मीतल जी तक मेरे प्रणाम पहुँचा दीजिय । नरेसी उक्त ग्रन्थ म अपने पिता स्व० रामनारायन का हाल पढ ले और सौभाग्यवती बहू को भी पढा दे । ग्रन्थ की एक प्रति रजिस्ट्री द्वारा मेरे मित्र डाक्टर हरिदत्त पालीवाल, निभय, कायमगज जिला फरुखावाद को देखने के लिय भेज दीजिय । लौटान के लिये रजिस्ट्री का पास्टेज भी रख दीजिय । दोनो ओर का पास्टेज मैं द दूगा ।

विनीत
बनारसीदास

(७६)

फीरोजाबाद
११ ४ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आपके कृपा पत्र क लिये कृतज्ञ हूँ । कावन की मदद से मैं अपने पत्रो की ३ प्रतियाँ निकाल लेता हूँ और शेष दो प्रतियाँ अन्य सज्जनो को भेज देता हूँ । इस प्रकार विचार परिवतन म कुछ मदद मिल जाती है । श्री राकेश जी को भेजे गए पत्र की नक्ल आपको भेज रहा हूँ ।

श्री हरिगोविन्द गुप्त को उनके अग्रवाल विषयक पत्रो की नक्ल की पहुँच आप लिख भेजे । उन्होने बुन्देलखण्डी के लिय बहुत काम किया है । उनका बेतवा का जीवन चरित्र प्रकाशित होने को पडा है । बहुत काम के आदमी हैं । खेती के काम म फँस गए और उसमे घाटा ही उठाया है । ब्रज भारती" के लिय कभी-कभी व लिख सकत हैं ।

डा० हरिशकर शर्मा के पत्रो की ८ प्रतिलिपियाँ Typed copies चि० रामगोपाल के पास दिल्ली म सुरक्षित हैं । बोझ काफी होने के कारण मैं ला नही सका । उनम एक प्रति आपके निजी सग्रहालय क लिय है ।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री राकेश को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
११ ४ ७०

श्री रामइकबालसिंह राकेश

प्रिय राकेश जी प्रणाम !

मुझे जो ग्रंथ ३ फरवरी को भेंट किया गया था, उसे देखने की हिम्मत मुझे ३ अप्रैल को हुई। और आपका स्नेहपूर्ण पत्र आज ११ अप्रैल को पढ़ पाया हूँ। मुझे स्वप्न में भी इस बात की कल्पना नहीं थी कि विभिन्न क्षेत्रों के इतने अधिक व्यक्तियों का मैं कृपापात्र हूँ। यद्यपि मैं उन सबका हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी गुणग्राहकता के वशीभूत होकर मेरी अत्युक्तिमय प्रशंसा की है तथापि मेरे मन को एक बात खटकती है वह यह कि हिन्दी के कितने ही तपस्वी साधकों को उनके जीवनकाल में तो appreciation मिला ही नहीं स्वर्गवास के बाद भी उन्हें भुला दिया गया है। क्या न इन तपस्वियों के रेखाचित्रों का ग्रंथ तैयार किया जाय—जो सचित्र भी हो।

जिन जिन लोगों के पास मसाला—पत्र व्यवहार तथा चित्रादि इकट्ठा हो उनके घर की यात्रा करके उनकी नकल तो करनी ही चाहिए। निधन का वक्त न मालूम कब आवेगा। उदाहरणार्थ पं० झाबरमल्ल जी शर्मा के पास जसरापुर (खेतड़ी) में बहुमूल्य सामग्री मौजूद है पर ऐसे जिम्मेदार सहायक उन्हें भी नहीं मिल जो उसका उपयोग कर सकें। यों समस्या पाँच-एक ही इन बातों की कमी नहीं।

ज्यों ज्यों दिन बीतते जायेंगे यह सामग्री विलीन होती जायगी और फिर हमारे साहित्यिक इतिहास नीरस तथ्यों तथा आँकड़ों का समूह मात्र रह जायेंगे। मेरे पास पिछले ४८, ४६ वर्ष में जो सामग्री इकट्ठा हो गयी है उसकी सुरक्षा की चिन्ता मुझे निरन्तर सताती रही है पर अब मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि इस प्रकार की फिकरों को छोड़कर मुझे स्वस्थ रहना चाहिए। २० अगस्त को मेरा आपरेशन हुआ था और ४ महीने का पूर्ण विश्राम मुझे आवश्यक बतलाया गया था, पर मैं आराम कर नहीं सका। अब करना चाहता हूँ। हाँ, कल मुझे यहाँ से २५, ३० मील दूर एक ग्राम की यात्रा करनी है जहाँ कि ४ अहीर १८४२ में शहीद हुए थे। लोग उन्हें प्राय भूल हो चुके हैं। यह कम अभिशाप की बात है अपने स्वाधीनता रूपी नवीन मन्दिर के नींव के पत्थरों की हमने बिल्कुल उपेक्षा ही की है। शहीदों का अभी निर्णीय

उपेक्षा शायद ही किसी अन्य देश ने की हो। आपके श्रद्धापूर्ण काव्यात्मक लेख के लिये मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। उसे मैं आशीर्वाद समझ कर ही स्वीकार करता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८०)

फीरोजाबाद
१२ ४ ७०
रविवार

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे। इस समय ४ बजके ५० मिनट हुए हैं। थर्मस के गरम पानी से चाय बनाकर पी चुका और स्वाध्याय भी कर चुका। आज स्वाध्याय के लिये W H allen London द्वारा प्रकाशित Stefan Zweig A tribute to his life and work नामक पुस्तक पढी। उस ग्रन्थ मे ज्विग विषयक संस्मरणो का सग्रह है और मैं ही एक मात्र भारतीय हूँ जिसकी tribute छपी है। ज्विग को हिन्दी में लाने का सौभाग्य मुझे ही प्राप्त हुआ था। आप से मेरा अनुरोध है, प्रार्थना है आग्रह है कि आप ज्विग की प्रत्येक रचना को पढ़ें। He is Supreme as an artist। रोमाँ रोलाँ भी उनकी कला का सम्मान करते थे। एक कार्ड तुरन्त भेजकर श्री मधुसूदन चतुर्वेदी (१४।७।३ बगम बाजार हैदराबाद A P) से 'पुनर्जन्म' की प्रति मगा लीजिये। वह छप चुकी होगी। तत्पश्चात् Kaleidoscope—Cassell and Company Limited की दिल्ली के Allied Publishers आसफ अली रोड से खरीद लीजिये। उसमे Trans figuration नामक कहानी है जिसका अनुवाद हमारे भानजे प्रकाश ने किया है। अनुवाद काफी अच्छा है।

ब्रजभारती मे आपने स्व० अग्रवाल जी विषयक मेरा पत्र छाप दिया है और सम्पादकीय नोट भी लिख दिया है। तदर्थ कृतज्ञ हूँ। दिल्ली मे अग्रवाल जी के एक सुपुत्र मिले थे जो डाक्टरी पढ रहे हैं। उन्होने बतलाया कि उनके बडे भाई ने पूज्य पिताजी के कई ग्रन्थ छपा दिये हैं। यदि यह सत्य है तो निस्सन्देह अत्यन्त प्रशसनीय है। पर उन्हें पत्रोत्तर तो देना ही चाहिये। शायद उनका यह खयाल होगा कि हम लोगो की सेवायें उनके लिये नगण्य हैं और इसलिये वे अपने समय का एक छोटा सा अंश भी हम लोगों से पत्र व्यवहार करने मे नष्ट नहीं करना चाहते। फिर भी हमें मिशनरी ढङ्ग से

अपने काम में लगे रहना चाहिए। अग्रवाल जी के पत्रों का संग्रह हम लोगों को ही करना है। मीतल जी के पास भी पत्र थे और उनमें नक़ल तैयार करा ही सकते हैं। शिवपुरी में श्वेताम्बर जातियों के मन्दिर में भी अग्रवाल जी के १५ पत्र मिल जायेंगे। मकरन्द जी को पुनः धन्यवाद। आपने हरगोविन्द गुप्त को पत्रों की पहुँच फिरोजाबाद के पते पर भेज दी होगी।

अब तक जो पत्र मेरे देखने में आये हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि अग्रवाल जी ने अपने सर्वोत्तम पत्र मुझे ही लिखने की कृपा की थी! उनके आत्मचरितात्मक दो पत्र (जो उन्होंने मुझे हम भेजे थे) कई अखबारों में छप चुके हैं। वे निस्सन्देह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। अब ५ बजकर १० मिनट हो चुके, मुझे जल्दी करनी चाहिए। ६ ६½ बजे मैं श्री बालकृष्ण गुप्त के साथ उनकी कार में करहल के पास मोनि ग्राम जा रहा हूँ चमरौला स्थान पर ४ शहीद १८४२ में शहीद हुए थे। उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया यद्यपि उनकी जाति में इसका रिवाज है। सुना है कि उन्हें ३०) मासिक पेंशन मिलता है। बाबूराव लहरी जी [जगन्नाथ लहरी भूतपूर्व M L A गोशाला फीरोजाबाद] को छोड़ कर और कोई नहीं इन महिलाओं से मिलने नहीं गया! जो काम हम स्वाधीनता संग्राम की समाप्ति के बाद तुरन्त ही शुरू कर देना चाहिए था उसे विधिवत् हम अभी तक नहीं प्रारम्भ कर सके!
Let us collect every anecdote every p cture every detail about the sacrifices made by our people to get Freedom for us यह हमारा पवित्र कर्तव्य है!

कभी-कभी मैं मजाक में कह देता हूँ कि B st investment करना बनिये हा जानते हैं और चूँकि मैं चूना कटरा मुहल्ला मथुरा के चौबे लछमनदास बजाज का पौत्र हूँ [वे गदर के वक्त गजी गाढ़े की दूकान करते थे] इसलिए शहीदों के श्राद्ध का सर्वोत्तम Investment मेरे द्वारा ही हुआ है। So I am a more clever बन्द than many of that caste!

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च —

श्री बालकृष्ण जी गुप्त हमें शालीपुर के इंटर कालेज का निरीक्षण न करेंगे। वह श्री शम्भूनाथ चतुर्वेदी के अधीन है। उसे भी देखना चाहिए कभी आप भी इस पवित्र व्रजभूमि में जायें वहाँ भी कोई प्रशंसनीय कार्य हो रहा हो उसे प्रोत्साहन देना हमारा कर्तव्य है।

जब कभी आपको समय मिले आप खांडा की यात्रा करें, श्री सीताराम-गग प्रधान खांडा को पहल सूचित कर दें। बरहन स्टेशन से खांडा २ मील दूर है। वह तो हमारे लिये तीथ तुल्य है।

श्री बालकृष्ण गुप्त खुद अपनी कार मे Drive करके हम लोगो को खांडा ले गये। उन्होने १०१) एक सौ एक अहीरन नहीद विधवा को दिये जिसका मकान गिर गया था! मैंने कई चित्र लिय थे।

(८१)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली ३२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! प्रकाशवीर शास्त्री जी न एक काम तो करा ही दिया। स्व० हरिशङ्कर जी के पत्रों को टाइप कराने के लिए आय मित्र (लखनऊ) स २१३) दिलवा दिये।

अब ४३० पृष्ठ typed हैं। ५-५ प्रतियाँ हैं। एक आपके लिये सुरक्षित है। पर वे arranged नहीं।

१५ तारीख को *Taj Express* से आगरे जा रहा हूँ पर वह मथुरा पर बहुत कम ठहरती है। नरसी तो आवेंगे ही। उन्हे कुकर देना है। श्री राजाबाबू से मैंने प्रार्थना करदी है कि यदि व एक प्रति गुरुजी श्री भगवान दत्त जी को भेज सकें तो अत्युत्तम हो। प्रातःकाल १६ तारीख का उनक उपवन म बौरे हुए आम देखने हैं। सीलिंग स शायद उनके उपवन की भी काट छाँट हो जायगी! आप इस विषय की जाच पड़ताल तो कीजिये। मैं होली की परवा स शरद पूना तक कबड्डी खेलना चाहता हूँ—यानी पर्लो छुट्टी मनाना। मेरा लेख (हरिशङ्कर जी पर) सैनिक म छपा या नहीं?

आप अपने निजी सग्रहालय को समृद्ध कीजिय। नवीन अभिनन्दन ग्रन्थ के विषय मे आपसे चर्चा करनी है।

१५-१६ को आगरे रहकर १७ को घर पहुचना है श्री ओ३म् ने तीन चित्रो के बनवाने का आग्रह किया श्रीराम शर्मा, हरिशङ्कर जी तथा सी एफ एण्ड्रयूज।

विनीत
बनारसीदास

अपने ग्रन्थ को पढ़ने की हिम्मत नही पड़ रही! इतनी अधिक कीर्ति रूपी मिठाई परोस दी गई है कि जी ऊब उठता है! श्री राजेन्द्ररजन जी तक मेरे पालागन पहुंचा दीजिये।

(८२)

१८ ८-३०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे। कार्ड मिला। मेरे पत्रों के संग्रह का वक्त अभी शायद नहीं आया है। अभी तो स्वर्गीय साहित्य सेवियों की चिट्ठियों का संग्रह हो जाना चाहिए।

प्रथम कार्य—तो आप यह करें कि दिल्ली जाकर चिरंजीव रामगोपाल से स्व० हरिशङ्कर शर्मा जी के पत्रों की typed प्रतियां ले आवें। ५ प्रतियां हैं। उनमें एक प्रति आप अपने संग्रहालय के लिए रख लें २ प्रतियां श्री विद्याशङ्कर शर्मा (सम्पादक सविता) को दे दें और शेष दो प्रतियां मेरे संग्रहालय के लिए हैं। फिलहाल मूल पत्र चि० गुणराज के पास ही रहेंगे। साथ का पत्र मैंने श्री महेन्द्र शास्त्री के पास भेजा है। उनको ब्रजभारती का Free list पर रख लीजिए। माधुरी में अच्छी कविता करते हैं। अपना एक काव्य संग्रह उन्होंने मुझे समर्पित किया था। मिशनरी ढंग के कार्यकर्ता हैं। अन्तर्जनपदीय परिषद् के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायगा, जो छप रहा है।

द्वितीय कार्य—है नरवर की तीर्थ यात्रा। नरौरा अलीगढ़ से २२ मील सुना जाता है। वहां स्वर्गीय पं० जीवनदत्त जी का संस्कृत महाविद्यालय है। मैं भी वहां जाना चाहता हूं। करपात्री जी वहां के पुराने छात्र हैं। कोई शङ्कराचार्य भी।

तृतीय कार्य—है बरहन स्टेशन से दो मील दूर खांडे की यात्रा। वह तो इतर तीर्थ है। चमरौला स्टेशन पर चार शहीद हुए थे—१८४२ की २८ २६ अगस्त को। चारों अहीर थे। उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया। उन्हें पेंशन मिलती है। एक तो उनमें स्वर्गवासिनी हो चुकी। आप श्री पं० सीताराम गर्ग प्रधान खांडा Agra को पत्र भेज कर दिन निश्चित कर लीजिए। वहां अम्बर चर्खे ने आर्थिक स्थिति सुधारने का अच्छा काम किया है। सुना है दो ढाई हजार रुपये महीने की आमदनी इस चरखे से उस गांव को हो जाती है। बरहन खादी उत्पादन केन्द्र भी बन गया है। बरहन में कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के अनुवादक श्री धन्यकुमार जैन भी रहते हैं। वहीं उनकी ससुराल है। वे विशाल भारत में मेरे साथ काम कर चुके हैं। बहुत प्रशंसनीय कार्य इन्होंने गुरुदेव के ग्रन्थों के अनुवाद का किया है। He

deserves a good sketch ये तीन काम मैंने आपके सुपुर्द कर दिये । जब कभी फुर्सत मिले कीजिये ।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

इस पत्र मे कई नाम आये हैं। श्री ब्रजशङ्कर वर्मा योगी के सम्पादक रहे है। काफी बीमार हैं। हरिदास कम्पनी की चमेलीदेवी को उन्होंने आश्रय दिया था। स्व० नारायणबाबू सारन जिले के अत्यन्त प्रतिष्ठित कार्यकर्ता थे—राजेन्द्रबाबू के घनिष्ट मित्र भी। ताररानी के पति फुलेनाबाबू शहीद हुए थे।

प्रतिलिपि पत्र

जो श्री महेन्द्रशास्त्री रतनपुरा जिला सारन को लिखा गया।

फीरोजाबाद
१५.४.७०

प्रिय शास्त्री जी,

प्रणाम। आपका बिना तारीख का कृपा पत्र मिला। कृतज्ञ हूँ। मेरा आपरेशन २० अगस्त को हुआ था और डाक्टर का यह स्पष्ट आदेश था कि मैं चार महीने पूर्ण विश्राम करूँ पर अपनी बद आदतों के कारण मैं ऐसा कर नही सका। सबेरे पौने चार बजे उठकर चाय बनाकर चिट्ठियाँ लिखने का जो नियम मैंने बना लिया था उससे छुटकारा मिलना असम्भव हो गया। स्वाध्याय के बाद पत्र व्यवहार ही मेरा मुख्य व्यसन है—फोटो खीचना तथा गप्पाष्टक उसके बाद आते है बहुत सा वक्त तथा पैसा उन्ही मे बर्बाद करता रहा हूँ। खैर—अब पछिताऐ होत का, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। बीती ताहि बिसारि दे—आगे की सुधि लेइ।

अभिनन्दन ग्रन्थ इतनी प्रशंसाओं से भरा हुआ है कि मेरी हिम्मत उसे पढने की नहीं होती। आत्मप्रशंसा का अध्ययन बिल्कुल वैसा ही जैसा किसी नवयुवती का स्वयं ही कुचमर्दन। गुनाह बेलज्जत है।

मैं हृदय से अनुभव करता हूँ कि जो सेवा मुझसे बन पडी है उससे दस गुनी सेवा मैं कर सकता था यदि मैं आत्म नियंत्रण द्वारा अपने जीवन को व्यवस्थित कर सकता। जितने साधन मुझे मिले, सत्सङ्ग के जितने अवसर प्राप्त हुए, अनन्त अवकाश और मुक्त आकाश जितनी प्रचुर मात्रा मे मुझे उपलब्ध हुए उनके देखे काम बहुत कम हो सका।

ग्रन्थ का मूल्य ३०) रख दिया गया है जिसे खर्च करना साधारण स्थिति के आदमी के बूते के बाहिर है। मुझे कुल जमा ५ पाँच प्रतियाँ और मिली थीं, जो बँट गईं। अब कहीं से प्रतियाँ मिल जायँ तो पार्सल बनाकर पास से खर्च करके पढ़ने के लिए मित्रों को भेजना चाहता हूँ। पढ़कर तीन रुपये खर्च करके रजिस्ट्री द्वारा भेज रहा हूँ। मगर स्व० रामनारायण विषयक लेख आपको पसन्द आया यह आपकी सहृदयता का सूचक है। मेरी ८ आठ किताबें पूरी करने अथवा Revise करने को पड़ी हुई हैं और पत्र व्यवहार मेरा व्यसन निगलने को पड़ा है। सहायक कोई मिलता नहीं। (१५०) महीने पर प्रकाशक देने को तैयार है पर अभी तक एक भी सुयोग्य व्यक्ति जो टाइप करना भी जानता हो मिल नहीं सका। नतीजा यह है कि सारा काम अधूरा पड़ा है। रामधन की किताब मैंने छपवाई थी—१५० प्रतियाँ उसे बेचने को दिलवाई थीं, जिससे उसका कुछ काम चला। मुझे बराबर यह ध्यान रहा है कि उसके द्वारा आदरणीय चार सौ रुपये बर्बाद हो गये थे। पर मैं क्या कर सकता था? मनुष्य को स्वयं ही अपना ऋण चुकाना चाहिये। दूसरों की प्रेरणा की प्रतीक्षा कदापि न करे।

श्रद्धेय नारायणबाबू के विषय में 'योगी" में अच्छी लेख माला निकल रही है। स्व० राजेन्द्र बाबू ने अपने अंतिम पत्र में सूचित किया था कि नारायण बाबू के लिखे लेखों का उन्हें पता नहीं है। पता लग जाय तो छापने का प्रबन्ध किया जा सकता है। भाई ब्रजशङ्कर जी बहुत बीमार हैं नहीं तो यह पुण्य कार्य उनके सुपुर्द कर देता।

श्रीमती तारारानी श्रीवास्तव की पुस्तक उनकी याद का द्वितीय संस्करण अभी तक नहीं हुआ। सारन जिले के शहीदों के विषय में अब भी एक पुस्तक लिखी जा सकती है, पर लिखे कौन? श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू का आदेश था कि मैं अपनी देख रेख में यह काम करा दूँ पर ७८ वें वर्ष में भला मैं क्या कर सकता हूँ? गत १२ अप्रैल को मैंने यहाँ से २० मील दूर एक ग्राम की तीर्थ यात्रा की थी जहाँ चार शहीद १८४२ में हुए थे। उनका वृत्तान्त अभी तक नहीं छपा। वह स्थान आगरा जिले में ही है। जिला छपरा ने तो स्वाधीनता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया था। आप, भाई चन्द्रिकासिंह जी तथा श्रीमती तारारानी प्रभृति मिलकर इस प्रश्न पर विचार तो कर ही सकते हैं। क्या यह भी असम्भव है?

फुलना बाबू के स्मारक का क्या हुआ ? और देवशरण सिंह क ? यह वर्ष दीनबन्धु ऐण्ड्रूज की शताब्दी का है। लेनिन की शताब्दी चल रही है। बापू की बात चुकी। स्वय मेरे विचारो म परिवतन हो गया है। 'नीलकठ गोर्की' भेजता हूँ कृपया पढ़ लीजिय।

(८३)

फीरोजाबाद
१८ ४ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ता० १५ माच के दिन नई दिल्ली स आगरा जाते हुए ताज एक्सप्रेस म दैवयोग स श्रीयुत फूलसिंह जी से भेंट हो गई। वे वृहत् हरियाना प्रान्त के प्रमुख समथकों म से रहे हैं परन्तु उस आन्दोलन को उस समय त्याग दिया जब उन्ह प्रतीत हुआ कि उससे गृह कलह होन की सम्भावना है।

श्री फूलसिंह जी म मुझे आदशवाद की कुछ झलक दीख पड़ी। वे गान्धीवादी कायकर्त्ता हैं। वरमान की होली दखने दिल्ली से मथुरा जा रहे थे। उनसे मित्र लेन मे कोई हज नही। वे पहले उत्तर प्रदेश के उद्योग मन्त्री रह चुके हैं। श्री चरनसिंह जी के निकट के आदमी हैं। उन्होन स्वय मुझ बतलाया था कि ३० एकड की Ceiling वाला कानून पास नही होन पावेगा। उनके शब्द थे— आप अपन मित्र (राजाबाबू) को निश्चिन्त कर दें' अपने ग्रन्थ की एक प्रति राजाबाबू द्वारा उनको भिजवा दी है। शेष कुशल !

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री फूलसिंह जी को प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१७ ४ ७०

प्रिय श्री फूलसिंह जी प्रणाम !

उस दिन १५ माच को आपके साथ जो आकस्मिक परिचय हुआ उसे मैं अपने लिये परम सौभाग्य की बात मानता हूँ।

मैं बहुत दिनो से किसी एस व्यक्ति की तलाश म था जिसके द्वारा मैं अपनी बात श्री चरनसिंह जी की सेवा मे पहुँचा सकू। वे तो मुझे जानते न होगे और हम लोगो का साक्षात् परिचय भी कभी नही हुआ।

अपन किमा स्वाथ की प्रायना उनम मुझ नहीं करनी, हाँ कभी कभी लोकहित क कार्यों की आर उत्तर प्रदेश सरकार का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ।

जमा कि मैंने उस दिन निवेदन किया था मैं आगर जिले क गवधहु उपवन क विषय म चिन्तित हूँ। उसक स्वामी श्री प्रतापनारायण अग्रवाल की मुझ पर कृपा है। चूकि मैं ब्रजभूमि स ४१ वष दूर दूर हो रहा हूँ इसलिय उनक मनोहर बाग को मैं बहुत वर्षों बाद—दो वष पहले ही—देख सका और उस देखकर मैं मुग्ध हो गया।

श्री प्रतापनारायण जी न उस उपवन को बच्चे की तरह पाला पोसा है और वह उनके सम्पूर्ण जीवन की साधना का परिणाम है। विदेशी यात्री भी उसकी सराहना करते हैं।

श्री प्रतापनारायण जी अपने काय म इतने व्यस्त रहते हैं कि व दूसरों को—यहाँ तक कि सरकारी आफिसरों तक को—निमन्त्रण देकर अपने यहाँ नहीं बुला पाते। उत्तर प्रदेश सरकार का कोई भी उच्च पदाधिकारी वहाँ आज तक नहीं पहुँचा यद्यपि एक बार श्री चरनसिंह जी अकस्मात् वहाँ पहुँच गय थ।

पहले तो मथुरा रोड द्वारा उस बाग क एक भाग क नष्ट होने की आशंका थी और अब सीलिङ्ग की तलवार उसके सिर पर लटक रही है।

क्या कभी यह सम्भव हो सकता है कि आप उपवन को एक बार देख लें? वहाँ छ हजार आम क पेड़ हैं और जामुन क गाछ हैं। आगरे जिले म तो क्या आगरा कमिश्नरी म भी उसके मुकाबले का उपवन शायद ही कोई होगा। यदि आप चल सकें तो मैं भी तीसरी बार वहाँ की तीर्थयात्रा कर लूंगा। दो बार मैं वहाँ जा चुका हूँ।

मैं वृक्षों वनों तथा उपवनों का प्रेमी हूँ और महाराज ओरछा (स्व० वीरसिंह जू देव) की कृपा स साढ़े चौदह वर्ष एक उपवन म रहा था जो वन के निकट ही था।

बारह वर्ष १९५२ स १९६४ तक (जब कि मैं राज्य सभा का सदस्य था) मैं ८८ नार्थ एवेन्यू क एक फ्लैट म रहा था जिसके पीछे बगीचा था और नर्सरी भी। बस इस प्राकृतिक प्रेम ने ही मुझे आगरे जिले क इस उपवन का भक्त बना दिया है। अन्य किसी प्रकार का भी सम्बन्ध मेरा उसमें नहीं है।

मेरी यही प्रार्थना है—अनुरोध है— कि ब्रज की उस विभूति को नष्ट भ्रष्ट होने से बचा लिया जाय। अधिक क्या लिखू ?

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

फीरोजाबाद वालो को आपके आगमन की धुधली सी याद रह गई है। एक बार फिर इस अभिशप्त उद्योग नगरी को देख लें।

क्या हरियाना और ब्रज म कोई साहित्यिक तथा सास्कृतिक सम्ब ध कायम नही हो सकते ? यह तो हरियाना का आन्दोलन ब्रजभूमि मे बडी शङ्का की दृष्टि से देखा गया था। हमारे सवश्रेष्ठ कायकर्ता बाबू वृन्दावनदास जी [अध्यक्ष ब्रज साहित्य मडल] ने उस पर कुछ लिखा भी था। मैं स्वय राजनतिक गठब धन को महत्व नही देता, जब तक कि उसकी नीव साहित्यिक तथा सास्कृतिक आधार पर न रखी गई हो।

यद्यपि ७८ वी वष मे मैं प्राय Retire हो चुका हूँ तथापि फीरोजाबाद की सफाई तन्दुरस्ती, के बारे म यू पी सरकार स कुछ अज करना चाहता हूँ।

(८४)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

श्री रामइकबालसिंह राकेश पो ओ भदई जिला मुजफ्फरपुर को लिखे मेरे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है। उन्हान मथिली पर खूब लिखा है। स्व० राहुल जी ने उनका एक विस्तृत निबन्ध हिन्दी साहित्य क विस्तृत इतिहास म छापा था। उसे आप ना प्र सभा काशी स मगाकर जरूर पढ़ें। किस जिल्द मे है यह आप राकेश जी स ही पूछ सकते हैं। मथुरा मे अन्तजनपदीय गोष्ठी का प्रस्ताव भी विचारणीय है। ८ १० व्यक्ति बुलाये जायें।

आपके दोनों पत्र आज मिल गये हैं। अभिन दन ग्रन्थ की सवत्र प्रशसा ही प्रशसा हुइ है। निस्सदेह आप सबने मिलकर A I चीज निकाल दी है। यद्यपि मैं उसका पात्र नही हूँ।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री राकेश जी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फ़ीरोज़ाबाद
१६-८-७०
४।३० प्रातःकाल

प्रिय राकेश जी

प्रणाम ! कल एक कार्ड भेज चुका हूँ। पर उससे सन्तोष नहीं हुआ। आपके पत्र में एक वाक्य ऐसा आया है जिसने मुझे चिंतित कर दिया।

"शायद अगले माह यह अन्तिम भेंट हो।" अन्तिम भेंट के क्या माने ? ऐसी निराशाजनक भविष्य-वाणी आप क्यों करते हैं ? इससे आप अपने प्रति तो अन्याय करते ही हैं, मेरे प्रति भी अन्याय करते हैं। आप कुण्डेश्वर पहुँच सकते हैं तो मैं भाई क्या नहीं पहुँच सकता ? Return Visit की प्रथा अंग्रेजों के यहाँ है और वह शिष्टाचार का अंग है। इसलिए आप अन्तिम वाली बात Withdraw कीजिए।

क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है ? या घरेलू चिन्ताएँ हैं ! पूरा-पूरा वृत्तान्त कृपया लिख भेजिए। अभी तो जितने हो सकें हम लोगों को सांस्कृतिक सत्कार्य करने हैं। सम्प्रति अन्तर्जनपदीय परिषद् के कार्य को आगे बढ़ाना है। चतुर्वेद वृन्दावनदास जी [अध्यक्ष—ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा] ने [illegible] में उनके लिए स्थान रिज़र्व कर लिया है।

[illegible] की स्थिति क्या है ? इस भाषा के [illegible] में जो [illegible] की [illegible] एक [illegible] अन्य भाषाओं में सर्वथा दुर्लभ है। आपको वह [illegible] याद है जिसका सम्पादन [illegible] जी ने किया था [illegible] अभी तक नहीं छपा। किस जिल्द में छपा है ?

क्या चतुर्वेद रामचरण मिश्र की पुस्तक [कृष्णा साहित्य तथा संस्कृति विषयक] आपको मिली है या नहीं ? भिजवा सकता हूँ। अन्तर्जनपदीय कार्यकर्ताओं की एक छोटी सी गोष्ठी क्यों न की जाए ? रामलीला के अवसर पर मथुरा में क्या रहेगा ? श्री वृन्दावन लाल जी जो आजकल मथुरा में विद्यमान हैं और वे ८-१० व्यक्तियों का आतिथ्य आसानी से कर भी सकते हैं। [illegible] मार्ग व्यय का प्रबन्ध करना होगा। वह कोई असम्भव बात नहीं। १००) रुपये चन्दा किया जा सकता है।

[illegible] की पुस्तक नालन्दा अपनी शीघ्र ही हैदराबाद में छपेगी। [illegible] लिख रहा हूँ वह। [illegible] रचना है।

पुनश्च—

श्री गणेश चौव, 'मित्र जी, रामनारायण उपाध्याय प्रभृति को बुलाया जा सकता है। आप जानते ही हैं कि अन्तर्जनपदीय परिषद् की स्थापना मैंने ही कराई थी। ये भाषाएँ खडी बोली की माएँ हैं— सौत नहीं। आप अपने विचार कृपा कर लिखें।

विनीत
बनारसीदास

(८५)

पौने पाँच बजे प्रातःकाल
फीरोजाबाद
२४ ४ ७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कल आपका कृपा पत्र मिला। यह पढकर हर्ष हुआ कि व्रज साहित्य मडल को अपनी भूमि एक महीने म वापस मिल जायेगी। तब अनेक रचनात्मक कार्यों का प्रारम्भ विधिवत् हो सकेगा। उस दिन की मैं उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करूँगा।

स्व० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पुत्रों से आप मिल आये यह बहुत अच्छा किया। चूंकि हम लोग उस श्राद्ध से कोई आर्थिक लाभ नहीं उठाना चाहते इसलिये उनके सुपुत्रों को कोई एतराज न होना चाहिए। यदि वे छापकर उस ग्रन्थ की बिक्री ठीक तौर पर कर सकें तो और भी अच्छा।

आचार्य वासुदेवशरण जी प्राचीन काल के विद्वानों की याद दिलाते थे। उनका सबसे बडा गुण यह था कि वे अपनी शक्तियों को विकेन्द्रित नहीं होने देते थे। तभी व इतना अधिक काम कर सके। पर जिस त्रुटि ने उनके महत्वपूर्ण जीवन को इतनी जल्दी समाप्त कर दिया वह थी—स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा, हमें उनके गुण ही ग्रहण करना चाहिये और उनकी त्रुटियों से सबक सीखना चाहिए।

पत्रों को तो छपाना ही है वस्तुत उनका स्मृति ग्रन्थ भी छपना चाहिये। यह कार्य कोई प्रगतिशील प्रकाशक कर सकता है। आप सग्रह तो कर ही लीजिये।

सौ० बहन सत्यवती मलिक की पुत्री डा० कपिला वात्सायन ने (जो भारत सरकार के शिक्षा विभाग म उच्च पद पर हैं) अग्रवाल जी के अधीन Doctorate ली थी और ५०) का वह अग्रेजी ग्रन्थ छप भी गया है। आप

उसे खरीदकर अपने पुस्तकालय में रक्खें बहुत सत्यवती जी तथा कपिला जी दोनों से उनके संस्मरण लिखाये जा सकते हैं। बन्धुवर हजारीप्रसाद द्विवेदी से इस बारे में सलाह मशवरा कीजिए।

श्रीयुत गर्ग (भूतपूर्व प्रिंसीपल S R K College फीरोजाबाद) अग्रवाल जी के समधी लगते हैं। उन्होंने अग्रवाल जी का एक तैल चित्र तैयार करा लिया है—मेरे आग्रह से—और उसका उद्घाटन वे डा० हजारीप्रसाद जी से कराना चाहते हैं। यदि द्विवेदी जी पधार सकें तो सर्वोत्तम हो। द्विवेदी अग्रवाल जी के साथी रह चुके हैं।

अग्रवाल जी का जीवन चरित भला कौन तैयार करेगा? स्मृति ग्रन्थ अपेक्षाकृत आसान होगा और उसके लिए anecdotes इकट्ठे कर लेने चाहिए। बन्धुवर मोतीचन्द जी ने उनके अन्तिम दिनों की जो बातें लिखी हैं वे भी बड़ी प्रेरणाप्रद हैं। जैसे कोई नीबू की बूंद बूंद को निचोड़कर उसके छिलके को फेंक दे उसी प्रकार अग्रवाल जी ने अपने अन्तिम क्षणों का भी भरपूर सदुपयोग ही कर लिया। जिन्होंने उनके जीवन के अन्तिम दिनों से लाभ उठाया—यथा मोतीचन्द जी—उनका तो और भी अधिक कर्तव्य हो जाता है कि उनकी स्मृति रक्षा के लिए भरपूर प्रयत्न करें।

अपने महल की भूमि मिल जाने के बाद वहाँ कभी वासुदेवशरण वन का निर्माण किया जा सकता है। शिवपुरी (ग्वालियर) में जो श्वेताम्बर मन्दिर है उसके प्रबन्धकों के पास अग्रवाल जी के १५ पत्र थे। उनकी नकल भी ले लेनी चाहिए।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी से भी पत्रों की नकल ली जा सकती है। अग्रवाल जी के पुत्र से पूछना चाहिए कि उन्होंने (यानी अग्रवाल जी ने) दूसरों के पत्रों को सुरक्षित रक्खा था या नहीं।

श्री चर्नीशाव के पास पृथिवी पुत्र पहुँचा या नहीं? अभिनन्दन ग्रन्थ की एक एक प्रति वारान्निकोव और चर्नीशाव के पास पहुँचनी ही चाहिए। मालूम नहीं कि समुद्री रास्ते से उसमें कितना व्यय होगा।

अमर उजाला वालों का कृपा पत्र मिला है। वे आपके अभिनन्दन के मामले में पूरी मदद देंगे। श्री डोरीलाल जी यद्यपि Perfect business man हैं तथापि उनसे काम लिया जा सकता है।

यद्यपि मुझे तो अब कई महीने विश्राम ही करना है तथापि समय समय पर तो लिखता ही रहूँगा।

बनारसीदास

(८६)

२२ ४ १६७०

प्रियवर,

शायद १४ जून से इटावे का देश धम दो पृष्ठो के बजाय ४ पृष्ठ का निकलेगा। मुझे बुलाया था, सो मैं तो जा नही सकता यह पत्र भेज रहा हूँ। इटावे को ब्रज मे ही शामिल कर लेना चाहिए। हरिशङ्कर जी के पत्रो की ५१५ प्रतियाँ टाइप होकर आ गई हैं। उन्हे छटवाऊँगा एक प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। चि० बुद्धिप्रकाश गर्मियो की छुट्टियों मे कल ज्ञानपुर से यहाँ आ गया है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

महाकवि देव पर शोध ग्रन्थ जिन्होने तयार किया है उन महिला का नाम डा० राज बुद्धिराजा ए १४ डी टी यू कौलोनी शादीपुर दिल्ली ८ है। शोध ग्रन्थ के प्रकाशक श्री यज्ञदत्त शर्मा साहित्य प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली ६ है।

सम्पादक देश धम इटावा को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

प्रियवर,

मैं आपके शुभ उत्सव पर जरूर हाजिर होता, यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता, २० अगस्त को मेरा आपरेशन हुआ था, पर पिछले ६ महीनो म मुझे पूण विश्राम करने का मौका नही मिला! अब मजबूरन मुझे आराम करना पड रहा है। क्षमा कीजिय, मैं १४ जून का इटावा पहुचने म सवथा असमथ हूँ।

आप उचित समझें तो श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी ५५ काका नगर New Delhi को बुला सकते है। व जगम्मनपुर के निवासी ह—४ वष मेरे सहायक रह चुके हैं और २ दो बार अखिल भारतीय श्रमजीवी पत्रकार सघ के प्रधान भी बन चुके हैं। हा, उन्हें फस्टक्लास का लौटा बाद किराया देना ही पडेगा। वे ससद म आज के सवाददाता है। अनेक बार विदेश यात्रा कर चुके हैं।

इटावे को मैं ब्रजमडल म ही शामिल करता हूँ। भाषा सम्बन्धी वाद विवाद म पडने की जरूरत नही। ब्रज साहित्य मडल से सम्बद्ध रहकर इटावा को अपनी साहित्यिक तथा सास्कृतिक उन्नति की विशेष सुविधा होगी। आपक

इस उत्सव के अवसर पर कुछ बातें सूझी हैं। उन्हें लिख रहा हूँ। उनमें काई काम की बात जँचे तो तदनुसार कार्यवाई भी करें।

१ महाकवि देव विषयक सात ग्रन्थ आपके कार्यालय में होना ही चाहिये। शायद श्री निश्चल जी उसकी प्राप्ति के लिए पता बतला सकें।

२ A G Hume की याद कर लेना निहायत जरूरी है। अंग्रेजी में तो उनका जीवन चरित्र है इटावे के पास के जंगल को उन्होंने अमर बना दिया था। उनकी चिड़ियों पर एक ग्रन्थ ही लिख दिया था।

३ श्री प० झावरमल्ल जी शर्मा प० जसरापुर खेतड़ी (राजस्थान) से भनोरिया जी पर लेख लिखावें कु० गणेशसिंह भनोरिया पर। श्री केशवचन्द्र मिश्र कमल C/o श्री वियोगी हरि जी हरिजन कालोनी किंग्सवे नई दिल्ली से प० भीमसेन जी के विषय में लेख लिखवाइये वे कमल जी के पूर्वज थे।

अपने आस-पास के स्थानों पर जहाँ पर भी जो कुछ उल्लेख योग्य सेवा कार्य हो रहा हो उसका विवरण छपना ही चाहिये। सिरसागंज के गुरुकुल पर एक संक्षिप्त लेख जा सकता है। भाई सूर्यनारायण अग्रवाल से उनके नेत्र-औषधालय का विवरण ले लीजिये। वे स्वयं बहुत श्रेष्ठ worker रह चुके हैं। उनकी भाभी तथा भाई साहब का जीवनियाँ आपके पुस्तकालय में होनी ही चाहिये।

जिन जिन स्थलों पर आपके पत्र का प्रचार हो वहाँ के खासखास व्यक्तियों के चित्र तथा चरित्र आपके कार्यालय में रहने चाहिये। औरैया के मुकन्दीलाल गुप्त की जीवनी भी रखिये।

फीरोजाबाद के श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री रतनलाल बंसल डाक्टर महेन्द्रस्वरूप भटनागर, श्री बालबिहारी शर्मा श्री जगन्नाथ लहरी इत्यादि के चित्र जरूर रखिये।

यहाँ के P D Jain inter college ने मेरे प्रस्ताव पर एक शहीद कक्ष का निर्माण करा दिया है। उसका उद्घाटन शायद जुलाई में होगा। श्री श्यामसुन्दर शास्त्री का चित्र जरूर रखिये। इलाके का सब उन्हीं स्थानों से मिल जाना चाहिये।

श्री बाबू वृन्दावनदास जी बी ए, एल एल बी अध्यक्ष ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा से तुरन्त सम्पर्क स्थापित कीजिये। श्री मधुसूदन चतुर्वेदी एम ए १४।७।१ बेगम बाजार हैदराबाद से भी।

शिशु जी के वे अनन्य भक्त रहे हैं। दश ग्रंथ को वृहत्नाकार म निकालने के पहले पूरी पूरी तैयारी कर लें। आपके सदुद्योग मे सफलता चाहता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८७)

फीरोजाबाद
८ ५ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। प० झावरमल्ल जी शर्मा पो० आ० जसरापुर वाया खेतडी (राजस्थान) ग्रन्थ की एक प्रति के लिए उपयुक्त अधिकारी है। श्राद्ध अभिनन्दन मुण्डन कम्पनी अनलिमिटेड के मनेजिंग डाइरक्टर वही हैं। मुण्डन शब्द नवीन जी द्वारा जोड दिया गया था।

प० झावरमल्ल जी मुझसे चार वष उम्र म बडे हैं, मेरे अग्रज हैं। बाबू बालमुकुन्द गुप्त का श्राद्ध मुख्यतया उन्ही के प्रयत्न से हुआ था। दोनो Volumes आपके पुस्तकालय मे होने ही चाहिये।

दानी सज्जनो को भेंट स्वरूप कितनी कितनी प्रतियाँ दी गइ थी। उनका भी उचित उपयोग करा लिया जाय तो ठीक हो। मेरे अनुरोध पर तीन प्रतियाँ श्री बालकृष्ण जी गुप्त ने भेट कर दी थी। (१) श्री भक्त दशन जी (२) श्री शीतलप्रसाद जी उपकुलपति आगरा विश्वविद्यालय आगरा (३) श्री जगन्नाथ लहरी फीरोजाबाद सन्देश और राजाबाबू ने भी चार प्रतियाँ (१) अमर उजाला (२) डाक्टर राजदान (३) फूलसिंह एम पी (४) भगवानदत्त जी चतुर्वेदी मथुरा को भेंट कर दी है।

विनीत
बनारसीदास

(८८)

फीरोजाबाद
११ ५ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

७ ५ ७० का कृपापत्र आज मिला। श्री शिवदत्त जी चतुर्वेदी एम ए छिपटी मुहल्ला इटावा भी बरात म पधारे थे। ग्रन्थ उन्हे भी नही मिला है। शायद आप भेज नहीं पाये। कृपया अब शीघ्र ही भेज दीजिय। स्व० आचाय

वासुदेव शरण जी के पत्रों की प्राप्ति के बारे में आपने लिखा सो जाना। मकरन्द जी के पास के पत्र भी मिल जावेंगे। उनका स्वास्थ्य कैसा है?

मेरे पत्रों को छपाने की इस समय जरूरत नहीं है। वे तो असंख्य हैं और उनमें से चुनाव करना कठिन होगा। मैं तो उन्हें महत्त्व नहीं देता। हाँ स्व० भाई हरिशङ्कर शर्मा के पत्रों की Typed copies दिल्ली में आ गई हैं। उन्हें छाँटना है। उनके टाइप कराने में ५०) तो आपके और २१३) दो सौ तेरह रुपये जाव मित्र कार्यालय लखनऊ के खर्च हुए। करीब चार सौ पत्र तो होंगे। एक टङ्कित प्रति आपके सम्प्रदाय को अर्पित होगी दो भाई विद्याभास्कर को दे दी जावेंगी और दो मेरे पास रहेंगी। उन्हें छाँटना है।

भाई कुसुमाकर जी को लिख रहा हूँ कि वे इस काम में मदद करें। कोई मथुरा जाने वाला मिला तो उसके हाथ भिजवा सकता है नहीं तो फिर डाक द्वारा ही भेज दूँगा।

व्रजजनपदीय परिषद के लिए छोटी सी गोष्ठी जन्माष्टमी पर रख लेना ठीक रहेगा। सदस्य बनने से पत्र-व्यवहार होना ही चाहिये। शेष अगले पत्र में।

विनीत
बनारसीदास

(८६)

फीरोजाबाद
१३-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे। मुझे ध्यान आया कि इस की एक प्रति राजमाता साहिबा [illegible] मध्य प्रदेश की सेवा में जरूर भेजनी चाहिये। वे स्व० [illegible] की धर्मपत्नी हैं जिनका मैं अत्यन्त ऋणी हूँ। आज भी [illegible] का [illegible] पेंशन में मेरा [illegible] हो रहा है। इनके ऋण से उऋण होना असम्भव है।

इनके पौत्र श्री मधुकर [illegible] इस समय अमरीका में अध्ययन कर रहे हैं। बड़े सज्जन युवक हैं। उन्हें राजमाता का [illegible] (जिसमें [illegible] करने का वृत्तान्त था) By Air आप भेज सकते हैं। श्री [illegible] चतुर्वेदी का ग्रन्थ भेज दिया होगा।

बनारसीदास

(९०)

फीरोजाबाद
१५-५ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री राधेमोहन अग्रवाल (मसस शिवलाल अग्रवाल पब्लिशर्स) ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का आत्मचरित बहुत बढ़िया छापा है। आज ही उसकी एक प्रति मुझे मिली है। आप उस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र ही अवश्यमेव खरीद। मूल्य पन्द्रह रुपये है, जो बिल्कुल ठीक है। It is a remarkable autobiography of a great revolutionary आप पुस्तक का पढने के बाद एक निजी पत्र बाबा पृथ्वीसिंह आजाद को आ लालरू जि० पटियाला (पजाब) को जरूर भेजें। वस उनका स्थायी पता शिशु विहार भाव नगर है पर इन दिनो वे लालरू अपने घर आय हुए हैं, उनके सुपुत्र का विवाह था। मैं तो इस मौसम मे जा नही सका। पजाब से भावनगर जाते हुए अवश्य वे मथुरा स्टेशन से गुजरते होगे। कभी उन्हे निमन्त्रित करके अपना अतिथि बनाइये। महापुरुष हैं। ऐसे सत्पुरुष से आपका व्यक्तिगत परिचय होना ही चाहिए। 'दीन क्या है किसी कामिल की इबादत करना।' चकबस्त की यह परिभाषा मुझे प्रिय है।

विनीत
बनारसीदास

(९१)

फीरोजाबाद
२८ ५ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! साप्ताहिक हिन्दुस्तान उत्तर प्रदेश विषयक विशेषाङ्क निकाल रहा है। शायद अब उसमे लेख देने के लिए वक्त तो बचा नही क्योकि वह १४ जून को ही निकल जायगा फिर भी आप एक पत्र तो सम्पादक को भेज ही सकते हैं। कोई भी मौका अपनी ब्रजभूमि की चर्चा का हम छोडना नही चाहिये।

शिवपुरी मे श्वेताम्बर लोगो का जो मन्दिर है वहा उनके एक गुरु विजयेन्द्र सूरि जी रहते थे जिनकी पुस्तक की भूमिका स्वर्गीय अग्रवाल जी ने लिखी थी। उन गुरू जी के सहायक श्री काशीनाथ सर्राफ ने मुझसे कहा था

कि अग्रवाल जी के १५ पत्र उनके यहाँ सुरक्षित हैं। उन पत्रों की प्रतिलिपि मँगा लेनी चाहिये।

डा० सत्येन्द्र जी अपने भानजे की शादी में यहाँ पधारे थे मुझसे मिले भी थे। उनसे पत्रों की नकल मँगा ही लेनी चाहिये।

जन्माष्टमी के मौके पर अन्तर्जनपदीय परिषद् के ५, ७ कार्यकर्ताओं की गोष्ठी का विचार परिवर्तन सामयिक होगा। अभी से लिखा पढ़ी की जाय तो ठीक हो। आतिथ्य तो आप कर ही लेंगे, पर किसी किसी को शायद पाथेय भी देना पड़े। उसके लिए चन्दा कर लिया जाय।

विनीत

बनारसीदास

(८२)

फीरोजाबाद

२६ ५ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

प्रणाम! जैनाचार्य विजयेन्द्र सूरि के सहायक श्रीयुत काशीनाथ सर्राफ का पता —यशोधर्म मन्दिर १६६ मजवान रोड, अंधेरी बम्बई २८ है। उनसे अग्रवाल जी के पत्रों का पता लग जायगा। तीर्थंकर महावीर भाग २ की भूमिका अग्रवाल जी ने लिखी थी।

श्री सत्येन्द्र जी को पुनः लिखिये कि वे अग्रवाल जी के पत्रों की नकल भेज दें।

भाई हरिशङ्कर जी के पत्रों की नकलों को विधिवत् छँटवा रहा हूँ। एक प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। भाई विद्याशङ्कर जी ने, जो सनिक में काम करते हैं, यह सन्देशा भिजवाया है कि जिस विद्यालय में उनकी पत्नी प्रिन्सीपल हैं उसकी पत्रिका का विशेषाङ्क निकालना ठीक न होगा। दूसरे कालेज में उनके भतीजे की पत्नी प्रिंसीपल हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाय? श्री प्रकाशवीर शास्त्री तो विलायत यात्रा पर गये हैं।

मेरा विचार था कि आगरे के रत्नमुनि जैन कालेज तथा सकसरिया कालेज की पत्रिकाओं के विशेषाङ्क निकाल दिये जाते।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी) का सम्पूर्णानन्द अंक बहुत ही घटिया निकला है। सभा ने उसे ठीक तौर पर निकालने के लिए कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

बनारसीदास

(९३)

फीरोजाबाद
३ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आपका कार्ड मिला । आप बद्रीनाथ की तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं, यह पढ कर हर्ष हुआ । कभी कभी प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन करके चित्त को प्रफुल्लित कर ही लेना चाहिये । धार्मिक विश्वास रखने वालो को तो उसका पुण्य भी मिलता है । डबल मुनाफा है ।

यह कार्ड आपको तीर्थयात्रा से लौटने पर मिलेगा । इन दिनो मुझे आपकी याद कई बार आई । २८ ता० के अमर उजाला मे छपा था कि नारखी (जिला आगरा) मे २१८ दो सौ अठारह बच्चो की मृत्यु चेचक से हुई है । तभी मुझे ध्यान आया कि मैं आपको उसके बारे मे लिखू । आपके सिवाय मैं किसी भी ऐसे दूसरे व्यक्ति को नही जानता—शायद बालकृष्ण गुप्त जी आपके समकक्ष हैं—जो मेरी प्रार्थना पर ऐसी बातो की ओर ध्यान दे । कल नारखी के एक सज्जन ने खबर दी है कि मृत्युसख्या बढकर ४५६ हो गई है । आठ दस हजार की आबादी मे यह एक बडी भयङ्कर दुर्घटना है । मैंने सैनिक, अमर उजाला, पायोनियर, स्वतन्त्र भारत तथा कलक्टर आगरा को पत्र भेजे है । आप यदि मथुरा मे होते तो आपके साथ नारखी जाने का प्रोग्राम बनाता । ब्रजसाहित्य मण्डल के सस्थापक तथा उसके अध्यक्ष का यह कर्तव्य भी है ।

विनीत
बनारसीदास

(९४)

फीरोजाबाद
५ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपके सकुशल लौट आने के समाचार मिले । नारखी मे कुछ action तो ले लिया गया है । वहाँ तो सौ बच्चो की मृत्यु हो चुकी है ।

उत्तर प्रदेश सम्मेलन वाले मुझे भी साहित्य वारिधि बना रहे हैं । इस प्रकार ब्रजभूमि मे तो दो समुद्र हो जायेंगे । मैंने उन्हे लिख दिया है कि मेरे जैसे साहित्य पोखरे को वारिधि क्यो बनाना चाहते है ? पर उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर ली है ।

भाई हरिशचन्द्र जी के पत्रों को तिथिवार ढूँढता रहा हूँ। श्री विद्याशङ्कर जी व्यय सुलोचनवश रत्नमुनि जैन इन्टर कालेज की पत्रिका का हरिशचन्द्र अंक नहीं निकलवाना चाहते, वहाँ उनकी धर्मपत्नी प्रधानाध्यापिका हैं और न सेवनारिया कालेज की पत्रिका का, जहाँ उनकी भाभी प्रिंसीपल हैं। तब आप मित्र का ही हरिशचन्द्र अङ्क निकालना व्यावहारिक होगा।

कम्पनी में मुण्डन शब्द नवीन जी का जोड़ा हुआ था। उन्होंने कहा था, 'बिना लोगों को मूँडे कम्पनी का कारोबार चलेगा नहीं।''

विनीत
बनारसीदास

(८५)

फीरोजाबाद
६ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्रीयुत सुधाकर बी० ए०, सुपुत्र श्री कुसुमाकर जी आयनगर फीरोजाबाद का शुभ नाम ब्रजभारती की फ्री लिस्ट पर रखिये। सुधाकर जी ४ दिन से स्व० हरिशचन्द्र जी के पत्र छाँट रहे हैं। उन पाँच टंकित प्रतियों में से एक आपकी सेवा में अर्पित होगी। श्री कुसुमाकर जी तो बहुत अच्छे कवि हैं और हिन्दी के लिए बहुत काम भी उन्होंने किया है। वे यहीं के कालेज में हिन्दी पढ़ाते हैं। श्री सुधाकर जी ने एम० ए०, प्रीवियस, की परीक्षा दी है। उत्साही युवक हैं।

६ ता० के सैनिक में पालीवाल जी की मेरी श्रद्धांजलि पढ़ लीजिये। ब्रजसाहित्य मण्डल का जिक्र है।

मि० ए० आर० शेरवानी सैनिक वालों को आप लिख सकते हैं कि यदि वे कुछ सहायता करें तो ब्रज साहित्य मण्डल पालीवाल जी की २०० पृष्ठ की जीवनी तैयार करा सकता है।

विनीत
बनारसीदास

(८६)

फीरोजाबाद
१० ६ ६०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! ६ ता० का कृपापत्र मिला। आचार्य श्री किशोरीदास जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा चुका है। उसकी प्रति मेरे पास है। वैद्यनाथ धाम वाले उनके यजमान हैं।

स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा के पत्रो की प्रतिलिपियो की पाच कापियाँ मैंने श्री सुधाकर जी बी ए (श्री कुसुमाकर जी के पुत्र) द्वारा ६ दिन म छॅटवा ली हैं—तिथि के अनुसार उनकी व्यवस्था करा ली है। दो प्रतिया आगरे विद्याशङ्कर जी को भेजनी हैं, एक आपको भेंट करनी है तथा दो अपने सग्रहालय मे रखनी हैं। मथुरा कैसे भेजूँ यह सवाल सामने है। पोस्टेज मे तो बहुत व्यय हो जायगा। क्या आगरे भिजवा दू।

प्रिंस क्रोपाटकिन की जीवनी भी आपको भेजनी है। राजमाता जी को ग्रन्थ भेज दिया यह अच्छा किया। भाई विद्याशङ्कर जी का पत्र भी अभी मिला है।

चि० बुद्धिप्रकाश के मन म एक विचार आया था कि यदि श्री बालकृष्ण जी गुप्त राजी हो जाँय तो व्रज साहित्य मण्डल का अधिवेशन फीरोजाबाद मे किया जा सकता है। तिथि उनकी सुविधा पर छोड दी जाय। मैंने इसका जिक्र बालकृष्ण जी से कर तो दिया था।

नारकी विषयक आपका पत्र पढ लिया है। बहुत ठीक लिखा है आपने। मेरी सामर्थ्य नहीं कि देहरादून की यात्रा कर सकूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८७)

फीरोजाबाद
१३ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! 'मुल्ला की दौड मसजिद तक और बनारसीदास की वृन्दावनदास तक'। कई वर्ष स मैं स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के विषय म स्मृति ग्रन्थ निकलवाने की सोचता रहा हूँ पर कोई स्कीम नहीं बन पाया। मुझे यह देखकर वेदना होती है कि जिस आचार्य ने १ हजार संस्कृतज्ञ उत्पन्न किये हो उसका नाम लेवा कोई नहीं। कृतघ्नता की कोई सीमा है?

दो संस्मरण मेरे पास हैं, एक तो आयुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद का और दूसरा निर्भय जी का। आप कहें तो आपको भेज दूँ।

यदि आप, श्री प्रमुदत्त जी तथा निर्भय जी इस श्राद्धकर्म को हाथ म ले लें तो अत्युत्तम हो। और कुछ नहीं तो लेखो का सग्रह तो हो ही जायगा।

आज 'सनित' का एक सप्त इस बार म भेज रहा हूँ। पन्न रद्द लिखा फिर फयर किया और तीन प्रति तयार की। शायद तीन प्रति और भी तैयार करनी पड़ेंगी। आप अपनी सुविधानुसार नम्बर जरूर जाइय। पर उसके पूर्व वहाँ के आचाय प्रभृति स पत्र व्यवहार कर लीजिये। आचाय जीवन दत्त जी क शिष्यों तथा भक्तों के नाम तथा पते इकट्ठे करके उनके पास एक गश्ती चिट्ठी—परिपत्र—भेज दीजिये। श्री करपात्री जी स भी चिट्ठी पत्री कीजिये। शायद वे कुछ साधन इकट्ठे करा सकें।

देहरादून क सम्मेलन क वृतान्त सन्कि अमर उजाला इत्यादि म छपने ही चाहिये, अखिल भारतीय सम्मेलन तो सरकारी-करण के बाद बिल्कुल मशीन सा बन गया है—सर्वथा हृदय हीन। यदि प्रान्तीय सम्मेलन को हो सजीव बनाया जा सके तो कुछ काम हो। पर आप तो मुख्यतया ब्रजमण्डल पर ही अपनी शक्तियों को केन्द्रित रखें। एकहि साधे सब सधे।

विनीत
बनारसीदास

(८८)

फीरोजाबाद
१६ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कृपया अपना छोटे साइज का ब्लाक बनवाकर उसे रजिस्टर्ड पासल द्वारा श्री देवीन्द्रनाथ दुबे सम्पादक दशधम मासिक गंज इटावा को भेज दीजिये, दुबे जी न दशधम' का ब्रज चार पृष्ठ का कर दिया है। साधना की उनके पास कमी है। दशधम म जनपदीय काम लेना है। इटावे का कल्याण इसी में है कि ब्रजमण्डल के साथ सहयोग करे। उसमें उसकी कोई हानि नहीं।

देहरादून का उत्सव कैसा रहा? यदि उत्तर प्रदेश सरकार प्रान्तीय सम्मेलन को आर्थिक सहायता दे तो बड़ा काम बने।

विनीत
बनारसीदास

(८८)
द्वितीय कार्ड

१६-६ ७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

यदि उत्तर प्रदेशीय सरकार कम से कम ७ ८ हजार रुपये प्रान्तीय सम्मेलन को दे दे तो ४००) चार सौ रुपये महिने पर एक प्रचार मन्त्री या साहित्य मन्त्री

रखा जा सकता है जो समस्त प्रदेश मे घूम घूम कर पुरानी सस्थाओ की देख भाल कर और नवीन समितियाँ कायम करे। पुरानी सस्थाओ का बुरा हाल है।

प्रान्त निर्माण के झगडो से सवथा दूर रहते हुए ब्रज, अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलखण्डी के लिए प्रदेशीय सम्मेलन डा० अग्रवाल के कायक्रम के अनुसार काम कर सकता है। वह काय निहायत जरूरी है।

सत्यनारायण जी कविरत्न की कुटी का धाँधूपुर म निर्माण भी एक ऐसा विषय है जिस पर ध्यान देना चाहिये।

वासुदेवशरण जी का तैल चित्र उद्घाटन के लिए एस आर के डिग्री कालेज ने तैयार करा लिया है। प्रिंसीपल गग उनके समधी होते हैं।

जैसे ब्रजमण्डल म आप काम करते हैं वैसे अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलीखण्डी मण्डल म भी काम करने वाले होने चाहिये। बुन्देलखण्ड मे तो हैं भी। अब की बार बन्धुवर रामचरण ह्यारण मित्र को उपाधि जरूर मिलनी चाहिये।

बाबा पृथ्वीसिंह जी की पुस्तक मैसस शिवलाल अग्रवाल ने बहुत ही बढ़िया छपाई है।

विनीत
बनारसीदास

(१००)

२० ६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आशा है आप देहरादून की यात्रा से सकुशल लौट आये होंगे। मैंने अनुमान किया था कि शायद आप हरिद्वार चले गये होंगे—गगा स्नान करने।

ब्रजमण्डल की भूमि अधिग्रहण म अब क्या देर है ? सनिक क शेरवानी जी यदि चाहें तो पालीवाल जी की स्मृति के लिए हजार रुपये दे देना उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं। जो स्कालर शिप उन्होंने दिये हैं, वे उपयोगी अवश्य हैं पर उनके मुकाबले ब्रजमण्डल म स्मारक का महत्व कही ज्यादा है।

नरौला के आचार्य जीवनदत्त जी का साहित्यिक श्राद्ध आपको ही करना है। दो लेख मेरे पास हैं उन्हें मैं आपको भेज दूगा।

ब्रजभूमि म जहाँ-जहाँ उन्नति के अकुर दीख पड़ें वहाँ हमे प्रोत्साहन के विमल जल से उन्हें सींचना चाहिये।

स्थानीय एस आर के कालेज में डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल का तैल चित्र तैयार करा लिया गया है। यदि हजारीप्रसाद जी पधार सकें तो अत्युत्तम रहे तो आप ही उसका उद्घाटन कर दें। एस आर के कालेज के भूतपूर्व प्रधानाचार्य अग्रवाल जी के समधी होते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(101)

फीरोजाबाद
२७-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

चाय पीने के बाद मैं प्राय अपने मित्रों शुभ चिन्तकों तथा सहायकों का स्मरण किया करता हूँ और जो विचार आते हैं उन्हें यथावकाश उन तक पहुँचा देता हूँ। कुछ बातें आपकी सेवा में भी निवेदन करती हैं—

१ अपने निजी संग्रहालय पर अपने समय तथा शक्ति को यदि आप केन्द्रित कर सकें तो वह एक महत्वपूर्ण चीज बन सकती है। तब आपको अपनी मुतफर्रिक दानशीलता पर अंकुश लगाना होगा। रामजस कालेज के संस्थापक की कार्य पद्धति मुझे प्रिय लगती है। लाला केदारनाथ जी रिटायर्ड जज थे और उन्होंने बहुत थोड़ा सा पैसा अपने लिए रखकर शेष अपना सर्वस्व संस्थाओं को अर्पित कर दिया था। उनके पास यदि कोई कुछ मांगने जाता तो वे यही कहते कि मेरी संस्थाओं के लिए यदि आप कुछ कर सकें तो मैं भी थोड़ी सी सेवा कर सकता हूँ। लाला केदारनाथ पर एक अच्छी जीवनी लिखी जा सकती है। दिल्ली आप जाते रहते हैं। वहाँ के रामजस कालेज के अधिकारियों से मिलकर लाला जी विषयक सामग्री इकट्ठी कर लीजिये। लाला केदारनाथ पर एक लेख तो लिखिये ही।

२ मेरा स्व० हरदयालसिंह जी विषयक फाइल में से उनके कुछ पत्रों के अंश नकल करा लेने चाहिये।

३ स्व० जुगलेश ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। सम्मेलन प्रयाग में काम करते थे। उनका ब्रजभाषा काव्य का ग्रन्थ स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को जो रीवाँ निवासी थे समर्पित किया गया था। उनका पता लगाकर उन पर जरूर कुछ लिखिये। चित्र मिल जाय तो जरूर उसका Enlargement करा दें। उनकी पुस्तक तो रखिये ही।

४ रसिकेन्द्र जी के चित्र का भी Enlargement आपके यहा होना चाहिये। रसिकेन्द्र भवन कालपी से चित्र मिल जायगा। "नवीन नायिका भेद" मधुसूदन जी ने छपा दिया था।

५ देशधर्म सावितगज, इटावा म कनौजी भाषा पर कुछ छपा है। श्री देवीदयाल जी दुबे को लिखकर उनके ४ पृष्ठ वाले दैनिक का प्रथम अङ्क मँगा लीजिये।

६ बन्धुवर डा० नगेन्द्र के भाषण पर अन्य अन्तजनपदीय कार्यकर्त्ताओ की प्रतिक्रिया मालूम कीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१०२)

फीरोजाबाद
२६-६-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

प्रणाम! कल रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से आचार्य जीवनदत्त जी विषयक तीन लेख तथा कुछ नोटस भेज दूंगा। साथ म आचार्य जी के शिष्यों तथा भक्तों के पत्र भी हैं। इस कर्तव्य को आपको सौंपते हुए मुझे हार्दिक हर्ष है। आप धन्यवाद का एक पत्र आयुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद जी वैद्य को डाकखाने के पास फीरोजाबाद के पते पर भेज दीजिये। पते वगैरह उन्होंने ही लिखे हैं। निर्भय जी को भी लिखिये। अवकाश मिलने पर आप उस विद्यालय के दर्शन जरूर कीजिये। वैसे कभी मैं भी वहाँ की तीर्थयात्रा करना चाहता हूँ। श्री बालकृष्ण जी की गाडी चाहे जब मिल सकती है। श्री बालकृष्ण जी की पुत्री का विवाह कल है। चैनीशोव को मैंने कल एअर मेल पत्र भेजा है—व्रजभारती पढ़ कर।

आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रक्खें। व्रजभूमि के पुनर्निर्माण मे आप अन्य कार्यकर्त्ताओ की अपेक्षा सबसे अधिक सेवा करने की सामर्थ्य तथा श्रद्धा रखते हैं, इसलिये आपका तन्दुरुस्त रहना ही अत्यन्त ही आवश्यक है। Over work से बचिये। जितना कार्य सुविधापूर्वक हो सके उतना ही हाथ मे लीजिये। 'न' कहना सीख लीजिये। यदि कोई कार्य आपको अनावश्यक तथा कष्टप्रद जँचे तो निस्संकोच और दृढतापूर्वक उसे अस्वीकार कर दीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१०३)

फीरोजाबाद
२६ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनलाल जी,

कल। आचार्य जीवनदत्त जी विषयक सामग्री पहुँची होगी। उसके साथ उनके शिष्या के पत्र भी हैं। कृपया उनको मेरे लेख की प्रति भेजकर आचार्य जी का संस्मरण भेजने का अनुरोध कीजिए। यह बड़ा पुण्य कार्य है। First hand impression पाने के लिए आपको नरौरा की तीर्थयात्रा—अपनी सुविधानुसार कर ही लेनी चाहिए। फिलहाल तो आप विश्राम करें। स्वर्गीय कविवर जुगनू के विषय में सम्मेलन प्रयाग वालों से पूछिए। उनका काव्य संग्रह सम्मेलन पुस्तकालय में होगा। बहुत अच्छा लिखते थे।

ब्रजमण्डल की सर्वाङ्गीण उन्नति ही हम लोगों का उद्देश्य होना चाहिए। भाई बालकृष्ण गुप्त ने फीरोजाबाद के निकट ही एक नवीन उपवन की नींव डाली है। उसमें ६१ वृक्ष उन्होंने स्वयं अपने हाथ से लगा दिए हैं। और भी वृक्ष वे लगावेंगे। आप उन्हें पत्र लिखिए। उनका छोटा-सा बगीचा भी आपको देखना है। राजाराम का उपवन तो आप देख ही चुके हैं। उस पर तो मालिन्य की तलवार लटक रही है। छलेसर की भी यात्रा करें—आगरे से कुल ७ मील दूर है।

भाई ओउम् ने श्रीराम शर्मा तथा हरिशङ्कर जी के तैल चित्र बनवाने के लिए स्वयं ही कहा है पर चित्र अभी तैयार नहीं हो पाया। वे यहाँ के भारती भवन में लगेंगे। ओउम् को भी पत्र लिखकर प्रोत्साहित करते रहिए।

भाई यशपाल जी ने हिन्दी में लिखा है कि जितना सहयोग उन्हें मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में मिला उसका चौथाई भी आचार्य विनोबा जी के भक्त नहीं दे रहे। यह बड़े खेद की बात है। आचार्य विनोबा जी तो विश्व की एक विभूति हैं। वस्तुतः लगन के कार्यकर्ताओं की कमी ही इसका मुख्य कारण है। शेष फिर।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

पाँव उलझन से मेरा टहलना मुश्किल हो गया है इसलिए कुछ समय का उपयोग आप से पत्र-व्यवहार करने में ही कर लेना चाहता हूँ। इटावा क्या कन्नौजी भाषा के क्षेत्र में आता है? मैं तो इस भाषा के बारे में

कुछ भी नही जानता। क्या बैसवाडी उससे मिलती जुलती है। सभी जनपदीय भाषाओं के प्रान्त बनवाने का विचार स्व० राहुल जी का था, पर वह तो अव्यवहार्य था। हमें विशुद्ध साहित्यिक तथा सास्कृतिक कार्यक्रम पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिये। प्रत्येक जनपदीय भाषा मे सचित सामग्री का पूरा पूरा उपयोग हो, उसकी रक्षा हो और उसको फलने फूलने का मौका भी मिले, यही हमारा लक्ष्य होना ही चाहिये।

मैथिली भाषा का मामला नया नही है। स्व० सर आशुतोष मुकर्जी ने उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय म स्थान दिया था। स्व० अमरनाथ झा बडे गौरव के साथ कहते थे—'मैथिली हमारी मातृभाषा है हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा'' यह दृष्टिकोण सवथा स्तुत्य है। माँ जिस बोली को बोलती हो वही मातृभाषा। यदि किसी की पूज्य मा खडी बोली बोलती है तो अवश्य खडी बोली उसकी मातृभाषा है पर सबको एक लाठी से क्यो हाका जाय? बात दरअसल यह है कि इस विषय पर लोगों के दिमाग मे अस्पष्टता है। वे इस बात को भूल जाते हैं कि जनपदीय भाषाऐं हिन्दी की माँ है, उसकी सौत नहा।

मनुष्य गणना के समय जनपदीय भाषाओं को मातृभाषा लिखा देने से कौन आसमान टूट पडेगा? मातृभाषा ब्रजभाषा (हिन्दी) लिखान से यह तो पता लग ही जायगा कि ब्रजभाषा बालने वाले कितने हैं अवधी तथा भोजपुरी के कितने। यदि साहित्य अकादमी मे राजस्थानी बुन्देलखण्डी या भोजपुरी को स्थान मिल जाय तो उससे राष्ट्रभाषा की क्या हानि होगी, यह मेरी समझ नही आता। अन्तर्जनपदीय कार्यकर्ताओं को इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहिय। गश्ती चिट्ठी भेज कर आप श्री गणेश चौबे, राकेश जी प्रभृति से पत्र व्यवहार कीजिये। भाई अमृतलाल जी आपको नमस्ते कहते हैं वे भी आपके प्रशसक है।

विनीत
बनारसीदास

(१०४)

फीरोजाबाद
१ ७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। वधुवर मीतल जी के विषय म आपके भेजे नोट मिले। उनस मुझे बहुत सहायता मिलेगी। यशपाल जी ने मुझे लिखा है कि जितनी सहायता

उन्हें मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में मिला उसकी प्रतियां भी आचार्य विनोबा जी के ग्रन्थ में नहीं मिल रही। इसमें मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। लोग अपने-अपने धंधों में व्यस्त हैं और हम कामों को 'फालतू' समझते हैं। यदि आप यशपाल जी, बालकृष्ण जी, आउम्, राजाबाबू और शम्भुनाथ चतुर्वेदी पारस्परिक सम्पादन की नीति से काम न लेते तो मेरा ग्रन्थ कदापि नहीं निकल पाता। आपको आश्चर्य होगा कि भाई हरिभाऊ जी का ग्रन्थ अब तक प्रेस से बाहिर नहीं निकल पाया—यद्यपि छपा छपाया पड़ा है। यही दशा श्री मोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थ की हुई है।

मैत्री के विषय में डा० जोनसन ने Sir Joshua Reynolds को लिखा था— If a man does not make new acquaintances as he advances through life he will soon find himself left alone A man Sir should keep his friendship in constant repair

जानसन ने बोसवल से भी कहा था—"Sir I consider that day lost in which I do not make a new friend पर मित्र बनाने का व्यापार काफी खर्चीला है यद्यपि उसमें पर्याप्त आध्यात्मिक मुनाफा है। आप इस बात को भूल जाते हैं कि मैं चूना ककड़ मुहल्ले के लछमनदास बजाज का नाती हूँ जो गदर के जमाने में मथुरा में गजी गाढ़े की दूकान करते थे। इसलिये मैंने वैश्य वृत्ति [sound investment की बुद्धि] विरासत में पाई है।

परसों नई दिल्ली के श्री जवाहरलाल म्यूजियम के एक कार्यकर्ता दीनबन्धु C F Andrews शताब्दी के लिए मेरे द्वारा संग्रहीत समान को देखने आए हैं। उन्हें सरकार से १० लाख रुपये प्रतिवर्ष की इमदाद मिलती है पर वे मेरी सम्पूर्ण सामग्री भेंट स्वरूप माँगते हैं। खरीद कर कोई मिसाल नहीं कायम करना चाहते। यही नीति National archives की भी है। खैर! चूंकि दीनबन्धु एंड्रूज मेरे पितृ तुल्य पूज्य थे इसलिये उनकी शताब्दी की प्रदर्शिनी में मुझे भरपूर सहयोग देना ही है।

भाई मीतल जी पर एक छोटा सा लेख अवश्य लिख दूंगा। उसको एक बार आप पढ़ लीजियेगा। निम्नलिखित उन्होंने क्या भावना की है। उनकी पुस्तकों के नाम तथा संक्षिप्त परिचय मुझे चाहिए। यद्यपि मुझे पूरा-पूरा विश्राम करना चाहिए पर इस प्रकार के कर्तव्य पालन से मैं कभी विमुख नहीं होना चाहता। आचार्य वासुदेवशरण का उदाहरण मेरे सामने है और

तुगनेव का भी जिन्होंने अपनी मृत्यु शय्या से एक लेखक के लिये सिफारिशी चिट्ठी लिख दी थी। तुगनव मेरे द्वारा ही हिन्दी मे आये हैं—और ज्विग भी।

विनीत
बनारसीदास

(१०५)

फीरोजाबाद
५-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मैं आपके निजी सग्रहालय के विषय म जितना ही विचार करता हूँ उतना ही उसकी उपयोगिता के विषय मे मरा विश्वास दृढ होता जाता है। ब्रजमडल म कोई स्थान तो ऐसा होना ही चाहिये जहाँ उस जनपद की सर्वाङ्गीण उन्नति के विषय म पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो सके। पर जैसा कि मैंने आपको लिखा है उसके लिये आपको अपनी मुतफर्रिक दानशीलता पर अकुश रखना होगा। ब्रजजनपद तथा उसकी सेवा बस इतना ही या यही लक्ष्य आपके लिये पर्याप्त है।

ब्रज के आधुनिक कवियो के चित्रो की दो दो प्रति आपके यहाँ होनी चाहिए। उनके सुरक्षित रखने के वैज्ञानिक ढग भी जो सुलभ हो सकें आपको जान लेने चाहिये। सीड तथा दीमक इत्यादि से कागजो को बचाना अत्यन्त ही कठिन कार्य है। और फिर स्याही भी मन्द पड जाती है। जो पत्र महात्मा जी ने दादा भाई नौरोजी को भेजे थे उनकी स्याही बिल्कुल खतम हो गई है और वे पढ़े भी नही जाते।

मेरे पास बापू के सौ पत्र हैं। उनम से जो पेंसिल से लिखे हैं वे dim हो चले हैं। उनकी Photostat copies तो गान्धी सग्रहालय नई दिल्ली तथा यास्नाय पालयाना (रूस) मे सुरक्षित है और फोटो भोपाल म। आप नित्य प्रति अपने सग्रहालय के लिये कुछ न कुछ कीजिये। एक अच्छा कमरा तो आपके पास होना ही चाहिए। ब्रज क्षेत्र के कवियो के—खडी बोली तथा ब्रजभाषा के—चित्र ले लीजिये। भाई बालकृष्ण जी की सुपुत्री का विवाह सकुशल हो गया। भाई बालकृष्ण जी बहुत सहृदय व्यक्ति हैं। उन्हें प्रोत्साहित करते रहिये। उनसे बहुत काम लेना है। मीतल जी विषयक लेख कुछ रफ तो लिख लिया है। भेजूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(१०६)

फीरोजाबाद
७-७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। माथुर जी विषयक अंक लेख की एक प्रति उन्हें तथा दूसरी आपको मामूली बुकपोस्ट द्वारा भेज रहा हूँ। यदि कोई साहित्य प्रेमी पोस्टमैन एक प्रति रख भी ले तो दूसरी तो पहुँच ही जायगी। आप सीतल जी से फोन द्वारा पूछ लीजिये कि लेख उन्हें मिला या नहीं। तीसरी प्रति भी मेरे पास सुरक्षित है। यदि वक्त होता तो भाई हजारीप्रसाद द्विवेदी जी तथा श्रीनारायण जी और सत्येन्द्र जी से इसप इसनाद ले लेता। आपके नाम से मैंने प्रेरणा ले ली है। यदि सीतल जी इस प्रतियाँ टाइप करा लें तो भिन्न भिन्न पत्रों में इसे उद्धृत कराया जा सकता है। कुछ विज्ञापन भी हो जायगा।

मुझे पतले दस्त हो रहे हैं तथा बवासीर से खून भी जाता है फिर भी जम कर चार घण्टे बैठना आवश्यक प्रतीत हुआ। अपने ब्रज के सेवकों की सेवा का कोई मौका मैं हाथ से जाने देना नहीं चाहता। आप और सीतल जी दोनों ही मेरे जिजमान हैं। यद्यपि बाबा लक्ष्मनदास ने उस पेशे को छोड़कर बजाजी कर ली थी पर उनका पौत्र जिजमानी जैसी लाभदायक वृत्ति को नहीं छोड़ सकता।

विनीत
बनारसीदास

(१०७)

फीरोजाबाद
११ ७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। कृपापत्र मिला। आशा है कि माथुर जी विषयक लेख अब तक पहुँच गया होगा। दो में से एक प्रति तो मिल ही गई होगी। न पहुँचा हो तो तीसरी प्रति रजिस्ट्री से भेज दूँगा।

आपके बम्बई प्रवासी अनुज चाहे जब पधार सकते हैं। उनसे मिलकर बहुत हर्ष होगा। मेरा ख्याल है कि संग्रहालय को ब्रज सम्बन्धी चित्र चरित्र इत्यादि पर ही केन्द्रित करना ठीक होगा। विस्तार करने में तो मामला विपुल व्ययसाध्य बन जायगा। फिलहाल अपने ढौल का ही संग्रहालय का रूप दे दें। 'एकहि साधे सब सधै'।

बनारसीदास

(१०८)

फीरोजाबाद
१२ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप एक विनम्रतापूर्ण पत्र श्री फूलसिंह जी एम पी मेम्बर राज्यसभा १३५ साउथ एवेन्यू नई दिल्ली को भेजिये, वे विशाल हरियाणा आन्दोलन के प्रवर्तकों में से थे, पर मत भेद के कारण अलग हो गये थे। वे ब्रज की होली देखने १५ मार्च को गये थे, तब अकस्मात् ताज एक्सप्रेस में मेरी उनकी मुलाकात हो गई थी।

जन्माष्टमी पर आप उन्हें भी बुला सकते हैं। हाँ, यह बात आगे चलकर उन्हें स्पष्टतया बतला देनी होगी कि ब्रज की लूट खसोट करके हरियाने को विशाल बनाने की कल्पना भयङ्कर है पर अपने विरोधियों के प्रति भी हमारा बर्ताव अत्यन्त शिष्टतापूर्ण होना ही चाहिये। उनके आतिथ्य में किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

विशाल हरियाने का आन्दोलन ब्रजभूमि में उद्विग्नता ही पैदा करेगा और उसमें लाभ कुछ भी न होगा। नवभारत टाइम्स में रंजन जी का लेख बहुत अच्छा है।

विनीत
बनारसीदास

(१०९)

फीरोजाबाद
१६ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं अब तारनुमा पत्र ही लिख सकता हूँ। आदाब-अलकाब छोड़ कर तार की भाषा में पत्र-व्यवहार करने से समय की कुछ तो बचत हो ही जायगी। अंग्रेजी में घसीट देना मेरे लिए अपेक्षाकृत आसान होता है। डा० विष्णुचन्द्र पाठक एम ए, पी एच डी प्रधान हिन्दी विभाग 'लाल बहादुर शास्त्री कालेज' प्रताप मार्ग तिलकनगर जयपुर से सम्पर्क स्थापित कीजिये। हमको चाहिये कि अपने कार्य क्षेत्र में अधिक से अधिक निष्ठावान् व्यक्तियों को सम्मिलित करें। स्वर्गीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल के चित्र का उद्घाटन करने के लिए आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखिये। उनसे पूछिये कि

वे जन्माष्टमी पर मथुरा आ सकते हैं क्या ? वे यदि तूफान से दिल्ली जावें तो मथुरा उतर सकते हैं।

डा० सत्येन्द्र को अब अधिक सक्रिय होने की जरूरत है। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ का उद्धार कैसे हो ? शुद्ध सेवा भावना से हम इटावे को ब्रजसाहित्य मण्डल में ही शामिल कर लेना चाहिये। हम लोगों की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा तो है नहीं और न हम अपना कोई स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। महाकवि देव पर लिखा शोध प्रबन्ध छपा या नहीं ? डा० राजबुद्धिराजा से पूछना चाहिये। यह एक महिला हैं।

२८ अगस्त को वरहन स्टेशन के चमरौला में एक शहीद मेला का आयोजन है। वहाँ पर सन् १९४२ में चार व्यक्ति गोली से भून दिये गये थे। श्री सीताराम गर्ग चौहान को विस्तृत विवरण के लिए लिखें। आप जरूर पधारें।

विनीत
बनारसीदास

(११०)

फीरोजाबाद
१७-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ब्रज-सेवा के पचास वर्ष अर्थात् श्री प्रभुदयाल मीतल का साहित्यिक कार्य यह नाम कैसा रहेगा ?

विनोद पुस्तक भण्डार का यह तर्क कि मीतल जी विषयक ग्रन्थ का नाम कुछ आकर्षक होना चाहिये मुझे युक्तिसंगत जँचा। सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय की जीवनी का नाम उनकी पुत्री ने बंगला की अद्वयनाम्नी का इतिहास" रक्खा था। पुस्तक की खपत के लिए यह जरूरी है कि उसका नाम फड़कता हुआ हो। कृपया मीतल जी तथा पचौरी जी तक फोन द्वारा मेरा यह सुझाव पहुँचा दें।

श्री गोपीनाथ गुप्त (स्व० श्री हरदयालुसिंह जी के पुत्र) का पत्र महमूदाबाद से आया है। मेरे लेख की नकल माँगी है। तलाश करूँगा। हरदयालुसिंह जी का बढ़िया चित्र आपको भेजूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(१११)

फीरोजाबाद
१६ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! एस आर के कालेज के प्रधानाचार्य श्री गर्ग को स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल पर अपनी कालेज-पत्रिका का विशेषाङ्क निकालने को लिखिये। गर्ग जी उनके समधी होते हैं। या फिर मथुरा के किसी कालेज का ही वासुदेवशरण अंक निकाल देना चाहिये। यह काम अत्यन्त आवश्यक है।

कल अकस्मात् राजा महेन्द्रप्रताप जी मेरे घर पर पधारे। मैंने उनसे आपका जिक्र किया था। राजा साहब ब्रज की विभूति हैं। वे ८४ वर्ष के हैं—स्वस्थ और क्रियाशील। उनमे एक खास भोलापन है जो बहुत आकर्षक है। उनका तैल चित्र आपके संग्रहालय मे होना ही चाहिये। विशाल भारत के प्रवासी अंक म उनका जो चित्र छपा था उस पर से अच्छा चित्र बनाया जा सकता है।

भवन के चक्कर मे न पड़ें वह तो बहुत व्ययसाध्य चीज होगी। अपने हाल को ही संग्रहालय का रूप दे सकते हैं। वह सर्वथा निजी होना चाहिये। सार्वजनिक बनाने से सारा गुड़ गोबर हो जायगा।

अगस्त मे यदि क्रान्तिकारी सम्मेलन दिल्ली म हुआ तो शायद मैं भी जाने की सोच सकता हूँ। स्व० छबीलेलाल गोस्वामी की पुत्री पधारी थी। उनके सुपुत्र के तबादिले के लिए शिक्षामन्त्री भोपाल को पत्र लिखाना था सो लिख दिया।

विनीत
बनारसीदास

(११२)

फीरोजाबाद
२५ ७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

दोनो कृपापत्र मिले। लेख के पुनर्मुद्रण भी। हमे व्यवहार बुद्धि से काम लेना है। जैसे साधन उपलब्ध हो सकें, तदनुसार ही श्राद्धकर्म का निर्धारण करना चाहिये।

श्रीमान् के एस गर्ग एम ए प्रबन्धक एस आर के डिग्री कालेज फीरोजाबाद से यदि आप अनुरोध करें कि डिग्री कालेज की पत्रिका का अगला

अब वासुदेवशरण अग्रवाल अब हो तो अच्छी बात हो। गग जी अपने महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री उपाध्याय जी स परामर्श कर लें।

साधन मिलने पर ब्रजभारती का पचमाङ्क विशेषाङ्क के रूप म निकाला जा सकता है। मैंने श्रद्धेय प्रभुदत्त जी तथा डा० श्री हरिदत्त जी पालीवाल को पत्र भेज दिये हैं। विद्याशङ्कर जी म स्व० हरिशङ्कर जी के पत्रों की एक एक प्रति मँगा लीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(११३)

फीरोजाबाद
२६ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री गोविन्दप्रसाद केजडीवाल का पत्र अभी मिला। ३ अगस्त तक ब्रज के साहित्यकारों के सस्मरण लिख भेजने को कहा है। इस बीच यदि आप तुरन्त कुछ मित्र श्री मीतल जी का अपना स्व० राधाचरण गोस्वामी तथा स्व० बिहारीलाल जी प्रभृति के सीधे हिन्दी मिजवा सकें तो अनुग्रह। दो फुलस्केप कागजो म ब्रजसाहित्य मण्डल के कार्य का सक्षिप्त विवरण भी भेज दीजिये। छपना कठिन तो है ही। भाई मीतल जी को भी फोन पर यह चिट्ठी सुना दीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(११४)

फीरोजाबाद
२८ ७ ७०

प्रिय बन्धु !

मुझे तो ब्रजभारती का पचमाङ्क विशेषाङ्क बनाने का प्रोग्राम ही अत्यन्त व्यावहारिक प्रतीत होता है—बशर्ते उस अङ्क के सम्पूर्ण व्यय का प्रबन्ध हो सके। एक पैसा भी ऊपर से खर्च न करना पडे। स्व० जीवनदत्त शर्मा या स्व० हरिशङ्कर शर्मा के निज पार्षद यदि श्राद्ध कम अपने ढग का होगा।

डा० केशरदत्त तवाडी उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत का पत्र आया है। आपके अभिनन्दन की बात लिखी है।

यासी की एक अग्रवाल कन्या शशि ने पी एच डी के लिए सस्मरण विषय लिया है। उसकी माँ की ननमाल यहा है। वह यहा पधारी हैं। डा० भगवानदास माहौर की शिष्या है। काफी होशियार है। मुझे यह देखकर हर्ष होता है कि हमारी पुत्रियाँ पुत्रो से अधिक प्रतिभाशालिनी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(११५)

फीरोजाबाद
३० ७-७०

प्रिय भाई वृ दावनदास जी,

वन्दे! कुमारी शशि अग्रवाल एम ए सस्मरण विषय पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत करना चाहती हैं। उनकी दादी फीरोजाबाद की ही हैं और इसलिये वे यहा आकर सात दिन रह सकी। अब वे झाँसी वापस जा रही है। उनका पता है—२० रानी महल, झासी। उनके शोध काय के लिये जो भी परामश आप दे सकें दें।

प्राचीन ब्रजसाहित्य म सस्मरणा के जो प्रसग आये हो उनका विवरण श्री शशि जी को चाहिये। मीतल जी स भी अनुरोध कर रहा हूँ। इस पत्र की नकल उनके पास भी भेज रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(११६)

फीरोजाबाद
१ ८ ७०

प्रिय भाई वृ दावनदास जी,

अपना लेख सशोधित करके आज चार चित्रो सहित साप्ताहिक हिन्दुस्तान को भेज दिया है। पहली प्रति म कुछ नाम जो छूट गये थे वे जोड दिये गये हैं।

लेख २३ अगस्त के अङ्क म आ रहा है। उसकी चर्चा चलाने के लिए भिन्न भिन्न व्यक्तियो द्वारा उक्त लेख मे सशोधन तथा परिवद्धन किये जान चाहिये। मुझे तो विज्ञापन की जरूरत नहीं पर व्रज के विषय म चर्चा निरन्तर होती रहे तो कुछ न कुछ काम आगे बढ़ेगा ही।

अगर वे मनमोहिनी कानून तथा रत्नमुनि जैन कानून को यदि आप लिखें कि वे हरिश्चन्द्र अंक निकालें तो उसमें तो कोई हर्ज नहीं। उससे उनकी पुत्र वधुओं की भावनाओं पर कुछ आघात नहीं हो सकता। मुझे तो यही कार्यक्रम व्यावहारिक जँचता है।

विनीत
बनारसीदास

(११७)

फीरोजाबाद
४-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। कल आप पधारे, बहुत अच्छा हुआ। २३ अगस्त को मैं मथुरा पहुँच जाऊँगा, और २४ को वहाँ रहूँगा तत्पश्चात् या तो दिल्ली चला जाऊँगा, या घर लौट आऊँगा। हाँ, १२ से ८ तक का कोई भी प्रोग्राम मेरे लिए न होना चाहिए। आप जानते ही हैं कि मेरा स्वास्थ्य साधारण ही है इसलिए अधिक श्रम नहीं कर पाता।

आपके अभिनन्दन का कार्य विधिवत् शुरू कर देना चाहता हूँ। श्री रजन जी का पूरा पता क्या है। उनको पत्र लिखना चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि स्व० अग्रवाल जी के सर्वोत्तम पत्रों को ब्रजभारती के विशेषांक रूप में निकाल देना ही व्यावहारिक होगा। अग्रवाल जी के सुपुत्र उन पत्रों को पुस्तकाकार में छापना चाहें तो छापें।

स्व० बालमुकुन्द गुप्त के सुपुत्र भाई नवलकिशोर गुप्त और अमृतराय जी (प्रेमचन्द जी के सुपुत्र) को छोड़कर हिन्दी जगत में अपने पूर्वजों का श्राद्ध शायद किसी ने नहीं किया। इस बारे में मैं एक लेख लिखना चाहता हूँ। कुछ चित्र लेता आऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

(११८)

फीरोजाबाद
१२-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। क्या आप कृपा कर १८ ता० की रात के ८ बजे से पूर्व चमरौला [टूंडला—बरहन के निकट स्टेशन] पहुँच सकते हैं?

वहाँ के कवि सम्मेलन के सभापतित्व करने के लिये वहाँ के ग्रामवासियों ने आपसे आग्रह करने का आदेश मेरे पास भेजा है। वैसे मैं तो यहाँ से भाई बालकृष्ण जी की कार द्वारा १८ ता० को टूडला जाऊँगा और वहाँ से १० बजे ट्रेन द्वारा १०॥ बजे चमरौला पहुँच जाऊँगा। आप टाइम टेबिल देखकर तय कर सकते हैं कि टूडला से चलने वाली कोई गाड़ी शाम को चमरौला ठहरती है या नहीं।

आप अपनी सुविधा का ख्याल कर लीजिये। एक नवीन परम्परा— शहीदों के लिये मेले लगवाने का प्रारम्भ हो रहा है। मैं २३ को मथुरा पहुँचने का निश्चय कर चुका हूँ, पर अभी यह तय नहीं कि बस से आना ठीक होगा या ट्रेन से। कल राजा महेन्द्रप्रताप जी यहाँ पधार रहे हैं। पी डी जन कालेज के शहीद भवन में ही वे ठहरेंगे। शेष कुशल।

विनीत
बनारसीदास

(११९)

फीरोजाबाद
२१-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे! यदि मुझे पता होता कि आप पधार रहे हैं तो शायद मैं एक दिन के लिए चमरौला में रुक भी जाता, पर आपका कृपापत्र असमर्थता प्रकट करते हुए मिल चुका था। इसलिये मैं जल्दी ही लौट आया। १६ ता० को सवेरे चार बजे से मुझे निरन्तर श्रम करना पड़ा। अपना भाषण मैं लिख कर ले गया था और उसकी एक एक प्रति सैनिक अमर उजाला तथा वीर अर्जुन को दे दी थी। अमर उजाला ने उसका सारांश दे दिया है स्थान के अभाव के कारण पूरा भाषण दिया भी नहीं जा सकता था।

मैं २३ को प्रातःकाल को आगरे पहुँचना चाहता हूँ और वहाँ विश्राम करके शाम को सवा चार बजे की मेल द्वारा ५॥ बजे मथुरा पहुँचने का विचार है।

शरीर में इतनी शक्ति नहीं कि मैं किसी अन्य प्रोग्राम में भाग ले सकूँ। सासनी फिर कभी पहुँचूँगा। मथुरा से लौट कर ४ महीने मुझे पूरा पूरा विश्राम ही करना है। आपके प्रेमपूर्ण आग्रह को मेरे लिये टालना सम्भव नहीं था सिर्फ इसी कारण यह तीर्थयात्रा कर रहा हूँ।

बनारसीदास

(१७०)

२६ ८ ७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

हमारी विभिन्न जनपदीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में ब्रजसाहित्य मण्डल को निरन्तर यत्न कर अपने ध्येय में अग्रसर होना चाहिए। राजस्थानी का पक्ष कौन-कौन से पत्र समर्थन कर रहे हैं यह पं० झाबरमल्ल जी शर्मा जयपुर वाले अथवा राजस्थान में पूछिए। जनपदीय परिषद की मथुरा में हुई गत बैठक के बारे में श्री कृष्णानन्द गुप्त श्री गणेश चौबे व अन्य बन्धुओं को लिखिए। अध्यक्ष जी के पत्रों के विषय में अर्जीन के तौर पर उनके पुत्रों को फिर लिखिए। आगरे से पं० हरिशंकर जी के पत्रों की नकल ले आइए। विनोद हरियाणा का विरोध तो करना ही है।

श्री लूइस ममफोर्ड अमरीका के वर्तमान चिन्तकों में अग्रगण्य हैं। वे स्वर्गीय प्रो० पैट्रिक गेडीज के प्रधान शिष्यों में से हैं। जनपदों के पुनर्निर्माण पर पर उनका यह विचार ध्यान देने योग्य है।

Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe it is rather the region one knows and loves best reapportioned reshaped and recultivated for permanent human occupation

विनीत
बनारसीदास

(१७१)

फीरोजाबाद
३१-८-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

श्री बालकृष्ण गुप्त तथा कान्ता इन्टर कालेज के प्रिंसिपल फूलमाला लेकर २८ ता० की शाम को आपके दरे दौलत पर हाजिर हुए थे—वर्षगांठ की बधाई देने के लिए—पर आप उस वक्त वहाँ नहीं मिले और किसी ने कह दिया कि आप धर्मशाला में होंगे। वे वहाँ भी गये पर वहाँ भी पता न लग सका। उन्हें निराशा हुई। कृपया उन्हें धन्यवाद का पत्र भेज दें तथा न मिल पाने के लिए खेद प्रकट कर दें। गुप्त जी कालेज में भी एक शहीद स्तम्भ कायम करेंगे। आप कभी कालेज चलिए।

अंग्रेजी में एक उक्ति है—'Be the man thou Seekest जिस आदमी को तुम तलाश म हो वह खुद ही बन जाओ। आप मे वह शक्ति विद्यमान है जो आपको ब्रजभूमि का सवश्रेष्ठ सेवक बना सकती है। Conserve all your energies please आपके मुतफर्रिक दान ठीक नहीं, Concentrate on your संग्रहालय।

सुना है विभव जी ने ब्रज प्रात पर कुछ लिखा है। उनका पता है ६ महात्मा गांधी रोड, आगरा। जनपदीय कायकर्ताओ के पत श्री गणेश चौबे तथा श्री जगदीश जी से पूछिये। मरा भाषण कम्पोज करने दे दीजिये। उसका प्रूफ देख लीजिय। बाबा पृथ्वीसिंह फ टियर मेल से आते जाते हैं। कभी उन्हें मथुरा म उतारिय। उनका 'क्रांति का पथिक' मूल्य १५) गजब का आत्म चरित है।

विनीत
बनारसीदास

(१२२)

फीरोजाबाद
३ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे, ३१ ता० का कृपा पत्र मिला। स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के विषय मे सस्मरण तो हर हालत म इकट्ठे कर ही लेने चाहिये। अगर स्मृतिग्रन्थ के लिये पैसा इकट्ठा न भी हो सके तो ब्रज भारती का पांचवा अङ्क ही निकाला जा सकता है। अगर उसमे भी आर्थिक बाधा हो तो हस्तलिखित ग्रन्थ तो तयार किया ही जा सकेगा। उसम तो सौ रुपय ही खच होगे। आचाय विजयप्रकाश जी का यदि कोई आशङ्का हो तो उन्हें एक रजिस्टड पत्र द्वारा आप यह सूचित कर सकते हैं कि इस श्राद्ध कर्म म हम लोगो का कोई भी स्वाथ नही है। उन्हे यह भी लिख दीजिय कि उत्तर न आने पर आप अपने पत्र की नकल स्व० आचाय जीवनदत्त जी के भक्तों को भेज देंगे।

सस्मरण अभी इकट्ठे हो जायें तो भले ही हो जांय, फिर १०-१२ वष बाद वे विलीन हो जायेंगे। "जो बनि आव सहज म ताही मे चित देइ' मैंने 'विशाल हरियाणा' पत्र की नमूने की प्रति के लिय श्री फूलसिंह जी (सदस्य राज्य सभा) तथा चडीगढ़ को भी लिखा था, पर उन लोगो ने,

भेजा ही नही। एर सज्जन ने 'अमर उजाना म विशाल हरियाणा के पक्ष म भी लिखा है और हम लोगा पर जाट अहीर विरोधी होने का इलजाम लगाया है। यह आक्षेप सवा सोलह आने निराधार है।

एक अपनी चिट्ठी प्रश्नावली के रूप म उन जिला के प्रतिनिधि व्यक्तिया का भेजी जा सकती है, जिन्हें विशाल हरियाणा हृदय लना चाहता है। उत्तर आने पर छपाये जा सकते हैं (म ए म)। जगन्नाथप्रसाद भानु जी को छपा छपाया अभिनन्दन ग्रन्थ उनके जीवन काल म भेंट नहीं किया जा सका। वस लगों का पुलिन्दा भेंट कर दिया गया जिसे वे लोगों का बन्द पूवक दिखलाते थे। शायद उनके स्वगवास के बाद वह छपा। मैं शीघ्र ही ८।१० तारीख के आस-पास होलीपुरा जाना चाहता हूँ। वहाँ भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी का इण्टर कालेज है। जगल म मगल।

विनीत
बनारसीदास

(१२३)

फीरोजाबाद
७ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

जब कभी आपके मन म उत्साह हो और आपके पास फुरसत भी आप होलीपुरा के इण्टर कालेज को जरूर देखिये। भाई शम्भुनाथ जी का ही वह कालज है। गांधी इण्टर कालेज नाम है। अपनी पत्रिका का भ्रमण विशेषाङ्क यदि वे निकाल सकें तो अत्युत्तम हो, पर उसस पूर्व उन्हें पत्रिका का श्री राधेलाल अङ्क निकालना चाहिये। इस बारे म आप भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी (मीना बाजार कोठी शाहगज आगरा) को अपनी ओर स लिखें। भाई शम्भुनाथ जी बहुत भले आदमी हैं। सच्चे कार्यकर्ता हैं।

व्रजभारती का एक अङ्क श्रीमती तारा पाण्डे C/o दी कलक्टर मैनपुरी भेजें। उनके पुत्र श्री कमल पाण्डे मैनपुरी म कलक्टर हैं। श्रीमती पाण्डे अच्छी कवयित्री हैं। वे यहाँ अपने पतिदेव श्री पी० पाण्डे के साथ पाँच सात दिन यहाँ पधारी थीं।

विनीत
बनारसीदास

(१२४)

दूसरा पत्र

फीरोजाबाद
७ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

एक पत्र श्री हरिहरनाथ अग्रवाल अध्यक्ष रामप्रसाद एण्ड सन्स मॉडर्न बुक डिपो हास्पिटल रोड आगरा को लिख कर पूछिये कि व सत्यनारायण कविरत्न के उत्तर राम चरित और मालती माधव को प्रकाशित कर सक्ते हैं क्या ? श्री हरिहरनाथ के पिता श्री रामप्रसाद जी सत्यनारायण के मित्र थे। उन्होंने मालती माधव का प्रथम सस्करण छापा था।

कोटला इन्टर कालेज भी जिसके सचालक भाई बालकृष्ण गुप्त हैं आपको देखना ही है। वहाँ के निकट राजापुर ग्राम का एक व्यक्ति १९४२ मे शहीद हुआ था—नाम था ओउम् प्रकाश—यानी जेल मे ही उसका स्वगवास हो गया था। उसकी पत्नी फूलमती जिन्दा है। उसका स्तम्भ कोटला कालेज मे स्थापित करना है। इस बारे म भी बालकृष्ण जी से पूछिये।

आपको ही ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा इसलिये ब्रजभूमि की सर्वाङ्गीण उन्नति का ध्यान आपको रखना है।

बनारसीदास

(१२५)

फीरोजाबाद
२८ १० ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कृपापत्र मिला। अपने प्रिय जनपद—ब्रजमण्डल—के लिये जो कुछ भी हम कर सकें हमें यथासम्भव शीघ्र ही करना चाहिये। I am in a hurry because I haven t much time left now आपके शुभनाम का सहारा लेकर—आपको निमित्त मात्र बनाकर—इस यत्न का आगे बढाना है। "निमित्त मात्र भव सव्य-साचिन्" यह भगवान की ही उक्ति है।

स्व० हरिशङ्कर जी का एक बढिया तैल चित्र भाई ओउम् ने तयार करा दिया है। उसे पी डी जैन कालेज के शहीद-कक्ष मे टगवाना है। उसके निगेटिव से कुछ Cabinet Size चित्र भी तैयार करा लेंगे।

आप एक अलमारी या कोई बड़ा सन्दूक इस प्रकार के मसाल के लिये घर पर सुरक्षित कर दीजिये। अन्य व्यय वाली चीजें तो इकट्ठी करते रहना ही चाहिये।

मेरे संग्रहालय को देखने के लिये दिल्ली से National archives वाले आ रहे हैं। पैसे तो वे नाम मात्र को ही देंगे—१०० २००) लेकिन चीजें वैज्ञानिक ढङ्ग से उनके यहाँ ही सुरक्षित रह सकती हैं। वे Permanent loan (जिसका अर्थ दान ही हो सकता है।) पर उन्हें ले लेंगे। भविष्य के ख्याल से मैं भी उन अत्यन्त बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित करा देना चाहता हूँ।

आपकी अभिनन्दन कमेटी में कुछ उद्योगपतियों को भी शामिल करना चाहिये। Sponsors की संख्या में १० १२ की वृद्धि हो जाय तो कोई हानि नहीं। श्री राधमोहन अग्रवाल (शिवनारायण अग्रवाल & Co) को रखना ही चाहिये। राजाबाबू को भी।

भाई बालकृष्ण जी अग्रवाल बहुत व्यस्त हैं। सबेरे ७॥ से शाम के ७॥ बजे तक अपने कारखाने में ही रहते हैं। भाई अमृतलाल जी से उन्होंने यही कहा था। यहाँ के उद्योगपतियों में उनका दम गनीमत है।

विनीत
बनारसीदास

(१२६)

फीरोजाबाद
६ ११ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। मैं ता० ८ ता० की मीटिङ्ग में आना चाहता था, पर अस्व के कष्ट के कारण न आ सका। लेकिन जो निवेदन मुझे करना था, उसे अमर उजाला ने प्रकाशित करने की कृपा कर दी। वह एक पत्र का सारांश है जिसे मैंने श्री रंजन जी को लिखा था।

आचार्य वासुदेवशरण जी के पत्रों को छपा ही दीजिये। भूमिका में खर्च का ब्यौरा भी दे दीजिये ताकि वासुदेवशरण जी के पुत्रों को यह विश्वास हो जाय कि हम लोग मुनाफे की दृष्टि से यह श्राद्ध कर्म नहीं कर रहे।

क्या सत्येन्द्र जी के पास के पत्र नहीं मिले ? उनसे फिर तकाजा कीजिये। मैं भी लिख रहा हूँ। १२ ता० को दिल्ली की National archives

की एक महिला Mrs M Singh यहाँ मेरे सग्रहालय को देखने पधार रही हैं। महात्मा जी, दीनबन्धु ऐन्ड्रयूज प्रभृति के पत्र मैं वहीं राष्ट्रीय अभिलेखागार म सुरक्षित करा देना चाहता हूँ। इससे मेरी चिन्ता मिट जायगी। वैज्ञानिक ढङ्ग से सुरक्षित करना कोई आसान काम नही। मेरे पत्रो को आप छपाना चाहते हो तो जरूर छपा दें, यद्यपि मैं उन्हें महत्व नही देता।

आप प्रात काल टहलने जाते हैं ? या नही ? स्वस्थ रहना सबसे जरूरी काम है। विद्याशकर जी स भाई हरिशङ्कर जी के पत्र तुरन्त ले लीजिय।

विनीत

बनारसीदास

(१२७)

फीरोजाबाद

१२ ११ ७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आप तो कभी शिकार म गये न होगे। मुझे टीकमगढ म मौका मिला था। शिकार मैंने कभी नही की, देखी अवश्य थी। तीन तरफ स हांका कराने पर जानवर चौथी ओर निकलता है और वहाँ बैठा शिकारी उसका काम तमाम कर देता है।

अपन शासको का भी अहिंसात्मक हांका कराना होगा। दस बारह जगह से एक ही आशय के पत्र जब उनकी सेवा मे पहुँचेंगे तो शायद उनके कान पर जू रेंगगी। महात्मा जी का कहना था कि रेल के डिब्बो की अस्वच्छता क बारे म यात्रियो को रेल अधिकारियो को लिखना ही चाहिये। जब बीसियो लोग लिखेंग तो शायद वे ध्यान देंगे।

हांका के कुछ विषय लिखता हूँ —

१ घाँघूपुर म सत्यनारायण कविरत्न के लिये कोई स्मारक।
२ व्रजसाहित्य मण्डल के लिय भूमि की प्राप्ति।
३ देवपुरस्कार के नियमो का यथापूर्व रखवाना—(मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)
४ व्रजसाहित्य मण्डल को अनुदान।
५ श्रीधर पाठक सग्रहालय की स्थापना।
६ जनपदीय बोलियो के शब्द मुहाविरे, कोष इत्यादि के सग्रह की व्यवस्था।

जो जिस मत्री या विधायक को जानता हो वह उस लिखे। उदाहरण के लिये मैं श्रीमान् मुख्यमत्री महोदय को (जिनसे थोडा सा परिचय है) लिख सकता हूँ।

आप, मीनल जी, दुर जो, अमृतलाल जी, बालकृष्ण जी, सत्येन्द्र जा, इत्यादि एक ही आशय क पत्र श्री लक्ष्मीरमण आचाय इत्यादि को भेज सकत हैं। 'कबहुँक दीनदयाल क भनक पडेगी कान' इन लागा क कान पर भी कभी न कभी भनक पडेगी।

आगर न पहुँच सकने का मुझ पछतावा रहा। क्या करता, लाचार था। भाइ बालकृष्ण गुप्त का कहना था कि आगर वाल ठीक प्रबंध नहीं कर सक। वैस भी साहित्यिक मीटिंग्स म उपस्थिति ज्यादा नहीं होती पर जगह तो ठीक रखना चाहिए था।

बालकृष्ण जी का कहना है कि आगर वाला का सक्र मिलान के लिय यहाँ कोइ मीटिंग सफलता पूवक की जा सकती है।

"अपन नागरों स सीधक एक लख मैं लिखना चाहता हूँ। यह पता लगान की जरूरत है कि हमार नागरकों म कितना म साहित्यिक रुचि है। शायद २० फीसदी म भी न होगी। एस लोगा क सामन साहित्यिक चर्चा करना भैंस क आग बीन बजान क समान है।

विनीत
बनारसीदास

(१२८)

फीरोजाबाद
२१ ११ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

कल इटाव क सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री कृष्णगोपाल चौधरी पधारे थ। उनस उस नगर के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जीवन क विषय म बहुत दर तक बातचीत हुआ। उनका पता इटावा काफी है।

कृपया उन्हें एक पत्र भेजकर इटाव म साहित्यिक कार्य पर एक लख ब्रजभारती क लिय लिखवाइय। ब्रजभारती का एक अङ्क उन्हें तुरन्त भेजिय और उनका शुभ नाम फ्री लिस्ट म लिख लीजिय। व मेरी उम्र क ही हैं— आगरा कालज क पुरान छात्र और प्रतिष्ठित वकील।

आपको कभी इटाव जाना भी पडेगा। पहल म श्री सूयनारायण अग्रवाल जी स पत्र-व्यवहार कर लीजिय। उन्हें भी ब्रजभारती मेंट स्वरूप हो भेजिय। इटावा पहले आगरा कमिश्नरी म ही था। साहित्यिक दृष्टि स

तो वह हमारे जनपद मे ही है और आप चूकि व्रजमण्डल के साहित्यिक कमिश्नर [आयुक्त] हैं इसलिये इटावा आपके क्षेत्र म आता है ।

National archives की एक महिला Mrs M Singh पधारी थी। वे २८ नवम्बर को पुन आ रही हैं। अपने सग्रहालय की महत्वपूण सामग्री मैं उन्हे २६ का सौप दूगा। यदि आपको फुसत हो तो आप भी २८ ता० को पधारें। वे सम्भवत तूफान Express से आवेंगी। महात्मा जी के एक सौ पत्र, सी एफ एन्ड्रयूज की सम्पूण सामग्री, श्रीनिवास शास्त्री के पत्र इत्यादि अब दिल्ली मे ही सुरक्षित रहगे।

इस पत्र की नकल चौधरी श्री कृष्णगोपाल जी को भी भेज रहा हूँ। साहित्यिक सगाई कराना मेरा प्रिय कतव्य है।

बनारसीदास

(१२६)

फीरोजाबाद
१४ १२ ७०

प्रिय बन्धु !

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद, शिशु विहार भावनगर (सौराष्ट्र) को मैं लिख रहा हू कि वे २७ दिसम्बर को यहा पधारें। व आपको तार देंग आप उनसे मिल लीजिये। अब की बार हम लोग फीरोजाबाद के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियो का सम्मान कर रहे हैं श्री सरदारसिंह अध्यापक उम्र ८४ वष, श्री गुनजारीलाल आयुर्वेद विशारद उम्र ८० वर्ष। पहले सज्जन ने प्राइमरी स्कूलो में बहुत वर्षों तक पढाया था और दूसरे पीयूषपाणि हकीम रह चुके हैं। मुझे तो बहुत काफी सम्मान मिल चुका है।

आगरा म इस बार ६ दिन व्यतीत हो गये। ता० ५ को गया था और ता० ११ को लौटा हूँ। मुझे डी लिट् उपाधि दिलाने म श्रीमान् कुलपति महोदय का जबरदस्त हाथ था और मैं उनका बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। मुझे तो ४ दिसम्बर की शाम को ही—जिस दिन यह निश्चय हुआ था—यह समाचार अकस्मात् मिला था। मैंने इसकी कल्पना भी न की थी। प्रयत्न करना तो रहा दूर।

मेरा जन्म दिवस २४ दिसम्बर को पडता है पर मैं तो कीर्ति रूपी मिठाइ खात खाते ऊब गया हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(१३०)

फीरोजाबाद
२६ १२-७०

प्रिय भाई वृन्दावनलाल जी

वन्दे। आपका कृपापत्र मिला। दो दिन से इस तूफान ने मेरे दैनिक कार्यक्रम को सर्वथा अस्त-व्यस्त कर दिया। दोपहर को नाम मात्र दिन हूगाम हुई और स्वागत सम्मारोह में वक्त रहा बरसी हुई सो अलग। यह आपने अपने पत्र में विशुद्ध साहित्यिक प्रश्न किया है। चि० बुद्धिप्रकाश ने भी कहा था कि अभिनन्दन ग्रन्थ के आत्म चरित्रात्मक भाग में वह [मेरी धर्मपत्नी पर मैंने जो नाम से पुकारी जाती थी] का उल्लेख होना चाहिए था।

वस्तुतः यह परलू अध्याय श्रीयुत बंसल जी के सुपुर्द था पर उन बेत पर उन्होंने इस अस्वीकार कर दिया और मुझे ही वह लिखना पड़ा।

निस्सन्देह मेरी पत्नी का जो श्रेय मिलना चाहिए था वह उसे नहीं मिला। मेरे मन में इस बात का घोर पश्चात्ताप बराबर रहा है कि मैं उसके प्रति अपना कर्तव्य पालन नहीं कर सका। आप रसाचित्त में मेरा आत्म-चरित्रात्मक कल्पना सम्मान्य की समाधि पढ़ लीजिए। इसके प्रत्येक में वह वास्तविक घटनाओं से ओत प्रोत है। स्वर्गीय आचार्य वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने मुझे अपने पत्र में (जो प्रकाशित हो चुका है) लिखा था कि अपने विस्तृत अध्ययन में उन्होंने ऐसी टीस भरी रचना दूसरी नहीं पढ़ी। आप सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित उस पत्र को जरूर पढ़ें।

मेरी पत्नी की आकस्मिक मृत्यु सन् १९३० में हो गई जब कि मैं कुल जमा ३८ वर्ष का ही था। उससे मेरा सम्पूर्ण जीवन ही अस्त-व्यस्त हो गया। मैं अपने पापों का कुतुब मीनार सा पाप्ति कर्म का पश्चात्तापी हूँ और कभी उन्हें छिपाने का प्रयत्न नहीं करता। यदि मैं यहाँ उन सब अनाचारों का ब्यौरा सुनाने लगूँ जो मुझसे बन पड़े, तो आपके हृदय को धक्का लगेगा।

अमितगत्याचार्य एक जैन कवि हो गये हैं। उनके सामायिकसार को जैन लोग रोज पढ़ते हैं। उसका एक श्लोक है —

विनिन्दनालोचन गर्हणैरहं,
मनो वचः काय कषाय निर्मितम्
निहन्मि पापं भव दुःख कारणं,
भिषग् विषं मंत्र गुणैरिवाखिलम्।

अर्थात् जिस तरह कोई वैद्य मन के बल से साप के विष को नष्ट कर देता है उसी प्रकार मैं निन्दा, घोर निन्दा और आलोचना द्वारा अपने उन पापो को जो मन वचन काया द्वारा मुझसे बन पडे हैं नष्ट करता हूँ।

हैवलॉक ऐलिस ने लिखा है कि बहुत से व्यक्ति चन्द्रमा की भाति अपने प्रकाश भाग को ही जनता को दिखलाते हैं और अन्धकार भाग को बिल्कुल छिपाये रहत हैं। मैं उस नीति (या अनीति ?) म यकीन नही रखता।

जिसका सहयोग मुझे १७ वष मिला, मेरे उद्दाम यौवन मे जो मेरी सहचरी रही पर जो मेरे सुख के दिन आने के बहुत पूव ही चली गई उसके प्रति शाब्दिक कृतज्ञता प्रगट करना निरथक ही होगा। सम्पादक की समाधि में मैंने अपने हृदय की जो व्यथा उडेल दी है वह आशिक रूप से पर्याप्त है। दूसरे लोग वे गलतियाँ न करें जो मुझसे बन पडी, यह भी उस सच्ची कहानी का एक उद्देश्य है। बस वह प्रायश्चित्तमूलक ही है।

विनीत
बनारसीदास

(१३१)

फीरोजाबाद
२० १ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आप मेरे पत्रो को छाप रहे हैं इससे मुझे आश्चय ही होता है। वे कभी इस खयाल से नही लिखे गये थे कि उन्ह प्रकाशित किया जायगा। अगर यह विचार मन म आता तो उनकी सहज स्वाभाविकता ही नष्ट हो जाती।

पत्र व्यवहार मेरा व्यसन रहा है—जैसे भग पीना चौबे लोगो का व्यसन है—और कम से कम एक लाख चिट्ठियाँ तो मैंने घसीट डाली होंगी। मैंने कही पढा था कि लार्ड कर्जन कभी-कभी सौ सौ पृष्ठो के पत्र लिख भेजते थे। [प० पद्मसिंह जी के पत्रो की पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स से ७॥) मे मँगा लीजिये]

किसी अग्रेज लेखक ने लिखा था— Only those letters are worth preserving that ought not to have been written—and if written they ought to have been destroyed

नमन्ता क नवीन अङ्क म मैंने स्व० नवीन जी के ऐसे कितने ही पत्र छाप भी दिये हैं। उसी फक्कडपन म स्व० प्रतापनारायण मिश्र ने अपने अनेक पत्र लिखे थे। जिनम ४, ५ ही सुरक्षित हैं।

"पत्र व्यवहार मेरा व्यसन" नामक पुस्तक के लिए सम्पूर्ण सामग्री तैयार है पर लिखने का मौका अभी तक नहीं मिला। श्री रायसाहब जी (शिवलाल अग्रवाल & Co) ने तो स्वयं मकान पर एक सहायक रखने को भी उद्यत हैं, पर कोई समझदार सहायक यहाँ मिलता ही नहीं। आप जानते ही हैं कि मुझे अंग्रेजी भाषा में कोई दिक्कत नहीं और सन् १९१९ से अंग्रेजी पत्रों में लेख भेजता रहा हूँ। एक बात यह भी है कि Roman लिपि पत्र प्रकाशन के लिए विशेष सुविधा जनक है। मैं अपना मानसिक भोजन प्रायः अंग्रेजी ग्रन्थों से लेता रहा हूँ। वेद गीता, धम्मपद, महाभारत इत्यादि से भी प्रेरणा मुझे मिलती रही है पर Emerson, Thoreau Whitman Ramain Rolland Gorky, Stefan Zweig Turgenev Edward Carpenter इत्यादि के ग्रन्थों का स्वाध्याय मैंने किया है।

अंग्रेजी में पत्र लिखने से एक घाटा जरूर हुआ है—वह यह कि वे हिन्दी पाठकों तक पहुँच नहीं सकते। पर मैंने कभी यह कल्पना भी न की थी कि मेरे पत्रों में कुछ ऐसी चीज भी हो सकती है जो साधारण व्यक्ति से अधिक के लिए उपयोगी हो।

मैंने अपने बहुत ही कम पत्रों की नकल रखी है। कम से कम ३०० पत्र श्रीराम जी के घर पर होंगे—इतने ही भाई [illegible] जी के यहाँ। बन्धुवर हजारीप्रसाद जी, [illegible] जी, सत्यवती मलिक, डा० कमला चौधरी इत्यादि के यहाँ पचासों ही पत्र पड़े होंगे। क्या कभी किसी भगत ने यह हिसाब लगाया होगा कि उसने कितनी बार नाम लिया है? और किसी चाय पान वाले ने प्यालों की गिनती की होगी? अभी चार बजे उठकर मैंने तीन चार प्याले चायामृत का पान किया है और लम्बे-लम्बे कई खत घसीट डाले हैं। भगवान मेरे उन मूर्खों के बस खून पर चलते हैं। पचासों रुपये महीने का यह नुसखा मेरे लिए यद्यपि व्ययसाध्य रहा है तथापि इसके कारण हजारों पत्र इकट्ठे हो गये हैं। दूसरा लाभ पोस्टआफिसों का भी रहा है।

> चन्द तस्वीरें बुताँ चन्द हसीनों के खुतूत,
> बाद मरने के मेरे घर से यह सामाँ निकला।

Don t have over-crowded programmes 'युक्ताहार विहार' की शिक्षा भगवान कृष्ण ने दी थी। 'विहार' का क्या तर्जुमा करते हैं? चीनी कहावत है Enjoy yours If It is already too late ६० वर्ष वालो

के लिये सवथा उपयुक्त है और ७६ वालो के लिय अनिवाय। दिल्ली से डा• आन द स्वरूप पाठक का भा पत्र आपके अभिनन्दन के विषय म मिला।

विनीत
बनारसीदास

(१३२)

फीरोजाबाद
३० १ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपके अनुज श्री कु जलाल के वियोग की दु खद खबर राजेन्द्र रजन जी मे सुनी। यह एक हृदय विदारक दुघटना है। निस्सन्देह आप पर यह बडी विपत्ति आई है। भुक्त भोगी होने के कारण मरी आपके साथ हार्दिक सहानुभूति है। ऐसे अवसर पर धैय बाँधने का उपदेश देना भी हिमाकत होगी। समय ही ऐसे घाव को पूरा कर सकता है यद्यपि उसकी कसक कभी नही जाती।

आपके दु ख से दु खी

बनारसीदास

(१३३)

फीरोजाबाद
२ २ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आशीष। काड मिला। मुझे उस दुघटना की खबर राजेन्द्र रजन जी से मिल चुकी थी और तभी मैंने एक पत्र भी भेज दिया था।

मुझ पर ऐसी ही विपत्ति सन् १९३६ मे आई थी। अनुज रामनारायण का स्वगवास कुल जमा २८ वष की उम्र मे हो गया था। अभिनन्दन ग्रन्थ म आपने मेरा लेख पढ़ा ही है।

इस अवसर पर अपने अनुभव की एक बात धृष्टतापूवक निवदन कर दू। उस वज्रपात के समय मैंने दृढ निश्चय किया था कि मैं स्वस्थ रहकर इस विपत्ति को झेल लूगा। I will not succumb to this calamity तब मैंने regular टहलना शुरू कर दिया था। मेरे हाथ म Nervous system की कमजोरी के कारण कम्पन भी शुरू हो गया था। किसमिस खाने से वह व्यथा दूर हो गई।

आप को भी अब ऐसी प्रतिज्ञा करके तदनुकूल रहना चाहिए और यह जिम्मेवारी को सम्हालना चाहिए। मैं कोई उपदेश नहीं दे सकता। परन्तु मामले में तो मैं बिल्कुल पस्त ही रहा हूँ। हाँ, मेरी गलतियों से दूसरे लोग कुछ सीख सकते हैं। जो आप निरपेक्ष हैं उनके प्रति अपना कर्तव्य पालन करने में ही हमारा कल्याण है। हाँ, चित्तविभ्रम को रोकने के लिए अपना साहित्यिक काम भी यथाशक्ति नियम पूर्वक करते रहिए।

पुनश्च—

मुझे शायद दिल्ली जाना पड़े। १२ ता० को श्री एन्ड्रूज की जन्म शताब्दी है।

विनीत
बनारसीदास

(१३४)

फीरोजाबाद
६ २ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप मेरे पत्रों का संग्रह कर रहे हैं तदर्थ कृतज्ञ हूँ पर मुझे तो उनमें कोई विशेषता नजर नहीं आती। दीनबन्धु एन्ड्रूज तो पत्रों की वर्षा ही करते थे और स्वयं कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ टाकुर ने उनकी इन showers का उल्लेख किया था। मैं भी पत्र बहुत लिखता हूँ और शायद यही उनकी एक मात्र विशेषता हो।

क्या आचार्य पं० पद्मसिंह जी के पत्र आत्माराम एण्ड सन्स काश्मीरी गेट से आपने मंगाये? न मँगाये हों तो मैं भिजवा दूँगा। हाँ, दूसरों ने जो पत्र मुझे लिखे हैं वे निस्सन्देह महत्व रखते हैं। कितने ही पत्र fish किये गये हैं। उदाहरणार्थ श्रीनिवास शास्त्री का वह Classical पत्र जो उन्होंने मुझे प्रवासी के बारे में लिखा था। वह उनकी जीवनी में भी प्रकाशित हुआ है और पद्मसिंह शर्मा के पत्रों की भूमिका में भी मैंने उसका फोटो छापा है। उसे National archives में—शास्त्री जी के अन्य चालीस पत्रों के साथ—सुरक्षित करा दिया गया है। शास्त्री जी ने मेरी प्रशंसा में एक पत्र में जो कुछ लिखा था उसे मैंने छपाया नहीं। वह पत्र [illegible] में उन्होंने भेजा था। उसके शब्द कुछ इस प्रकार थे "Without any idea to flatter you I may say that I have rarely met a patriot like you

पहले मैं अपने पत्र सदा अपने सर्वोत्तम अक्षरों मे ही लिखता था और हस्ताक्षरों की सुन्दरता भी लोगों को भरमा देती थी। वे लोग इस भ्रम मे पड जाते थे कि शायद पत्र लेखक भी उतना ही अच्छा है, जितने उसके अक्षर! बापू ने भी एक बार कहा था—तुम्हारे अक्षर तो मोती जैसे होते हैं। असली कारण मैंने आपको बतला दिया है। दो वर्ष पहले परीक्षा मे मेरी लेख शैली पर एक प्रश्न आया था। मैं स्वयं उस प्रश्न का उत्तर न दे पाता और फेल हो जाता। अपनी लेख शैली की विशेषता मैं खुद नही जानता। मैंने एक लाख पत्र तो घसीट डाले होगे। दरअसल डाक विभाग मेरे जैसे मूर्खों के कारण ही चलते हैं। थोरो का कथन था कि जिनकी अन्तरात्मा मे कुछ नही होता वे ही डाकखाने की ओर दौडते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१३५)

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कल वैद्यराज श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिल गये और उन्होने यह समाचार सुनाया कि आचार्य श्री जीवनदत्त जी के विषय मे ८० लेख इकट्ठे हो गये हैं और उन्हे श्री माखनलाल जी पाराशर तथा श्री उपाध्याय जी देख रहे हैं। आप तुरन्त एस आर के कालेज के पते से उनसे पत्र-व्यवहार करें और पूछे कि यह यज्ञ कहाँ तक आगे बढा है।

अपने सग्रहालय की चीजों का छाँटन के लिये अब जनवरी मे मैंने National archives वालो को बुलाया है। तब तक मुझे विश्वभारती के सी एफ ऐंड्रयूज अङ्क तथा Illustrated weekly के शहीद अङ्क मे व्यस्त रहना पडेगा।

आप अपने निजी सग्रहालय का काय तुरन्त प्रारम्भ कर दें। सार्वजनिक सग्रहालयों की दुर्दशा का मुझे व्यक्तिगत अनुभव है। सम्मेलन के सग्रहालय ने *सत्यनारायण कविरत्न के अमूल्य सग्रह की रक्षा नही की।*

श्री सूर्यनारायण अग्रवाल बी ए, घटिया इटावा तथा श्रीयुत कृष्णगोपाल चौधरी एडवोकेट इटावा को ब्रजभारती फ्री भेजिये। उन्हे लिख दीजिये कि उन्हे ग्राहक बनने की जरूरत नही है। श्रीयुत बालकृष्ण जी गुप्त का मकान बन रहा है सो उसी मे तथा व्यापार मे व्यस्त रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है। अभी रंग जी उनके यहाँ पधारे थे। अकस्मात् टहलते हुए मिल गये।

१॥ घंटे तक अच्छा वार्तालाप रहा। बाबा पृथ्वीसिंह ने वचन दिया है कि वे इस बार मथुरा जाते हुए यहाँ पधारेंगे। उनकी पुस्तक क्रान्तिपथ का पथिक अवश्य अवश्य खरीदिए।

विनीत
बनारसीदास

(१३६)

फीरोजाबाद
११-७-७१

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

आताप! मैं कल १ बजे आगरे से दिल्ली आ गया पर गर्मी ने ऊपर पता घर का हाल कर दिया है। सबेरे ४ बजे उठकर चाय बनाई और फिर पत्र लिखने बैठ गया। पत्र लेखन मेरे लिए creation और recreation दोनों हो है। आठ बजने तक सौ सौ पृष्ठ के पत्र लिखे थे पर इतना परिश्रम मैं नहीं कर सकता। अभी २ पृष्ठ का चिट्ठा मैंने अपने जामाता चि० मुकुन्द को भेजा है और उसकी नकल चि० बुद्धि प्रकाश को और अपने भानजे को भी भेज दूंगा।

आप मेरी पद्धति की नकल कर सकते हैं। Ball pen से तीन प्रतियाँ हो जाती हैं। Kores का २०१४ नं० का कार्बन पेपर अच्छा होता है। एक एक प्रति फाइल के लिए रखकर दूसरी अन्यत्र भेज सकते हैं।

आज मुझे सी एफ एण्ड्रयूज पर Talk record कराना है। कल १२ ता० को रात को साढ़े ८ बजे वह प्रसारित होगी और ८॥ बजे शिमला का Feature भी। ठीक टाइम आप अखबार में देख लीजिएगा।

भाई ओउम् ने एण्ड्रयूज का बहुत बढ़िया तैल चित्र ६०) में बनवा लिया था क्योंकि जब १९२० में एण्ड्रयूज फीरोजाबाद पधारे थे तब इन्हीं के पिताजी श्री रतनलाल आर्य के घर पर ठहरे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री ओउम् को बहुत काम रहता है क्योंकि २ मिनट के फासिले पर रहते हुए भी वे मिल ही नहीं पाते। इन्होंने भी एण्ड्रयूज के ट्रैक्ट को छापकर तथा मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में बहुत मदद देकर मुझे अनुगृहीत किया था। मैं इनका ऋणी हूँ। मुझे फीरोजाबाद में रहते हुए ७ वर्ष हो गए। इन सात वर्षों में भाई बालकृष्ण जी तथा श्री ओउम् बस यही दो व्यक्ति सहायक मिले हैं।

अब तो मेरा फीरोजाबाद का अध्याय समाप्त होने को है। अब घूमते हुए ही रहना चाहता हूँ। परिव्राजक मुझे बहुत पहिले बन जाना चाहिये था, लेकिन अब यात्राएँ मुश्किल हैं। डा० वाराणिकोव का पता मैंने आपको शायद लिखा था यहाँ मेरे पास नहीं है कृपया भेजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१३७)

नई दिल्ली २२
६ ३ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। साथ के कार्ड को पढकर आगरे के लिये पोस्ट कर दीजिये। भाइ अमृतलाल जी का अनुवाद (गुरुदेव की कविता का) मुझे भेजिये।

यदि कवीन्द्र ने ब्रज में जन्म लिया होता तो वह क्या क्या देखते ? यह विषय बडा मनोरंजक बन सकता है। यदि मैं उनका guide या पंडा बन सकता तो उन्हे छलेसर (जहाँ बबूल वन लगाया गया है) और राजाबाबू के उद्यान को जरूर ले जाता। गोवर्द्धन भी दिखलाता—यद्यपि मैंने उसे अभी तक नहीं देखा और ब्रज में क्या-क्या दर्शनीय है उसका उल्लेख होना चाहिये, पर साथ ही साथ उन अनाचारों का भी वर्णन होना चाहिये जो ब्रजवासियो से बन पडे हैं—यथा फीरोजाबाद के गान्धीपार्क के वृक्षों का विनाश। लाखो पेडो का चूडी की भट्ठियों में जला देना इत्यादि। आप भी इस विषय पर लिखें। ब्रजभाषा के जुगलेश कवि मैंने सुना है कि प्रतापगढ के थे। उनका काव्य ग्रन्थ बढिया था। सम्मेलन वालो से पूछिये तो।

विनीत
बनारसीदास

(१३८)

फीरोजाबाद
आगरा

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने आगरे की मीटिङ्ग में मेरा जिक्र किया था सो उन्हें एक पत्र भेज दिया है। अपने जनपदीय कार्य में उनका सहयोग लेना ही चाहिये। वे बटेश्वर के हैं।

चूंकि राजस्थान वि० विद्यालय फिर से चालू हो गया है, सत्येन्द्र जी से स्व० वासुदेवशरण जी के पत्रों के लिए तकाजा किया जा सकता है।

मैं इस समय Illustrated weekly के शहीद तथा क्रान्तिकारी विशेषाङ्क के काम में व्यस्त हूँ—तत्पश्चात सी एफ एण्ड्रयूज विषयक सामग्री विश्व भारती को भेजना है।

National archives वालों को जनवरी में बुलाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि Cost price पर सामग्री के आवश्यक पत्रों की नकल या photostat के आपके संग्रहालय को दे दें। ११८ पत्र तथा कागज तो अकेले बापू—महात्मा जी के ही हैं।

आचार्य जीवनन्दन जी के विषय में भी करपात्री जी से बातचीत वैद्यराज जगन्नाथ जी की हुई थी। सामग्री इत्यादि होने पर वे मदद देने को तैयार हैं। यह श्राद्ध कार्य भी हो ही जाना चाहिए।

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। आपके अभिनन्दन ग्रन्थ में बुन्देलखण्ड विषयक लेख यदि श्री कृष्ण बिहारी जी लिख दें तो अत्युत्तम।

हमें सभी दल वालों से मदद लेनी चाहिए। साहित्यिक तथा सांस्कृतिक धरातल पर सभी का स्वागत सम्मान हम करना है। दलगत राजनीति से हमारा कुछ भी सम्बन्ध न रखना चाहिए।

विनीत
बनारसीदास

(१२८)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रियवर,

मेरा त्रिमूर्ति सम्बन्धी लेख शायद अमर उजाला या मनिका में छपे। २८ फरवरी को श्रीराम जी का स्वर्गवास हुआ था और ८ मार्च को हरिशङ्कर जी का। यदि आप अमर मुनि जी से प्रार्थना करें तो वे रत्नमुनि जैन कालेज के अधिकारियों से हरिशङ्कर अंक निकलवा सकते हैं। Best is enemy of good पुरानी कहावत है। सर्वोत्तम काम की धुन में हम अच्छा काम भी नहीं कर पाते।

ब्रजभाषा अभी मिली। मेरे विषय में आपने जो कुछ लिखा है है उसके बहुत बहुत कृतज्ञ हैं।

श्री प्रकाशवीर जी अपने चुनाव सम्बन्धी गोरख धन्धा में व्यस्त रहे। उन्होंने बस इतना ही किया कि २१३) रुपय हरिशङ्कर जी को ४०० पत्रों के टाइप के लिए भिजवा दिय। आपने अपनी प्रति विद्याशंकर जी से ले ली या नहीं? मैंने ८ फरवरी को यहाँ जो तार भेजा था वह मुझे ही यहाँ १२ ता० को मिला।

विनीत
बनारसीदास

(१४०)

सत्यनारायण जन्म दिवस
रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री त्रिलोकीनाथ व्रजवाल एक सन्दर्भ ग्रन्थ व्रज की साहित्यिक संस्थाओं पर निकालना चाहते हैं। मुझसे सुझाव माँगे हैं। मैंने डाइरेक्टरी निकालने के लिए परामर्श दिया है, क्योंकि उसमें कुछ विज्ञापन भी मिल जावेंगे। क्या हिन्दी प्रचार सभा के पास इस यत्न के लिये साधन हैं भी?

डा० बारान्निकोव का पता शायद मैंने आपको भेजा था—नया पता। उनके पास मेरे सवासौ पत्र होंगे। उनका पता मुझे भेजिये। वासुदेवशरण जी के पत्र शायद आपको ही छपाने पड़ेंगे। और किसी को उनके महत्व का अनुमान ही नहीं। श्री मक्खनलाल पाराशर एम ए, एस आर के कालेज फीरोजाबाद से पूछिये कि आचार्य जीवनदत्त जी के कार्य कहाँ तक आगे बढ़ा।

विनीत
बनारसीदास

(१४१)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! फीरोजाबाद में प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन का प्रस्ताव मुझे पसन्द है। और मेरा अनुमान है कि बन्धुवर बालकृष्ण गुप्त भी उससे सहमत हो जावेंगे, डेढ़ हजार रुपये खर्च होंगे, जिनका इकट्ठा करना फीरोजाबाद जैसे साधन सम्पन्न नगर में मुश्किल न होगा। यद्यपि गर्मियों के दिनों में उत्सव करने की बात मुझे बिल्कुल भी नहीं जँचती है, तथापि जिसमें अधिकारियों को सुविधा हो वही करना चाहिये।

मई जून में तो कोई साहित्यिक उत्सव इस मरुभूमि में हर्गिज न होने चाहिए। कवियों तथा लेखकों को मुफ्त में तपस्या क्यों कराई जाय? सत्यनारायण जी ने ग्रीष्म गरिमा में लिखा था—

> न भावत असन बसन धन धाम, अनप घर घरनी सौं अनुराग।
> सूख तन पाइ अनुग्रह भाग, कमायौ संत मन बैराग॥

सो ब्रजवासियों को मैं नमन वैराग कमाने के लिए क्यों मजबूर किया जाय? मैं तो वर्षा प्रारम्भ होने पर ही उत्सव करने के पक्ष में हूँ। इस बीच ब्रज की संस्थाओं के विवरण मंगा लिए जावें। नये नये कार्यकर्ताओं को मूँडे बिना काम नहीं चलेगा। मैंने अपनी कम्पनी का नाम श्राद्ध अभिनन्दन कम्पनी रक्खा था। नवीन जी ने उसमें मुण्डन और जोड़ दिया। मैंने पूछा कि मुण्डन का क्या मतलब? तो नवीन जी बोले 'बिना लोगों को मूँडे तुम्हारी कम्पनी का कारोबार चलेगा कैसे?'

भाई आत्म् (ऐसा प्रतीत होता है कि) या तो विरक्त या वैरागी बन गये हैं या फिर हमारी गति विधि से असन्तुष्ट हैं। वे न कभी मिलते हैं, न किसी यत्न में भाग लेते हैं। ऐसी स्थिति में उन पर कोई भार डालना उचित न होगा। अश्रद्धापूर्वक तो कोई यत्न न होना चाहिए। केवल अध्यापकों की सुविधा असुविधा का ध्यान में रखकर घोर गर्मी में पचासों व्यक्तियों को कष्ट देना सिटल्ली भूलने का परिणाम है।

काबुल में मेरी और ब्रज में बहुत उत्साह वाले भाइयों की भी सिटल्ली भूल गई थी। प्रान्तीय सम्मेलन में बुन्देलखण्ड के भी कुछ चुने हुए कार्यकर्ताओं को बुलाना चाहिए।

विनीत
बनारसीदास

(१५०)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रिय भाई वृन्दावनलाल जी,

१ एक पत्र आज श्री कमला शर्मा एम ए श्रीराम जी का मकान देखा देखा आगरे का भक्ति, और इस कोठरी छात्रों का पूरा नाम तथा पता पुलिस जो श्रीराम जी पर शोध कर रहा है। श्रीराम जी के पास २०० पत्र तो होंगे। उन पर स्मृति ग्रन्थ निकालने का प्रस्ताव भी

कीजिये। उनके सुपुत्र श्री रमशकुमार शर्मा पी एच डी काश्मीर वि० वि० म विभागाध्यक्ष हैं।

२ भाई मधुसूदन जी चतुर्वेदी से कहिये कि वे कौशलेन्द्र जी की काकली पुन मुद्रित कर दें।

३ भाई श्रीनारायण जी से प्रार्थना कीजिये कि वे स्व० हरदयालुसिंह जी के रघुवश के अनुवाद की कुछ कापी आपको भेज दें। उस पर स्वर्गीय बरिस्टर ब्रजकिशोर चतुर्वेदी ने विक्रम म लिखा था।

४ अमर उजाला वालो को कहिये कि चुनावो के बाद वे ब्रजमण्डल की साहित्यिक तथा सास्कृतिक प्रगति के विषय म अधिकाधिक लिखें।

५ श्री विद्याशङ्कर शर्मा एम ए, सनिक खँदारी रोड आगरा को लिखिये कि और कुछ नही तो हाथ के बने कागज पर Documentary Ink से ही भाई हरिशङ्कर जी पर स्मृति ग्रन्थ तैयार कर दें। छपेगा तब छपेगा।

६ श्री कृष्णगोपाल चौधरी वकील इटावा तथा श्री सूर्यनारायण अग्रवाल बी ए घटिया, इटावा इन दोनो से इटावे की साहित्यिक स्थिति पर लेख लिखाइये।

७ श्री ब्रजकिशोर जैन एम ए पी डी जैन इन्टर कालेज फीरोजाबाद को लिखिये कि फीरोजाबाद अङ्क मे ब्रजसाहित्य मडल पर एक लेख जरूर छापें। अङ्क मैं ही निकलवा रहा हूँ।

८ श्रीयुत मानव जी प्रिंसीपल डी ए वी कालेज फीरोजाबाद से उनकी कुछ अच्छी कविताएँ मगाकर अपने सग्रहालय म रखिये। श्री कुसुमाकर जी भी वही काम करते हैं। उनसे भी यही अनुरोध कीजिये।

९ भाई ओउम् [अपने रिश्तदार] से प्रार्थना कीजिये कि व अपने घर के हाल म दीनबन्धु सी एफ ऐण्ड्र्यूज के तैल चित्र का उद्घाटन करावें। उन्ह धन्यवाद दीजिये कि उन्होने स्व० हरिशङ्कर जी का बढिया तैल चित्र तैयार करा लिया है। उस वे शायद पी डी जन कालज को अर्पित करेंगे।

१० प्रिंसीपल दामोदर इन्टर कालेज होलीपुरा को भी पत्र लिखें। उनकी चिट्ठी मुझे मिली है पर मैं तो उधर इस समय जा नही सकता। स्व० राधेलाल अङ्क वे कब तक निकालेंगे ?

११ भाई बालकृष्ण गुप्त (हनुमानगंज फीरोजाबाद) २० ता० को यहाँ दिल्ली पधार रहे हैं। वे तो मथुरा कार से ही आते जाते हैं। रास्ता मथुरा होकर ही है। आपके यहाँ रोटी खाकर विश्राम क्यों न करें?

१२ आचार्य जी नन्दन जी के स्मृति ग्रन्थ का काम कहाँ तक अग्रसर हुआ यह बात श्री मक्खनलाल शर्मा प्राध्यापक अध्यापक एस आर के कालेज फीरोजाबाद से पूछिये। वैद्य जी से भी।

ये बारह काम आप कृपया कर दीजिये। श्री बन्धु जी को मेरा प्रणाम लिखिये।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

श्री भगवानसिंह जी आई ए एस High Blood Pressure के कारण विलिंग्डन अस्पताल में भर्ती हैं चिन्ता की कोई बात नहीं।

(१८३)

नई दिल्ली २२
११ ३ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! चुनाव संग्राम के नतीजे आ रहे हैं और मैं भी बड़े चाव से उन्हें सुन रहा हूँ। चूँकि समय से मुझे भी १२ वर्ष बिताने पड़े थे—क्योंकि राष्ट्रकवि गुप्त जी बारह वर्ष दिल्ली रहे—और साइड ही मौका दिया।' इसलिये पुराने कुसंस्कारों के कारण चुनाव के नतीजे सुनने में मुझे भी वक्त बर्बाद करना पड़ा है। राजनीति से अपने को बिल्कुल अलग रखना भी नहीं चाहिये क्योंकि उसने अन्य सब क्षेत्रों को आच्छादित कर रक्खा है। स्वर्गीय राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू का एक वाक्य था अन्तिम ध्येय राजनीति नहीं, संस्कृति है" श्री राजनारायण जीत गये यह अच्छा हुआ। सम्भवतः उनसे कुछ काम लिया जा सके।

हम लोगों को अपने साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य में भरपूर लगन से जुट जाना चाहिये। We ought not to allow ourselves to any particular political party though we may have sympathy with one or the other

हम यह समझ लेना चाहिये कि पच्चीस वर्ष बाद उन राजनैतिक नेताओं को—जो आज भारतीय क्षितिज पर चमक रहे हैं—जनता बिल्कुल

भूल ही जायगी जब कि रत्नाकर जी तथा सत्यनारायण कविरत्न को लोग तब भी याद रखेंगे।

कृपया साथ का पत्र पढ लीजिये। यह प्रा० कुलदीप जी का ६ महात्मा गांधी मार्ग के पते पर आगरे भेजा गया है। वह विमल जी का स्थान है। उन्होंने पिछले चुनाव में ८२ हजार खर्च कर दिये थे और Ram prasad & sons के श्री हरिहरनाथ ने एक लाख। स्व० रामप्रसाद जी से मेरा परिचय था। मालती माधव उन्होंने ही छपाया था। वास्तव में सत्यनारायण जी के सभी ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण होना चाहिये।

आप भी श्री कुलदीप जी को लिखें। हम इलैक्शन जैसी क्षणिक चीजों से विचलित न होकर अपने ध्येय की ओर अग्रसर होना चाहिये। इलेक्शन को हरिशङ्कर जी ill action कहते थे।

विनीत
बनारसीदास

(१५४)

नई दिल्ली २२
१३ ३ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। चुनाव का तूफान खतम हो गया। अब हमें लगन के साथ अपने साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में व्यस्त हो जाना चाहिये। इस चुनाव में करोड़ों ही रुपये खर्च हो गये होंगे जब कि literary or cultural यत्नों के लिये थोड़े से पैसे व्यय करने में भी हमारे शासकों तथा लीडरों की नानी मरती है। करोड़ों के बजट पास होते हैं जब कि साहित्यिक कार्यों को १० २० हजार में ही टरका दिया जाता है।

इसमें हम लोगों का भी कुछ कुसूर है। Why do we attach so much importance to politics and politicians ? जो भी व्यक्ति साहित्य को छोड़कर राजनीति का ग्रहण करता है वह मणि को त्याग कर काँच ग्रहण करता है। चूंकि आप ८ वर्ष Municipal politics की बीमारी में मुब्तला रह चुके हैं इसलिये थोड़ा सा अनुभव खुद आपको उस क्षेत्र का होगा ही। दुर्भाग्य की बात यही है कि साहित्य क्षेत्र में भी politics घुस पड़ी है। जो राजनैतिक नेता साहित्य क्षेत्र में पधारते हैं वे अपने साथ राजनीति के कीटाणु भी ले आते हैं। Power Politics का प्रवेश सम्मेलन में हो गया था और उसने गजब ढा दिया। लीडर बाजी ही उसके मूल में थी। पाठ्यक्रम में पुस्तकों को नियुक्त कराने वालों का यह करामात थी। मैं इस बात को

कभी भी नहीं समझ सका कि श्रीमती रानी टंडन की ३०-३२ किताबें सम्मेलन की परीक्षाओं में थीं। यह सौभाग्य ही समझिये कि ब्रजसाहित्य मंडल के पास पैसा नहीं है नहीं तो वहाँ भी बड़ा संग्राम शुरू हो जाता।

मैं छोटे छोटे स्थानीय केन्द्रों को सजीव तथा शक्तिशाली बनाने का पक्षपाती हूँ। केन्द्र में बहुत सा गुड़ इकट्ठा करने से वहीं चींटे इकट्ठे हो जायेंगे।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी हार गये। मैंने सुना था कि वे भाई हरिशङ्कर जी के बहुत ऋणी थे पर अपनी मेम्बरी के दिनों में वे हरिशङ्कर जी के लिये विशेष कुछ नहीं कर सके। हाँ, आर्यमित्र में २११) रुपये उनके पत्रों के टाइप कराने को उन्होंने अवश्य भिजवा दिये थे। तदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूँ। स्व० हरिशङ्कर जी का तैल चित्र बहुत बढ़िया भाई ओउम् ने बनवा लिया है। उसका उद्घाटन होना बाकी है।

विनीत
बनारसीदास

(१४५)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२
२० ३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं एक सप्ताह के भीतर फीरोजाबाद लौट जाने की सोच रहा हूँ। ताज एक्सप्रेस से आगरा जाऊँगा और वहाँ कुछ विश्राम करके फीरोजाबाद।

अब चुनाव का तूफान खतम हो चुका है। हम लोगों को—साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को अपना काम दृढ़तापूर्वक जोर शोर के साथ करना चाहिये। मेरे आदेशानुसार श्री शिवप्रभु एम ए ग्राम कनेटा फीरोजाबाद तथा उनके भतीजे कृष्णगोपाल जो ट्रेनिंग स्कूल एतमादपुर स्थानीय लोगों की चीजें इकट्ठी कर रहे हैं। दोनों से सम्पर्क स्थापित कीजिये।

रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ में चकरार जी ने ब्रज के लोक साहित्य पर अच्छा लिखा है। आपने ग्रन्थ देखा ही होगा।

यदि फीरोजाबाद में प्रान्तीय सम्मेलन करना हो है तो कार्य अभी से शुरू हो जाना चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(१४६)

प्रिय भाई व दावनदास जी,

खयालगो लोगो का एक अच्छा समूह था। उनके भी रक्ड सुरक्षित करा लेने चाहिये। श्री नक्सा भुज्जी फीरोजाबाद का अच्छा खयालगो है। उससे बहुत सी बातो का पता चल सकता है। पता नहीं मथुरा म भी कोई खयालगो है या नही। बु देलखण्ड में उ ही के मुकाबिले के गायक हैं। उनका पता श्री रामचरण हयारण मित्र, बतन बाजार भासी से लग सकता है।

श्री देवकीनन्दन विभव आगरा साधन सम्प न व्यक्ति हैं। श्री कुलदीप जी उनकी जय ती मना रहे हैं। जनपदीय शहीदा के लिए वे लोग कुछ करना चाहते हैं। उनसे जो सहयोग मिल जाय ले लेना चाहिय।

विनीत
बनारसीदास

(१४७)

२४ ३ ७१

प्रिय भाई व दावनदास जी,

आप मेरे पत्रो को छपा रहे हैं, इसमे मुझे सचमुच आश्चय हुआ। मैंने अपने पत्रो को घसीटते समय कभी इस बात की कल्पना भी न की थी कि वे प्रकाशित करने योग्य समझे जावेंगे। सम्भवत इसी कारण उनमे कृत्रिमता का अभाव रहा है। चाय के नशे पत्ते म मैंने सहस्त्रा ही पत्र लिख डालें होग। एक महानुभाव ने उनकी सख्या के बारे म पूछा था। यदि मेरा अपराध क्षत त्य माना जाय तो मैं कहूँगा कि यह प्रश्न उतना ही धृष्टतापूण है जितना किसी चौबे जी से पूछना कि तुमने कितने लोटे भग पी है। या किसी चाय के पियक्कड से प्यालो की सख्या पूछना? मरे पत्र लेखन के पीछे मुख्यतया कोई परोपकार की भावना रही है एसा मान लेना भी गलत होगा। पत्रकारिता क जीवन म पत्र लिखने ही पडत हैं और सम्पादक बनने के बा द तो उनका नम्बर और भी बढ जाता है। इसके सिवाय मुझे रेलवे स्टेशन से पतीस मील दूर कुण्डेश्वर म १४॥ वर्ष रहना पडा जो टीकमगढ से भी चार मील के फासिले पर था। अपने शुष्क एकाकी जीवन म कुछ रस लाने के लिय मुझे मजबूरन पत्र व्यवहार का आश्रय लेना पडा? फिर तो वह मेरे लिय मनोरजन का मुख्य साधन हो बन गया। वह Creation और recreation [रचनात्मक काय तथा विश्राम] दोनो का ही काम देता था।

हाँ, यह बात भी ठीक है कि मेरे साहित्यिक जीवन का एक सार्वजनिक दृष्टिकोण रहा है। मैंने कभी भी आत्मकेन्द्रित होने का प्रयत्न नहीं किया। साहित्यसेवकों की स्थापना ही मेरा उद्देश्य रहा है और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हिन्दी जगत की वर्तमान दुरवस्था का एक मूल कारण यह भी है कि हमारे नेता प्रायः आत्मकेन्द्रित हो गये हैं। उन्होंने इस बात की चिन्ता कभी नहीं की कि हमारे छुटभैयों के मार्ग में क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं और वे कैसे दूर की जा सकती हैं। बगीचे लगाकर साग तरकारी उगा लेना और स्वयं ही उनका उपभोग करना उनका यही लक्ष्य रहा है। हाँ कभी-कभी एकाध मूली गाजर बैंगन वे पड़ोसियों को भी दे देते हैं, ऐसी उदारता जरूर दिखलाते हैं। ऐसे बाग बगीचे लगाना, जहाँ जनसाधारण मुक्त आकाश तथा मनोहर वातावरण में शुद्ध वायु का सेवन कर सकें इसकी कल्पना भी उनके दिमाग में नहीं आती।

वे हिन्दी साहित्यकार कभी भी चिट्ठी नहीं लिखते। पत्रोत्तर भी सुरत में टरकाऊ तरीके पर दे देते हैं। जर्मनी के महाकवि गेटे का एक नियम था—वह यह कि वे केवल उन्हीं लेखकों का जवाब देते थे, जिनसे कोई पत्र लेखक उन्हें कुछ देना चाहता था। शेष को वे रद्दी की टोकरी के हवाले कर देते थे। गेटे एक विश्व कवि थे और उनकी यह पद्धति क्षम्य मानी जा सकती थी, पर साधारण कवियों तथा लेखकों से तो यह आशा की जा सकती है कि वे कुछ सहृदयता तथा उदारता से काम लें।

इस दृष्टि से आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा हिन्दी पत्र लेखकों में शिरोमणि थे। गुण ग्राहकता उनमें चरम सीमा को पहुँच गई थी और दूसरों को दाद या प्रोत्साहन देना तो मानो उनके जीवन का एक अङ्ग ही बन गया था। उन्मुक्त पत्र लेखन में स्वर्गीय प्रतापनारायण मिश्र तथा बालकृष्ण शर्मा नवीन सबसे आगे थे पर मिश्र जी के तो दो चार पत्र ही सुरक्षित रह गये हैं जब कि नवीन जी के बहुत से पत्र हमने स्वयं नमूने के एक विशालाङ्क में छपा दिये थे। आचार्य श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र भी बड़े महत्त्वपूर्ण होते थे।

भारतीय पत्र लेखकों में माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी के मुकाबले का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं हुआ। एक बार सर शिव स्वामी अय्यर ने लिखा था—"शास्त्री जी की कीर्ति के बने रहने से भारत में भले ही मिट जावें पर पत्र-लेखक की हैसियत से तो वे देश भर में अद्वितीय हैं।" मेरा यह सौभाग्य

या कि मुझे उन्होंने चालीस पैंतालीस पत्र भेजे थे, जो अब National archives—राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।

दीनबन्धु एण्ड्र्यूज तो मानो पत्रों की बौछार सी करते थे। उनके पत्रों की संख्या मैं गिन भी नहीं सका। बहुत से व्यक्तियों को इस बात का पता न होगा कि महात्मा गान्धी जी के पत्र संग्रह तथा संग्रहालय का प्रारम्भ सन् १९२१ में मैंने ही साबरमती आश्रम में किया था और विशाल भारत में सन् १९३४-३५ में दो लेख भी उस बारे में लिखे थे। खेद है कि उस समय किसी ने भी उन लेखों पर ध्यान नहीं दिया। नहीं तो महात्मा जी के सैकड़ों ही पत्र नष्ट होने से बचा लिये जाते।

आज भी साहित्यिकों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के पत्रों का एक बड़ा समूह अस्त व्यस्त अवस्था में यत्र तत्र पड़ा हुआ है और कुछ वर्षों में वह विलुप्त ही हो जायगा।

मेरे क्षुद्र जीवन का एक अच्छा अंश उन पत्रों की रक्षा करने में व्यतीत हुआ है। पत्र-व्यवहार पर मेरे चालीस पचास रुपये महीने खर्च होते रहे हैं पर मैं इसे घाटे का सौदा हरगिज नहीं मानता। आनन्द का वितरण एक ऐसा व्यापार है, जिसमें मुनाफा ही मुनाफा है। पर इसके लिये अनन्त अवकाश की आवश्यकता है। यह अवकाश मुझे दीनबन्धु एण्ड्र्यूज महात्मा गान्धी, सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय और महाराज वीरसिंह जू देव की कृपा से पर्याप्त मात्रा में मिला और यदि मैं इस क्षेत्र में कुछ सेवा कर सका तो उसका श्रेय मुख्यतया उन्हीं महापुरुषों को मिलना चाहिये। इससे अधिक क्या लिखूं।

विनीत
बनारसीदास

(१४८)

नई दिल्ली २२
२ ४ ७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

वन्दे! कभी मैंने एक लेख लिखा था कि हिन्दी साहित्य क्षेत्र को परिव्राजकों की आवश्यकता है जो जगह-जगह घूम फिर कर दूर दूर छितरे हुए और परस्पर में असम्बद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों का निरीक्षण करें और अपने सत्परामर्शों द्वारा उनको पुनर्जीवन प्रदान करें। योजकस्तत्र दुर्लभः।

पर आधुनिक जीवन इतना मयपमय हो गया है और यात्राएँ इतनी कष्टप्रद कि यह काम अब बहुत कठिन हो गया है। आपको पता ही होगा स्वामी सत्यस्व जी परिव्राजक ने हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिये कितना उपयोगी काय किया था। आज भी काका साहब कालेलकर निरन्तर भ्रमण करते हुए जो काय कर रहे हैं उसकी शतमुख से प्रशंसा ही करनी होगी। काश हिन्दी जगत में काका साहब जैसे दो चार व्यक्ति भी होते।

अंग्रेजी में कहावत है Be the man thou seekest यानी जिस आत्मा को तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ। दूसरों को उपदेश देने के बजाय स्वयं ही तदनुसार काम करना श्रेयस्कर होगा।

कई बार मेरे मन में आया था कि अपने ब्रजमण्डल के भिन्न भिन्न केन्द्रों की नाथ यात्रा करूँ पर पिछले दस वर्ष से पौरुष ग्रंथि के कष्ट के कारण मन की मन में रही और अब ७८ वीं—एक कम अस्सी वर्षीय—वय में यात्राएँ और भी कठिन हो गई हैं। उर्दू की किसी किताब में एक कविता आती थी। वह कविवर गालिब की था।

> सैर कर दुनियाँ की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ ?
> जिन्दगी गर कुछ बची तो नौजवानी फिर कहाँ।

[गालिब का कलाम कहीं मिलता हो तो तलाश कीजिये। बहुत साल निकल थे। फागजाबाद के एक कवि मनोहर की उनके तीन चार पद याद थे] सो अगर्चे मेरे पास भी अब जिन्दगी के थोड़े दिन ही बाकी बचे हैं फिर भी घूमने फिरने की इच्छा अभी बनी हुई है।

सन् १८६६ में रूस की द्वितीय यात्रा प्रारम्भ करने के पहिले मैं पूर्व जर्मनी के वाणिज्य प्रतिनिधि मि० स्मिथ से मिलने गया तो उन्होंने छूटते ही कहा "आपके लिए तो हमारे यहाँ का एक निमंत्रण तैयार है। आप इस पत्र को मास्को में हमारे प्रतिनिधि को दे दीजिये। वे एक महीने के लिये आपकी यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे—तब आप हमारे देश में घूम फिर आइये। खेद है कि मैं अपनी अस्वस्थता के कारण उस सौभाग्यपूर्ण अवसर से लाभ नहीं उठा सका।

दो बार क्यूबा से भी मुझे निमंत्रण मिला था और दो बार चीन से भी पर मैं उन दिनों यात्रा करने की स्थिति में नहीं था, पर अब मेरी हार्दिक अभिलाषा घूमने फिरने की है। जब पब्लिकेशन का पास मुझे मिला हुआ था और भारत के किसी भी स्थान की यात्रा रेल द्वारा कर सकता था मैंने उस

दुलभ सुविधा का उपयोग नहीं किया। बन्धुवर श्री बेनीपुरी जी ने हिन्दी भवन की एक मीटिङ्ग म इसी कारण एक चुटकी भी ली थी कि ऐम लोगा के पास छीन लिये जाने चाहिये, जो उनको इस्तेमाल म ही नही लाते। फीरोजाबाद के उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्त ने मुझे एक सुविधा प्रदान कर रखी है वह यह कि २५-३० मील दूर के किसी स्थान की यात्रा के लिये मैं उनकी कार का प्रयोग कर सकता हूँ और मैंने भी आगरा, हालीपुरा तथा सिरसागज की यात्राएँ उनकी कार द्वारा की थीं। कोटला तो कई बार जा चुका हूँ। एक ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमने अपने ग्राम कपावनी म एक सौ वृक्ष लगा दिये थे। श्री बालकृष्ण जी खुद ड्राइव करके हमे वहाँ ले गये और हमने वह मनोहर दृश्य अपनी आँखो से देखा। और हमारी सर्वोत्तम यात्रा छलेसर के बबूल जगल के बगले मे कवि सम्मेलन तथा गोष्ठी की हुई। चमरौला के शहीद मले म भी बालकृष्ण जी ही हम ले गये थे। वह तो तीर्थ यात्रा थी।

आजकल लोगो का जीवन इतना अस्त व्यस्त हो गया है कि हर आदमी जल्दी और हडबडी मे इधर से उधर भागता हुआ नजर आता है। थोडी देर ठहर कर घटे आधे घटे के लिये भी गप्पाष्टक करने का वक्त किसी के भी पास नही बचा। अवकाश की इस कमी न हमारे जीवन को रेगिस्तान ही बना दिया है। छोटी छोटी मनोरजक गोष्ठियाँ उस नखलिस्तान म परिवर्तित कर सकती हैं।

मैं दो बार राजा बाबू [श्री प्रतापनारायण अग्रवाल] के उस महान उपवन की यात्रा कर चुका हूँ जो आगरे से आठ मील की दूरी पर स्थित है। वहाँ ६ हजार वृक्ष तो अकेले आम के ही हैं और ढाई सौ मन गुलाब प्रति वर्ष उतरता है। सैकडो पेड जामुन के हैं। मेरे आग्रह पर आप भी उस उपवन को देख चुके हैं और अमर उजाला सम्पादक श्री डोरीलाल जी भी वहाँ गये थे। अब ५ अप्रैल को तीसरी बार वहाँ की आम्रमजरियों तथा गुलाब पुष्पो को प्रणाम करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ।

बौद्ध ग्रन्थो मे हमने पढा था कि भगवान बुद्ध आम्र उपवनो म ठहरा करते थे। अगर गौतम बुद्ध का पुन अवतार हो और व आगरे पधारें तो उससे बढिया जगह उनके ठहरने के लिये मिल ही नही सकती।

जब फीरोजाबाद म आप उत्तर प्रदेशीय साहित्य सम्मेलन करें तो कुछ प्रतिनिधियो को, जिनके पास अवकाश है कोटला अथवा छलेसर की यात्रा अवश्य करावें। मथुरा के पेडे आप लाइये, फीरोजाबाद की दाल मोठ का

पर आधुनिक जीवन इतना सघर्षमय हो गया है और यात्राएँ इतनी कष्टप्रद कि यह काम अब बहुत कठिन हो गया है। आपको पता ही होगा स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक ने हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिये कितना उपयोगी कार्य किया था। आज भी काका साहब कालेलकर निरंतर भ्रमण करते हुए जो कार्य कर रहे हैं उसकी शतमुख से प्रशंसा ही करनी होगी। काश हिन्दी जगत में काका साहब जैसे दो चार व्यक्ति भी होते।

अंग्रेजी में कहावत है Be the man thou seekest यानी जिस आदमी की तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ! दूसरों को उपदेश देने के बजाय स्वयं भी तदनुसार काम करना श्रेयस्कर होगा।

कई बार मेरे मन में आया था कि अपने व्रजमंडल के भिन्न भिन्न केन्द्रों की तीर्थ यात्रा करूँ पर पिछले दस वर्ष से पौरुष ग्रंथि के कष्ट के कारण 'मन की मन के माहि रहा' और अब ७८ वीं—एक कम अस्सी वर्षिय—वर्ष में यात्राएँ और भी कठिन हो गई हैं। उर्दू की किसी किताब में एक कविता आती थी। यह कविवर गालिब की थी।

सर कर दुनियाँ की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ?
जिन्दगी गर कुछ बची तो नौजवानी फिर कहाँ।

[गालिब का कलाम कहीं मिलता हो तो तलाश कीजिये। बहुत साफ लिखते थे। फीरोजाबाद के एक कवि महाशय को उनके तीन चार पद्य याद थे] सो अगर्चे मेरे पास भी अब जिन्दगी के थोड़े दिन ही बाकी बचे हैं फिर भी घूमने फिरने की इच्छा अभी बनी हुई है।

सन् १९६६ में रूस की द्वितीय यात्रा प्रारम्भ करने के पहिले मैं पूर्व जर्मनी के वाणिज्य प्रतिनिधि मि० फिशर से मिलने गया तो उन्होंने छूटते ही कहा 'आपके लिये तो हमारे यहाँ का एक निमंत्रण तयार है। आप इस पत्र को मास्को में हमारे प्रतिनिधि को दे दीजिये। वे एक महीने के लिये आपकी यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे—तब आप हमारे देश में घूम फिर आइये। खेद है कि मैं अपनी अस्वस्थता के कारण उस सौभाग्यपूर्ण अवसर से लाभ नहीं उठा सका।

दो बार क्यूबा से भी मुझे निमंत्रण मिला था और दो बार चीन से भी, पर मैं उन दिनों यात्रा करने की स्थिति में नहीं था, पर अब मेरी हार्दिक अभिलाषा घूमने फिरने की है। जब पोस्टकार्ड का पास मुझे मिला हुआ था और भारत के किसी भी स्थान की यात्रा रेल द्वारा कर सकता था, मैंने उस

दुर्लभ सुविधा का उपयोग नहीं किया। बन्धुवर श्री बेनीपुरी जी ने हिन्दी भवन की एक मीटिङ्ग में इसी कारण एक चुटकी भी ली थी कि ऐसे लोगों के पास छीन लिये जाने चाहिये, जो उनको इस्तेमाल में ही नहीं लाते। फीरोजाबाद के उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्त ने मुझे एक सुविधा प्रदान कर रखी है वह यह कि २५ ३० मील दूर के किसी स्थान की यात्रा के लिये मैं उनकी कार का प्रयोग कर सकता हूँ और मैंने भी आगरा, होलीपुरा तथा सिरसागंज की यात्राएँ उनकी कार द्वारा की थी। कोटला तो कई बार जा चुका हूँ। एक ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमने अपने ग्राम कपावली में एक सौ वृक्ष लगा दिये थे। श्री बालकृष्ण जी खुद ड्राइव करके हमें वहाँ ले गये और हमने वह मनोहर दृश्य अपनी आँखों से देखा। और हमारी सर्वोत्तम यात्रा छलेसर के बबूल जंगल के बंगले में कवि सम्मेलन तथा गोष्ठी की हुई। चमरौला के शहीद मेले में भी बालकृष्ण जी ही हमें ले गये थे। वह तो तीर्थ यात्रा थी।

आजकल लोगों का जीवन इतना अस्त-व्यस्त हो गया है कि हर आदमी जल्दी और हड़बड़ी में इधर से उधर भागता हुआ नजर आता है। थोड़ी देर ठहर कर घंटे आध घंटे के लिये भी गप्पाष्टक करने का वक्त किसी के भी पास नहीं बचा। अवकाश की इस कमी ने हमारे जीवन को रेगिस्तान ही बना दिया है। छोटी छोटी मनोरंजक गोष्ठियाँ उसे नखलिस्तान में परिवर्तित कर सकती हैं।

मैं दो बार राजा बाबू [श्री प्रतापनारायण अग्रवाल] के उस महान उपवन की यात्रा कर चुका हूँ जो आगरे से आठ मील की दूरी पर स्थित है। वहाँ ६ हजार वृक्ष तो अकेले आम के ही हैं और ढाई सौ मन गुलाब प्रति वर्ष उतरता है। सैकड़ों पेड़ जामुन के हैं। मेरे आग्रह पर आप भी उस उपवन को देख चुके हैं और अमर उजाला सम्पादक श्री डोरीलाल जी भी वहाँ गये थे। अब ५ अप्रैल को तीसरी बार वहाँ की आम्रमंजरियों तथा गुलाब पुष्पों को प्रणाम करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ।

बौद्ध ग्रन्थों में हमने पढ़ा था कि भगवान बुद्ध आम्र उपवनों में ठहरा करते थे। अगर गौतम बुद्ध का पुनः अवतार हो और वे आगरे पधारें तो उससे बढ़िया जगह उनके ठहरने के लिये मिल ही नहीं सकती।

जब फीरोजाबाद में आप उत्तर प्रदेशीय साहित्य सम्मेलन करें तो कुछ प्रतिनिधियों को जिनके पास अवकाश है, कोटला अथवा छलेसर की यात्रा अवश्य करावें। मथुरा के पेड़े आप लाइये फीरोजाबाद की दाल मोठ का

प्रबन्ध श्री रतनलाल बगर करेंगे। आतिथ्य विभाग की जिम्मेवारी श्री ओउम् उठा लेंगे। भाई अमृतलाल जी से मधुर कविता का पाठ कराना मेरे जिम्मे रहा। Division of labour श्रम विभाजन की यह पद्धति कैसी रहेगी? फीरोजाबाद के सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर श्री जगमोहन जी उन क्षणों को चिरस्थायी रूप देंगे।

विनीत
बनारसीदास

(१५९)

रामकृष्णपुरम् ८
नई दिल्ली २२
४-४-७१

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

आज आपका परिचय अपनी पौत्री कुमारी रेणु चतुर्वेदी से कराता हूँ। यह कुछ समय हम लोगों के साथ रही और [illegible] में पानपुर (जिला बनारस) में पढ़ती है। रेणु का घर का नाम गुड़िया है और गुड़िया चिट्ठी लिखने में बहुत होशियार है। घर भर में इतने बढ़िया पत्र कोई भी नहीं लिख पाता। उसकी चिट्ठियों को पढ़कर हमें आश्चर्य हुआ और हमने चिरंजीव बुद्धि प्रकाश से पूछा कि क्या इस पत्र लिखने में गुड़िया किसी से मदद लेती है? पर उत्तर आया कि नहीं वह तो जो कुछ लिखती है अपने मन से खुद ही लिखती है। गुड़िया की दो चिट्ठियों के कुछ अंश ज्यों के त्यों—बिना किसी परिवर्तन के—यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ—

आपकी चिट्ठी अभी अभी मिली। हम आपको चिट्ठी लिखना भूल गये। दादा २३ ता० को फिरोजाबाद से गये अब [illegible] को आवेंगे। हम लोगों की छुट्टी है। आप दिल्ली से साथ यहीं आवें। यहाँ पर सब्जी फूलने लगी है। टमाटर निकलने लगे हैं। बैंगन में फूल आ गया। मटरी खूब हो रही है। मूली भी निकलती है। खूब मजेदार धनिया मेथी वगैरा आदि खूब हो रहा है। २६ ता० को भैया की वर्ष गाँठ थी सो उस दिन रसगुल्ला बनाए। पहले दिल्ली बिहार से छूट गए। उस दिन फिरोजाबाद वाले जमा थे और S C Gupta का खाना दिया था। उस दिन सब्जी भरी गुझिया और गाजर बना थी। अचार बना था। यहाँ नींबू भी निकल रहे हैं। पपीता सब मीठा नींबू खट्टा नींबू खूब निकला। खान-पान भी ठीक गया। यहाँ पर तो अभी से ही [illegible] की बहार शुरू लगा। [illegible] गर्मी अब निकलेगी। यहाँ ढेर गर्मी लगता है।

यहाँ आजकल चुनाव वाले सोने नहीं देते। रात भर चिल्लाते रहते हैं। यहाँ अभी चिड़िया का चहचहाना बहुत अच्छा लग रहा है। यहाँ सामने कचनार का पेड़ है। उसमें बैंगनी रंग के फूल बहुत लगते हैं। आज हमारी फोटो खिंची थी। घर में अब धूप आने लगी है इस वक्त बुन रहे हैं। हमारी गुल्लक में इस वक्त २१) रु० हैं। अभी मम्मी पर उधार हैं। मम्मी इस वक्त रामायण पढ़ रही हैं। भय्या अपने दोस्त से बातें कर रहा है। जीजी पढ़ रही है। हम सब लोगों का अब की दिल्ली में ही रहने का मन है आज बूढ़े बाबा की पूजा थी। खूब मन से पूजा की थी। यहाँ पड़ोस में फीरोजाबाद वाले शर्मा जी के यहाँ बहू आ गई। उसके आने की खुशी में उन्होंने खूब भारी जलसा किया था। २००-३०० आदमी बुलाये। अपने यहाँ के सब लोगों को खाना खिलाया। मलाई के लड्डू निमकी बर्फी समोसा। छोला पकौड़ी खूब था। खूब पेट भर के खाया। खूब लाइटिङ्ग रिकार्ड खूब बजा था। बड़ा मजा आया।"

आपकी बेटी
गुड़िया
कक्षा ६

गुड़िया की दूसरी चिट्ठी भी इसी प्रकार की मनोरंजक छोटी छोटी बातों से परिपूर्ण थी। कभी वह तोरई के बीज निकालने की चर्चा करती है तो कभी आलू के सेव और कचरियाँ बनाने की। एक पत्र में लिखा था—'यहाँ के कौवे बहुत दुष्ट हैं। कोई भी चीज का धूप में सुखाने रक्खो तो आँख के सामने से उठा ले जाते हैं। एक दिन साबुन उठा ले गया और आज नारियल का तेल धूप में रखा था सो आधा तेल फैला गया। गुड़िया कभी-कभी अपने पत्र में यह शिकायत भी कर देती है कि हमको सब मारते हैं। शायद डाँट फटकार को वह मारना ही कहती है और उसकी यह बात ठीक भी है।

गुड़िया की चिट्ठियों को पढ़ कर हम अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक काउपर के पत्रों की याद आ जाती है। उनका एक पालतू खरगोश भाग गया था सो उसका बड़ा ही मनोरंजक वृत्तान्त उन्होंने एक चिट्ठी में लिखा था। प्रथम महायुद्ध में अमरीका के जो राजदूत लन्दन में रहते थे वे भी पत्र लेखकों में शिरोमणि थे। एक चिट्ठी में उन्होंने उन तमाम साग तरकारियों के नाम गिनाये थे जो अमरीका में होती थीं उन दिनों स्वयं राजदूत महोदय कुल जमा साठ वर्ष के ही थे।

प्रबन्ध श्री रतन लाल [illegible] करेंगे। आतिथ्य विभाग की जिम्मेवारी श्री आउम् उठा लेंगे। भाई अमृतलाल जी से मधुर कविता का पाठ कराना मेरे जिम्मे रहा। Division of labour श्रम विभाजन की यह पद्धति कैसी रहेगी? फीरोजाबाद के सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर श्री जगमोहन जी उन क्षणों को चिरस्थायी रूप दे देंगे।

विनीत
बनारसीदास

(१५६)

रामकृष्णपुरम् ८
नई दिल्ली २२
४-४-७१

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

आज आपका परिचय अपनी पौत्री कुमारी रेणु चतुर्वेदी से कराता हूँ। वह कुल जमा तेरह वर्ष की लड़की और दसवें दर्जे में ज्ञानपुर (जिला बनारस) में पढ़ती है। रेणु का घर का नाम गुड़िया है और गुड़िया चिट्ठी लिखने में बहुत होशियार है। घर भर में इतने बढ़िया पत्र कोई भी नहीं लिख पाता। उसकी चिट्ठियों को पढ़कर हमें आश्चर्य हुआ और हमने चिरंजीव बुद्धि प्रकाश से पूछा कि क्या इस पत्र लिखने में गुड़िया किसी से मदद लेती है? पर उत्तर आया कि नहीं वह तो जो कुछ लिखती है अपने मन से खुद ही लिखती है। गुड़िया की दो चिट्ठियों के कुछ अंश ज्यों के त्यों—बिना किसी परिवर्तन के—यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ—

आपकी चिट्ठी अभी अभी मिली। हम आपको चिट्ठी लिखना भूल गये। दादा २७ ता० को इलेक्शन में गये अब ७ को आवेंगे। हम लोगों की छुट्टी है। आप दिल्ली से साथ यहीं आवें। यहाँ पर मटर फूलने लगा है। टमाटर निकलने लगे हैं। बैंगन में फूल आ गया। मटरी खूब हो रही है। मूली भी निकलती है। खूब गाजर, धनिया, मेथी, कोहड़ा आदि खूब हो रहा है। २६ ता० को भैया की वर्ष गाँठ थी तो उस दिन रसगुल्ला बनाए। परन्तु दादा बिमार से हुए थे। उस दिन फिरोजाबाद वाले गये थे और S C Gupta का खाना दिया था। उस दिन मेरी नई गुड़िया का सारा गहना बना था। हार बना था। यहाँ आलू भी निकल रहे हैं। कल तो मैंने मीठा आलू खट्टा आलू खूब निकाला। [illegible] जी ऊब गया। यहाँ पर तो अभी से [illegible] होने का [illegible] लगा। पत्र [illegible] अब लिखेंगी। यहाँ ठंड गरमी होता है।

यहा आजकल चुनाव वाले सोने नहीं देते। रात भर चिल्लाते रहते हैं। यहाँ अभी चिड़ियो का चहचहाना बहुत अच्छा लग रहा है। यहा सामने कचनार का पेड है। उसमें बैंगनी रग के फूल बहुत लगते हैं। आज हमारी फोटो खिची थी। घर मे अब धूप आने लगी है इस वक्त धुन रहे हैं। हमारी गुल्लक म इस वक्त २१) रु० हैं। अभी मम्मी पर उधार हैं। मम्मी इस वक्त रामायण पढ रही हैं। भय्या अपने दोस्त से बातें कर रहा है। जीजी पढ रही है। हम सब लोगो का अब की दिल्ली म ही रहने का मन है आज बूढ़े बाबा की पूजा थी। खूब मन से पूजा की थी। यहाँ पडोस म फीरोजाबाद वाले शर्मा जी के यहाँ बहू आ गई। उसके आने की खुशी मे उन्होने खूब भारी जलसा किया था। २०० ३०० आदमी बुलाये। अपने यहा के सब लोगो को खाना खिलाया। मलाई के लड्डू, तिरंगी बर्फी समोसा। छोला पकौडी खूब था। खूब पेट भर के खाया। खूब लाइटिंग्ज़ रिकार्ड खूब बजा था। बडा मजा आया।"

आपकी बेटी
गुडिया
कक्षा ६

गुडिया की दूसरी चिट्ठी भी इसी प्रकार की मनोरजक छोटी छोटी बातो से परिपूर्ण थी। कभी वह तारई के बीज निकालने की चर्चा करती है तो कभी आलू के सेव और कचरियाँ बनाने की। एक पत्र म लिखा था—"यहाँ के कौवे बहुत दुष्ट हैं। कोइ भी चीज को धूप मे सुखाने रक्खो तो आँख के सामने से उठा ले जाते हैं। एक दिन साबुन उठा ले गया और आज नारियल का तेल धूप म रखा था सो आधा तेल फैला गया। गुडिया कभी कभी अपने पत्र म यह शिकायत भी कर देती है कि हमको सब मारते हैं। शायद डाट फटकार को वह मारना ही कहती है और उसकी यह बात ठीक भी है।

गुडिया की चिट्ठियो को पढ़ कर हम अग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक काउपर के पत्रो की याद आ जाती है। उनका एक पालतू खरगोश भाग गया था सो उसका बडा ही मनोरजक वृत्तात उन्होने एक चिट्ठी म लिखा था। प्रथम महायुद्ध म अमरीका के जो राजदूत लन्दन म रहते थे, वे भी पत्र लेखको म शिरोमणि थे। एक चिट्ठी म उन्होने उन तमाम साग तरकारियों के नाम गिनाये थे, जो अमरीका म होती थी उन दिनो स्वय राजदूत महोदय कुल जमा साठ वर्ष के ही थे।

माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी के अंग्रेजी पत्र बड़े मार्के के हैं और उनका हिन्दी अनुवाद किया जाना चाहिए। एक चिट्ठी में उन्होंने लिखा था कि एक सेठ जी ने अपने नालायक पुत्र को कमरे में [illegible] बन्द कर दिया कि महामना मालवीय जी के पधारने पर वह बहुत सा चन्दा कहीं उन्हें दान में न दे डाले। एक पत्र में उन्होंने लार्ड आर्विन से प्रथम मुलाकात का जिक्र बड़े मनोरंजक तथा नाटकीय ढङ्ग पर किया था। उस पत्र को उद्धृत करने के लिए यहाँ स्थान नहीं। मेरे नाम जो चिट्ठी उन्होंने पोशाक के बारे में लिखी थी उसे मैंने न जाने कितने मित्रों को सुनाया होगा। वह मुझे कण्ठस्थ है और जब शास्त्री जी आगरे पधारे तो स्वयं उन्हीं को सुना दिया। उस पत्र के अन्त में आया था—It is a funny world Benarasidas we have to live in *First bend to it make yourself great and then you can* make it bend to you Did Gandhi always dress like this? If he had begun so he would have ended differently Please forgive a little lecture from one who loves you

yours affectionately
V S Srinivas Sastri

शास्त्री जी का सन् १९२८ का वह पत्र ४० वर्ष बाद भी मुझे याद है। यहाँ आठवें सैक्टर रामकृष्णपुरम् के कमरे में एकाकी बैठे-बैठे मन नहीं लगता तो यह चिट्ठी घसीट डाला है। इस कमरे में घर से अकेले रहते रहते ५२ दिन बीत गये। यह तनहाई मुझे खल रही है और मैं उर्दू कवि की यह कविता गुनगुनाता रहता हूँ —

"या खुदा! जन्नत से किसी हूर को भेज,
मेरे मौला मेरी आदत नहीं तनहाई की!"
बिल्कुल बेकार हूँ—बे Car भी। अगर वह हूर
कार चलाना भी जानती हो तो क्या कहना!

विनीत
बनारसीदास

(१५०)

४ लाजपत कुञ्ज आगरा
५-४-७१

प्रिय भाई वृन्दावनलाल जी,

आज ५ अप्रैल है—उस महापुरुष की पुण्यतिथि है, जिसने अंग्रेज होते हुए भी अपने जीवन के २६ वर्ष हमारे देश के लिए अर्पित कर दिये थे और

जिसके बारे मे महात्मा गान्धी जी ने लिखा था कि उनसे बढकर कोई भी सत्यप्रेमी विनम्र भारत भक्त इस भूमि मे विद्यमान नही। मेरा मतलब दीनबन्धु सी एफ ऐण्ड्रूज से है।

दीनबन्धु का भक्त मैं मई सन् १६१४ से बना जब मैंने माडनरिव्यू के अप्रैल १६१४ के अङ्क मे उनका दक्षिण अफ्रीका से भेजा एक लेख पढ़ा था, जिसमे उन्होंने गान्धी जी के प्रथम दर्शन की बात लिखी थी। बापू की चरण रज उन्होंने अपने माथे पर लगाई थी और इस कारण अफ्रीका के गोरे लोग उनसे बहुत नाराज हो गये थे।

लेख को पढ़कर मैं इतना प्रभावित हुआ कि दीनबन्धु से पत्र-व्यवहार करने का मैंने निश्चय कर लिया। मैंने मन म सोचा था—

'*He is my man*

जिस व्यक्ति को मैं अपना प्रेम अर्पित कर सकता हूँ, यह वही हैं। इस घटना को अब ५७ वर्ष होने को आये और मैं आज भी दीनबन्धु के प्रति उतनी ही श्रद्धा रखता हूँ। और मेरे क्षुद्र जीवन मे यदि अच्छाई के थोडे बहुत अंश है तो उनके लिये मैं उसी सत्पुरुष का ऋणी हूँ।

बाबा तुलसीदास ने कहा था —

"बिन सत्सङ्ग विवेक न होई। बिन हरिकृपा मिलै नहिं सोई॥"

मैंने सी एफ ऐण्ड्रूज के प्रथम दर्शन मई सन् १६१८ में किये और सन् १६२०-२१ म मैं चौदह महीने उनके साथ शान्ति निकेतन म रहा भी जहाँ मैंने उनका प्रथम जीवन चरित लिखा जिसकी भूमिका गान्धी जी ने लिखी थी। फिर तो आगे चलकर मुझे मिस मार्जोरी साइक्स के साथ उनकी अंग्रेजी जीवनी लिखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और उस पुस्तक की भूमिका बापू ने ही लिखी थी।

दीनबन्धु की कृपा से ही मुझे कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन हुए और तभी शास्त्री महाशय (श्री विधुशेखर भट्टाचार्य) आचार्य नन्दलाल बोस और आचार्य क्षितिमोहनसेन के निकट सम्पर्क म आया।

'दीन क्या है, किसी कामिल की इबादत करना' चकबस्त का यह वाक्य ही मेरा आदर्श रहा है। मैं भी यही मानता हूँ कि सुयोग्य की पूजा ही असली धर्म है। मैं किसी को उपदेश नहीं देता—उपदेश देने से बदतर कोई फालतू काम हो ही नहीं सकता—सिर्फ अपनी अनुभूतियाँ आप जैसे श्रद्धालु सहयोगी को सुना देना चाहता हूँ। अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मैं इसीको मानता

रहा है कि मुझे महात्मा गांधी जी, कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माननीय श्रीनिवास शास्त्री, महामहोपाध्याय रामानन्द चट्टोपाध्याय, आचार्य द्विवेदी जी, श्रद्धेय सी० वाई० चिन्तामणि, अमर शहीद गणेश शङ्कर विद्यार्थी और पूज्य प० पद्मसिंह जी शर्मा इत्यादि के कृपापात्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सुप्रसिद्ध अमरीकन लेखक थारो ने एक जगह लिखा था "मैं चाहता हूँ कि युवक मछली पकड़ना सीखें, जिससे आगे चलकर वे अपने जीवन में महापुरुषों को भी फँसा सकें।"

मछली पकड़ना तो मैंने सीखा नहीं था यद्यपि कुण्डेश्वर के तालाब में बढ़िया ढङ्ग की मछलियाँ पाई जाती थीं पर पत्र-व्यवहार द्वारा मैं साहित्य जगत के अनेक मगरमच्छ फाँसने में सफल हो गया।

पत्र-व्यवहार उसका एक सर्वोत्तम साधन है यह बात मैं प्राइवेट तौर पर आपको बतलाये देता हूँ। यह मंत्र है— माननीय माननीय, माननीय प्रयत्न। फरासीसी मनीषी रोमां रोलां के तीन पत्र मैंने इसी के द्वारा प्राप्त किये और माननीय श्रीनिवास शास्त्री के चालीस पत्र भी। रेखा चित्रों के लिये मसाला इकट्ठा करने का सर्वोत्तम तरीका भी यही है। मैंने कोई सौ डेढ़ सौ रेखा चित्र प्रस्तुत किये होंगे और उनमें से कितनों ही का मसाला मुझे पत्र व्यवहार से ही प्राप्त हुआ था। पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन नामक पुस्तक की पूरी-पूरी सामग्री मुझे इसी तौर तरीके से मिली, यद्यपि वह किताब अभी तक नहीं लिखी जा सकी।

बन्धुवर, श्री लक्ष्मीचन्द्र जी जैन [सचालक भारतीय ज्ञानपीठ काशी] ने बहुत वर्ष पहले आग्रह किया था कि मैं उस पुस्तक को उनकी ग्रन्थमाला के लिए लिख दूँ और श्री राधमोहन जी [शिवलाल अग्रवाल एण्ड को० के स्वामी] डेढ़ सौ रुपये महीने पर मेरे पास एक सहायक रखने को तैयार हैं जो उस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री को मेरे लिये व्यवस्थित कर दे। एक महीने का वेतन उन्होंने मुझे पेशगी भेज भी दिया था, जिसे मैंने चाय और पेड़ा पर खर्च कर दिया। यह बात मैंने उन्हें अभी तक नहीं बतलाई क्योंकि यह सुना देने पर मैं उनकी इज्जत में बिल्कुल गिर जाऊँगा पर आप तो मथुरा निवासी हैं और चौबे लोगों के पेड़ा प्रेम से परिचित भी। अब आप ही सोचिये कि जब तक मैं चाय और पेड़ा खाकर जीवित नहीं रहता तब तक 'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक किताब लिख कैसे सकता हूँ।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि डेढ़ सौ रुपये महीने पर पारीजातक का उद्यान नगरी में कोई ऐसा युवक नहीं मिलता जो ६ घंटे रोज

मेरे साथ काम कर सके। मेरे व्यक्तित्व मे वह आकर्षण भी नहीं कि युवको को प्रेरणा प्रदान कर सकू। शायद आज का युवक आदर्शवादी बातें सुनना भी नही चाहता। भारत के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने अपने एक पत्र म मुझे बडे पते की बात लिखी थी। उन्होने लिखा था —

"आप इस तथ्य को क्यो भूल जाते हैं कि आपमे और आज के नौजवानो मे दो पीढी का अन्तर है—५० वर्ष का—और उनके आदर्श आपसे भिन्न है। वे आपसे कोई उपदेश सुनना न चाहे तो इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं। आप दूसरो की बात सुनिये और बोलिये बहुत कम। शक्ति को संचित रखिये" ये शब्द अक्षरश बाबा के नहा है, पर उनके पत्र का साराश यही है। पर मैं करूँ तो आखिर क्या? मुझे गप्पाष्टक का शौक है और गप्प अकेले मे कैसे लडाई जा सकती है?

इसलिये मैंने परिव्राजक बन जाने का इरादा कर लिया है। कभी आगरे रहूँगा, कभी दिल्ली, कभी टीकमगढ तो कभी ज्ञानपुर (काशी)। और गुताडे लगाकर पूर्व जर्मनी तथा फिजी की यात्रा करने का भी विचार है। और चूकि आप मेरे प्रति कुछ श्रद्धा रखते हैं, इसलिये कभी मथुरा पर भी आक्रमण कर सकता हू।

एक बाबा जी को किसी श्रद्धालु ने प्रणाम किया तो वे बोले "बच्चा! आज भोजन तेरे यहाँ ही रहा।" सो आप अपनी धर्मशाला म एक कमरा मेरे लिये अभी से सुरक्षित कर रखिये।

बन्धुवर राजाबाबू [श्री प्रतापनारायण अग्रवाल, रावतपाडा] का आग्रह है कि मैं कुछ दिन उनके उपवन म गुजारूँ और भाई बालकृष्ण गुप्त ने तो एक नवीन बगीचे म कुछ कमरे साहित्यिक यात्रियो के लिये ही बनवा देने का निश्चय कर लिया है।

पर इस वक्त तो मैं विदेश यात्रा के मूड मे हूँ। यदि बन सका तो पूर्व जर्मनी जरूर जाऊँगा। वहाँ जाने का और एक महीने यात्रा करने का निमत्रण मुझे सन् १९६६ म मिला था, पर पौरुष ग्रन्थि की बीमारी के कारण मैं वहाँ जा नही सका था।

मैंने बडे हर्ष के साथ सुना कि एक ब्रजवासी को (आगरे जिले के निवासी आई ए ऐस को) फिजी के हाई कमिश्नर का पद शायद दिया जायगा। यदि ऐसा हुआ तो फिर फिजी पहुँचना मेरे लिये कठिन न होगा।

१५ जून १९१४ से मैं फिजी का भक्त रहा हूँ २७ वर्ष तक प्रवासी भारतीयों की कुछ सेवा भी मुझसे बन पड़ी था।

प्रातःकालीन चाय का नशा अब उतर चुका है और इस लम्बे पत्र में जो ऊल जलूल चर्चाएँ मैंने की हैं उनके लिए क्षमा याचना करता हूँ। अब भाई हरिशङ्कर जी, अमृतलाल जी तथा राधामोहन जी के घर पर चाय पिऊँगा और गप्प लड़ाऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के
पत्र
कुछ अन्य
साहित्यिक बन्धुओं के नाम

श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी को लिखा हुआ पत्र

(१५१)

फीरोजाबाद
२ २ ७१

प्रिय भाई श्रीनारायण जी,

पालागन !

आपने इस बार एक काम बहुत अच्छा किया—यानी पूज्य पिताजी पर एक सुंदर श्रद्धांजलि छाप दी। यह श्राद्ध काय तो आज से १६, १७ वष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। क्या प० झाबरमल्ल जी शर्मा ने उन पर उन दिनों कुछ लिखा था ? इस लेख मे एक कमी रह गई। पिताजी द्वारा प्रणीत तथा अनुवादित सभी ग्रथो की सूची दे देनी चाहिए थी। उनमे कौन-कौन पुस्तकें अब प्राप्य हैं यह भी लिखना चाहिए था।

मुझे उनके विषय म थोडे से सस्मरण हैं। शायद सन् १९१९ मे वे इन्दौर पधारे थे और किसी जन धमशाला म ठहरे थ। मुझे पत्र भेजकर उन्होंने वहाँ बुला लिया था और दो घण्टे बातचीत की थी। प्रात काल मे काम करने की बात तब भी मुझे उन्होने बतलाई थी। हँसाया भी बहुत था। मैं तो उम्र में काफी छोटा था, पर उनके व्यवहार म बडे छोटे की भावना का नामोनिशान न था। आगे चलकर उन्ही ने मेरी सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी सम्मेलन स छपवाने की स्वीकृति दी थी। उसमे मेरी अज्ञानता से एक भूल हो गई थी—शायद राम फटाका तिलक के बारे मे थी—और उसके बारे म उन्होने मुझे सावधान भी किया था।

मेरा खयाल है कि श्री गोपालप्रसाद व्यास भी उन पर कुछ लिख सकते है। उनके पत्रो को आपने सुरक्षित रक्खा या नही ? घरेलू record रखने म चौबी लोग अग्रगण्य थे। उनका इतिहास भी बहुत पुराना है। क्या राघवेन्द्र की फाइल सुरक्षित है ? कलकत्ता—समाचार की तो है ही। क्या श्री बाबूराम मिश्र कुछ लिख सकेंगे ? शिवदत्त जी ने बहुत अच्छा लिखा था।

हस्त लिखित स्मृति ग्रथो म तो बीस पच्चीस रुपयो से अधिक खच नही होता, पर हम लोग इतने प्रमादी हैं कि कुछ भी नही कर पाते। हमारी एक श्राद्ध अभिनन्दन मुडन कम्पनी अनलिमिटेड है। श्री झाबरमल्ल जी उसके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। जब मैंने श्री माधवप्रसाद जी के जीवन चरित्र की चर्चा की थी, तो पूज्य पिताजी ने उसके लिये कुछ लिख देन का वचन भी दिया था।

पर वह आढकम भी जहाँ था तहाँ पड़ा रहा। अब हम लोग भी वयोवृद्धों में माने जाने लगे। राजनैतिक शहीदों की स्मृति रक्षा में मेरे पिछले पच्चास वर्ष बीत गये और साहित्यिक तपस्वियों की एक प्रकार से उपेक्षा हो हो गई। आप कम से कम इतना तो कीजिये कि पूज्य पिताजी के ग्रन्थों की तलाश करके अपने घर पर रखिये। उनके पत्र सुरक्षित रखिए। रचना इत्यादि भी। मैं भी अपने संस्मरण लिख भेजूँगा। बनारस या वारेन हैस्टिंग्स वाली किताब मैंने देखी थी पर तब तक उसको पढ़ने की योग्यता मुझ में न थी।

आपने मेरे बारे में जो नोट लिखा है तदर्थ कृतज्ञ हूँ। मेरा कुटुम्ब भी आपका शुक्रगुजार है। आचार्य पाठक जी पर मैंने एक लेख सा लिखा था। भिजवा दूँगा, यदि आप तक न पहुँचा हो। अगले अंक में या एक एण्ड्रूज की शताब्दी पर कुछ जरूर लिखें।

विनीत
बनारसीदास

आचार्य डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखे गये पत्र

(१८२)

फीरोजाबाद
१६-१-७१

प्रिय द्विवेदी जी

प्रणाम। सैनिक में यह पढ़ा कि आप आगरे पधार रहे हैं—के० एम० मुंशी विद्यापीठ में। और इसे मैं सम्पूर्ण ब्रजमण्डल के लिए एक परम सौभाग्य की बात मानता हूँ। हम लोग मिल कर ब्रजभूमि की कुछ सेवा तो कर ही सकते हैं।

पहले तो मैं यहाँ आपको बुलाने में सकुचाता रहा, पर पुनर्विचार करने पर मैंने अपना विचार बदल दिया है—भय त्याग दिया है। बात यह है कि भगवान कृष्ण ने जिस अराज्य [anarchism] की कल्पना महाभारत में की थी—

न च दण्डो न च दाण्डिको वह फीरोजाबाद में प्रत्यक्ष कायम हो रहा है और वराह भगवान तथा हनुमान के वंशज सर्वथा स्वाधीनता पूर्वक विचरण करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आप चूंकि पुरातत्व के प्रेमी हैं इस दृश्य को देखकर अवश्य प्रफुल्लित होंगे। आगरा यहाँ से कुल जमा २८ मील दूर है और नागों को ११ गुना तथा बन्दरों को तिगुना बताने के लिये अब मुझ

काशी तक नहीं जाना पडेगा । आगरे कब तक पधार रहे हैं ? काशी के विक्षुब्ध वातावरण से आपको मुक्ति मिलनी ही चाहिये । इधर एक आकस्मिक दुघटना पर मैंने एक तुकबन्दी की है —

बडे बडेन की अक्ल अब चरन लगी है घास ।
फोकट मे डी लिट बने भी बनारसीदास ॥

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

अब पूरी उपाधियों के साथ मेरा नाम यह है साहित्य वाचस्पति (सम्मेलन) साहित्य वारिधि (उ० प्र० सम्मेलन) साहित्य मार्तण्ड (मथुरा) डी लिट (आगरा विश्व विद्यालय) बनारसीदास चतुर्वेदी—भारत साँड (नवीन जी द्वारा प्रदत्त)

(१५३)

फीरोजाबाद
३ २ ७१

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! कृपा पत्र तथा दोहे म इमलाह के लिये कृतज्ञ हूँ । शान्ति निकेतन म दीनबन्धु शताब्दी के लिये निमन्त्रण आया है । वे एक साथी का भी टी ए डी ए देने को तयार हैं, पर मैं इतनी लम्बी यात्रा नहीं कर सकता । हाँ, दिल्ली जाने का विचार अवश्य है । वहाँ Nehru Museun तथा गान्धी स्मारक निधि वाले प्रदर्शिनी कर रहे हैं । मुझे शायद बोलना भी पडे । आप शान्ति निकेतन जावें तो अत्युत्तम ।

अपने छोटे से संग्रहालय का मुख्य भाग मैंने National archives को सौंप दिया । महात्मा गान्धी जी के सौ से ऊपर मूल पत्र, दीनबन्धु की असख्य चिट्ठियाँ तथा जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री, गुरुदेव के कुछ पत्र, रोमाँ रोला के तीन पत्र गणेश जी, राजेन्द्रबाबू प्रेमचन्द, बडे दादा, प० जवाहरलाल जी इत्यादि के पत्र मैंने दिल्ली भेज दिये हैं । राष्ट्रीय अभिलेखागार के दो व्यक्ति यहाँ पधारे थे, सो उन्हे सौंप दिये ।

साहित्यिक तथा प्रवासी भारतीयों सम्बन्धी जो सामग्री यहाँ है उसे छाँट कर फिर कभी भिजवा दूगा । मेरी चिन्ता बहुत कुछ दूर हो गई । राष्ट्रीय अभिलेखागार बहुत कम दे सकेगा—दो सौ चार सौ रुपये बस—पर पैसे का

साठ मैं कभी का पार चुका हूँ। पर्लिगुस्रा में न० १ से स्टेशन में ही सारी जिन्दगी बीत गई, न० ३ का नम्बर ही नहीं आया।

दीनबन्धु ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ अफ्रीका में जो पत्र-व्यवहार किया था और जिस धरोहर के रूप में सन्दन्र विद्यालंकार ने मुझे सौंपा था, वह साल भर पहले ही National archives को सौंप चुका था।

५७ वर्ष में एकत्रित सामग्री का यही सर्वोत्तम उपयोग हो सकता था। अब मैं निश्चिन्तता से यात्रा कर सकता हूँ। अन्तिम यात्रा में अभी देर है—पर उसके लिए मैं जल्दी में नहीं।

'पार करना है मुझको अभी विधुरता का यह पारावार'

विनीत
बनारसीदास

श्री रामधारीसिंह जी दिनकर को लिखा गया पत्र

(१५४)

(१९६० का पत्र)

प्रिय भाई दिनकर जी,

प्रणाम! मैं भोपाल चला गया था और वहाँ से लौटने पर आपका कृपापत्र मिला। उसे पढ़कर मुझे हार्दिक दुःख हुआ। इस बाल्यावस्था में आपको यह अनधिकार चेष्टा है कि आप बीमार पड़ें जब कि मुझ ६८ वर्षीय युवक को भी यह अधिकार नहीं है (यद्यपि मैं पर उसका कुल्ल ही हूँ—१८० रुपया को लिए हुए।)

I too got considerably indebt-d on account of the marriage of my niece and had to borrow money from th- publish-rs that I have to pay and so I can easily understand your difficulties

पर 'आसान सतत रहे' के सिद्धान्तानुसार अब हम लोगों को अपना दृष्टिकोण सर्वथा बदल डालना चाहिए। अपने सुखी साथियों तथा घर वालों को आप साफ-साफ कह दें—

भाई साहब! अब मुझे चैन लेने दीजिए। अब मैं कोई भी जिम्मेवारी अपने पर नहीं लूँगा। आप जानें आप का काम जानें। मेरा एक ही प्रोग्राम है—Joy and laughter आनन्द उल्लास तथा विश्राम।"

नारद भगवान ने पार्वती को जो उपदेश दिया था—"शरीर माद्य खलु धर्म-साधनम्" उसे मैं आपके सामने दुहरा रहा हूँ क्योंकि आपकी तपस्या पार्वती से कम नहीं है ज्यादा ही है। You have passed through a terrible struggle after the death of your father at an early age *and that long continued संघर्ष has broken your health,* but you can still gather all your strength and live to a good old age like my father who lived upto 93

Cheer up my friend and change the entire outlook of your life

You ought to change your diet as well पूज्य Tandon ji told me to give up salt altogether to bring down the blood pressure

You complain of lack of friends Why not create new ones specially among the finer sex? Do you think that Lord Krishna had 16 thousand गोपिका s in his harem? They were all his lady admirers Akber Allahabadi observed—

"अकबर अगर मदखूलए गवर्मेंट न होता।
उसको भी आप पाते गान्धी की गोपियों में॥"

With a handsome personality, a wonderful voice, and a tremendous imagination you can still gather a large number of गोपिका's but you have failed to do so on account of your दकियानूसी ideas

'चाहे कोई फसल उगा ले तू जलधार बहाता चल'

Wasn t this the piece of advice you gave me on my birthday? Isn t it pregnant with meaning?

Everyone knows his disease and also the medicine but you prescribed a नुसखा for me and I have been using it day and night (even during my wet dreams!) Don t publish this news at present please *In my स्मृति सभा,* over which you must preside you can divulge this secret to the happy crowd gathered to pay homage to a प्रच्छन्न scoundrel like me!

As regards पेस्टरनाक I must disagree with you entirely *Surely this is not Pasternack s युग You know my views I have* absolutely no sympathy with साम्यवादी शासन व्यवस्था and had

the courage to give a bit of my mind in Kr mln when I obs r ved, "you will not rest content with Marx & Lenin, but must take up Kropotkin & Gandhi as well

I have been misunderstood many a time and nothing pain d m^ more than your obs rvations, that I ne^dn t rep at because you have already made ample amends for them I admire the courage of Pasternack no doubt but he lacked विवर discrimination His sweeping remarks his generalisations did injustice to that great country He forgot to m^ntion the wond^rful constructive work don^ in Russia in th^ educational literary technological and cultural fields He was really a great poet but in his later days kept aloof from the mass currents

Do you know that I reached within two miles of his residence ? Though asked by my Russian fri nds I refus d to trouble him I had not the heart to enter into a controversy with that great poet Now that he is gone it will be disgraceful for me to speak ill of him I cannot be his judge nor shall I be a judge of yourself

May I assure you that I have still a feeling of admiration for you—the same as I had in 1935 when I obs^rved यदि निवर जी अफ्रिका म हान ता भी मैं उनस मिलन जाता' ?

But I must confess honestly that you have gone out of my orbit The reason lies partly in my preoccupation with शहीद s cause, and partly in your domestic difficulties, that compell you to overwork

I cannot give you any piece of advice—perhaps you do not stand in need of it—but I can surely tell you that creation of new friends is absolutely essential for us Sir I consider that day lost, when I do not make a new friend observed Dr Johnson to Boswell

You must cheer up my young friend and when you get bored come to 99 North Avenue giving up 99 का फर 'निन्यानव का फर' as Dadda wrote in one of his poems "पड़ गया है नाथ वह निन्यानवें क फर म" The Anarchist Govt will liquidate our debts !

Sincerely yours
Benarsidas Chaturvedi

श्री अक्षयकुमार जैन को लिखे गये पत्र

(१५५)

फीरोजाबाद
२-७ ६८

प्रिय अक्षय जी,

'नवभारत टाइम्स' के अत्यधिक प्रचार से प्रभावित होकर ही मैं उसका उपयोग अपने मिशनरी कार्य में कर लेना चाहता हूँ। टीकमगढ के शहीद नारायणदास खरे के विषय में मेरी एक छोटी सी चिट्ठी आपने छाप दी थी, उससे उनकी विधवा को ४०१) रुपये की मदद मिल गई।

अभी एक बडी दिल्लगी हुई। पटने में सडक पर न भा टाइम्स का कोई टुकडा पड़ा था। उसे बिस्कुट बनाने वाले एक व्यापारी ने देखा। उसमें मेरी चिट्ठी थी। उस व्यापारी ने मुझे पत्र लिखा और शहीद खरेजी की पत्नी को कुछ रुपये भी भेज दिये।

मैं तो २२ २३ वर्ष से अपना सम्पूर्ण समय तथा शक्ति शहीदों के श्राद्ध में ही लगाता रहा हूँ। यदि नव भारत टाइम्स का उपयोग प्रारम्भ से ही कर लेता तो यह काम बहुत आगे बढ़ गया होता।

श्री डा पी मिश्रा में आपने मेरी पेंशन के बारे में कहा था। वह २५०) रुपये की मिलने लगी है। उससे खाने पीने का काम चल जाता है, पर मेरा पोस्टेज का ही खर्च ४०) रु० से ६०) रु० मासिक हो गया है। लेखों से थोडा सा मिल जाता है—उसे मदद ही मानता हूं। पैसा मैंने कभी जमा नही किया। हिन्दी भवन (दिल्ली) पर मेरे ३५००)रुपये से अधिक खर्च हुए थे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

वजन १५ सेर घट गया था, अब कुछ कुछ सेहत है। भूख भी खुलने लगी है। मुझे पूर्ण विश्राम करना चाहिए पर मन नही लगता।

(१५६)

४ लाजपत कुंज
Civil Lines Agra
२३ ६ ६६

प्रिय अक्षय जी

वन्दे। मैं साढ़े तीन महीने से—१०६ दिन से—यहाँ के अस्पताल में हूँ।

आप सब की सद्भावना से मेरा Prostrate glands का आपरेशन सफल हुआ और धीरे धीरे मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूँ। ७८ वां वर्ष मैं शीघ्र ही शुरू कर दूंगा।

अब मैंने Retire होने का निश्चय कर लिया है पर ५९ वर्ष से लिखने की बुरी आदत जल्दी नहीं छूट सकती। कभी-कभी लिखता रहूँगा। मेरी इच्छा है कि 'नव भारत टाइम्स' में कभी-कभी लिखूं। मजदूरी चाहे आप १०) रुपये प्रति लेख ही दें। मेरे लिये प्रचार की बात है—पैसा नहीं। आपका पत्र एक लाख पचहत्तर हजार छपता है और हिन्दुस्तान में दूर-दूर तक उसका प्रचार है। वह गौहाटी, त्रिवेन्द्रम, हैदराबाद तक पहुँचता है।

आप मजदूरी न भी दें तब भी मैं 'अपनी बात' शीर्षक विभाग में कुछ छपवाना पसन्द करूंगा। मुझे इस बात का डर था कि कहीं आपरेशन असफल न हो और मैंने चलने की तैयारी भी कर ली थी। कवीर महाकवि शङ्कर जी कविवर की तैयारी कर रहे तामा बाँधि गल कूच धरि रहे। मासिक मान मुझे पचास पावन नव आवकारी इत्यादि पर मेरी आकांक्षा निराधार निकली। सीनस जून सदा आया। कुछ दिन अभी हिन्दी जगत की और भी सेवा करने का मौका मिल गया।

आप अगर नव भारत टाइम्स में कभी-कभी मेरे लेख छाप दें तो फिर दूसरे छोटे-मोटे पत्रों को मैं लेख लिखना चाहूँगा। पर मैं आप पर कोई दबाव नहीं डालूंगा। जैसा आप मुनासिब समझें करें। चिरंजीव गुप्तजी का जो सहयोग आपने दी थी, उसे मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।

मैं अभी पांच दिन नव आगरे में रहूँगा। फिर १० को फीरोजाबाद पहुँच जाऊँगा। बहुत मना करने पर भी यशपाल जी मेरा अभिनन्दन करना चाहते हैं। हलवाई को मिठाई खिलाना चाहते हैं। मछली को जाल में फँसाना चाहते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१।७)

फीरोजाबाद
२४ १२-७०

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे। यदि महीने में मेरा एक लेख भी आप छाप सकें तो मुझ पर बड़ी कृपा हो। मैंने सन् १९१२ में लिखना शुरू किया था और कलम सर्वोत्तम पचासवीं अब ५९ वीं वर्ष चल रही है।

मैं जानता हूँ कि हिन्दी के पाठक अब तक तंग आ चुके होंगे, पर क्या किया जाय ? भाई हरिशङ्कर शर्मा एक उर्दू कविता सुनाया करते थे —

बूढ़ों के साथ लोग कहा तक वफा करें।
लेकिन न मौत आये तो बूढ़े भी क्या करें॥

मेरी ७८ वीं वर्ष शीघ्र ही शुरू होने वाली है। Retire होने की बात कई बार सोच चुका हूँ पर लिखने की असाध्य बीमारी से मुक्ति मिलना कठिन प्रतीत होता है।

आपने चिरंजीव रामगोपाल के पचासों लेख छापकर उसकी और मेरी भी जो मदद की थी, उसे मैं यावज्जीवन नहीं भूल सकता।

मध्य प्रदेश सरकार से मुझे पेंशन मिल रही है। आपने डी पी मिश्रा से कहा भी था। यशपाल जी ने शुक्ला जी से कहा था। २५०) रुपये महीने बराबर मिल रहे हैं। यह पेंशन महाराज ओरछा ने दी थी।

बनारसीदास

(१५८)

नई दिल्ली २२

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे ! मैं यहा १० ता० से हूँ, पर यह स्थान अल्लाह मिया के पिछवाडे में स्थित है जहा से निकलना आसान नहीं। चि० गुणेश मुझे बस मे बैठने नहीं देता और ५ ६ मील पैदल चलना ७८ वी वर्ष मे कुछ मुश्किल है। शहीदों के श्राद्ध तथा साहित्य सेवियो की कीर्ति रक्षा में मेरे क्षुद्र जीवन के बीसियो वर्ष बीत चुके है और अन्तिम श्वास तक यही पुण्य कार्य करने हैं।

आचार्य प०पद्मसिंह जी ने लिखा था—' इस कूचे मे भी मुर्दे मोहताज हैं कफन के'' मैंने अपनी सीमित शक्ति ब्रजमंडल पर केन्द्रित करने का निश्चय कर लिया है। आपका सहयोग तो मिलेगा ही। यदि सम्भव हुआ तो फीरोजाबाद लौटने के पूर्व आपके दर्शन करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

श्री गोविन्दप्रसाद केजडीवाल को लिखा गया पत्र

(१५९)

फीरोजाबाद
२५ ७-७०

प्रिय श्री केजडीवाल जी,

वन्दे ! आप लोग ब्रजभूमि के बारे में विशेषाङ्क निकाल रहे हैं यह जान कर अत्यन्त हर्ष हुआ। अगर मुझे इसकी पूर्व सूचना मिली होती तो मैं भी

कुछ लिख भेजना। शायद आपको ध्यान ही नहीं रहा कि मैं भी एक क्षुद्र ब्रजवासी हूँ और मेरे जीवन के पिछले साढ़े ६ वर्ष इसी जनपद में बीत हैं। अभी जीवित और जाग्रत हूँ।

आपके इस विशेषाङ्क में बन्धुवर प्रभुदयाल जी मीतल की ५० वर्षीय ब्रजसाहित्य सेवा पर एक लेख होना ही चाहिए था जिसे श्री डाक्टर पचौरी से लिखाया जा सकता था। बन्धुवर वृन्दावनदास जी (अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल, मथुरा) तो आपके पत्र को मनचाही सामग्री भेज सकते थे। ब्रजमण्डल के साहित्यिक कमिश्नर तो वे ही हैं और इनका सम्पूर्ण समय नित्य ८ १० घंटे ब्रज की सर्वाङ्गीण सेवा में ही बीत रहे हैं। वे अच्छे वकील रह चुके हैं पर सब काम छोड़कर ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण के काम में हो तन मन धन से लग गये हैं।

मेरा यह प्रस्ताव है कि आप अपनी सुविधानुसार उस ब्रजाङ्क का एक परिशिष्टाङ्क अवश्य निकालें। तब मुझे भी याद कर लें। मैं सर्वथा निस्वार्थ भाव से—बिना एक कौड़ी लिए—आपके पत्र की सेवा कर दूंगा।

मुझे जो ग्रन्थ भेंट किया गया था उसमें ब्रजभूमि का काफी विवरण है—बल्कि मेरा तो यह प्रस्ताव था कि ब्रज के विषय में एक सन्दर्भ-ग्रन्थ निकालकर, यदि ठीक समझें तो, मुझे अर्पित कर सकते हैं।

स्व० हृदयानुसिंह जी का एक, बढ़िया फोटो मेरे पास है। वह भी ब्रजाङ्क में जा सकता था। भाई हरिशङ्कर जी, श्रीराम जी शर्मा पालीवाल जी, आचार्य वासुदेवशरण, बालकृष्ण शर्मा नवीन इत्यादि पर भी लिखा जाना चाहिए था। परिशिष्टाङ्क का विवरण आप भाई वृन्दावनदास जी की मदद से तयार कर सकते हैं।

अगर अब भी कुछ जगह खाली हो तो श्री प्रभुदयाल जी मीतल श्री वृन्दावनदास प्रभृति के चित्र तो दे ही दीजिये। धृष्टता के लिये क्षमाप्रार्थी। श्री जोशी जी को मेरा प्रणाम कहिये।

बनारसीदास

श्री अटल बिहारी वाजपेयी को लिखा गया पत्र

(१६०)

फीरोज़ाबाद

३-१२-७०

प्रिय श्री वाजपेयी जी

सादर प्रणाम। आगरे की मीटिंग में आपने कृपाकर मेरे बारे में जो प्रशंसात्मक शब्द कहे तदर्थ मैं आपका ऋणी और कृतज्ञ हूँ।

मैंने बहुत वर्ष पहले झांसी की किसी सभा में आपके दर्शन किये थे। जब मैं दिल्ली में था तब सारा समय शहीदों के श्राद्ध को ही अर्पित करता रहा—राज्य सभा में बहुत कम जाता था।

मेरे क्षुद्र जीवन के २२ वर्ष प्रवासी भारतीयों की सेवा में बीते और पिछले २५ वर्ष शहीदों के श्राद्ध में। विवाद-ग्रस्त राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

लाला हनुवन्त सहाय का यथोचित सम्मान करके जनसंघ ने एक अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य का पालन किया था। राष्ट्रधर्म के अङ्क भी काफी अच्छे निकले हैं। कभी-कभी निजी तौर पर मैंने जनसंघ की आलोचना भी की है, क्योंकि मेरा आध्यात्मिक झुकाव पचास वर्ष अराजकता की ओर रह चुका है, पर मैं राजनैतिक विवादों में कभी फँसा नहीं। अपनी तुच्छ शक्ति द्वारा जो थोडी सी सेवा बन पडी कर दी है अब ७६ वी वर्ष में ज्यादा काम तो हो नहीं सकता।

जनपदीय संगठन में मेरा दृढ विश्वास है और स्व० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पृथ्वी पुत्र का मैं विनम्र प्रशंसक हूँ। अपने ब्रजमण्डल के लिये जो कुछ भी बन सकेगा करूँगा।

आप भी हमारे ब्रजमंडल के निवासी हैं, यह हम सब के लिये गौरव की बात है। मेरे मित्र बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मथुरा अपना सम्पूर्ण समय और शक्ति तथा साधन ब्रज की सेवा को ही अर्पित कर रहे हैं। उन्हें भी आपका सहयोग मिलना चाहिये।

कृपाकांक्षी

बनारसीदास

श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी आगरा को लिखे गये पत्र

(१६१)

फीरोजाबाद

२० ४ ६७

प्रिय बाबू पालागन,

उस दिन की टटौरा यात्रा मेरे क्षुद्र जीवन की एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा थी। मुझे उस उद्यान को देखकर बडी प्रसन्नता हुई। 'राजाबाबू' का पूरा नाम और पता क्या है ? उन्हें पद्मश्री से भी ऊँची पद्मविभूषण की पदवी मिलनी चाहिये। उन्हें मेरा नमस्ते कहिये। मैंने जो चित्र लिए हैं उन्हें दो

एक दिन में ठीक कर दूँगा। चि० आभा को तो मैंने पहली बार ही देखा। वह सुरेन्द्र के यहाँ आई थी। मीठी बोली बोलती है। ब्रजभाषा भूल गई क्या? डाक्टर माथुर को लिखता आया। ताई चिन्ता की बात नहीं लगा उन्होंने विश्वास दिलाया है। दो इन्जक्शन बतलाये हैं। अभी श्री वृन्दावनलाल जी को लिख रहा हूँ कि मेरी पूरी पूरी सहायता छपवा दें। तुम्हारी कौन-कौन रचनाएँ छपी पड़ी हैं?

विनीत
बनारसीदास

(१६२)

१ १० ६८

प्रिय भाई अमृतलाल, पालागन

कल राज्यपाल महोदय का पत्र मिला है —

My dear Shri Chaturvedi,

I received your letter of the 21 st instant regarding the orchard in district Agra I am looking into the mater With kind regards

your Sincerely
C- Gopala Reddi

अब यह जरूरी है कि श्री विद्यासागर जी सचिव से एक नोट इस उद्यान के बारे में लिखें। राजाबाबू को भी पत्र लिख रहा हूँ। वह नोट मैंने आठ दूसरे पत्रों को भी भेज दिया है। यदि जरूरी समझा जाय तो इस कार्य के लिए सेठ अचलसिंह, जगनराय जी रावत जी प्रभृति के हस्ताक्षर भी कराये जा सकते हैं। बगीची को हर हालत में बचाना है। अमर उजाला को भी लिख रहा हूँ। हिन्दी तथा अंग्रेजी में एक दूसरा बगीची के बारे में छप जाना चाहिए।

विनीत
बनारसीदास

(१६३)

फीरोजाबाद
३ ६ ७०

प्रिय बाबू, पालागन।

ढोलीपुरा की यात्रा के लिये मैंने १० सितम्बर की तारीख रखने का भाई शम्भुनाथ जी को लिखा है। यहाँ से बालकृष्ण जी ७ या ७॥ बजे अपनी

कार म ले चलेगे। निश्चित तिथि की खबर तुम्हे शम्भुनाथ जी से मिल जायगी। मैंन कल उन्हे लिख भी दिया है। आज फिर उन्ह स्मरण करा दूगा। लट्‌टूरी जी यहा से साथ म होगे।

मैं वहा दीनबन्धु सी एफ ऐन्ड्रूज पर कुछ बोलना चाहता हूँ। उनका चित्र तो स्व० भाई शकरलाल जी ने तयार करा ही लिया था। २४ ता० को शाम को श्री बालकृष्ण जी तथा कोटला कालेज के प्रिंसीपल मथुरा श्री वृदावनदास जी की वषगांठ पर बधाई देने गये थे उनके घर पर—पर वहाँ वे मिले नही। धमशाला मे भी तलाश किया। राजाबाबू बम्बई से लौटे या नही ? २३ अगस्त के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में मैंने उनके बाग का जिक्र किया है।

बनारसीदास

(१६४)

फीरोजाबाद
१६ १२ ७०

प्रिय बाबू, पालागन

आजकल उषाकालीन चायामृत पान के बाद किसी कवि की प्रतिभा इस रूप म जाग्रत हुई है।

बडे बडिन की अकल अब लखहु चरि गईं घास।
फोक्ट मे डी लिट बने श्री बनारसीदास॥

इसम इसलाह दो।

श्री सिंघल जी का पूरा पूरा नाम और पता क्या है ? उनकी उदारता से मैं चकित रह गया। उनके दिये पाच सौ रुपयो का उपयोग करूगा और पैसे पसे का हिसाब उनको भेज दूगा। ५ दिसम्बर और ८ दिसम्बर दो दिन मेरी नाद हराम हुई। उसी के दुष्परिणाम स्वरूप अब जोरा का जुकाम है।

बनारसीदास

श्री मधुसूदन जी चतुर्वेदी हैदराबाद को लिखे गये पत्र

(१६५)

फीरोजाबाद
१० ८ ६७

प्रिय भाई मधुसूदन जी,

पालागन। आपकी भेजी हुई तीनो किताबें अभी मिली। उनके लिए बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। उन्हें मैंने सर-सरी निगाह से ही देखा है, समय मिलने

पर ध्यानपूर्वक पढ़ने का विचार है। उसमें देर लग गयी है, क्योंकि मैं केवल एक आँख पर ही जोर देकर लिखता-पढ़ता हूँ।

स्व० आशानाथ जी पाण्डेय के चित्र का दर्शन कर मन में अनेक भाव जाग्रत हुए। पाण्डेय जी को मैंने स्वर्गीय त्रिभुवन की बहिन के ब्याह का कार्ड भेजा था और उन्होंने उस बहन को अपने पास से कुछ भेंट की थी। उनका अंतिम पत्र झाँसी से आया था। उसमें भी उनकी कुछ ऐसी व्यथा नहीं थी। उनकी स्मृति को पुस्तक समर्पित करके आपने उचित कार्य किया है।

भाई रूपनारायण जी मेरे अनुज रामनारायण के साथी हैं। मैंने सुना है कि वे अस्वस्थ हैं। कहाँ पर हैं? 'मेमना और बाघिन' अच्छा अनुवाद है। बच्चों की किसी पुस्तिका में उद्धृत करने योग्य भी है। भाई रूपनारायण जी का उर्दू पर भी अधिकार है यह बात मुझे ज्ञात नहीं थी। उनके दर्शन मुझे नैनीताल में हुए थे।

The Quiet Life आप की रचना है यह मुझे मालूम न था। 'वृन्दावन' पुस्तक मिलने पर पढ़ूँगा। 'कौशल-प्रवासी' चीज अच्छी है। 'शेफर' भी *बढ़िया है और 'फूल' सुन्दर रचना है। "तरवार की धार पै धावनौ है"* अच्छी पूर्ति है। इतनी दूर रहते हुए भी आप ब्रजभाषा को नहीं भूले यह आश्चर्य तथा हर्ष की बात है। इस शैली पर आपका अच्छा अधिकार है। आशा है कि आप सकुशल हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१६६)

फीरोजाबाद
२३-४-६८

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

आपके पत्र में अनेक बातें अत्यन्त उत्साहप्रद हैं। दूसरों की आलोचना करने के बजाय आप रचनात्मक कार्य में निरन्तर संलग्न हैं और अपने पथ पर लगातार अग्रसर होते जाते हैं, यह बात मेरे लिए भी उत्साह व प्रेरणा देने वाली है।

इधर सत्यनारायण कविरत्न की अर्द्धशताब्दी के लिये मुझे आगरा जाना पड़ा था। कृपया श्री वृन्दावनदास बी० ए० एल-एल० बी० अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल मथुरा को एक कार्ड लिखकर उसका ब्योरा उनसे मँगा लीजिये। वे बड़े कर्मठ व्यक्ति हैं। उनसे आपका सुदृढ़ सम्पर्क होना ही चाहिए।

मेरा स्वास्थ्य २, ३ महिने से खराब चल रहा है। वजन बहुत कम हो गया है। कई बीमारियाँ हैं। खैर यह सब तो इस उम्र मे ७६ वी वर्ष में स्वाभाविक ही हैं। चिन्ता केवल यही है कि जो सामग्री ५० वष म मैंने इक्ट्ठी की है उसका उपयोग कैसे होगा। शिशु जी के ग्रन्थो का उद्धार होना चाहिए। 'काकली' अवश्य छपे। फीरोजाबाद जरूर पधारिये। मई का महीना तो काफी गरम होगा। अब ज्यादा लिखना पढना कठिन है।

विनीत
बनारसीदास

(१६७)

फीरोजाबाद
२४ ११ ६८

प्रिय, मधुसूदन जी, पालागन,

सबेरे पौने चार बजे का उठा हूँ। चाय वनाकर पी ली है और कुछ स्वाध्याय भी कर लिया है। अव पुरानी बद आदत के अनुसार पत्र व्यवहार के व्यसन का सेवन कर रहा हूँ। ऐसे अवसर पर मैं अपने मित्रा का स्मरण करता हूँ। उन्हें अपनी स्पष्ट सम्मति लिखता हूँ।

१ आप भविष्य मे किताबो के चुनाव के बारे म अधिक सावधान रहें। कुछ किताबें बहुत साधारण कोटि की आपने छाप दी हैं।

२ रामधन को अब कुछ भी भेजन की जरूरत नहीं। उसक ग्रन्थ का आपन छाप दिया, यही बडी भारी मदद है। और आपके पास इतने साधन भी तो नही कि ऐसे अनाथो का पालन पोषण करते फिरें। मैं तो वर्षों से रामधन की मदद करता रहा हूँ।

३ 'काकली' का प्रकाशन नितान्त आवश्यक है।

४ 'शिशुजी' के सुपुत्र कल यहाँ आने वाले थे, पर आये नहीं। मैनपुरी के श्री लाखनसिंह जी भदौरिया ने मुझे बताया कि 'शिशुजी' के सुपुत्र को उनका ६० हजार रुपया अब मिल गया है। मुझे आश्चर्य हुआ। अगर यह बात है तो सन्तोष जनक है। अब वे स्वय शिशुजी का साहित्यिक श्राद्ध कर सकते हैं। शिशुजी सर्वोत्तम रचनाओ का सार भाग एक जिल्द मे छप जाय तो वह best impression create कर सकता है। आप उन्हें पत्र लिखें।

५ क्या आप एक हजार से अधिक के सस्करण छाप रहे हैं? तब फिर इतनी किताबें आपके यहाँ पडी क्यों रह जाती हैं?

६ स्थायी ग्रन्थ महान में कितने वर्ष लेते हैं? सरकार भी ध्यान रखिए। यह तो Full time job है।

७ द्विवेदी जी के पत्रों की नकल तो पहले करा ली थी, पर उसे revise नहीं कर पा रहा। आँखें-अक्ल कहाँ तक काम करें? ७८ वाँ वर्ष २४ दिसम्बर को शुरू करूँगा।

८ पट के संस्मरण मैंने अपने अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए लिखे हैं। भेजूँगा। पढ़ लीजिए। आप भी पट के बारे में कुछ लिख सकें तो लिखें।

विनीत
बनारसीदास

(१६८)

सरोजिनी नायडू अस्पताल
आगरा
१८ ६ ६८

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

मैं ता० ७ को यहाँ आकर दाखिल हो गया हूँ। डाक्टरी जाँच हो रही है। आपरेशन शायद करना ही पड़ेगा। मैं चिन्तित नहीं। जो होगा ठीक ही होगा।

जल्दी में मुझे यहाँ आना पड़ा और पूज्य द्विवेदी जी के पत्रों का रजिस्टर तलाश नहीं कर सका। रक्खा तो वह टीकमगढ़ में है पर उसे ढूँढ़ निकालने में कुछ वक्त लगेगा। अपने भानजे डा० मिथिलेशचन्द्र चतुर्वेदी (उर्फ मिन्टू चौबे) को लिख रहा हूँ कि वह उन पत्रों की खोज निकालें। पर उन्हें मूल पत्रों से मिलाना होगा ताकि कोई गलती न रह जाय। द्विवेदी जी की स्वर्गीय आत्मा भूलों से पीड़ित न होनी चाहिए। जितना कि आपकी ग्रन्थमाला के विषय में विचार करता हूँ उतनी ही श्रद्धा मेरे हृदय में आपकी लगन तथा कार्यपालना के प्रति बढ़ती जाती है।

सचमुच आपने करिश्मा कर दिखाया है। अपनी ग्रन्थमाला के विषय में कुछ नोट भेजिए। मुख्य मुख्य पुस्तकों के नाम विषय इत्यादि ताकि उस पर एक प्रशंसात्मक लेख लिखा जाय। अभी कुछ दिन और भी यहाँ रहना है। आपरेशन शायद २० दिन बाद होगा। पानी बरस जाय तो कष्ट कम हो।

विनीत
बनारसीदास

(१६९)

५ २ ७१

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

पामल कल छुड़ाली। मेरा सुझाव है कि भावी या Prospective ग्राहकों को ऐसे बहुमूल्य ग्रन्थ आप भेंट न करें। यह तो सर्वथा अव्यावहारिक है। मसलन विचारे-जी तो ग्राहक बनने की स्थिति में हैं ही नही। डी ए वी कालेज से उनके प्रावीडेन्ट फंड का रुपया भी नहीं मिला। नौकरी तो छूट ही चुकी है।

हाँ श्री बालकृष्ण गुप्त पैसा दे सकते हैं। कूर्मांचल केसरी की प्रतियाँ श्री शुकदेव पाण्डे को भेज दी होंगी। कितनी प्रतियाँ भेजीं ? श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को न भेजी हो तो मैं भेज दूं। श्रीमती विद्याधरी जौहरी को सम्पादक 'अमर उजाला' बरेली को भी भेजिये। बरेली संस्करण पहाड़ी स्थानों में पहुंचता है।

'सैनिक' वाले भी आलोचना कर देंगे। वैसे आजकल चुनाव के दिनों में स्थान मिलना कठिन ही है। निस्सन्देह आपने करिश्मा कर दिखाया है। अपना जीवनवृत्त किसी से लिखवा कर इस ग्रन्थमाला के परिचय के साथ भेज दें तो मैं एक Sketch तैयार कर सकता हूँ प्रचारार्थ अपना चित्र भी भेजिए।

विनीत
बनारसीदास

श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

(१७०)

फीरोजाबाद
६ ६ ६८

प्रिय भाई युगल किशोर जी, पालागन

जो भी व्यक्ति क्रान्तिकारी कदम उठाते हैं पहिले उनके बारे में गलत फहमियां उत्पन्न होती ही है क्योंकि दकियानूसी आदमी खुद तो आगे बढ़ नहीं सकते दूसरे बढ़ने वालों की टाँग खींच कर पीछे लाने की कोशिश करते हैं। पर इन गलत फहमियों की बिल्कुल भी पर्वाह न करनी चाहिये।

पूर्व अफ्रीका से लौटने के बाद मैं जाति से बहिष्कृत कर दिया गया था। जनेऊ फिर करना पड़ा और गंगा स्नान के लिए प्रयाग भी जाना पड़ा। यह बात शायद १९२५ की है। अब उस घटना पर स्वयं मुझे हँसी आती है। मैं शाकाहारी भोजन, जो मुसलमानों के साथ बनाया गया हो चाहे जिस भले मानस के यहाँ कर सकता हूँ। कुछ वर्ष पहिले यह भी एक भयंकर अपराध माना जाता था। पुस्तकों का प्रभाव तो पड़ता ही है पर कार्य का जो प्रभाव पड़ता है वह स्थायी होता है।

आपने और भाई गिरीश जी ने जो कदम उठाया है वह भावी समाज का पथ प्रदर्शक बनेगा। बूढ़ी स्त्रियाँ चाहे कुछ भी बकती रहें उनकी परवाह हर्गिज न करनी चाहिए। They say, what they say let them say— ये तीन वाक्य नित्य प्रति अपने स्वाध्याय कक्ष में टाँग देने चाहिए। बर्नार्ड शा का यही कथन है।*

विनीत
बनारसीदास

(१७१)

फीरोजाबाद
५ १० ६९

प्रियवर, पालागन।

मैं ता० २८ को घर लौट आया हूँ। यद्यपि कमजोरी काफी है, फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। ३, ४ महीने विश्राम करना होगा। reprints यहीं भेज सकते हैं। ७८ वाँ वर्ष शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायगा और मैं retire हो जाऊँगा। नीलकण्ठ शास्त्री नामक ट्रैक्ट मैंने हैदराबाद से छपाया है। मूल्य ८० पैसे है।

मैंने अपना यह विचार सार्वजनिक तौर पर प्रकट भी कर दिया है कि अब लेनिन के तौर तरीकों से ही इस मुल्क का उद्धार होगा। वश मेरा

---

* चतुर्वेदी समुदाय में बहुत पीढ़ी से दो भेद मण्डलियों में चले आ रहे थे और उनमें रोटी बेटी का कोई सम्बन्ध नहीं होता था। मेरे द्वितीय पुत्र के शुभ विवाह में दोनों समुदाय वालों ने इस पुरानी रूढ़ि को तोड़ा था अतः चतुर्वेदी जी ने हर्ष प्रगट करते हुए उक्त कार्य की सराहना की है। इसमें उन्होंने अपने प्रति किये गये व्यवहार का भी उल्लेख किया है।

—युगलकिशोर चतुर्वेदी

विचारा का कोई महत्व नहीं पर अपनी ईमानदारी की राय जाहिर कर देनी चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

श्री प्रभुदयाल जी मीतल को लिखा गया पत्र

(१७२)

फीरोजाबाद
१४-७ ७०

प्रिय मीतल जी,

वन्द ! कार्ड अभी मिला। मैंने तीसरी प्रति रजिस्ट्री द्वारा भेजने के लिये तलाश कर ली थी। यह अच्छा हुआ कि दोनो प्रतिया मिल गइ। मुझे याद पडता है कि आप मेरे अभिनन्दन उत्सव पर दिल्ली पधारे थे। चूंकि उस समय मैं अत्यन्त व्यस्त था, इसलिये ध्यान नही दे सका। यदि मेरा खयाल ठीक है तो इस बात को भी जोड देना मुनासिब समझता हूँ।

मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ म अग्रवालो का जबरदस्त हाथ रहा—६॥ हजार मे ४ हजार अग्रवालो ने ही दिये। यह आश्चर्य की बात है पर है सच। प्राचीनकाल म (और शायद अब भी) चौबे लोग अपने यजमानो के पास साल मे एक बार चक्कर लगाकर अपना टैक्स वसूल करते थे। इस प्रथा को मैं भी अपने शेष जीवन म चरितार्थ करना चाहता हूँ। इसलिये आपको तथा भाई वृन्दावनदास जी को अग्रिम सूचना भेज रहा हूँ। बिहारी के जो आत्म चरितात्मक दोहे इन्दौर म मुझ मिले थे उनम भी वर्षासन वसूल करने की बात लिखी गइ थी। हा, अपनी दक्षिणा के रूप म मैं कोई छपी छपाई पुस्तिका [ब्रजसाहित्य सम्बन्धी कोइ ट्रैक्ट] लेना पसन्द करूँगा। मसलन् जब आचाय वासुदेवशरण के पत्रो का सग्रह छप जायेगा तब मैं मथुरा आने की सोचूगा। आप लोगो की सद्भावना से अभी मैं कम से कम ५, ७ वर्ष और भी स्वस्थ और सजीव रहना चाहता हूँ—यद्यपि यह आसान नही। किसी चौबे से यह आशा करना कि वह जिह्वा पर सयम कर सकेगा, निरर्थक ही होगा।

आप जुगलेश जी का पता निर्मल जी [सम्मेलन] से लगवाइये। रीवाँ के स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह के कुटुम्बियो को कुछ मालूम हो। उनका काव्यसग्रह सरदार नर्मदाप्रसादसिंह का ही भेंट हुआ था। आधुनिक ब्रजभाषा कवियो पर एक सचित्र लेख कृपया लिखिये। चित्र तो सभी मँगाकर रख लीजिये। रघुवर

चकोरी जी का भाग ग्रन्थ कब तक छपेगा ? मैंने रत्नाकर जी पर दो लेख लिखे थे। वे भी ट्रैक्टाकार में छप गये हैं।

मैं चाहता था कि सर्वश्री सत्येन्द्र, वृन्दावनदास, वृन्दावनलाल और राजेश्वर से परामर्श करके अपने लेख में एक दो पृष्ठ आपके साहित्य साधना पर जोड़ देता पर समय नहीं मिला। चीज अधूरी रह गई।

विनीत
बनारसीदास

डा० सत्येन्द्र को लिखे गये पत्र

(१७३)

फीरोजाबाद
२६ ८ ७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

पत्र मिला। आप लोगों के पहुँचने पर आपकी चर्चा बराबर रही। मैंने जिक्र किया, जगदीश जी ने भी उल्लेख किया और आपकी सरगर्मियों सभी को अखरी। मेरे लेख में आपका चित्र फिट बैठ गया है। आपने देख लिया ही होगा।

आपके भाटनू साहब की भी जो विज्ञापन चल गये हैं मैंने चर्चा की थी। उनमें मैं मिलना भी चाहता था, पर श्री गणेश जी ने मना कर दिया। व विज्ञापन नहीं चाहते' यह तक था। अन्तर्जनपदीय परिषद् का पुनर्जीवित करना जरूरी है। मुश्किल तो यही है कि भाई वृन्दावनदास जी की तरह के कार्यकर्ता अन्य जनपदों में दुर्लभ हैं—स्वयं ब्रज में भी वे अद्वितीय हैं। फिर भी जो कुछ बन सके शीघ्र ही कर देना चाहिये। आप वाला ग्रन्थ जल्दी ही छप जाय तो उससे भी काम में मदद मिलेगी क्योंकि लोक-वार्ता के क्षेत्र में आपका Contribution महत्वपूर्ण रहा है। 'जो काम शीघ्र नहीं किये जाते, काल भगवान उनका रस पी लेते हैं' यह पुरानी उक्ति है —'अक्षिप्रस्य कार्यमाणस्य कालो पिबति तद्रस" क्या मथुरा में कोई प्रबन्ध उस ग्रन्थ के छपाने का नहीं हो सकता।

आपके दार्शनिक दृष्टि कोण में मतभेद होते हुए भी मैं यह उचित समझता हूँ कि यह ग्रन्थ शीघ्रातिशीघ्र छपे। उससे अपने उद्देश्य की पूर्ति में मदद मिलेगी।

मैं अपना भाषण लिखकर ले गया था। पर वह देर म छपेगा। मथुरा के प्रतिष्ठित साहित्यिक उपस्थित थे।

नव भारत टाइम्स" को कभी-कभी अपनी वात लिख भेजा कीजिये। उसका प्रचार अपने जनपद म काफी है। वैसे सैनिक तथा 'अमर उजाला' भी खूब चलते हैं। लम्बे लेख न सही छोटे छोटे पत्र भी लाभदायक होंगे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

आपकी ग्राम रचना वाली योजना अब भी सामयिक है पर उसे कार्य रूप म परिणत करना आसान नही। आप जब कभी अपनी ब्रजभूमि को स्थायी निवास के लिये लौटें तो किसी न किसी ग्राम मे उसका प्रयोग करें। मुश्किल यही है कि समानशील तथा परस्पर पूरक Complimentary व्यक्तियो का हमारे यहाँ प्राय अभाव है।

इसके सिवाय छोटे छोटे फालतू कार्यों मे हमारे वक्त की बर्वादी हो जाती है। अग्रवाल जी ने 'तृणावत' पर एक अच्छा पत्र मुझे लिखा था। कृपया पढ लीजिये।

मेरा व्यावहारिक सुझाव यही है कि अग्रवाल जी के सवा सौ सर्वोत्तम पत्र ब्रजभारती के एक विशेषाङ्क म छाप दिये जावें। आप भाई वृन्दावनदास जी को यही बात लिख दें।

Best is the enemy of good यह पुरानी कहावत है। सर्वोत्तम काम करने की धुन मे हम उत्तम काम भी नही कर पाते। क्या कोई प्रकाशक स ना कविरत्न के ग्रन्थो को नही छाप सकता ?

(१७४)

फीरोजाबाद
६ ६ ७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

वन्दे। कृपापत्र अभी मिला। सूर पचशती योजना निस्सन्देह बडी व्यापक है और उसके एक अंश को भी काय रूप म परिणत किया जा सके तो बडी बात है। यह मैं इसलिये कहता हूँ कि अपने यहा कार्यकर्ताओ का अभाव है और साधन सम्पन्न व्यक्तियो का सहयोग हम ले नही पाते। श्री दुबे जी का Transfer मुरादाबाद का हो गया और अकेले भाई वृन्दावनदास जी क्या-क्या

कर सकते हैं। इनका न कुछ हो जाय तो हो जाय। कोई रूसी लड़की सूर का विशेष अध्ययन कर रही थी। लन्दन में भी एकाध विद्यार्थी रुचि रख सकते हैं। यदि हिन्दी भाषा भाषी प्रदेशों की सरकारें कुछ कर सकती तो काम आगे बढ़ता, पर वे सत्तारूढ़ राजनीति के पंक में फंसी हुई हैं। इन कारणों से हमें अधिक आशा तो नहीं रखनी चाहिए। फिर भी अपने कर्तव्य का पालन हम करते चलें।

मेरा अनुमान है कि ब्रजभूमि का कोई प्रकाशक आपका अभिनन्दन ग्रन्थ को छाप सकता यदि उसे कुछ Advance कर दिया जाय। बाबा पृथ्वीसिंह आजाद की आत्मकथा शिवनाथ अग्रवाल ने चार हजार रुपये एडवांस में उधार लेकर छाप दी है और वे रुपये उन्होंने लौटा भी दिये हैं।

नवभारत टाइम्स १ लाख ६७ हजार छपता है। उसमें अपनी बात संक्षेप में लिख देने से छप सकती है, पर उसकी मजदूरी नहीं मिलती। ब्रज जनपद में उसका पर्याप्त प्रचार है। वर्तमान तथा अमर उजाला भी अपना साथ देंगे।

श्री हरिदत्तनाथ अग्रवाल (Ram Prasad and Sons) को मैंने कविरत्न जी के ग्रन्थों के बारे में लिखा है। मालती माधव का प्रथम संस्करण स्वर्गीय रामप्रसाद जी ने ही छपाया था। आप भी उन्हें लिखें।

कल मैं हाथीपुरा जा रहा हूँ। वहाँ के कालेज में कुछ बोलना है। ११ ता० की शाम तक लौट आऊँगा। ताइप की कलम से लिखने से तीन प्रतियाँ हो जाती हैं। Kores का २०१४ नं० का कारबन कारगर होता है।

विनीत
बनारसीदास

(१७)

फीरोजाबाद
८ ११ ७०

प्रिय भाई सत्येन्द्र जी,

यह तो आप जानते ही हैं कि रावण चतुर्वेदी ब्राह्मण था [इसलिये लङ्का पर चौबों का अधिकार होना चाहिये। इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न को यहाँ नहीं उठाना चाहता।] रावण ने एक बात बड़े पते की कही थी— शुभ काम में देरी न करें और अशुभ काम को पोस्टपोन करें" फिर आप स्व० आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों की तलाश कराने में इतना विलम्ब क्या कर

रहे हैं ? वह महत्वपूर्ण संग्रह आपके पास के पत्रो को शामिल किये बिना छप जाय और भूमिका मे आपके प्रमाद का उल्लेख हो, यह बात कैसे गवारा की जा सकती है ? कृपया तुरत ही उन पत्रो की खोज कराइये।

विश्व विद्यालय के लिये पुराने पत्रो की फाइलो के मामले मे क्या हुआ ? 'विशाल भारत' की फाइलें तो मैं अपने पास रखना ही चाहता हूँ— मधुकर की भी—शेष को बेच सकता हूँ। पर वे अव्यवस्थित है और पूरी होगी भी नही। आपका कोई आदमी उन्हे देख ले और फिर यदि आप चाहे तो उन्हे विश्व विद्यालय के लिये ले सकते हैं। मैं यह नही चाहता कि मेरा खयाल करके ही आप खरीदें।

मेरा अन्तर्जनपदीय विषयक वक्तव्य ब्रजभारती मे आ रहा है। ८ ता० को आगरे से वृन्दावनदास जी का स्वागत हुआ था, उस अवसर पर अमर उजाला मे मेरा एक लेख छप गया है। उसे भी कृपया पढ लीजिये।

विनीत
बनारसीदास

श्री वेंकटलाल ओझा को लिखे गये पत्र

(१७६)

टीकमगढ़ जिला झाँसी
२० १ ४०

प्रिय ओझा जी,

वन्दे। १७ का कृपापत्र मिला। कृतज्ञ हूँ। पत्र प्रदर्शनी के संयोजक का भाषण भी मिल गया। धन्यवाद। भाषण मे अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं। ऐसा क्यो ? स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट का जिक्र जरूर होना चाहिए था। स्वर्गीय गणेश शकर जी विद्यार्थी का आपने नाम नहीं लिया। यह तो जबरदस्त भूल हुई। आप 'उदन्त मार्तण्ड' के बाद एकदम बनारस अखबार' पर पहुँच गए हैं। बीच मे मेरा ख्याल है कि कई अन्य पत्र भी निकले 'विशाल भारत' की पुरानी फाइल मे उनका उल्लेख है।

भाई श्रीरामजी की योजना मुझे व्यावहारिक नही जँचती। जैसा कि मैंने अपने लेख मे लिखा था लेखको की भिन्न भिन्न श्रेणियाँ हैं, और उन्हे एक सूत्र मे बाँधना सम्भव नही। एक सहस्र सदस्यो का बनाना क्या आसान काम है ? और फिर रुपया उगाहना कैसे हो सकेगा ? आदर्शों की एकता ही बन्धुत्व स्थापित कर सकती है। इसलिये सर्वोत्तम उपाय यही है कि समानशील

लेखकों में गुट बनें और वे एक दूसरे की सहायता करने तथा साधन सम्पन्न व्यक्तियों से ग्रन्थ लिखवाने का उद्योग करें। इस तरह तो कुछ काम हो सकता है। मुख्य प्रश्न इस समय यह है कि लेखकों की दशा के विषय में सर्वसाधारण को ज्ञान कराया जाय और स्वयं लेखकों को शोषण से बचाया जाय।

'विशाल भारत' ने इस बार में ८ लेख छापे हैं। इन में ६ लेखकों के लिये पैसा देना पड़ा है। श्रीरामजी तथा मैं विशाल भारत से एक पैसा भी नहीं लेते। साधारण पाठकों की तबियत एक ही विषय पर अनेक लेख पढ़कर ऊबने लगती है फिर भी मैंने इस प्रचार में पत्र का भाग दे कर यथाशक्ति सेवा करने की कोशिश की है। सभी काम एक आदमी या एक पत्र पर नहीं छोड़े जा सकते। आप तथा अन्य बन्धुओं का कर्तव्य है कि वे इस विषय में आगे बढ़कर कुछ कर दिखावें। व्यक्तिगत रूप से मैं भी कुछ करता ही रहता हूँ।

मौलवी अब्दुलहक साहब के दर्शन करने कभी हैदराबाद आने का विचार था। वैसे मैं उनके साथ पानीपत की तीर्थ यात्रा हाली शताब्दी के अवसर पर, कर चुका हूँ और अभी दिल्ली में मैंने उनके दर्शन किये भी थे। हिन्दी में उनके जोड़ का कोई आदमी मुझे तो दीखता नहीं। उनके सभी विचारों से मैं सहमत नहीं, पर उनकी लगन का कायल अवश्य हूँ।

हैदराबाद की हिन्दी सम्बन्धी साहित्यिक जागृति के विषय में यदि आप मुझे कुछ लिख भेजें तो कृतज्ञ होऊँगा। वहाँ हिन्दी के लिए काम करने वाले कौन कौन हैं? उनके नाम तथा पते भी जानना चाहता हूँ। कभी अवकाश मिलने पर उधर आने की इच्छा है। पर आऊँगा उस मौके पर जब मौलवी साहब भी हों।

मेरे एक भाई श्रीयुत बनवारीलाल जी चतुर्वेदी इटावा वाले हैदराबाद राज्य के एक्साइज विभाग में हैं। कार्याधिक्य के कारण पत्र कम ही लिख पाता हूँ। समय पर उत्तर न दे सकूँ तो क्षमा कीजिए। मैं इस वर्ष प्राय यात्रा पर ही रहना चाहता हूँ।

क्या 'विशाल भारत' हैदराबाद में पढ़ा जाता है? अलग पार्सल से अपने लेख की प्रतियाँ भेजता हूँ। कृपया उन्हें सहयोगी बन्धुओं में बाँट दीजिए।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(१७७)

टीकमगढ़, जिला झासी
२०-५-४२

प्रियवर,

वन्दे ! आपका १७ ता० का कृपापत्र, जो ट्रेन स भेजा था, मिला। आप इधर नहा पधार सके इसका मुझे खेद है। खैर, कोई बात नही। जब भविष्य म उत्तर भारत की ओर आवें टीकमगढ़ का भी प्रोग्राम रखें।

हैदराबाद की हिन्दी सम्बन्धी नीति मेरी समझ मे नहीं आती। कृपया उसके सम्बन्ध मे पूरा-पूरा वृत्तान्त मुझे भेजिय। बहतर यह होगा कि आप श्रद्धेय टडन जी श्री सम्पूर्णानन्द जी, और भिक्षु आनन्द को न्यौता दीजिए। इन लोगों के मार्गव्यय का प्रबध तो आप लोग कर ही देंगे। मेरे जैसा साधारण कार्यकर्ता आपके किस काम का ? हाँ श्रीराम जी का उपयोग हो सकता है।

भाई बनवारीलाल जी श्रीयुत जगमोहन जी के घर के ही हैं—शायद उनके चाचा हैं। आप कभी उनसे जरूर मिलिये। अबकी बार मैंने इटावे में उनके दर्शन बहुत वर्ष बाद किय थे।

हैदराबाद *आने की अभिलाषा तो अवश्य है पर मैं जल्दी मे नहीं हूँ।* यह सब काल लब्धि का मामला है। रेल की यात्रा मे मुझे बहुत कष्ट हो जाता है, इसलिय यथासम्भव उससे दूर ही रहता हूँ।

मरा उद्देश्य अब सवसाधारण के लिए छोटे छोटे ट्रैक्ट छपाना है। 'मधुकर' के नवें अक का सम्पादकीय आप पढ लीजिय। उसमे आपको मेरी वर्तमान मनोवृत्ति का पता चल जायगा। ८, ८ १० तीन अक भिजवा रहा हूँ। साधना मदिर के पम्फलेट सस्ता साहित्य मडल कनाट सरकस, नई दिल्ली से मगा लीजिये। प्रत्येक का दाम एक एक आना है। शायद आपको पसद आ जावें।

श्री मौलवी अब्दुलहक साहब से अभी दिल्ली में मिला था आबोहर से लौटने के बाद। उनका पत्र तो अनेक बार बहकी बहकी सी बातें कहता है। मुझ तो वह इंफिरीयारीटी कम्पलेक्स का मामला दीखता है। उर्दू वालों को शायद यह भ्रम हो गया है कि उर्दू बहुत पिछडी हुई है और हिन्दी का क्षेत्र बहुत बढ रहा है। हैदराबाद स्टेट की नीति का दुष्परिणाम इधर उत्तर

भारत में अवश्य पड़ेगा। यहाँ पर उर्दू विरोधी वायुमंडल तैयार हो जायगा और इससे उर्दू वालों का घाटा ही रहेगा। मैं तो हिन्दी उर्दू में कोई भेद नहीं करता, उर्दू को हिन्दी का ही एक रूप मानता हूँ, बल्कि मेरा तो यह मत है कि प्रत्येक हिन्दी लेखक के लिए उर्दू पढ़ना अनिवार्य हो जाना चाहिए। उर्दू वाले यदि हिन्दी न पढ़ेंगे तो वे घाटे में रहेंगे। पर जहाँ कहीं भी अन्याय होगा चाहे वह उर्दू पर हो या हिन्दी पर उसकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी। इस अभागे देश में वैसे ही कौन कम झगड़े हैं जो नये झगड़े खड़े किये जाते हैं। हिन्दी सम्मेलन पर रोक लगा कर हैदराबाद रियासत ने उर्दू की ही जड़ पर कुठाराघात किया है। आप सम्पूर्ण मसाला मुझे भेजिये। तमाम फैक्ट्स एंड फिगर्स चाहिये। कोई बात अयुक्तिमय न होनी चाहिये। माडर्न रिव्यू में मैं लिखना चाहता हूँ। आशा है कि आप सकुशल है।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(१७८)

टीकमगढ़ जिला झांसी
२६ ६ ४२

प्रियवर,

वन्दे! आपका कृपापत्र मिला। यदि आप मुझे निश्चित तिथि लिख सकें तो ठीक हो। वैसे मैं कहीं जाने वाला नहीं, पर यदि सम्भव हुआ तो १ २ अक्टूबर को ३ दिन के लिये यहाँ के एक स्थान जतारा जाने का विचार है निश्चय नहीं। आप कब तक पधारेंगे?

ललितपुर से सवेरे ६ ६॥ बजे मोटर मिलती है। कुण्डेश्वर टीकमगढ़ से पहले ही नदी तट पर है। मैं बड़े बगीचे में रहता हूँ, मोटर बगीचे के निकट सड़क पर खड़ी कर लीजिये। यहाँ मोटर करीब १२ बजे आ जाती है।

हमारे सहकारी सम्पादक अब तक बीमार ही हैं। एक ससहरी जरूर लाइये और कुछ फल भी। मच्छर यहाँ बहुत हैं। ललितपुर में म्यूनिसिपैलिटी के सेक्रेटरी चतुर्वेदी श्यामसुन्दर जी मेरे सहपाठी मित्र हैं। ललितपुर में ओरछा राज्य के एजेण्ट रानीबाग में रहते हैं। १०) रुपये का मनीआर्डर मिला था और बन्डल भी। यहाँ सब मलेरिया में बीमार पड़े रहे। कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे गये पत्र

(१७९)

फीरोजाबाद
१६-२-६६

प्रिय दुबे जी,

प्रणाम ! आप उस दिन इतनी देर से पधारे कि मैं आपका कोई आतिथ्य न कर सका। इसका मुझे खेद है। अभिनंदनी की संशोधित प्रति मिल गई है। तदर्थ धन्यवाद। उस पुस्तिका मे मेरी प्रशसा के इतने पुल बाधे गये हैं कि उन्हें देखकर स्वय मुझे आश्चर्य होता है। अब मैं भली भाँति समझ सकता हूँ कि सुधासिन्धु अमृताजन तथा डोंगरे का बालामृत की इतनी बिक्री क्या होती है। यह सब विज्ञापन का शुभ (या अशुभ ?) परिणाम है। मैं सन् १९१२ से निरन्तर कलम घसीटता रहा हूँ और पिछले ५७ वर्षों म न जाने कितने ऊट पटाग लेख लिख डाले होगे। वास्तव म बहुत अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ। मौलवी अब्दुलहक साहब एक कविता गुनगुनाते रहते थे।

मेरे साथी मुँह न देखें उनको गर मालूम हो।
उनसे क्या कहता रहा और आप क्या करता रहा॥

अभिनंदिना की कितनी प्रतियाँ आपने छपवाइ थी। कुछ पत्रों पर भिजवाना चाहता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(१८०)

२३ २ ६६

प्रिय दुबे जी

सादर प्रणाम ! कृपापत्र मिला। आगरे पहुँच कर मैं आपके दर्शन नही कर सका, इसका मुझे खेद है।

मेरी पुत्री सौ० देवकी का आपरेशन होने वाला है इसलिए चिन्तित हूँ। जामाता श्री सुरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, ४ लाजपत कुज सिविल लाइन्स पर रहते हैं। बी० आर० कालेज म बौटेना के अध्यापक है। चकि प्राइवेट वाड खाली नही इसलिए नर्सिंग होम (राजामण्डी स्टेशन के निकट) मे रहना होगा। मेरे लिए तो यात्राएँ अत्यन्त कष्टप्रद होती हैं, इसलिए आना सम्भव नहीं।

८ मार्च को स्व० भाई हरिशङ्कर जी की पुण्य तिथि है। यदि स्वास्थ्य ठीक रहा तो हाजिर होऊँगा। पुस्तिका में पूज्य पिताजी का नाम अशुद्ध छप गया है। उनका नाम था गणेशीलाल।

आप बन्धुवर मथुराकान्त जी शास्त्री से मिल आये तो मैं भी आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। महात्मा गांधी तो एक कुष्ठ रोगी परचुरे शास्त्री के पैरों की मालिश करते थे। उनके शताब्दी वर्ष में यदि हम भारत के ५० लाख कोढ़ियों के प्रश्नों पर कुछ ध्यान दें तो यह सर्वथा उचित ही होगा। कल २८ ता० सत्यनारायण जन्म दिवस है।

विनीत
बनारसीदास

(१८१)

फ़िरोज़ाबाद
१५ ४ ६६

प्रिय दुबे जी,

पुण्यतिथि के दिवस पर सत्यनारायण कविरत्न का स्मरण करने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए। उनके समस्त ग्रन्थों के पुनर्मुद्रण का क्या हुआ? श्री वित्तमन्त्री यहाँ पधारे थे। उन्हें मैंने श्रीधर पाठक संग्रहालय तथा कविरत्न सत्यनारायण के मन्दिर के उद्धार के विषय में कहा था। अपना भाषण छपा भेज रहा हूँ।

आप भी श्री लक्ष्मीरमण आचार्य को धाँधूपुर के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए लिखें। श्रीधर पाठक की हुकर गंज वाली कोठी बिकाऊ है। मालिक उसे खाली नहीं करता। उसे भी श्रीधर पाठक संग्रहालय बनाया जा सकता है।

विनीत
बनारसीदास

(१८२)

नई दिल्ली २२
१ ३-७१

श्री दुबे जी,

प्रणाम! परसों बाबू वृन्दावनदास जी मथुरा से पधारे थे। आपके शुभनाम की भी चर्चा चली।

आजकल आप क्या साहित्यिक कार्य कर रहे हैं? स्व० ज्वालादत्त शर्मा मुरादाबाद के ही थे। हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक थे और उर्दू के अच्छे

जानकार भी। उन पर कोई शोध ग्रन्थ तयार करना चाहता था, फिर पता नही लगा कि वह काय कहाँ तक आग बढा।

२४ फरवरी को सत्यनारायण कविरत्न की जन्मतिथि थी। नवभारत टाइम्स तथा अमर उजाला म छोटा सा लेख भेज दिया था। आपके आगरे से चले जाने के बाद वहाँ के साहित्यिक काय म कुछ शिथिलता आ गई है। पर आप तो जहाँ भी रहग अपनी साहित्यिक साधना को जाग्रत रक्खेंगे।

सासनी के जन इन्टर कालेज के श्री राजेन्द्ररजन चतुर्वेदी उक्त स्थान पर विशेपाङ्क निकाल रहे हैं। मुरादाबाद के किसी कालेज को उस जिले की साहित्यसेवा पर विशेपाङ्क निकालना चाहिये।

राजा जयकृष्णदास जी जिन्होने स्वामी दयानन्द के सत्याथ प्रकाश को छपाने मे मदद दी थी, मुरादाबाद के ही थे।

विनीत
बनारसीदास

श्री राधेश्याम जी रावत को लिखा गया पत्र

(१८३)

फीरोजाबाद
१४ ४ ६६

प्रिय रावत जी,

जब 'उत्तर प्रदेश' के वित्तमन्त्री श्री लक्ष्मीरमण आचाय जी फीरोजाबाद पधारे थे तो मैंने उनकी सेवा मे उपस्थित होकर जो निवेदन किया था। उसका सार यह है।

पिछले २० २१ वर्षों से मेरे क्षुद्र जीवन का सम्पूण समय शहीदो के श्राद्ध म ही व्यतीत होता रहा है। और उस विषय पर थोडी सेवा भी मुझसे बन पडी है। यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि सरकार तथा जनता द्वारा यह पुण्य काय उपेक्षित रहा है। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पूज्य माताजी सत्रह वष तक भूखो मरती रहीं तब कहीं अपने जीवन के ढाई वर्षों मे उन्हे पेंशन मिली।

शहीदे आजम अशफाकुल्ला के बडे भाई रियासतुल्ला खाँ बहुत दिना तक तकलीफ म रहे, फिर किदवई साहब की मिहरबानी से चुगी म उन्हें नौकरी मिली थी। उसके छूटने पर उन्हें ७५) की पेंशन करा दी गई थी। वे अब स्वगवासी हो चुके हैं, और उनके कुटुम्ब के ५ प्राणी अब घोर आर्थिक सकट

का सामना कर रहे हैं। अगर उत्तर प्रान्तीय सरकार शहीद अशफाक के भतीजे इश्फाकुल्लाखाँ को सहारा नहीं देगी तो उस कुटुम्ब का खातमा समझ लीजिए। अशफाक ने अपने एक अन्तिम पत्र में वतनी भाइयों से यह प्रार्थना की थी कि वे उनके भाइयों का खयाल रखें। जब अशफाक से कहा गया कि अगर वे चाहें तो उन्हें फ्रंटियर पार करा दिया जाय तो उन्होंने साफ साफ कहा था—

'अरे भाई! एक मुसलमान को भी फाँसी चढ़ने दो।' और बड़ी खुशी के साथ वे फाँसी के तख्ते पर झूल गये—कुल जमा २७ वर्ष की उम्र में। अमर शहीद गणेश जी तथा श्रद्धेय टंडन जी अशफाक की आलीशान समाधि बनाना चाहते थे पर वे ऐसा न कर सके। पर अशफाक के सबसे बड़े स्मारक तो उनके कुटुम्बी हैं जिन्हें भूखा मरने से बचाना है।

स्वार्थ और परमार्थ दोनों दृष्टियों से हमारा यह फर्ज है कि शहीदों की स्मृति रक्षा तथा उनके कुटुम्बियों के भरण-पोषण का हम मुनासिब इन्तजाम करें। अस्वस्थ होते हुए भी मैं सिर्फ यही अर्ज करने के लिए आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

श्री मलखानसिंह जी सीसोदिया को लिखे गये पत्र

(१८८)

फीरोजाबाद
५.६.६७

प्रिय श्री मलखानसिंह जी

यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि शहीद महावीरसिंह अङ्क २० जून को निकल जायगा। अब मैं समझता हूँ कि मेरी एटा-यात्रा पूर्ण रूप से सफल हुई।

मैं यात्रा प्रायः नहीं ही करता और इस बार भाई बालकृष्ण गुप्त के आग्रह से मुझे एटा पहुँचना पड़ा। आप लोगों के आतिथ्य तथा उत्साह से मैं बहुत प्रभावित हुआ। निस्सन्देह एटा में काम करने के लिए फीरोजाबाद की अपेक्षा कहीं अधिक गुंजाइश है। यहाँ तो औद्योगिकता ने साहित्य तथा संस्कृति का दबाव कर रख दिया है। खैर, सूनी और शान्ति कब तक दब जायगी?

आप श्री वृन्दावनदास जी बी ए एल एल बी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल मथुरा से सम्पर्क स्थापित करें। उनको भी पत्र भेज रहा हूँ ब्रजसाहित्य मंडल के उद्धार के लिये वे प्रयत्नशील हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१८५)

फीरोजाबाद
१६ ११ ६७

प्रियवर

शहीद महावीरसिंह के विषय मे अन्य लेख भी कुछ मिले? डा० मुंशीराम जी का तो वहीं मिल गया था। क्या 'पराग' जी ने भी भेज दिया? अब बिना विलम्ब उन सबको छपा देना चाहिये। कृपया अङ्क की एक प्रति डाक्टर हरिदत्त पालीवाल साहित्याचार्य उपमन्यु भवन कायम गंज फर्रुखाबाद को भेंट स्वरूप भेज दीजिये। वे संस्कृत मे काव्य लिखते हैं। भगतसिंह विषयक कविता मे उन्होंने महावीरसिंह का उल्लेख किया है। आपका शोध कार्य कैसा चल रहा है।

विनीत
बनारसीदास

(१८६)

फीरोजाबाद
१८ १ ७१

प्रिय भाई मलखानसिंह जी,

कल सौभाग्यवश स्व० रामचरणलाल जी विषयक सामग्री अकस्मात् ही मिल गई। उसे मैंने आपके अध्यापक महोदय को सौंप दिया है।

कृपाकर स्व० शिवचरणलाल तथा डा० युद्धवीरसिंह के पत्रों की ५, ५ प्रतियाँ टाइप करा लीजिये और ३, ३ प्रतियाँ मूल पत्रों के साथ मुझे रजिस्ट्री द्वारा भेज दीजिये।

स्व० रामचरणलाल जी का चित्र बम्बई भेजा गया है। लौटने पर उससे तैल चित्र बनवाया जा सकता है। आपके महाविद्यालय ने शहीद महावीरसिंह पर विशेषाङ्क निकाला और अब स्व० रामचरणलाल पर अङ्क निकाल सकते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि इसे अडमान—अङ्क बना दें। तब

अन्य लोगों के लेख भी—बहुत बढ़िया लेख—उसमें दिये जा सकते हैं। यह श्राद्ध कम आपके लिये ही सुरक्षित था।

बाबा पृथ्वीसिंह, विजयकुमार सिन्हा, प० परमानन्द इत्यादि के लेख मिल जावेंगे। भाई परमानन्द वाटॅगन वाघ के पुराने लेख ले लें।

बनारसीदास

(१८७)

फारोजाबाद
१६-१ ७१

प्रिय भाई मलखानसिंह जी,

वन्दे ! मेरे अनेक स्वप्न पूरे हुए हैं और सो भी बिल्कुल आकस्मिक ढङ्ग पर। शहीद महावीरसिंह विशेषाङ्क का स्वप्न भी उन्हीं में से एक था। मैंने आपके कालेज का शुभ नाम भी नहीं सुना था, जब भाई बालकृष्ण जी गुप्त के नाम एटा के भूतपूर्व एम एल ए का फोन आया कि मुझे आपके कालेज के कवि सम्मेलन का प्रधान बनना है उसी के परिणाम स्वरूप शहीद महावीरसिंह की कीतिरक्षा हो गई।

स्वयं मुझे इस बात का पता नहीं था कि रामचरणलाल जी एटा के थे। वह पाण्डु लिपि भी [जो अब ५, ६ दिन बाद National archives दिल्ली को चली जावेगी] बिल्कुल अकस्मात् ही मुझे मिल गई। साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उसके लेख छप भी गये।

यदि आप अपने कालेज की पत्रिका का रामचरणलाल अङ्क निकाल सकें तो यत्किंचित आर्थिक सहायता मैं भी दे सकता हूं। उसके लिये अतिरिक्त चन्दा किया जा सकता है। आज के सनाढ्यपुर बीरों का रामचरणलाल के नाम तक का पता न होगा। मुझे इस बात में शक है कि एटा के एम एल ए या एम पी ने उनका या महावीरसिंह का नाम भी सुना होगा। पहले से प्लान बना लीजिये। चन्दे में बालकृष्ण जी गुप्त भी १००) रुपए दे ही देंगे। अपने शहीद कक्ष का भी निर्माण कर लीजिये। आपके विद्यार्थियों को शहीदों के विषय में कुछ न कुछ ज्ञान होना ही चाहिये। आपकी पत्रिका के इस नवीन अङ्क का मूल्यांकन आगे चल कर होगा। बाबा पृथ्वीसिंह [हिन्दु विहार भाव नगर, सौराष्ट्र] को अभी से पत्र लिखकर इस अङ्क के विमोचन संस्कार के लिये बुलाइये।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

अभी श्री बालकृष्णगुप्त ने १०१) रुपये देने का वचन दे दिया है। आप धन्यवाद का पत्र उनको हनुमानगज, फीरोजाबाद के पते पर तुरन्त भेजिये।

बनारसीदास

श्री रामशङ्कर द्विवेदी एम ए उरई को लिखे गये पत्र

(१८८)

फीरोजाबाद
२-१ ६५

प्रियवर,

आपके सद्भावना युक्त पत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। सबसे प्रथम आप अपने शोध निबन्ध की स्वीकृति के लिय प्रयत्न कीजिये। पहले तो डा० सत्येन्द्र जी से इस विषय मे मदद मिल सकती थी, पर वे तो अब राजस्थान चले गये। बिना घूमे फिरे यह काम नही बनने का।

हिन्दी संस्मरण साहित्य विषय स्वय मे कुछ महत्व रखता है और डाक्टरेट के लिय न सही वसे ही स्वान्त सुखाय इसका अध्ययन मनोरजक तथा शिक्षाप्रद होगा।

सस्मरण जिन जिन ने लिखे हो, उन्हें पढ लीजिए। बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, बनीपुरी जी, प्रेमचन्द्र जी, शिवपूजन जी उग्र जी प्रभृति पचासो व्यक्तियो के लिखे सस्मरण साहित्य क्षेत्र म बिखरे पडे हैं। पुराने पुस्तकालयो मे जाकर उन्हे पढा जा सकता है। रेखाचित्रो और सस्मरणो म आखिर मानव चरित्र का चित्रण ही रहता है, इसलिए दोनो का परस्पर सम्बन्ध है। उर्दू तथा अग्रेजी म भी और बगला इत्यादि मे भी इस विषय पर काफी मसाला होगा। बाव ए उर्दू मौलवी अब्दुलहक साहब के कई सस्मरण लाजवाब बन पडे थ—एक ढेढ माली नामदेव का और दूसरा एक सिपाही का। सबका यथासम्भव खोजकर पढ लेना चाहिए। डाक्टरेट मिले या न मिले उससे कुछ ज्यादा बनता बिगडता नही पर किसी एक विषय का विशेषज्ञ बन जाने से लाभ ही लाभ है। विशाल भारत के पुराने अको मे स्व० रामानन्द बाबू के तीन सस्मरण बहुत बढिया हैं—कवीन्द्र श्री रवीन्द्र के, बालकृष्ण भट्ट के और सिस्टर निवेदिता के। Modern Review म भी कितने ही उत्तमोत्तम सस्मरण छपे थे। अग्रेजी म तो इस विषय का अखण्ड भडार है।

'एकहि साधे सब सधै' यानी भगवन आपने सुनी होगी। 'सब साधे सब जाइ' दुनिया भर के विषयों की चिन्ता छोड़िए। रामानन्द बाबू के स्मृति ग्रन्थ के लिए कलकत्ते का हिन्दी भाषा भाषी समाज कुछ कर सकता है, यदि मैं २ महीने वहाँ जाकर रहूँ पर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं और मैं वहाँ जा नहीं सकता। और किसी को इस श्राद्ध की विशेष चिन्ता नहीं। स्व० बड़े बाबू के सुपुत्र यदि चाहें तो दस बीस हजार रुपये इस यज्ञ में खर्च कर सकते हैं पर वे करेंगे नहीं। इसलिए जो कुछ भी यहाँ से खट-पट कर सकता हूँ करूँगा।

लम्बी चौड़ी आयोजनाएँ निरर्थक हैं। न पैसा है न काम करने वाले फिर आयोजना बनाने से क्या लाभ? आप अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक विषय पर लगाइये और उसके विशेषज्ञ बन जाइये। यह युग Specialization का है।

स्व० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों पर अवश्य लिखें। उनके कुछ पत्र हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग ने भी छापे थे— द्विवेदी जी तथा समकालीनों के पत्र' नामक पुस्तक में जो श्री बैजनाथसिंह विनोद ने सम्पादन करके छपाई थी। मूल्य ५) है। स्वयं पत्र साहित्य एक महान समुद्र है जिसमें गोते लगाने से अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

अपनी जीविका के बाद बाकी बचे वक्त में आप घूम घूम कर संस्मरण साहित्य तथा पत्र साहित्य पर मसाला इकट्ठा करते रहें और फुटकर लेखों के लिये कुन्तखंडी ग्रामगीत इत्यादि का भी संग्रह करें। ४-५ वर्ष में आपके पास अच्छी सामग्री इकट्ठी हो जायगी। कमरा साथ में हो तब तो क्या कहना। परिव्राजक ही हमारे देश में कुछ कर सकते हैं। दूसरों की कीर्ति-रक्षा एक अत्यन्त उपयोगी पुण्यकार्य है।

ज्यादा मैं लिख नहीं सकता। सिर्फ एक आँख से ही काम लेना पड़ता है। Dictate कराने का अभ्यास नहीं। पत्रोत्तर देने में मुझे श्रम पड़ जाता है। आप पत्र भेजते रहें, जब कभी फुर्सत मिलेगी, इकट्ठे ही संक्षिप्त उत्तर दे दूँगा।

अपने पत्रों की कार्बन कापी बराबर रख लें। जरा सा जोर देकर लिखने से वह बन सकती है। मेरी चिट्ठियाँ बीच में गायब हो जाती हैं। डाक इतनी अधिक आती है कि पता ही नहीं चल पाता। हैदराबाद में एक लड़की इसी विषय पर पी एच डी करना चाहती थी। श्री वंशीधर जी विद्यालंकार ने मुझे लिखा था पर फिर उसने कुछ किया नहीं।

बनारसीदास

(१८९)

फीरोजाबाद
२७ १-६५

प्रियवर,

सस्मरण विषय पर अग्रेजी म एक ग्रन्थ है वह शायद अभी कालेजा म पढाया जाता है। उसे पढिये। शायद स्व० अमरनाथ जी द्वारा सग्रहीत था। मौलवी अब्दुलहक साहब के सस्मरण बहुत बढिया थे। सर रास मसूद के विषय मे उनके सस्मरणा को देव नागरी लिपि मे वि भा म मैंने ही छपाया था।

यह एक विषय ही बहुत पर्याप्त है। हां, पत्रो का सग्रह साथ साथ करते चलिये। बेलनगज (आगरे) म पालीवाल जी का पुस्तकालय बहुत अच्छा है। वहाँ बठकर नक्ल कर सकत हैं।

६ ता० को हम लोग वसन्त पचमी मनावेंगे। उस दिन ५ तारीख की शाम को आप आ सकते हैं। यात्रा म एकाध दिन से अधिक ठहरने का प्रबन्ध मुश्किल से हो सकेगा। न किसी क पास इतने साधन हैं, न वक्त, इसलिए एक दिन से अधिक का प्रोग्राम कही का भी न रखिए।

बडे नगरो म जहाँ धमशाला या होटल हा, वहाँ की बात दूसरी है। आजकल अतिथि सत्कार म लागो की श्रद्धा नही रही।

भाई श्रीराम जी शर्मा अब आँखा स बिल्कुल नहीं देख पाते। उनका नव जीवन फाम यहाँ से ७, ८ मील दूर है। बस उसाइनी तक जाती है, वहा स २ २॥ फर्लांग होगा। बस वाले शायद कहने से खडी भी कर लें। श्रीराम जी का पता बल्का बस्ती आगरा। पहल से समय निश्चित करक जाइये और यह भी लिख दीजिये कि इतनी देर ठहरेंग। शिवपूजन जी के पत्रा का सग्रह तो उनके सुपुत्र ही कर रहे हैं। आप तो सस्मरण साहित्य के ही विशेषज्ञ बन जाइये।

Some autobiographies यह नाम है स्व० अमरनाथ झा द्वारा सग्रहीत पुस्तक का। आयनगर कानपुर में रामराज्य के सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त जी स जरूर मिलिये। नरेशचन्द्र चतुर्वेदी से भी। श्री सनेही जी के ग्राम की तीर्थयात्रा भी कर आइय। प्रकाशका पर मेरा प्रभाव नही। पत्र भेजते समय पते के साथ लिफाफा रख दें तो शायद उत्तर जल्दी मिले। जिस किसी से मिलें, प्रश्नावली पहले से भेज दें ताकि वह उत्तर देने क लिए प्रस्तुत रह।

विनीत
बनारसीदास

'एकहि साध सब सधै' वाली कहावत आपने सुना होगी। 'सब साधे सब जाई' दुनिया भर के विषयों की चिन्ता छोड़िये। रामानन्द बाबू के स्मृति ग्रन्थ के लिए कलकत्ते का हिन्दी भाषा भाषी समाज कुछ कर सकता है, यदि मैं २ महीने वहाँ जाकर रहूँ पर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं और मैं वहाँ जा नहीं सकता। और किसी को इस श्राद्ध की विशेष चिन्ता नहीं। स्व० बड़े बाबू के सुपुत्र यदि चाहें तो दस बीस हजार रुपये इस यज्ञ में खर्च कर सकते हैं पर वे करेंगे नहीं। इसलिए जो कुछ भी यहाँ से खट-पट कर सकता हूँ करूँगा।

लम्बी चौड़ी आयोजनाएँ निरर्थक हैं। न पैसा है, न काम करने वाले फिर आयोजना बनाने से क्या लाभ? आप अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक विषय पर लगाइये और उसके विशेषज्ञ बन जाइये। यह युग Specialization का है।

स्व० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों पर अवश्य लिखें। उनके कुछ पत्र हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग ने भी छापे थे—'द्विवेदी जी तथा समकालीनों के पत्र" नामक पुस्तक में जो श्री बैजनाथसिंह विनोद ने संग्रह करके छपाई थी। मूल्य ५) है। स्वयं पत्र साहित्य एक महान समुद्र है जिसमें गोते लगाने से अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

अपनी जीविका के बाद बाकी बचे वक्त में आप घूम घूम कर सस्मरण साहित्य तथा पत्र साहित्य पर मसाला इकट्ठा करते रहें और पुस्तक चर्चा के लिये बुन्देलखंडी ग्रामगीत इत्यादि का भी संग्रह करें। ४, ५ वर्ष में आपके पास अच्छी सामग्री इकट्ठी हो जायगी। कमरा साथ में हो तब तो क्या कहना। परिव्राजक ही हमारे देश में कुछ कर सकते हैं। दूसरों की कीर्ति रक्षा एक अत्यन्त उपयोगी पुण्यकार्य है।

ज्यादा मैं लिख नहीं सकता। सिर्फ एक आँख से ही काम लेना पड़ता है। Dictate कराने का अभ्यास नहीं। पत्रोत्तर देने में मुझे श्रम पड़ जाता है। आप पत्र भेजते रहें जब कभी छुट्टी मिलेगी, इकट्ठे ही संक्षिप्त उत्तर दे दूँगा।

अपने पत्रों की कार्बन कापी बराबर रख लें। जरा सा जोर देकर लिखने से वह बन सकती है। मेरी चिट्ठियाँ बीच में गायब हो जाती हैं। डाक इतनी अधिक आती है कि पता ही नहीं चल पाता। हैदराबाद में एक लड़की इसी विषय पर पी एच डी करना चाहती थी। श्री वंशीधर जी विद्यालंकार ने मुझे लिखा था, पर फिर उसने कुछ किया नहीं।

बनारसीदास

(१८६)

फीरोजाबाद
२७-१-६५

प्रियवर,

सस्मरण विषय पर अग्रेजी म एक ग्रन्थ है वह शायद अभी कालेजों मे पढाया जाता है। उसे पढिये। शायद स्व० अमरनाथ जी द्वारा सग्रहीत था। मौलवी अब्दुलहक साहब के सस्मरण बहुत बढिया थे। सर रॉस मसूद के विषय म उनके सस्मरणों का देव नागरी लिपि मे वि भा म मैंने ही छपाया था।

यह एक विषय ही बहुत पर्याप्त है। हां, पत्रो का सग्रह साथ-साथ करते चलिये। बलनगज (आगरे) म पालीवाल जी का पुस्तकालय बहुत अच्छा है। वहाँ बैठकर नक्ल कर सकते हैं।

६ ता० को हम लोग बसन्त पचमी मनावेंगे। उस दिन ५ तारीख की शाम का आप आ सक्ते हैं। यात्रा म एकाध दिन स अधिक ठहरने का प्रबन्ध मुश्किल से हो सकेगा। न किसी के पास इतने साधन हैं, न वक्त, इसलिए एक दिन स अधिक का प्रोग्राम कहो का भी न रखिए।

बडे नगरा मे जहाँ धर्मशाला या होटल हो, वहाँ की बात दूसरी है। आजकल अतिथि सत्कार मे लागा की श्रद्धा नही रही।

भाई श्रीराम जी शर्मा अब आँखा से बिल्कुल नहीं देख पाते। उनका नव जीवन फार्म यहाँ से ७ ८ मील दूर है। बस उसाइनी तक जाती है, वहाँ स २, २।। फर्लांग होगा। बस वाले शायद कहने से खडी भी कर लें। श्रीराम जी का पता बल्का बस्ती आगरा। पहले से समय निश्चित करके जाइये और यह भी लिख दीजिय कि इतनी दर ठहरेंगे। शिवपूजन जी के पत्रा का सग्रह ता उनके सुपुत्र ही कर रह हैं। आप तो सस्मरण साहित्य क ही विशेषज्ञ बन जाइये।

Some autobiographies यह नाम है स्व० अमरनाथ या द्वारा सग्रहीत पुस्तक का। आयनगर कानपुर म रामराज्य के सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त जी स जरूर मिलिये। नरेशचन्द्र चतुर्वेदी से भी। श्री सनेही जी के ग्राम की तीर्थयात्रा भी कर आइये। प्रकाशकों पर मेरा प्रभाव नही। पत्र भेजते समय पते के साथ लिफाफा रख दें तो शायद उत्तर जल्दी मिले। जिस किसी से मिलें प्रश्नावली पहल स भेज दें ताकि वह उत्तर देने क लिए प्रस्तुत रहे।

विनीत
बनारसीदास

(१६०)

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! आपका काड मिला। मैं १० फरवरी स यहाँ हूँ और अभी कुछ दिन ठहरने का विचार है।

आप मरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विस्तृत समीक्षा लिखकर अपना बहुमूल्य समय को बवाद करना चाहते हैं यह जानकर चिन्ता हुई। मैं ता आवश्यकता स अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ और अपनी प्रशसा पढ़त पढ़त ऊब चुका हूँ। सन् १६२४ म मरे साथी श्रीयुत सदाशिव गोविन्द वझे [S G Vaze Editor Servant Of India, Poona] न जो पूव अफ्रिका गय थ मुझे over—advertised की उपाधि स अलकृत किया था। उसके ४७ वष बाद ता मैं तब स कई गुना विज्ञापित हो चुका हूँ। भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश है—'अजु न ! दरिद्रा का पालन करो, धनवाना का धन मत दो।

'दरिद्रान भर कौन्तय, मा प्रयच्छेश्वरधनम्

पर इस बात पर कौन ध्यान देता है। अपने ग्रन्थ म बहुत स लग मैं पढ़ भी नहीं सका। हलवाई को मिठाइ खाने की रुचि नहीं होती। मैं ता कीर्ति रूपी मिठाई दूसरा का निरन्तर खिलाता रहा हूँ। उस मिठाई का खान की कोई इच्छा मरे मन म विद्यमान नहीं, बात दरअसल यह है निरन्तर ५८ वष स लिखन के कारण मरा नाम बराबर हिन्दी जनता के सम्मुख आता रहा है। मरा प्रथम लेख १६१२ म छपा था—मई म—और तीन महीने बाद मरे लेखक जीवन की ६० वीं वष शुरू हो जायगी। मरे लख पढ़त-पढ़त जनता तग आ गई होगी, इसलिय अब अपन लिखा द्वारा लख लिखाना चाहता हूँ। खेद की बात तो यह है कि मरी ८ किताबें अध लिखी पड़ी हैं और ७६ वा वष म मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता। मुझ Retire हो जाना चाहिय, पर यह आदतें जल्दी नहीं छूटतीं।

आप किसी विषय पर Sp cialise क्यों नहीं कर लत ? मसलन् बच्चा के विषय पर। ससार क भिन्न भिन्न देशा म बालक बालिकाआ क लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर लिखिय। यह युग विशषज्ञा का है। कमरा तो आपक पास होना ही चाहिए। बानल विषय (Relieving subject) मान्दिय सविया का कीर्ति रक्षा रख सकत हैं। डाक की व्यवस्था क लिय पहले कोतल घोड रक्ख जात थ।

मुझे गप्प लगाने और चिट्ठी लिखने की बीमारी है–दोनों एक ही हैं —और काम कर कम पाता हूँ—बातें ज्यादा करता हूँ। यह वास्तविक सत्य है। यदि मैं मौन रह सकता और पत्र न लिखता तो तिगुनी सेवा कर सकता। यह लम्बी चिट्ठी भी तोबा करते हुए गुनाह करने का उदाहरण है।

बडे बडेन की अक्ल अब चरन लग गई घास।
फोक्ट मे डी लिट बने श्री बनारसीदास॥

बनारसीदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

(१८१)

फीरोजाबाद
१२ ९-६४

प्रिय भाई राजेश्वर जी,

पालागन। कृपापत्र मिला। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए मैं कह नही सकता कि मैं आगरे कब आ सकूगा। अपने मुँह पर अपनी प्रशसा इतनी बार सुन चुका हूँ कि उससे तबियत ऊब गई है। हाँ, अमृतलाल जी (उफ बाबू) कुछ खरी खोटी सुनाने को तयार हो तो दूसरी बात है।

बन्द कमरों म बठ कर गुणगान—यह सब मुझे अत्यन्त कृत्रिम लगता है। क्यो न किसी प्राकृतिक स्थल की पैदल यात्रा की जाय। औपचारिकताएँ बिल्कुल व्यथ हैं। वतमान परिस्थिति मे एक गिलास ठण्डाई या दो प्याले चाय और एक पापड बस इससे ज्यादा खच करना महज हिमाकत है। डेढ दो घण्टे स अधिक इस अव्यापार म खच न किया जाय। कब तक आप लोगो के दशन कर सकूगा इसका अभी निश्चय नहीं। श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा यहाँ पधारे थ। बाबू ने कविता पाठ द्वारा रगत लादी, और भी कवि थे।

विनीत
बनारसीदास

(१८२)

नैनीताल
६ ७ ६५

प्रिय श्री राजेश्वर जी,

१ पत्र तभी जानदार बन सकता है जब कि कोई उसे पूरा-पूरा समय तथा शक्ति प्रदान करे। चूकि आप नित्यप्रति २, २॥ घटे मे अधिक नहीं दे सकेंगे, इसलिए पत्र का सजीव बनाना सम्भव न होगा।

(१९०)

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! आपका कार्ड मिला। मैं १० फरवरी से यहाँ हूँ और अभी कुछ दिन ठहरने का विचार है।

आप मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विस्तृत समीक्षा लिखकर अपने बहुमूल्य समय को बर्बाद करना चाहते हैं, यह जानकर चिन्ता हुई। मैं तो आवश्यकता से अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ और अपनी प्रशंसा पढ़ते पढ़ते ऊब चुका हूँ। सन् १९२४ में मेरे साथी श्रीयुत सदाशिव गोविन्द वझे [S G Vaze Editor Servant Of India, Poona] ने जो पूर्व अफ्रिका गये थे मुझे over—advertised की उपाधि से अलंकृत किया था। उसके ४० वर्ष बाद तो मैं तब से कई गुना विज्ञापित हो चुका हूँ। भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश है— "अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो, धनवानों को पैसा मत दो।

'दरिद्रान भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरेधनम्

पर इस बात पर कौन ध्यान देता है। अपने ग्रन्थ के बहुत से लेख मैं पढ़ भी नहीं सका। हलवाई को मिठाई खाने की रुचि नहीं होती। मैं तो कीर्ति रूपी मिठाई दूसरों को निरन्तर खिलाता रहा हूँ। उस मिठाई का स्वाद की कोई इच्छा मेरे मन में विद्यमान नहीं, बात दरअसल यह है निरन्तर ५६ वर्ष से लिखने के कारण मेरा नाम बराबर हिन्दी जनता के सम्मुख आता रहा है। मेरा प्रथम लेख १९१२ में छपा था—मई में—और तीन महीने बाद मेरे लेखक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू हो जायगी। मेरे लेख पढ़ते-पढ़ते जनता तंग आ गई होगी, इसलिये अब अपने लिखा द्वारा लेख लिखाना चाहता हूँ। खेद की बात तो यह है कि मेरी ८ किताबें अधूरी लिखी पड़ी हैं और ७९ वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता। मुझे Retire हो जाना चाहिये पर वह आदतें जल्दी नहीं छूटतीं।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लेते? भगवत् वचनों के विषय पर। संसार के भिन्न भिन्न देशों में बालक बालिकाओं के लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर लिखिये। यह युग विशेषज्ञों का है। कमरा तो आपके पास होना ही चाहिए। बालक विषय (Reli ving subject) साहित्य सेवियों को कीर्ति दिला रहा सकते हैं। डाक की व्यवस्था के लिये पहले कागज छोड़ रखे जाते थे।

मुझे गप्प लगाने और चिट्ठी लिखने की बीमारी है-दोनों एक ही हैं — और काम कर कम पाता हूँ—बातें ज्यादा करता हूँ। यह वास्तविक सत्य है। यदि मैं मौन रह सकता और पत्र न लिखता तो तिगुनी सेवा कर सकता। यह लम्बी चिट्ठी भी तौबा करते हुए गुनाह करने का उदाहरण है।

बडे बडेन की अकल अब चरन लग गई घास।
फोकट मे डी लिट बने श्री बनारसीदास॥

बनारसीदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

(१६१)

फीरोजाबाद
१२ ६-६४

प्रिय भाई राजेश्वर जी,

पालागन ! कृपापत्र मिला। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए मैं कह नही सकता कि मैं आगरे कब आ सकूगा। अपने मुँह पर अपनी प्रशसा इतनी बार सुन चुका हूँ कि उससे तबियत ऊब गई है। हाँ, अमृतलाल जी (उर्फ बाबू) कुछ खरी खोटी सुनाने को तयार हो तो दूसरी बात है।

बन्द कमरो मे बैठ कर गुणगान—यह सब मुझे अत्यन्त कृत्रिम लगता है। क्या न किसी प्राकृतिक स्थल की पदल यात्रा की जाय। औपचारिकताएँ बिल्कुल व्यर्थ हैं। वतमान परिस्थिति मे एक गिलास ठण्डाई या दो प्याले चाय और एक पापड बस इससे ज्यादा खच करना महज हिमाकत है। डेढ दो घण्टे से अधिक इस अव्यापार म खच न किया जाय। कब तक आप लोगो के दशन कर सकूगा इसका अभी निश्चय नही। श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा यहाँ पधारे थे। बाबू ने कविता पाठ द्वारा रगत लादी, और भी कवि थे।

विनीत
बनारसीदास

(१६२)

नैनीताल
६-७-६५

प्रिय श्री राजेश्वर जी,

१ पत्र तभी जानदार बन सकता है जब कि कोई उसे पूरा पूरा समय तथा शक्ति प्रदान करे। चूंकि आप नित्यप्रति २, २॥ घटे से अधिक नहीं दे सकेंगे, इसलिए पत्र का सजीव बनाना सम्भव न होगा।

(१८०)

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम। आपका कार्ड मिला। मैं १० फरवरी से यहाँ हूँ और अभी कुछ दिन ठहरने का विचार है।

आप मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विस्तृत समालोचना लिखकर अपने बहुमूल्य समय को बर्बाद करना चाहते हैं यह जानकर चिन्ता हुई। मैं तो आवश्यकता से अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ और अपनी प्रशंसा सुन सुन ऊब चुका हूँ। सन् १९२८ में मेरे साथी श्रीयुत सदाशिव गोविन्द वझे [S G Vaze Editor Servant Of India Poona] ने जो पूर्व अफ्रीका गए थे मुझे over-advertised की उपाधि से अलंकृत किया था। उसके ४० वर्ष बाद तो मैं उससे कई गुना विज्ञापित हो चुका हूँ। भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश है—'अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो धनवानों को पैसा मत दो।

'दरिद्रान भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे धनम्'

पर इस बात पर कौन ध्यान देता है। अपने ग्रन्थ के बारे में लेख मैं पढ़ भी नहीं सका। धन्यवाद की मिठाई खाने की रुचि नहीं होती। मैं तो काफी ज्यादा मिठाई दूसरों को निरन्तर खिलाता रहा हूँ। उस मिठाई को खाने की कोई इच्छा मेरे मन में विद्यमान नहीं बात दरअसल यह है निरन्तर ५९ वर्ष से लिखने के कारण मेरा नाम बराबर हिन्दी जनता के सम्मुख आता रहा है। मेरा प्रथम लेख १९१२ में छपा था—मई में—और तीन महीने बाद मेरे लेखक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू हो जाएगी। मेरे लेख पढ़ते-पढ़ते जनता तंग आ गई होगी इसलिए अब अपने मित्रों द्वारा लेख लिखाना चाहता हूँ। खेद की बात तो यह है कि मेरी ८ किताबें अब लिखी पड़ी हैं और ७९ वीं वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता। मुझे Retire हो जाना चाहिए पर यह आदतें जल्दी नहीं छूटतीं।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लेते? मसलन् जन्तुओं के विषय पर। संसार के भिन्न भिन्न देशों में बालक बालिकाओं के लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर लिखिए। यह युग विशेषज्ञों का है। कैमरा तो आपके पास होना ही चाहिए। कानन विषय (Relieving subject) साहित्य सेवियों की कीर्ति ज्यादा रख सकते हैं। डाक की व्यवस्था के लिए पहले कोतल घोड़ रक्खे जाते थे।

दो पौण्ड बढ़ा है। पहिले २०, २५ पौण्ड घट गया था। श्री मोहनलाल द्विवेदी पर क लिए कुछ लिखना पसन्द करोगे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

भाई हजारीप्रसाद जी अक्टूबर में इधर आने की सोच रहे हैं। मैंने उन्हें मना लिख दिया था कि इस रौरव तथा कुम्भीपाक नगरी में न पधारें। आप इन्टरव्यू के लिये नहीं गये। वे शायद पूछ सकते हैं। क्या कहूँ ? ब्रजसाहित्य मंडल वालों को सब जगह निमन्त्रण पत्र भेजने चाहिए थे।

"चतुर्वेदी' का न्यायमूर्ति प्यारेलाल जी विषयक स्मृति अङ्क देखा था ? उसका संक्षेप करके १०० पृष्ठों की जीवनी के रूप में छपा देना चाहिये। Shri Pyarey Lal Ji was a great man undoubtedly कमतरी हैदराबाद के मधुसूदन जी पधारे थे। अच्छा काम कर रहे हैं, यद्यपि ग्रन्थों के चुनाव में सावधानी नहीं बरतते।

५ ७ वर्ष लगा के किसी अच्छे साहित्यिक ग्रन्थ का निर्माण कीजिये। ये 'मृतपरिक' काम तो बस बर्बाद कर देते हैं। जब बाबू की तबीयत ठीक हो जाय तो राजाबाबू को फोन करा देना कि वे एक छोटी सचित्र पुस्तिका अपने उपवन पर जरूर छपावें—सर्वोत्तम प्रेस में, बढ़िया कागज पर उसमें बाबू की उपवन विषयक कोई कविता भी रहे। भाई अमृतलाल जी ने अब तक जो कुछ लिखा है उसको व्यवस्थित करके उस पर एक एक विस्तृत निबन्ध लिखा जा सकता है।

डा० भगवानसहाय पचौरी को लिखे गये पत्र

(१८४)

फीरोजाबाद
२४ ६-७०

प्रिय पचौरी जी,

वन्दे। आपका २० ता० का कृपापत्र मिला। मेरे हृदय में श्री प्रभुदयाल जी मीतल के साहित्यिक कार्य के लिये बहुत श्रद्धा है। निस्सन्देह उन्होंने जो महत्त्वपूर्ण सेवा ब्रजभाषा की की है, वह एक संस्था का कार्य था निरन्तर लगन और अध्यवसाय के बिना कोई भी व्यक्ति इतना काम कर ही नहीं सकता।

२ दूसरा के लखा का सम्पादन करने म समय व्यय करन की अपेक्षा यह कहीं अधिक उत्तमतर है कि स्वय महीने म दो तीन बढ़िया लख लिखें, जिनके सग्रह स कोई ग्रन्थ बन सके।

३ मैं पत्रा के Birth Control के पक्ष म हूँ पर जो भी उत्पन्न हों, उनको दीर्घायु बनाने की आवश्यकता है।

४ प्रकाशक के ३, ४ हजार रुपय इस प्रयोग म नष्ट हो उससे कहीं बेहतर है कि व कोई उपयोगी ग्रन्थ निकालें। उनस साफ साफ बात हो जानी चाहिए।

५ इतने पर भी पत्र निकालना ही हो तो गुडम्न की तरह की चीज— Digest मन ही निकालें। Best reading material दें। मुझे इतना ही कहना है। कृपया इस पत्र को प्रकाशक को दिखला दीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१८३)

३ ८ ६८

प्रिय भाई राजेश्वर पालागन,

भाई बाबू की बीमारी की हाल जानिकें कछू फिकिर तो हो ही गई पर बुखार अब कम है जि जानिके सन्तोष भयो। मातीझरा हमें सन् १८०४ मे निकरा ऱा। ६४ बष पर्ने।

जाम आराम की भौत जरूरत है और कोई गरिष्ठ चीज हर्गिज नइ खानी चय। कभऊ कभऊँ मोतीझरा जान बखत कमजोरी छाडि जातु है— आँख प, दिल प। ताम भौत सावधानी बरतनी चएँ।

बाबू जम हँसन और हँसाउन वार आदमी कौं तो बीमार पन्नोई नइँ चएँ। जि चिट्ठी हमन चि० आभा कौं ब्रजभाषा सुनाइब कौं लिखि ए।

अब सही बाता—

ना प्र सभा का काम छोड दिया यह बहुत अच्छा किया। एस लख लिखिय जो आग चलकर पुस्तकाकार म सग्रह किय जा सकें। चूडामणि जी वाला लख बढ़िया था और श्रीनारायण जी वाला भी। पर य किस सग्रह में आ सकत है ? इन्दौरा का उत्सव आप भी पानी बरसन पर रख लीजिये। राजाबाबू अपनी जीप म ले जावेंग। मरी तबियत सम्हल रही है। भूख खुल रही है। मगर टहलने जाता हूँ। ३, ४ महीन म स्वास्थ्य लाभ होगा। वजन

दो पौण्ड बढ़ा है। पहिले २०, २५ पौण्ड घट गया था। श्री सोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थ के लिये कुछ लिखना पसन्द करोगे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

भाई हजारीप्रसाद जी अक्टूबर मे इधर आने की सोच रहे हैं। मैंने उन्हें मना लिख दिया था कि इस रौरव तथा कुम्भीपाक नगरी मे न पधारें। आप इण्टरव्यू के लिये नहीं गये। वे शायद पूछ सकते हैं। क्या कहूँ ? ब्रजसाहित्य मडल वालों को सब जगह निमत्रण पत्र भेजन चाहिए थे।

"चतुर्वेदी" का न्यायमूर्ति प्यारेलाल जी विषयक स्मृति अङ्क देखा था ? उसका सक्षेप करके १०० पृष्ठ की जीवनी के रूप म छपा देना चाहिये। Shri Pyarey Lal Ji was a great man undoubtedly कमतरी हैदराबाद के मधुसूदन जी पधारे थे। अच्छा काम कर रहे हैं यद्यपि ग्रन्थो के चुनाव म सावधानी नहीं बरतते।

५ ७ वर्ष लगा क किसी अच्छे साहित्यिक ग्रन्थ का निर्माण कीजिये। ये 'मुतफर्रिक' काम तो बस बर्बाद कर देत हैं। जब बाबू की तबीयत ठीक हो जाय तो राजाबाबू को फोन करा देना कि वे एक छोटी सचित्र पुस्तिका अपने उपवन पर जरूर छपावें—सर्वोत्तम प्रेस म बढ़िया कागज पर उसम बाबू की उपवन विषयक कोई कविता भी रहे। भाई अमृतलाल जी ने अब तक जो कुछ लिखा है उसको व्यवस्थित करके उस पर एक एक विस्तृत निबन्ध लिखा जा सकता है।

डा० भगवानसहाय पचौरी को लिखे गये पत्र

(१६४)

फीरोजाबाद
२४ ६-७०

प्रिय पचौरी जी,

वन्दे। आपका २० ता० का कृपापत्र मिला। मेरे हृदय म श्री प्रभुदयाल जी मीतल के साहित्यिक कार्य के लिये बहुत श्रद्धा है। निस्सन्देह उन्होंने जो महत्वपूर्ण सेवा ब्रजभाषा की भी है वह एक सस्था का कार्य था निरन्तर लगन और अध्यवसाय के बिना कोई भी व्यक्ति इतना काम कर ही नहीं सकता। श्री मीतल जी के काय के यथोचित मूल्याकन के लिये जितनी योग्यता की

आवश्यकता है, वह मुझ में है ही नहीं। ऐसी स्थिति में मेरे द्वारा भूमिका का लिखा जाना अनुचित होगा। इस कर्तव्य को भाई श्रीनारायण जी चतुर्वेदी ही विधिवत् निभा सकते हैं पर वे दो-तीन दुर्घटनाओं के शिकार हो गये हैं। उनका भतीजा और अनुज दोनों पन्द्रह दिन में चल बसे।

हाँ मुझे Sketch-writing का शौक रहा है और कभी फुरसत मिलने पर ५-६ दिन मीतल जी से बातचीत करके उनका रेखाचित्र प्रस्तुत करूँगा। इस समय तो मेरे लिये यात्रा करना सम्भव नहीं। १० महीने पहले मेरा आपरेशन हुआ था पर इस बीच मुझे विश्राम बिल्कुल नहीं मिला। अब ७८ वीं वर्ष में मैं बहुत कम लिख पढ़ पाता हूँ। एक प्रकार से रिटायर हो गया हूँ।

श्री मीतल जी पर दो-चार पृष्ठ लिख देना कुछ कठिन नहीं पर उससे मीतल जी के व्यक्तित्व का अपमान हो जायगा और स्वयं मैं भी अपनी इज्जत से गिर जाऊँगा। मीतल जी जैसे साधक के प्रति पूर्ण न्याय होना ही चाहिए। टरकौअल ढङ्ग पर कोई भी चीज उनके बारे में न लिखी जाय। उनकी जीवन-व्यापी साधना का चित्रण पूर्ण सहृदयता से ही होना चाहिए। मेरा स्वास्थ्य ठीक होता तो १०, १२ दिन इस पवित्र काम में लगा देता, पर क्या करूँ लाचार हूँ।

अपनी बात मैंने स्पष्टतया लिख दी फिर भी आपका यदि आग्रह होगा (और भाई मीतल जी का भी) तो मैं अवश्य कुछ लिख दूँगा पर उससे मुझे सन्तोष नहीं होगा।

　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　विनीत
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　बनारसीदास

पुनश्च—

अभी मैंने एक साम्यवादी मजदूर के उपन्यास की आलोचना में दस बारह दिन लगा दिए। बहुत धीरे धीरे ही मैं कुछ लिख पढ़ पाता हूँ। अपनी निज की ८ किताबें revise होने को पड़ी हैं।

(१८८)

　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　फीरोजाबाद
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　२०-१-७१

प्रिय पचौरी जी,

वन्दे। कृपापत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। बन्धुवर मीतल जी विषयक ग्रन्थ भी मिल गया, तदर्थ धन्यवाद। मैं कामना करता हूँ कि कभी न कभी ब्रज

विश्व विद्यालय बनेगा—चाहे वह आगरा विश्व विद्यालय का परिवर्तित रूप ही हो—और तब श्री मीतल जी के अद्भुत साहित्यिक काय का उचित मूल्याङ्कन हो सकेगा। वतमान परिस्थिति मे, जब कि हमारा उत्तर प्रदेश इतना विस्तृत है, इस प्रकार का appreciation असम्भव ही समझिये।

मैं अलग ब्रज प्रान्त बनाने के आन्दोलन के पक्ष मे नही हूँ पर विशाल हरियान की जाटशाही के विरोध म यह आन्दोलन अनिवाय हो गया है। कैसे खद की बात है कि श्री लक्ष्मीरमण आचाय भी अपने ब्रजसाहित्य मडल के लिये कुछ भी न कर सके।

ब्रजमण्डल मे भाई वृन्दावनदास जी का दम गनीमत है। फीरोजाबाद म तो कम से कम ५०० लखपती हैं पर किसी का भी ध्यान ब्रज जनपद की सेवा की ओर नही है। अकेले श्री बालकृष्ण गुप्त कभी कभी सहायता दे देते हैं और उन पर भी मेरी आशा केन्द्रित है।

भाई वृन्दावनदास जी के नाम का सहारा लेकर हम पोद्दार ग्रन्थ का एक पूरक ग्रन्थ निकाल सकते हैं। इस समय अन्य जनपदो की अपेक्षा ब्रज जनपद साहित्यिक तथा सांस्कृतिक काय मे काफी आगे बढा हुआ है। When we have got the wind let us sail on sail on इस अनुकूल वातावरण म हम खूब आगे बढना है। आपका ग्वाल महाकवि विषयक शोधग्रन्थ कब तक छप जायगा? उसके प्रकाशन का प्रबन्ध होना ही चाहिये। बन्धुवर मीतल जी इस पुण्यकाय को भी हाथ म ले लें तो सर्वोत्तम हो।

एक निजी सग्रहालय के लिये मैं भाई वृन्दावनदास जी से आग्रह करता रहा हूँ। और वे तैयार भी है पर वे उसे अपने घर से अलग किसी नवीन भवन म रखना चाहते हैं। वह तो बहुत व्यय साध्य काय होगा।

"मो बनि आव सहज मे ताही मे चित देइ"

आज दिल्ली के National archives केन्द्रीय सरकारी अभिलेखागार से दो व्यक्ति यहा पधारे रहे हैं जो मेरे क्षुद्र सग्रहालय की मूल सामग्री को ३ दिन बाद दिल्ली ले जावेंगे। थोडा बहुत जो भी सरकार मुझे देगी (वह अत्यल्प हो द सकती है।) उसी से मुझे सन्तोष होगा। एक सौ से ऊपर तो अकेले महात्मा जी के ही पत्र है। पचासो C F Andrews के चालीस श्रीनिवास शास्त्री (भारत के सवश्रेष्ठ पत्र लेखक) के ७० ८० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के, ८ गणेशशङ्कर विद्यार्थी के, २० २१ प्रेमचन्द जी के बीसियो सम्पूर्णानन्द जी के गुप्त जी के इत्यादि इत्यादि। इनकी प्रतियाँ ब्रजसाहित्य

मंडल से संग्रहालय में रक्खी जा सकती हैं। मुझे विश्वास है कि कभी न कभी ब्रज प्रान्त बन कर रहेगा, उसका प्रश्न विभाजित होने से बच नहीं सकता। हम लोगों को साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य को पूरी लगन के साथ करना है।

विनीत
बनारसीदास

श्री गौरीशङ्कर द्विवेदी 'शङ्कर' को लिखे गये पत्र

(१९६)

फीरोजाबाद
२२ १२ ६५

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम। साहित्य सौरभ की प्रति मिली होगी। कृपया पढ़कर उस पर विस्तार पूर्वक लिखिए। पुस्तक को मैंने स्वर्गीय कृष्ण बल्देव वर्मा जी को समर्पित किया है और मुझे विश्वास है कि यह समर्पण आपको पसन्द आवेगा।

आप तो श्री कृष्ण बल्देव जी को भली भाँति जानते थे। अपने लेख में, मैंने आपके लिखे गए पत्रों का उल्लेख किया है। स्व० ब्रजमोहन वर्मा उनके भतीजे थे, उनका स्वर्गवास सन् १९३७ में हो गया था।

२६ वर्ष बाद उनका यह साहित्यिक श्राद्ध सम्पन्न हो सका है। जब वर्मा जी अपने यश शरीर से २८ वर्ष बाद पधारे हैं तो ग्रुप चाय के साथ उनका स्वागत होना चाहिए। क्या ही अच्छा हो यदि आप, रावत जी और माहौर जी आपस में चाय के साथ उनकी चर्चा करें।

एक छोटे-छोटे स्मारक होने बहुत चाहिए। एक प्रति श्री रावत जी को और एक माहौर जी को भेज दी गई है।

विनीत
बनारसीदास

(१९७)

फीरोजाबाद
१६ ११ ६६

प्रियवर,

भारती में आपके दोनों लेख मुझे पसन्द आए। महाराज तथा 'परिषद्' को याद कर लेना जरूरी भी था। कृतज्ञता का यह तकाजा था। यदि स्वर्गीय बल्देव जू पर भी एक सचित्र लेख रहता तो और भी ज्यादा अच्छा होता।

यह दुर्भाग्य की बात है कि वतमान महाराजा साहब का इस ओर कुछ भी ध्यान नही है। वे चाहे तो अब भी बहुत कर सकते हैं, पर उनकी शिक्षा दीक्षा जिस ढङ्ग पर हुई थी उसने उनको इस योग्य ही नही छोडा कि अपने पूवजो की कीतिरक्षा मे कुछ भी सहयोग दे सकें। लेकिन श्री मधुकरशाह (राजा बहादुर) बहुत समझदार युवक हैं। वह अमरीका म पढ रहे हैं, पर अब तो Privy purse ही खतम होने वाली है—२०, २५ वष भी शायद ही चले, इसलिए वतमान नरेशो से कुछ भी आशा रखना व्यथ ही होगा।

महाराज वीरसिंहदेव अपनी कोटि के अतिम उदाहरण थे—आपका कथन यथाथ है।

श्री द्वारिकेश जी झांसी म ही हैं ? मध्यप्रदेश का प्रयोग असफल रहा। डालमियाँ का भला कौन मुकाबला कर सकता है ? प्रात निर्माण इस समय अस्वाभाविक है, पर बुन्देलखण्ड के लिए जो कुछ कर सकें करें।

विनीत
बनारसीदास

(१९८)

फीरोजाबाद
५ ८ ७०

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम। साप्ताहिक हिन्दुस्तान अपना ब्रजाङ्क २३ ता० को निकाल रहा है। उसकी पूव सूचना भी उसने मुझे नही भेजी थी। जब मैंने लिखा तब एक लेख लिखने का आग्रह किया। मैंने लेख 'नवीन ब्रज के निर्माण पर' भेज दिया है।

एक निजी पत्र म मैंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान वालो से प्राथना की है कि वे बुन्देलखण्ड-अङ्क भी निकालें। ब्रज-अङ्क निकल जाने पर आप उसकी विस्तृत आलोचना करें और बुन्देलखण्ड-अङ्क के लिए अनुरोध भी करें।

भाई द्वारिकेश जी श्री रामसेवक रावत डा० भगवानदास माहौर मित्र जी बादल जी प्रभृति सभी को पत्र भेजकर बुन्देलखण्ड अङ्क के लिए अनुरोध करना ही चाहिए। कोई मौका अपने जनपद को आगे बढाने का हाथ से न जाने देना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान ६५ हजार छपता है। मैंने उसके सम्पादक को लिख दिया है कि मैं बुन्देलखण्ड अङ्क के लिए भरपूर मदद दूगा। आप लोग भी ऐसा आश्वासन दे दें।

आप कौन सी पुस्तक भेज रहे थे ? वह नहीं मिली। श्री द्वारिका जी को मेरा प्रणाम कहिए।

कुण्डेश्वर विद्यालय से श्री रमिया जी का Transfer हो गया है। यह एक दुर्घटना है। मेरा स्वास्थ्य साधारणत ठीक चल रहा है। जन्माष्टमी पर मथुरा पहुँचने का निमत्रण भाई वृन्दावनदास जी दे गए हैं। वे ब्रजभारती खूब निकाल रहे हैं।

ब्रज भारती आपको मिलती है या नहीं ? उन भैया का आत्म चरित छप गया है क्या ? भाई सत्यदेव ने उसकी प्रति भेजी नहीं। मित्र जी की व्यास जी विषयक पुस्तक कितनी छप चुकी है ?

विनीत
बनारसीदास

श्री राजेन्द्र रजन एम ए को लिखा हुआ पत्र

(१८८)

फीरोजाबाद
५ ११ ७०

प्रिय रजन जी,

पालागन ! बाबू वृन्दावनदास जी को एक अभिनन्दन ग्रथ अवश्य भेंट किया जाय, यह प्रस्ताव भाई अमृतलाल जी ने किया था और मैंने उसका हार्दिक समर्थन किया है। उस ग्रथ में किस प्रकार के लेख तथा चित्र अङ्क और तथ्य रहें इस बारे में आप गश्ती चिट्ठी भेजकर विचार परिवर्तन कर सकते हैं।

भाई वृन्दावनदास जी को कीर्ति अथवा विज्ञापन की बिल्कुल जरूरत नहीं है और जाविका के विषय में भी वे बिल्कुल निश्चिन्त हैं। हम लोग उनके शुभनाम का आश्रय लेकर ब्रजभूमि के विषय में एक सन्दर्भ ग्रथ तैयार कर सकते हैं। हमारे ब्रजमडल में जहाँ कहीं भी जिस किसी क्षेत्र में उन्नति के कुछ चिह्न दीख पड़ें उन्हें सचित कर उन्हें पल्लवित करना है। मेरे मन में जो विचार इस समय आ रहे हैं, उन्हें बिना किसी क्रम के—छोटे बड़े का ख्याल किये बिना—यहाँ लिख रहा हूँ।

मेरा पहला विचार तो यह है कि मथुरा, आगरा एटा, मनपुरी, अलीगढ़ तथा इटावा इन छै जिलों के भिन्न भिन्न भागों का सर्वे (सर्वेक्षण) करा लिया जाय। किस किस स्थान पर कौन कौन साहित्यिक सस्था—

पुस्तकालय इत्यादि–काम कर रही हैं उनका संक्षिप्त रैकर्ड तो इस ग्रन्थ म दिया ही जाना चाहिये।

मेरा दूसरा विचार यह है कि स्थानीय विद्यालयो की पत्र-पत्रिकाओ का उपयोग जनपदीय विषयो के लिये किया जा सकता है। मेरा तीसरा विचार यह है कि अध्यापको तथा विद्यार्थियो की टोलिया वस त ऋतु म व्रज मण्डल के भिन्न भिन्न स्थानों की यात्रा करके उनके बारे मे सचित्र लेख लिखें छलेसर [*जिला आगरा*] म भूमि कटन को रोकने के लिये जो सफल प्रयोग किया गया है—जगल में जो मगल उपस्थित कर दिया गया है—उसका ज्ञान तो व्रजभूमि के प्रत्येक छात्र छात्रा का होना ही चाहिये।

आगरे से ८ मील दूर श्री राजाबाबू [श्री प्रताप नारायण अग्रवाल] का जो उपवन है वह भी एक तीथ स्थल माने जाने योग्य है। उसमे ६ हजार पेड तो केवल आमो के ही हैं और कई फर्लाग तक जामुन के पेड ही पेड हैं। मैं दो बार उसकी तीर्थयात्रा कर चुका हूँ। सूर कुटी तो तीर्थ स्थल बन ही चुकी है।

होलीपुरा तथा कोटला के कालेज भी शिक्षा सम्बन्धी तीथ मान जा सकते हैं। मैंने दोनो के ही दशन किये हैं और उनसे प्रभावित हुआ हूँ। होलीपुरा का कालेज तो एक ऐसे क्षत्र म स्थित है जो पच्चीस वष पहले बिल्कुल ही उपेक्षित था।

पर हम शिक्षा तथा साहित्य के साथ साथ उद्योग धधो की ओर भी ध्यान देना है। फीरोजाबाद के काँच के व्यापार अथवा अलीगढ के ताले चाकू इत्यादि के व्यापार को भुलाया नही जा सकता। हम लोग जो अपने को साहित्यिक कहते हैं उद्योग इत्यादि की प्राय उपेक्षा ही करते है। फीरोजाबाद निवासी होने पर भी हम इस नगर के व्यवसाय के बारे मे बहुत कम जानते हैं। इस विषय पर श्री बालकृष्ण गुप्त न रेडियो पर जो वार्ता दी थी, उसे सुनकर हम आश्चय हुआ था, यद्यपि वह वार्ता हमन अधूरी ही सुनी थी। आगरे के श्री भार्गव जी के उद्योग की एक झलक ही हमने देखी थी।

प्रवासी व्रजवासियो को भी हम न भूलें। कलकत्ता बम्बई इत्यादि म बस कर व्रजवासियो ने जो उन्नति की है उसका लेखा जोखा भी हमारे पास रहना चाहिये। भाई मधुसूदन चतुर्वेदी सुदूर हैदराबाद म बडा उपयोगी काम कर रहे हैं। व्रज की पत्र पत्रिकाएँ व्रज के कवि, व्रज के साहित्यिक और चित्रकार इत्यादि विषयो पर भी शोधपूर्ण लेखो का सग्रह हम करना ही है।

आचार्य प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के महत्वपूर्ण कार्य से हमारे कितने छात्र परिचित हैं? स्वर्गीय हरदयालुसिंह तथा कीर्तिचन्द्र जी के जीवन के विषय में बहुत कम लोग जानते हैं। और हमारी ब्रजभाषा तो कभी राष्ट्रभाषा रह चुकी है और उसमें कविता करने वाले भिन्न भिन्न प्रदेशों में उत्पन्न हुए हैं।

ब्रजभूमि के खयालगो लोगों को भी भुलाना नहीं होगा। खुर्जा के एक प्रसिद्ध खयालगो—शायद उनका शुभनाम हरिदास था—ने कई अच्छे शिष्य तैयार किये थे। फीरोजाबाद के श्रीयुत नैकराम ने उन्हीं से प्रेरणा ली थी। इस प्रसंग में सर्वश्री रूपकिशोर तथा पन्नालाल को कौन भूल सकता है। भाई अयोध्याप्रसाद जी पाठक तो खयालबाजों की मंडली के प्रधान थे।

ब्रजभूमि मल्ल विद्या के विशेषज्ञों — पहलवानों — का भी केन्द्र रहा है। कवौल बल्देव गुरु स्वयं भगवान कृष्ण इस विषय के आचार्य थे और सुप्रसिद्ध पहलवान गामा भी प्राइवेट तौर पर उन्हें अपना गुरु मानते थे।

गायकों के विषय में यह मंडल विशेष स्थान रखता है। ब्रज की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति के विषय में भाई प्रभुदयाल जी मीतल का कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

पोद्दार ग्रन्थ तो एक प्रकार से ब्रज का एक विश्व कोष ही बन गया था। डाक्टर सत्येन्द्र का कार्य भी बहुत प्रशंसनीय रहा है और श्री कृष्णदत्त वाजपेयी जी का भी। अभी बहुत से यत्न हम करते हैं—

जैसे थाँदूपुर में सत्यनारायण कविरत्न के स्मारक का निर्माण। श्रीधर पाठक की जौनरी भी बिल्कुल उपेक्षित सी रही है। हमारे लिए यह घोर लज्जा की बात है कि फीरोजाबाद में भी जहाँ के वे छात्र थे, पाठक जी का कोई भी स्मारक नहीं।

इटावे में भाई सूर्यनारायण अग्रवाल ने समाज सेवा के जो कार्य किये हैं उनका भी ब्यौरा श्री वृन्दावनधाम ग्रन्थ में रहे। इटावे को ब्रज में हमने शुद्ध सेवा की भावना से ही शामिल किया है और बुलन्दशहर के एक भाग में तो ब्रजभाषा बोली भी जाती है। आचार्यवर जीवनदत्त जी नगरवर वालों के विषय में स्मृति-ग्रन्थ की आयोजना बन चुकी है।

ब्रज की सर्वांगीण उन्नति के लिए वासियों कार्यकर्ताओं के पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता है। यह जनपदीय कार्य केवल सुविधा के खयाल से (अपनी सीमित शक्तियों पर ध्यान देते हुए) किया जाना चाहिये। दरअसल हम सम्पूर्ण भारतवर्ष को ही अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान देना है—उसके

समग्र रूप की ही आराधना करनी है—और अपने जनपद की सेवा भी वस्तुत उसी की सेवा है। हम लोग तो 'वसुधैव कुटम्बकम्' की नीति के अनुयायी है इसलिए क्षुद्र प्रान्तीय भावना को कभी भी अपने हृदय म स्थान दे ही नहीं सकते। विश्व विख्यात रूसी लेखक गोर्की का कथन था कि हरेक जनपद की एक आत्मा होती है। हमें ब्रज की आत्मा को पहचानना है।

और ससार के सवश्रेष्ठ कहानी लेखक चखव का कहना था "यदि प्रत्येक आदमी उस भूखड को [जमीन के उस टुकडे को] जो उसे मिला हुआ है सुन्दर बना दे तो यह विश्व कितना सुन्दर बन सकता है।" ब्रजभूमि के प्रत्येक छोटे से छोटे स्थल को हमें सुन्दर बनाना है। आचाय विनोवा जी ने घोषणा की थी "आओ हम अपने प्रत्येक ग्राम को गोकुल बनावें" हम ब्रजवासियो के सामने यही एक महान काय करने को पडा है।

विनीत
बनारसीदास

श्री गणेश चौबे पो० बगरी (चम्पारन) को लिखे गये पत्र

(२००)

टीकमगढ़,
१३ ६ ४६

प्रियवर,

वन्दे! कृतज्ञ होऊँगा यदि आप कृपाकर साथ के लेख के विषय म अपनी सम्मति लिख भेजने का कष्ट स्वीकार करें।

ब्रजसाहित्य मडल ने एक जनपदीय कायक्रम बनाया है उसकी एक प्रति आप 'ब्रजभारती' कार्यालय मथुरा से मगा लीजिये, और भोजपुरी भाषा के सगठन के लिय उसके आवश्यक अश ले सकते हैं। आशा है कि आप अब स्वस्थ होगे।

विनीत
बनारसीदास

(२०१)

कुण्डेश्वर
टीकमगढ़
१३ १ ४६

प्रियवर

वन्दे! कृपापत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। बापू के एक पत्र की प्रतिलिपि आपकी भेंट है। आप उस भेंट के पूण अधिकारी हैं, क्योंकि आप उस मार्ग के

पथिक बन रहे हैं, जिसकी ओर बापू ने इशारा किया था। पर एक प्रश्न मैं पूछना चाहता हूँ। क्या खेती में किया हुआ शारीरिक श्रम—यदि उसकी मात्रा अधिक हो जाय—मस्तिष्क पर हानिकारक प्रभाव तो नहीं डालता ? बागबानी और साहित्य का भी Emerson नहीं मिला पाते थे, पर खेती और साहित्य तो और भी कठिन है। पर बकौल बापू आज तो हमें ग्रामों में ही साहित्य पैदा करना है। तत्थ में अपने को उपयुक्त नहीं पाता। मुझे तो सर्वोत्तम मानसिक भोजन नित्य प्रति चाहिये। अच्छे से अच्छे अंग्रेजी ग्रन्थ आते ही रहने चाहिये, यद्यपि मेरे प्रिय ग्रन्थकार ७, ८ से अधिक नहीं।

आप मेरी रचनाओं के लिये विन्ध्यवाणी के ग्राहक बने हैं, इसलिये मेरी जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है। अपने कुछ लेखों की प्रतियाँ भेजूंगा।

विन्ध्यवाणी का स्पेशल गांधी अङ्क निकालना है। उसी में व्यस्त हूँ। कभी अंतर्जनपदीय सम्मेलन करना है। उसमें ब्रज, भागपुर बुन्देलखंड, मालवा इत्यादि के प्रतिनिधि बुलाने हैं। देखिये कब अवसर मिलता है। शेष फिर किसी पत्र में।

विनीत
बनारसीदास

(२०२)

टीकमगढ़
२६ ७ ४६

प्रियवर,

वन्दे। १८ ता० का कृपापत्र मिला। उसके कुछ अंशों को टाइप कराके समानशील लेखकों तक आपके नाम तथा पते के साथ पहुँचा दूँगा। निस्सन्देह आपका कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। प्रकाशक मिलना इस समय तो कठिन ही है। बस मुझे उस क्षेत्र का पता भी नहीं। क्या सम्मेलन वाले आपका एक ग्रन्थ न ले सकेंगे ? यदि आप महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जी से प्रार्थना करें तो शायद काम बन जाय। श्रद्धेय टंडन जी को भी लिख सकते हैं। यदि आप अपने बारे में कुछ नोट्स भेज दें—कब से काम प्रारम्भ किया, कितनी कठिनाइयों के बीच में से निकलना पड़ा इत्यादि इत्यादि तो किसी पत्र में भी कुछ लिख सकता हूँ। साहित्यिकों की कठिनाई मैं भली भांति जानता हूँ। मैं स्वयं १८१२ में लिख रहा हूँ। और मेरे सामने भी वे सब कठिनाई विद्यमान हैं। पर हम हिम्मत नहीं हारते हैं। पारस्परिक सहयोग तथा सौहार्द का यदि

हम स्थापित कर सकें तो जीवन में कुछ सफलता भी अधिक मिलेगी और आनन्द की भी वृद्धि होगी। विस्तार से फिर लिखूगा।

बनारसीदास

(२०३)

फीरोजाबाद
२१-१-६७

प्रियवर,

प्रणाम! आपका कृपापत्र बहुत दिनो से नहीं मिला। भाई जगदीश प्रसाद जी ने कभी कभी आपके दिल्ली पहुचने की बात लिखी थी। अन्तर्जनपदीय परिषद के पुनरुद्धार करने की जरूरत है। आपको शायद पता ही होगा कि मैंने उसकी स्थापना हाथरस के ब्रजसाहित्य मडल के अधिवेशन पर कराई थी। लोक कथाओ के सम्पादन का कार्य कहाँ तक अग्रसर हुआ? आप, डा० श्याम परमार, जगदीश चतुर्वेदी गौरी शङ्कर द्विवेदी, राकेश जी प्रभृति मिलकर जनपदीय कार्यक्रम को आगे बढावें तो उत्तम हो। भोजपुरी भाषा मे कहीं कुछ हो रहा है क्या? शायद राजस्थानी लोग सबसे आगे हैं। अवधी वाले क्या कुछ कर रहे हैं? डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की मृत्यु सचमुच बडी दुर्घटना है। मैंने उन पर लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा था। आज उसे अन्य पत्रो को भी भेजा है। उनके १०० एक सौ से अधिक पत्र मैंने टाइप करा लिये थे और उन्हें सम्मेलन पत्रिका में छपने के लिये भेज दिया है। कलकत्ते से निकलने वाले Folk lore के मैंने दर्शन भी नहीं किये और न करेन्ट इंडियन प्रेस के। भाई कृष्णानन्द गुप्त (पता—गरौठा जिला झाँसी) ने लोकवार्ता के चार अङ्क निकाले थे और इस विषय पर काफी मसाला इकट्ठा किया था। कोई न कोई व्यक्ति ऐसा होना चाहिये जो अपने को केन्द्र बनाकर इस विषय के अन्य लेखकों से निकट सम्पर्क रक्खे।

विनीत
बनारसीदास

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर बादल को लिखे गये पत्र

(२०४)

टीकमगढ
७ ११ ४६

प्रिय बादल जो,

सादर प्रणाम। कृपापत्र मिला। श्रद्धेय गुरु जी का जीवन चरित तो वर्णीग्रन्थ के लिये भेज ही दिया गया है। अन्य कोई चीज जो अभी कहीं छपी

न हो भेजिए। श्री सम्पूर्णानन्द जी की शिक्षा सम्बन्धी नीति से मेरे अनेक मित्र जो इस विषय के ज्ञाता हैं, असन्तुष्ट हैं। मैंने उन्हें लिखा भी कि वे निस्संकोच उनकी आलोचना करें, मैं प्रकाशित कर दूंगा। पर इस अवसर को उन्होंने ही अनुपयुक्त समझा। मेरा केवल एक ही सिद्धान्त इस बार म रहा है वह यह कि इस प्रकार कुछ अच्छे लेखों का संग्रह हो जायगा। सम्पूर्णानन्द जी से अपना सम्बन्ध सन् १९१५ से है पर अभी तक वह घरेलू सम्बन्ध ही रहा है। हम लोगों के राजनैतिक विचारों में बहुत अन्तर है। वे शासक हैं और मैं शासक मात्र का विरोधी। कवि का आत्मघात नामक लेख कृपया पढ़ लीजिए।

चतुरसेन जी यहाँ नहीं पधारे इसका मुझे पछतावा रहेगा। स्वामी जी की सेवा में मेरा प्रणाम निवेदन कीजिए। इधर मैं व्यस्त रहा हूँ।

बनारसीदास

(२०५)

१२३ नॉर्थ एवेन्यू
नई दिल्ली
८. ५. ६५

प्रिय बादल जी,

प्रणाम! आचार्य श्री पद्मसिंह जी अपनी प्रत्येक पुस्तक की २००-२५० प्रतियाँ भेंट में दे देते थे। उनका कथन था कि पुस्तक पढ़ने के अधिकारी नहीं पाते और जो खरीदते हैं वे अधिकारी नहीं होते। इस सिद्धान्त का आप भी पालन कीजिए—पूर्णतया न सही अंशतः ही सही।

आपकी पुस्तक की कम मैंने एक प्रति श्री विष्णु प्रभाकर जी को और एक श्री देवराज जी दिनेश को भेंट कर दी और सम्मति के लिये भी अनुरोध कर दिया। मैं भी समय मिलते ही कुछ लिखूंगा। इस समय तो अत्यन्त व्यस्त हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(२०६)

९९ नॉर्थ ऐवेन्यू
नई दिल्ली
२१. ४. ६८

प्रिय बादल जी,

प्रणाम! दीवान साहब का पूर्ण अभिनन्दन ग्रन्थ मिला। निस्सन्देह यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है और आप तथा आपके साथी हार्दिक बधाई के

पात्र हैं। जनपदीय खण्ड को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ से कम गौरवयुक्त नहीं मानता। सफल और साधन सम्पन्न व्यक्तियों का अभिनन्दन करना आसान है पर, उन उपेक्षित 'तथाकथित' छोटे छोटे कार्य कर्ताओं को स्मरण करना कठिन है, जो नींव की पत्थर की तरह दबे पडे हैं। कई दिन से ज्वर आ रहा है। मलेरिया है। कोई चिन्ता की बात नहीं।

स्व० शहीद खरे जी को भी आपने याद कर लिया है, यह देखकर सन्तोष होता है। आप कुण्डेश्वर को भी नहीं भूले। अमम्य सैनिका को श्रद्धांजलि अर्पित करके आपन निम्न देह एक स्वस्थ परम्परा कायम की है आशा है कि कभी मुझे भी दीवान साहब के दर्शन करने का सुअवसर मिलेगा।

विनीत
बनारसीदास

डा० विष्णुदत्त पाठक को लिखे गये पत्र

(२०७)

फीरोजाबाद
२५ ६ ७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम। आपका १६ ता० का कृपापत्र यथा समय मिल गया था पर वह कहीं इधर का उधर पड गया और कल ही तलाश करने पर मिला है। विलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

आपके कार्ड को मैं बन्धुवर वृन्दावनदास जी बी ए एल-एल बी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मडल मथुरा को भेज रहा हूँ। वे आपके कार्य में भरपूर सहयोग देंगे। मैं तो ७८ वी वर्ष में retire हो चुका हूँ बहुत कम काम कर पाता हूँ। वैसे भी अपनी ब्रजभूमि से ५० वर्ष अलग रहने के कारण मैं अपने जनपद तथा अपनी मातृभाषा की अधिक सेवा नहीं कर सका। आप अवश्यमेव भरतपुर, जनपद के लिये यथाशक्ति कार्य करें। श्री वृन्दावनदास जी इस समय हमारी ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता है। उनको पूरा-पूरा सहयोग दीजिये।

स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक पृथिवी पुत्र तो आपने देखी ही होगी। रामप्रसाद एण्ड सन्स पुस्तक विक्रेता हास्पिटल रोड आगरा से ५) रुपये में मिलती है। उसमें वर्णित जनपदीय कार्यक्रम को आप भरतपुर जनपद में लागू करें।

वकौल गार्वी Every region has its soul भरतपुर की भी एक आत्मा है। उसे जाग्रत कीजिए। मैं दो बार भरतपुर की यात्रा कर चुका हूँ। एक बार तो सम्मेलन में दूसरी बार आचार्य गिडवानी के साथ। उस सम्मेलन में कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी शामिल हुए थे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—
मैं ज्यादा लिख नहीं पाता।

(२०८)

फीरोजाबाद
१६-७-७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम! आपका कार्ड कल मिला। मुझे यह अधिकार तो है नहीं कि आपको कुछ परामर्श दे सकूं। हाँ इतना अवश्य लिख सकता हूँ कि यदि मैं आपकी स्थिति में होता तो क्या करता।

मैं अपने विद्यार्थियों को स्व० वासुदेवशरण अग्रवाल के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' मूल्य ५) पता—रामप्रसाद एण्ड सन्स हॉस्पिटल रोड आगरा को पढ़ने का आग्रह करता। अपने प्रत्येक छात्र से मैं निवेदन करता कि वे जनपदीय कार्यक्रम के अधीन अपने-अपने स्थानों में कुछ काम तो अवश्य करें—लोकवार्ता संग्रह ग्रामीण कहानियाँ लोकोक्ति संग्रह इत्यादि।

मधुकर का जनपद अंक शायद डा० सत्येन्द्र के यहाँ पढ़ने को मिल जाय। उसकी बहुत सी प्रतियाँ मैंने जयपुर सम्मेलन पर वितरित की थी। अब वह सर्वथा अप्राप्य हो गया है—यहाँ तक कि मास्को के डा० चर्नीशेव को उसकी मैंको फिल्म करानी पड़ी।

भरतपुर का साहित्यिक इतिहास लिखा जा सकता है। सम्भवतः स्व० मयाशंकर याज्ञिक का पुस्तकालय तो हिन्दू विश्व विद्यालय या ना० प्र० सभा को दे दिया गया था नहीं तो बहुत सी सामग्री वहीं मिल जाती। प्रोफेसर जीवनाशंकर याज्ञिक आगरा कालेज में मेरे अध्यापक थे। अब वे हिन्दू यूनीवर्सिटी में retired life व्यतीत कर रहे हैं। स्व० मयाशंकर जी उनके काका थे।

स्व० जगन्नाथदास अधिकारी को भी मैं जानता था। कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के केवल एक ही अधिवेशन में पधारे थे—वह था भरतपुर के सम्मेलन में।

भरतपुर की साहित्य समिति बहुत पुरानी है—शायद १८११ के करीब उसकी स्थापना हुई थी। वहाँ शायद कुछ पुराने Record सुरक्षित हों। ब्रजभारती के पुराने अङ्क (जितने भी मिल सकें) खरीद लीजिये। ब्रजभूमि का हमें पुनर्निर्माण करना है। ब्रजमण्डल मे जहाँ कही जो कुछ अच्छा काय हो उसका रिकाड आप रखिये। अधिक क्या लिखू।

श्री प्रभुदयाल मीतल जी के विषय मे एक ग्रन्थ शीघ्र ही छपेगा। डा० पचौरी ने उसे लिखा है। डैम्पियर पाक मथुरा मे मीतल जी रहते हैं। उनसे पता लग जायगा।

विनीत
बनारसीदास

श्री त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल को लिखा गया पत्र

(२०९)

नई दिल्ली २२
२६ २ ७१

प्रियवर,

वन्दे। आपका कृपापत्र मिला। अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। आप ब्रज जनपद की साहित्यिक सस्थाओ के विषय म एक Reference Book निकालना चाहते हैं यह पढकर हर्ष हुआ। यद्यपि मैं ७९ वी वष मे अधिक काम नही कर सकता तथापि जो थोडी सी सेवा मुझसे बन पडेगी स्वस्थ होने पर अवश्य करूँगा।

किसी भी यज्ञ को प्रारम्भ करने से पहले उपयुक्त साधन जुटा लेने चाहिए। भले ही देर लग। सन्दभ ग्रन्थ के लिए आप विज्ञापन भी लें ताकि कुछ खच तो उनसे निकले। चित्र भी ग्रथ म काफी होने चाहिए। उसे आप ब्रज की Directory ही बना दें। क्यों न उसम उद्योग धधो पर भी लेख रहें ? मेरा सुझाव है कि यदि ब्रजमण्डल की Directory निकाली जाय तो वह शीघ्र खप सकती है।

श्री गणेशलाल शर्मा प्राणेश' एम ए ने मेरे आग्रह पर फीरोजाबाद परिचय नामक ग्रथ निकाला था। मूल्य था ५) रु०। इस ग्रथ मे उन्होंने काफी विज्ञापन दिए थे, जिससे उन्हे अथ प्राप्ति भी हुई थी। साहित्य सेवियो के परिचय वाला ग्रथ बिकेगा नही।

ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण कराइए। इटावे को भी ब्रज में ही शामिल कीजिए। इस ग्रंथ के लिए परिश्रम काफी करना पड़ेगा। घूमना भी पड़ेगा। पुस्तक छपे तब छपे, पर मसाला (Matter) तो संग्रह कर ही लीजिए।

ब्रज जनपद की सर्वांगीण उन्नति हमारा लक्ष्य होना चाहिए। स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का ग्रंथ 'पृथिवी पुत्र' हमारे लिए बाइबिल है। अधिक क्या लिखूं।

बनारसीदास

श्री उमाशङ्कर जी दीक्षित को लिखा गया पत्र

(२१०)

फीरोजाबाद
१२ १० ६७

प्रिय दीक्षित जी,

प्रणाम ! कृपापत्र मिला। ब्रजभाषा की परीक्षाओं के प्रारम्भ करने के पहिले उसके सभी पहलुओं पर विचार कर लेना है। इन परीक्षाओं के पास करने वालों को कुछ प्रलोभन तो हम दे नहीं सकते और आज का विद्यार्थी वर्ग इतना स्वार्थी बन गया है कि सर्वथा निस्वार्थ भाव से वह कोई काम—चाहे वह उसकी बौद्धिक उन्नति का ही क्यों न हो—करेगा नहीं। यदि ब्रजभाषा से प्रेम उत्पन्न हो जाय और ब्रज जनपद में पर्याप्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जाग्रति पैदा हो जाय तो इन परीक्षाओं का गौरव भी धीरे धीरे बढ़ जायगा। इन परीक्षाओं से कुछ हानि तो होने से रही।

"अल्प पि अल्प धमस्य त्रायते महतो भयात्।

ब्रजभाषा की परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों को यदि प्राइवेट संस्थाएँ कुछ तरजीह दें तो भी उनकी लोकप्रियता बढ़ सकती है। इतना लाभ तो तुरंत ही होना शुरू हो जायगा कि विद्यार्थी ब्रजभाषा के ग्रंथ पढ़ने लगेंगे।

१६ अप्रैल १९६८ को सत्यनारायण कविरत्न की ५० वीं श्राद्धतिथि है। क्या न उस समय इस पुण्य कार्य का श्री गणेश किया जाय। कृपया यह पत्र श्री वृन्दावनदास जी को भी दिखला दीजिए। उन्हें मेरा प्रणाम कहिए।

विनीत
बनारसीदास

श्री कृष्णगोपाल जी चौधरी इटावा को लिखा गया पत्र

(२११)

फीरोजाबाद
२६-११ ७०

प्रिय चौधरी जी,

प्रणाम ! विस्तृत पत्र के लिए कृतज्ञ हूँ । मेरा तो खयाल है कि उपवन लगाकर आपने जो महत्वपूर्ण कार्य किया था वह किसी भी हालत मे साहित्यिक कार्य से कम गौरवजनक नही था । Perhaps that was of much greater importance than any literary work साहित्य क्षेत्र और कृषि क्षेत्र दोनों को पूरा पूरा समय चाहिये और बहुत कम व्यक्ति ऐसे हुए हैं जो दोनो काम साथ साथ कर सकते थे । एडवर्ड कारपेंटर उन व्यक्तियो मे एक थे मलाबार फाम के लेखक ने भी वह करिश्मा कर दिखाया था । एमसन ऐसा न कर सके । श्रीराम शर्मा ने निस्सन्देह कुछ हद तक किया ।

महात्मा जी के एक पत्र की नकल भिजवाऊँगा उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया था कि खेती की ओर वे बहुत कम ध्यान दे सके । इस कारण उन्होंने अपने को 'मूरख' कहा था । That letter he wrote to Pt Tota Ram Sanadhya It has been in my possession all along and will now find its rightful place in the National archives

शिशु भवन' को प्रभावशाली साहित्यिक केन्द्र बनाइये । अपने घर पर ही आप एक छोटा सा संग्रहालय क्यो नही कायम कर लेते ? I begin my 79th year on Dec 24th and there is not much time left to me, but all the same I am determined to sow as many seeds of good ideas as possible भाई श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी एक विभूति हैं—a most remarkable personality indeed Write out an article about him please—

अपने लेखो की प्रति श्री वृन्दावनदास जी—ब्रजसाहित्य मडल को भी भेजते रहिये । व हमारे साहित्यिक कमिश्नर हैं ।

विनीत
बनारसीदास

डा० प्रभाकर माचवे को लिखा गया पत्र

(२१२)

१० १-७१

प्रिय माचवे जी,

मैं आपको हार्दिक बधाई का पत्र भेजने वाला ही था कि आपका कार्ड मिल गया। निम्मन्ट् कार्यकारिणी ने आपको नियुक्त करके बहुत बुद्धिमानी का काम किया है। हिन्दी वालों को भी इससे परम सन्तोष होना चाहिए।

मैं चाहता हूँ कि एक बढ़िया लेख श्री कृपलानी जी के विषय में लिखूँ। शान्ति निकेतन के दिनों से मैं उनसे परिचित हूँ और उनके सद्व्यवहार, साहित्यिक योग्यता तथा क्रियात्मक कल्पना शक्ति का कायल भी हूँ। उन्होंने अकात्मा की जो सेवा की है उस पर अधिकार पूर्वक बन्धुवर ह० प्र० द्विवेदी तथा आप ही लिख सकते हैं—क्योंकि इधर ७ वर्ष से मैं दिल्ली से दूर ही रहा हूँ—पर पुराने परिचितों में मैं भी एक हूँ। मेरा सर्वप्रथम कर्तव्य भी है।

आप जानते ही हैं कि मेरे विचार राष्ट्रभाषा के विषय में अन्य लोगों के विचारों से भिन्न हैं। भारत की सभी मुख्य मुख्य भाषाओं को मैं राष्ट्रभाषा मानता हूँ और किसी भी हालत में किसी पर भी हिन्दी लादना नहीं चाहता। गुरुदेव के वे शब्द अब भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं— 'Why do you hang the sword of Hindi over our heads? Produce great literature and we will all learn Hindi

हिन्दी जगत का वर्तमान नेतृत्व बहुत ही गलत हाथों में रहा है। They have made a mess of whole thing

विनम्रता से और सबकी सेवा करते हुए ही हिन्दी सभी भाषाओं में अग्रणी बन सकती थी पर इतनी समझदारी हिन्दी वालों ने नहीं दिखलाई। एक बार श्री राधाकृष्णन् की कोठी पर Currents & Cross Currents of Hindi Literature इस विषय पर मुझे अंग्रेजी में बोलना पड़ा था। दरअसल भाषण तो आचार्य नरेन्द्रदेव जी का होना था, पर वे बीमार पड़ गये और मौलाना आजाद ने प्रो० हुमायूँ कबिर को भेजकर मुझे हुक्म दिया कि मैं ही बोलूँ क्योंकि मैं 'right tone' दे सकता था। प्रो० कबिर ने मेरे घर आकर मौलाना का यह आदेश सुनाया था।

मजबूरन मुझे बोलना पड़ा। मनोवैज्ञानिक ढङ्ग पर मैंने अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की जो खासकर प्रान्तों की मराठी गुजराती बंगला और उर्दू तक

की और अन्त म संक्षेप म हिन्दी के विषय म भी विनम्रतापूर्वक आशाप्रद दो चार बातें कह दी। हिन्दी वाले चार व्यक्ति उस मीटिङ्ग मे मौजूद थे। उनमे से एक ने राष्ट्रकवि मयिली शरण जी गुप्त को लिख दिया "चौबे जी ने हिन्दी की लुटिया डुबो दी।' हम लोगा न अपनी मूर्खता से सुनीति बाबू जसे हिन्दी समर्थक की सहानुभूति खो दी। मैंने सुना था कि अहमदाबाद के श्री जोशी जी भी हिन्दी वालो की स्वार्थप्रियता से कुछ खिन्न से हो गये हैं। हम लोग षड्यन्त्र करके उच्च पदो पर हिन्दी वालो को ही बिठला देना चाहते हैं।

अंग्रेजी के तख्ता को उखाडना जैसी मूर्खतापूर्ण कार्यवाही जो लोग कर सकते हैं उनकी अक्ल पर तरस आता है। आज से तीस बत्तीस वर्ष पहले मैंने एक लेख लिखा था कि हम हिन्दी प्रचार का काम छोड ही देना चाहिये। उस लेख के विरोध मे श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू तथा पूज्य टडन जी ने भी लिखा था। पर मैं समझता हूँ कि मेरी बात गलत नहीं थी। श्रेष्ठ साहित्य की सृष्टि ही हम लोगो का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। शेष बातें अन्य भाषा वालो पर छोड देनी चाहिए। हिन्दी भाषा भाषियो का समूह इतना बडा है—इतना साधन सम्पन्न तथा इतना शक्तिशाली कि वह साहित्य सृष्टि के मामले मे करिश्मा—miracle कर सकता है। पर जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि नासमझ अदूरदर्शी तथा आत्म केन्द्रित नेताओ ने हिन्दी का कचूमर निकाल दिया है। और सबसे बडे दुर्भाग्य की बात यह है कि हिन्दी वाले चुपचाप इस अनाचार को सहन कर रहे हैं।

७६ वी वर्ष म मैं तो Retire हो चुका। कुछ कर धर नहीं सकता फिर भी अपनी बात आपसे निवेदन कर दी है For you cannot misund erstand me जब आप आगरे थे तभी से आपसे परिचय है। आप यहाँ पधार भी चुके हैं। फरवरी के प्रारम्भ म दिल्ली आने का विचार है।

बनारसीदास

पुनश्च—

इतनी लम्बी चिट्ठी भेजने के बाद मुझे Pliny का वह वाक्य याद आ गया—'I have not time to write you a short letter therefore I have written you a long one

प० झावरमल्ल जी शर्मा को लिखा गया पत्र

(२१३)

फीरोजाबाद
२० ६ ७०

श्रद्धेय पडित झावरमल्ल जी,

सादर प्रणाम! बहुत दिनो बाद आपका विस्तृत कृपापत्र मिला। तदर्थ कृतज्ञ हूँ। २० अगस्त १९६९ को मेरा आपरेशन हुआ था और डाक्टरो

का आदेश था कि मैं ८ ९ महीने विश्राम करूँ, पर अपनी बद आदतों के कारण वैसा कर नहीं सका। प्रातःकाल ८, ४॥ बजे उठकर चाय बनाकर पीना और तत्पश्चात् कुछ स्वाध्याय और फिर पत्र व्यवहार का व्यसन। किसी उर्दू कवि ने कहा था—

"चन्द तस्वीरे बुतां चन्द हसीनों के खुतूत।
बाद मरने के मेरे घर से ये सामां निकले॥

भले ही उस उर्दू शायर ने अपने विषय में कुछ अत्युक्ति की हो पर मेरे बारे में यह कविता मानो आज सच सिद्ध होती है। शतशः तथा हसीन के अर्थ मेरे यहाँ श्रेष्ठ पुरुष तथा कवि और साहित्यिक हो गये हैं। १२ १४ सन्दूकों में निर्गीटिव तथा फाइलें भरे पड़े हैं—सर्वथा अव्यवस्थित और चिट्ठी पत्रियों से तो कमरे के कमरे भरे हुए हैं। इन सब का विधिवत् उद्धरना अत्यन्त ही कठिन काय है।

दीर्घ जीवन का यह अभिशाप है कि कितने ही मित्र, जो उम्र में छोटे थे, चले जाते हैं और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करना भी कठिन हो जाता है। जो उम्र में बड़े थे उनका जाना तो स्वाभाविक है—यद्यपि अत्यन्त कष्टप्रद— पर छोटों का जाना तो हृदय विदारक हो जाता है। पालीवाल जी नवीन जी तथा श्रीराम जी छोटे थे—यहाँ तक कि राहुल जी तथा शिवपूजन जी भी अनुज थे। मुन्शीलाल जी भी उम्र में छोटे थे। हेमचन्द्र जी भी छोटे थे दिल्ली के गांधीमार्ग में काम करने वाले एक सज्जन राजबहादुरसिंह जो कलकत्ता समाचार में भी काम कर चुके थे और शर्मा जी के साथ भी अभी स्वर्गवासी हुए हैं।

परसों स्व० युधिष्ठिर भार्गव की एक पुस्तक मिली है। संस्कृति और जनजीवन। वे कुल जमा ५८ वर्ष की उम्र में ही परलोक पधारे। बहुत बढ़िया भाषा लिखते थे। परिचितों में थे। अब मुझे भी अपना काम समझना चाहिए। कहीन नजीर अकबराबादी—

सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

अपना शहीदों सम्बन्धी काय मैंने कानपुर शाखा के भगवानदास माहौर, झाँसी तथा श्री रामनारायण विद्यार्थी कन्नौज आनन्दमठ मरठ को सौंप दिया है।

ब्रजमण्डल का काय कानपुर वृन्दावनदास जी बड़े सन्तोषजनक ढंग पर कर रहे हैं। हाँ प्रवासी भारतीयों का काम करने वाला कोई नहीं मिला। यशपाल जी घूम फिर तो आये, पर उनके पास अवकाश नहीं कि वे इस काय को आगे बढ़ा सकें।

भाई वृन्दावनदास जी ने अपनी कम्पनी के नाम मुडन शब्द पर कुछ ऐतराज किया था। तब मैंने उन्हे बतलाया कि मजाक मजाक मे नवीन जी ने श्राद्ध-अभिनन्दन ग्रन्थ के साथ मुडन जोड दिया था। जब मैंने उसका मतलब पूछा तो बोले—'यार! तुम्हारी कम्पनी बिना धनवानो को मूँडें, चलेगी कैसे ?''

पर मुडन शब्द को सार्थक तथा यथार्थ करना हम लोगो के लिये कठिन ही है। पोस्टेज इतना बढ गया है कि चीजो को रजिस्ट्री द्वारा भेजना मुश्किल हो गया है। मामूली डाक से भेजन मे उडा लिये जाने का खतरा है और रजिस्ट्री में बहुत पैसा खर्च हो जाता है। क्या किया जाय ?

मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि भारत सरकार के नेशनल ऑरकाइवस (राष्ट्रीय अभिलेखागार) म बहुमूल्य पत्र—गान्धी रवीन्द्र, शास्त्री और ऐण्ड्यूज प्रभृति के—सुरक्षित करा देने चाहिये। वैज्ञानिक ढङ्ग पर वही सुरक्षित रह सकते हैं पर न तो जवाहरलाल नहरू म्यूजियम और न भारत सरकार का वह विभाग उस सामग्री के लिये कुछ भी दे सकता है। अजीब धर्म सकट म हूँ। खैर भाई हरिशङ्कर जी के ४०० पत्रो की ५।५ प्रतिया टाइप करादी हैं। उनके स्मृति ग्रन्थ के लिये कुछ भी नही हो सका। श्री सम्पूर्णानन्द स्मृति ग्रन्थ के लिये भी कुछ नही हुआ। श्री सुखाडिया जी ने रजिस्टड पत्र का उत्तर तक नही दिया।

ना प्र सभा काशी का सम्पूर्णानन्द अङ्क सर्वथा असन्तोष जनक है। केवल कुछ पृष्ठ ही उस महापुरुष के बारे म है। एक लेख मेरे खिलाफ जरूर है। मैं अब सब काम छोडकर विश्राम करना चाहता हूँ पर मन नही मानता। हाँ कूर्मांचल केसरी बद्रीदत्त जी के ससमरण, जो मैंने आग्रह करके लिखवाये थे, १० जुलाई तक छप जावेंगे। हैदराबाद मे छप रहे हैं। श्री शुकदेव पाण्डे जी ने ६००) रुपये वहा भेजे हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

२१ ६ ७०

कल लू चल रही थी, सो कुछ तकलीफ हो गई और कल पत्र डाकखाने नही जा सका। अब कल सोमवार को जावेगा।

मेरा सुझाव है कि वर्ष मे दो बार तो हम लोगो को एक एक सप्ताह के लिये मिल ही लेना चाहिये। नवम्बर मे दिल्ली का मौसम ठीक रहता है

सो मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। आप भी पधार सकते हैं। चि० रामनारायण के पास कमरे अच्छे हैं। वहीं आप भी ठहर सकते हैं। [illegible] [ड० नं० रामहरगुलम् पत्र नं० १११७] ६ मील दूर है। जन्माष्टमी पर मथुरा में ब्रजजनपदीय परिषद् के ८, ९ तारीख मथुरा में पुस्तकों का [illegible] मिल भी हमने नारायण जी को लिया है।

आचार्य वासुदेवशरण जी का जनपदीय अध्ययन सम्बन्धी निर्णय ठीक है। उनमें से किसी का विरोध न होना चाहिए। आप जिसमें इच्छा हो उस दूर हो सकता होगा।

साहित्य सेवियों की कीर्ति तो उनके ग्रन्थ ही कायम रखते हैं और उनके लिए अलग स्मारकों की जरूरत है। श्री मधुसूदन चतुर्वेदी (१४१७) बम्बई बाजार हैदराबाद बड़े उत्साही पुरुष हैं और वहाँ उत्साह से काम कर रहे हैं। उन्होंने ६०० के करीब स्थायी ग्राहक बना लिये हैं। यद्यपि पुस्तकों का चुनाव बहुत विस्तृत नहीं है, पर मधुसूदन जी की लगन निस्सन्देह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

सर्वोत्तम काम करने की धुन में हम मामूली काम की सफलता उपेक्षा कर जाते हैं। सर्वोत्तम उत्तम का शत्रु है यह एक अंग्रेजी कहावत का मर्म है। Best is the enemy of good अतः हम साधारण काम यथासम्भव शीघ्र निपटाने चाहिए। कम्पनी में नया खून आना जरूरी है। यह कैसे आवे? यह प्रश्न विचारणीय है।

बनारसीदास

श्रीमती सत्यवती मलिक को लिखा गया पत्र

(२१४)

गोठा भवन
टीकमगढ़
१४ २ ४६

प्रिय बहन,

सादर प्रणाम! कल मैं [illegible] आजाद की पूज्य माता जी के दर्शन करके यहाँ लौटा हूँ। उन्हें मैं मोटर द्वारा आजाद की तपोभूमि ओरछा के मार्ग में सातार नदी के तट के उस बगीचे पर ले गया था, जहाँ वह छोटी सी कोठरी अब भी ज्यों की त्यों सुरक्षित है जिसमें वे ब्रह्मचारी

साधु के रूप मे रहा करते थे। उस वृद्धा माता ने जो विलाप किया उसका वर्णन शब्दो मे नही किया जा सकता है।

आजाद के पाच भाई वहिन थे ३ भाई और दो वहिन कोई नही बचा एक भाई सात वर्ष की उम्र म चला गया, दूसरा पोस्टमन बनकर २०, २१ वष की उम्र म चल बसा, बहिनें भी उसी माग की पथिक हुइ और फिर २८ फरवरी १६३१ को आजाद अलफ्रेड पाक इलाहाबाद म शहीद हो गय।

अभागी वृद्धा इस समय ७० वष की है। आजाद के स्वगवास होन पर सिर पटक पटक कर उसने अपनी एक आँख खोदी थी। आजाद के पिताजी सीताराम जी तिवारी उन्नाव जिले के थ। उनके स्वगवास को भी ग्यारह वष बीत गये। कहीं से कुछ भी सहारा नही। यू पी और मध्य भारत की सरकारो ने पच्चीस पच्चीस रुपये महिने की पेंशन देन का स्वीकृति कई महिन पहले से मुझ भेज दी थी, पर सरकारी मशीनो की ढिलाई के कारण अब तक एक पैसा भी माता जी के पास नही पहुँचा।

जरा कल्पना कीजिये उस बुढिया की दुदशा की, वे एक ऐस ग्राम म कोने पर रहती है जहाँ मुख्य जन सख्या भीलो और मुसलमानो की बस्ती है। शरीर जजर हो गया है। ज्वर आता है, खाँसी भी है। चूकि वे पुराने ख्यालो की है इसलिये ब्राह्मण के हाथ की ही बनाई रसोई खा सकती है और ब्राह्मण घर उस गाव म एक ही है। कई दिनो फाके हो जात हैं। पत्रो मे मैंन एक लेख छपाया था और उसके कारण जो २५०) रुपये मेरे परिचित मित्रा तथा सहृदय पाठको ने भेजा था उसी से आठ नौ महीने से काम चलता रहा है। भारत के सवश्रेष्ठ क्रान्तिकारी शहीद की माता जी को अपन जीवन के अन्तिम दिन इस प्रकार बिताने पडे हैं।

उन क्षणो को जब वह वृद्धा अपनी अन्तिम सन्तान आजाद की छोटी सी कोठरी मे विलाप कर रही थी "बेटा तू मुझे अकेला क्यो छोड गया,' "नाराज क्या हो गया' न जाने क्या क्या कहती रही उनका यह करुणा क्रन्दन सुनकर हृदय विदीर्ण हुआ जाता था काश उस लिपि की ध्वनि हमारे कुछ शासक भी सुन पाते बडी मुश्किल स हम लोग उन्ह धैर्य बधा पाये। उस समय यदि कोई सहृदय बहिन वहाँ होती हम पुरुष लोग तो कठोर हृदय वाले होते हैं।

उस समय माता जी अद्ध विक्षिप्त अवस्था को पहुँच गई थी कहती थी आजाद यहा कही होगा। आता क्या नही मुझस मिलता क्यो नही मैं तो बडी दूर से आई हूँ।

हमारे मना करने पर भी आजाद के पुराने साथी मास्टर रुद्रनारायण जी माता जी को यह बतलाने जाते थे कि इस जगह में आजाद ने तेंदुआ मारा था, यहाँ वे शिकार खेलते थे, यहाँ मैं साइकिल पर उन्हें लाया था, इत्यादि इत्यादि। मातृ हृदय की वह उत्सुकता तथा करुणा पूर्ण अश्रुमय झलक को देखना आसान नहीं था यदि वे आँसू हमारे हृदय के पाप प्रमाद और निबलताओं को धो देते, मास्टर रुद्रनारायण जी धैर्य बधाते हुए कह रहे थे।

माताजी यह सब आजाद की ही तो भूमि है, यहाँ उसी के तो दर्शन हो रहे हैं। कौन उस भोली भाली माता को समझाता कि हमारा देश अब आजाद हो गया है और उसका बेटा चन्द्रशेखर आजाद अमर है और जब उसकी सुधिबुधि लेने वाला कोई भी नहीं तो हमारी फिलासफी पर वह यकीन भी कम करती।

रास्ते भर मैं यही सोचता रहा कि क्या हमारा देश सचमुच आजाद हो गया है? श्री पण्डित जवाहरलाल जी ने शायद अपनी जीवनी आत्म-चरित में आजाद का जिक्र किया हो आजाद उनसे मिलने गया था, यह बात सन् १८३० या ३१ की है उस वृत्तान्त को आप नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ में पढ़ लीजिये।

आजाद कहा करते थे कि मेरे माता पिता के लिये बस एक एक गाली काफी है वे देशवासियों की भावनाओं से परिचित थे, जानते थे कि उनके बाद उनके माता पिता की खोज खबर लेने वाला कोई न होगा और हम लोगों ने आजाद की भविष्य वाणी को सत्य ही सिद्ध कर दिया।

एक बार मन में आया कि माता जी को अपने साथ दिल्ली ले आऊँ और श्री जवाहरलाल जी के पास ले जाऊँ, पर हिम्मत न पड़ी आप तो माता जी की पूरी पूरी सेवा करतीं पर माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं और इस प्रकार का प्रदर्शन मुझे अनुचित भी जँचा, उनकी जिन्दगी के दस बारह महीने जो बाकी हैं उन्हें वे किसी न किसी प्रकार काट ही लेंगी।

सम्भवतः माता जी कुण्डेश्वर टीकमगढ़ भी पधारें पर उसमें भी मुझे डर लगता है कि कहीं मार्ग के कष्टों से उनकी तबियत और भी खराब न हो जाय।

क्या ही अच्छा होता यदि हम आजाद के जन्म स्थान पर एक चबूतरा ही बनवा देते और उस स्थान पर जहाँ उन्होंने साधना की थी कोई स्मारक बनाने का आयोजन करते पर किसे इस ओर ध्यान देने की फुर्सत है।

और नहीं तो आजाद के सस्मरणों का एक छोटा सा ग्रन्थ तो छप ही जाना चाहिए था।

आजाद जब जिन्दा थे तो मास्टर रुद्रनारायण जी उनकी सेवा मे उपस्थित हुए थे। उस समय उन्होंने अपनी तीन उगली बाँध रक्खी थी, इस आशा के साथ कि जब कोई आजाद की खबर देगा तो व उसे खोलेंगी और चलते वक्त उन्होंने मास्टर जी को अठन्नी देते हुए कहा था, इसकी वर्फी खरीदकर मेरे बेटे आजाद को खिला देना, उसे वर्फी बहुत अच्छी लगती है। ऐसी ही बीसियों स्मृतियाँ हैं कौन उनका सग्रह करे और उनका मूल्य आँके और रहा आजाद का स्मारक सो जिस जीवित स्मारक ने आजाद को नौ माह पेट म जीवित रक्खा था उसी की हम रक्षा नही कर पा रहे हैं तो ईंट पत्थर की स्मारकों की चर्चा घोर विडबना है, अधिक क्या लिखू।

विनीत

बनारसीदास

डा० वारान्निकोव लेनिनग्राड को लिखा गया पत्र

२१५)

फीरोजाबाद

६ १ ७१

प्रियवर,

प्रणाम! आपका नवम्बर का कृपापत्र ६ जनवरी को मिला। इतनी देर किस कारण हुई पता नहीं। श्री यशपाल जन को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये लिख रहा हूँ। न हो तो समुद्र के रास्ते ही भेजें। वैसे श्री वृदावनदास जी बी ए एल-एल बी अध्यक्ष व्रजसाहित्य मडल मथुरा भी भेज सकते हैं। वे बहुत अच्छे कार्यकर्ता हैं। उनसे आप सम्पर्क स्थापित करें तो व आपके शोध कार्यों मे बहुत सहायक सिद्ध होगे। चर्नीशोव को भी वे बहुत मसाला भेजते रहे हैं।

पुत्री के विवाह का शुभ समाचार मिला। उसे मेरा आशीष कहिये। पूज्य माता जी का देहान्त एक वर्ष पूर्व हो गया यह दु खप्रद समाचार आपने इतने दिनों बाद भेजा है। उनका कोई चित्र हो तो जरूर भेजें और उनके सस्मरण भी। अलवजे को मेरा आशीर्वाद कहिये।

अग्रेजी भाषा का भारतीयकरण तथा हिन्दी का अग्रेजीकरण दोनों विषय मनोरजक हैं। उन पर जरूर लिखें। आपके कथनानुसार मैं श्रीमती

सलगानिव म पत्र व्यवहार करूँगा। अब मेरे हाल भी सुन लीजिये। आगरा विश्व विद्यालय ने मुझे सर्वथा अयाचित डी० लिट की आनरेरी सम्माननीय उपाधि प्रदान की है—८ दिसम्बर को। इससे पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति की उपाधि दी थी। मैंने इस पर एक तुकबन्दी की है—

बड़े बड़ेन की अक्ल अब चरन लगी है घास।
पोकेट में डी लिट बने श्री बनारसीदास॥

आप पूज्य पिताजी की समाधि पर जो रामायण का दोहा अङ्कित है उस समाधि का फोटो कृपया मुझे भेज दीजिये। उनका जीवन चरित अब तक पूरा क्यों नहीं किया? इतनी देर क्यों कर दी? मेरा ७६ वाँ वर्ष पिछली २४ दिसम्बर को शुरू हो गई है। गतवर्ष मेरा पौरुष ग्रन्थि Prostrate gland का आपरेशन २० अगस्त को हुआ। तत्पश्चात् मुझे विश्राम करना था पर कर नहीं सका। अब आराम करना चाहता हूँ। एक बार आपके देश की तीर्थयात्रा करने की आकांक्षा मन में थी, पर अब वह अत्यन्त कठिन हो गई है। महाकवि नजीर अकबराबादी की यह कविता मैं गुनगुना लेता हूँ—

"जो पड़े याद में उस शाख की जिस बस्ता में
वही गोकुल है हमें वही वृन्दावन
वही है तख्त, वही फर्श, वही सिंहासन।

जहाँ कहीं प्रेम का श्रद्धालु रहता है वहीं हम हैं। १९१८ से हम का भक्त रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

बाबा पृथ्वीसिंह जी आजाद को लिखा हुआ पत्र

(२१६)

फीरोजाबाद
७-११-७०

श्रद्धेय बाबा,

प्रणाम! आपका कृपापत्र मिला। हमारे नवयुवकों में और सहकर्मियों में भी देश प्रेम तथा समाज सेवा की भावना तो मौजूद है, पर उनका उपयोग करने वालों की कमी है।

आप अपने विचारों को बराबर लिखते रहें। बाल पेन से लिखने पर तीन प्रतियाँ बन जाती हैं जिनमे दो तो अच्छी होती ही हैं। तीसरी भी पढी जा सकती है।

आपने जो गे विचार भेजे हैं उनमे प्रथम तो छपाया भी जा सकता है। कृपया एक बात याद रखिये कि आपका Strongest Point क्रान्तिकारी जीवन के अनुभव हैं और युवक सगठन नम्बर दो पर आता है। इनके मूल मे आत्म नियन्त्रण तो है ही।

यदि आपकी आत्मकथा का एक संक्षिप्त सस्मरण १५० पृष्ठ का छप जाय तो वह प्रचार कार्य मे आपकी सहायता कर सकता है।

इस देश मे साहस की इतनी कमी हो गई है कि लोग दुस्साहस के किस्सो को सुनने मे अत्यधिक आनन्द का अनुभव करते है। रेल से आपकी छलाँग का वृत्तान्त सुनकर युवक खुश हो जाते हैं यद्यपि वे खुद धीमे चलते हुए इक्के से भी नही कूद सकते। Sugar Coated Pill की तरह आप उन घटनाओ को सुनाकर युवको का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं तत्पश्चात मतलब की बात कह सकते हैं।

पत्रो मे प्रचार कार्य एक कला है जिसका मैं ५८ ५८ वर्ष से अभ्यास करता रहा हूँ। गुण्टूर कानफ्रेंस मे भगवानदास माहौर जी भी जावेंगे। उस कानफरेंस के कार्यकर्ताओ के चित्र मगाकर उन पर लिखा जा सकता है। आशा है गुजराती आत्मचरित का प्रचार ठीक तरह होगा।

मथुरा के बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मडल (मथुरा) भी बहुत भले आदमी हैं। उन्होने ही प्रयत्न करके ५ हजार रुपये श्री यशपाल जैन [सस्ता साहित्य मडल] को दिये थे, तब मेरा अभिनन्दन ग्रन्थ निकल पाया था। कभी बम्बई से लौटते वक्त मथुरा उतरिये। भाई वृन्दावनदास जी की धर्मशाला भी है, वहा ही ठहरिये।

श्री जगन्नाथ लहरी [गोशाला फीरोजाबाद] तथा श्री रतनलाल बंसल हनुमानगज फीरोजाबाद को आपके पत्र मिल गये हैं।

लहरी जी को पत्र लिखने का अभ्यास ही नहा है। वे कहते हैं कि यह तो बीमारी है जो मेरे पचास रुपये महीने खर्च करा देती है। वे इस बीमारी से दूर भागते हैं। वे इस बात को नही जानते कि पत्र लेखन भी लेखन की एक कला है। एक हथियार है। आनन्द वितरण करने का एक तरीका है।

अगर पत्र लिखना उपयोगी न होता तो महात्मा गांधी एक लाख पत्र लिखकर अपना वक्त खर्च न करते। और मजिनी ने तो १०-२० लाख पत्र लिखे होंगे।

आपके भेजे पत्र मैं पढ़ूंगा। बापू तो एक एक लिफाफे में दस दस छोटे छोटे पत्र रख देते थे। मेरे लिफाफे में आप गुप्त जी वसंत जी, नंदी जी, नाजुक साहब को छोटी छोटी चिट्ठियाँ रख सकते हैं।

विनीत

बनारसीदास

श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिलिन्द को लिखा गया पत्र

(२१७)

फ़ीरोजाबाद

२-१-७१

प्रिय मिलिन्द जी,

प्रणाम। पत्र मिला। कल मैं कुछ चित्र Illustrated Weekly के लिये तलाश कर रहा था कि आपकी महत्त्वपूर्ण पुस्तक भूमि की अनुभूति अकस्मात् मिल गई। १०० सन्दूकों तथा २०० फाइल बोक्सों में भरी पड़ी अव्यवस्थित सामग्री ने समुद्र का रूप धारण कर लिया है जिसमें गोता लगाने पर कभी कभी रत्न भी मिल जाते हैं।

सब काम—आवश्यक कर्तव्य—छोड़कर भूमि की अनुभूति को कुछ क्षण अर्पित करने पड़े। निस्सन्देह आपकी यह कृति मेरे लिये भी बड़ी स्फूर्तिप्रद है। आज के युग के लिये और भावी युग के लिये भी उसमें एक अमर सन्देश है। मैंने उस पर लिखने के लिये तथा नोट ले लिये थे पर लिख नहीं पाया। मेरा जीवन सर्वथा अस्त-व्यस्त रहा है। अब फ़ुर्सत मिलने पर लिखूंगा। माखन' जी की याद आ गई।

विश्व भारती वालों से मैं आग्रह करूँगा कि दीनबन्धु सप्ताह पर वे आपको लिखकर निमंत्रित करें। मैं तो ७८ वें वर्ष में यात्रा कर नहीं पाता। जिस हिन्दी अध्ययन की नींव आपने तथा अन्य भाइयों ने वहाँ डाली थी वह अब विशाल बन गया है। विश्वभारती वालों का कर्तव्य है कि सम्मान्य अतिथि के रूप में वे आपको निमंत्रित करें।

ब्लड प्रेशर के चक्कर में मैं बीमार पड़ गया। १८ दिन बर्बाद हो गये। जीवन सप्ताह का तो जन्मोत्सव मैंने संगम पर मनाया था—जामनेर तथा

जमडार दो नदियां के मिलन-स्थल पर। भाई सुधीन्द्र जी उस समय उपस्थित थे। आपके चिरंजीव को कोई काम मिला ?

विनीत
बनारसीदास

श्री काशीनाथ त्रिवेदी सम्पादक 'गान्धी शताब्दी सन्देश' इन्दौर को लिखा गया पत्र

(२१८)

फीरोजाबाद
१० ७ ७०

प्रिय भाई काशीनाथ जी,

वन्दे। मैं आपको पत्र भेजना ही चाहता था कि आपका कार्ड मिल गया। मेसर्स शिवलाल अग्रवाल प्रकाशक आगरा को पत्र भेज दूंगा कि वे क्रान्तिपथ के पथिक' की प्रति आलोचनार्थ आपको भेंट कर दें।

आपके निमंत्रण के लिये हृदय से कृतज्ञ हूँ, पर मेरा स्वास्थ्य इस काबिल नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा कर सकूं। ७८ वीं वर्ष में मैं यात्रा की थकान सहन नहीं कर सकता। एक इच्छा मन में अवश्य शेष है—यानी रूस की तृतीय बार यात्रा करने की। उस यात्रा में मैं लेनिन के जन्म स्थान की तीर्थ यात्रा करना चाहता हूँ और उसके पूर्व पोरबन्दर की भी। यद्यपि अब मेरा यह विश्वास हो गया है कि लेनिन के तौर तरीके से ही इस अभागी भूमि का कल्याण होगा क्योंकि ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त फेल हो चुका है और बिना कुछ हिंसा किये यहाँ का पूंजीपति वर्ग अपने अन्याय से कमाये हुए धन को हस्तान्तरित न करेगा। यह मेरी भावना है, यद्यपि मैं इसे तर्क से सिद्ध नहीं कर सकता। मैं तो रिटायर हो चुका हूँ—कुछ करने धरने से रहा। शरीर में शक्ति नहीं और सार्वजनिक जीवन बिताने की इच्छा भी नहीं।

इन्दौर का तो मैं अत्यन्त ऋणी हूँ। इसका एक मजाक सुन लीजिये। मैं प्रायः अंग्रेजी ग्रन्थों से ही मानसिक भोज्य लेता रहा हूँ और अंग्रेजी में think करने की भी आदत कुछ कुछ पड़ गई है। इसका एक मनोरंजक दुष्परिणाम हुआ।

अपनी पिछली इन्दौर यात्रा में, जब श्री सम्पूर्णानन्द जी होम मिनिस्टर यू पी के साथ इन्दौर के Municipal Board या Corporation ने हम

दोनों का स्वागत किया, तो धन्यवाद देते समय मेरे मुँह से यह वाक्य निकल गया—'मैं अपने दोनों पुत्रों के लिए इन्दौर का ऋणी हूँ।'' मैंने देखा कि सम्पूर्णानन्द जी ने दाँतों भींच ली है और नवीन जी की भृकुटी तन गई है। मैं समझ नहीं सका कि मैंने क्या गलती की है। साहित्य समाप्त होने पर सम्पूर्णानन्द जी ने मुझे डाँट बतलाई और नवीन जी ने भी फटकारा। नवीन जी बोले 'अरे मूरख! तेरा ममत्व में यह ध्यान आया कि इस कथन में से क्या ध्वनि निकलती है?' मैंने उत्तर में कहा 'ध्वनि की बात तो कवि लोग जानें मैंने तो अंग्रेजी के इस वाक्य का I am indebted to Indore for both my sons तर्जुमा कर दिया था। दोनों पुत्र इस। दरअसल चि० बुद्धिप्रकाश तथा चि० रामगोपाल का जन्म तभी हुआ था, जब मैं इन्दौर में था—१९१३ व १९१६ में। मैं डेली कालेज में १९१४ से २० तक रहा था।

यदि कभी स्वास्थ्य इस काबिल हुआ कि लम्बी यात्रा कर सकूँ तो जरूर इन्दौर आऊँगा। अभी तो मुझे अपने जनपद ब्रजमण्डल के ही अनेक स्थलों की यात्रा करनी है।

अभिनन्दन ग्रन्थ में मेरी प्रशंसा के जो पुल बाँधे गये हैं उनसे प्रतीत होता है कि हिन्दी जगत् में साहित्यिक इंजीनियरों की कमी नहीं। जिस बनारसीदास के गुणों की चर्चा उनमें की गई है उसे मैं नहीं पहचानता। परलोक यात्रा के दस बीस वर्ष बाद ही किसी साहित्यिक का उचित मूल्यांकन हो सकता है उससे पहिले हर्गिज नहीं। मेरे मना करने पर भी भाई यशपाल जी, वृन्दावनलाल जी प्रभृति बन्धु नहीं माने और एक वृथा पुण्य पोथी तैयार कर ही दिया। उसमें ब्रज जनपद का जो वर्णन है वही सार्थक है बाकी सब गोरख धन्धा है। 'लोग मुझे किस रूप में देखना चाहते हैं' इस भावना से मैंने उसे स्वीकार कर लिया है।

विनीत
बनारसीदास

श्री गोपालदास रावतपाड़ा आगरा को लिखा गया पत्र

(२१८)

घर नं० १११७ सेक्टर ८
रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली

प्रिय श्री गोपालदास जी,

वन्दे! आपकी कृपापत्र मिला। जो मसाला आपने भेजा है उसे मैं छपवा चुका हूँ। 'विशाल भारत' के किसी पुराने अङ्क में ४० वर्ष पहले हो यह छप चुका है।

आप बाबू वृन्दावनदास जी बी ए एल एल बी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मडल से कभी मिलिये। मथुरा म उनकी धर्मशाला भी है। पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ म खयालो पर एक लेख श्री कमल का है जो हनुमान रोड फीरोजाबाद के निवासी हैं।

फीरोजाबाद के श्री जगन्नाथ लहरी (गोशाला फीरोजाबाद) प्रतिवर्ष रामलीला के अवसर पर खयाल सम्मेलन कराया करते हैं। उनसे पता लग सकता है। स्वामी नारायणनन्द की पुस्तक खयालो पर छप चुकी है। उन्होंने १८२६ म जो लेख खयालो पर नागरी प्रचारिणी सभा आगरे म पढा था उसे मैंने विशाल भारत म छापा था।

स्व० अयोध्या प्रसाद जी पाठक की जगह अब खयालगो लोगो के प्रेसीडेण्ट कौन है ? नक्सा तो अब रिटायर हो चुका है। उसका लडका बी एम-सी म पढ रहा था। खयालगो लोगो के सगठन का काम कठिन है। जब तक कुछ साधन सम्पन्न व्यक्ति इसम सहयोग नही देते तब तक यह काम हो नही सकता।

नक्सा के पास एक मोटा रजिस्टर था। उसम से मैंने खयाल नकल कराये थे। वर्तमान खयालगो लोगो के चित्र और चरित्र लिखे जाने चाहिये। हमारी जाति के एक सज्जन बाबूराम जी अच्छे खयालगो थे। उनका लडका प्रेमनारायण सेनिटरी इसपैक्टर था।

कानपुर म भी खयालगो लोगो का एक अड्डा था। वहाँ की धर्मशाला मे हमे खयाल सुनने का मौका मिला था। स्व० नारायणप्रसाद जी अरोडा ने उसका प्रबन्ध किया था।

मैं तो अब ७६ वे वर्ष म काम कर नही सकता। आगरे म कुछ युवको को यह कार्य उठा लेना चाहिए। आप प्रोफेसर कुलदीप जी से मिलिये। ६ गान्धी मार्ग पर विमल जी के यहाँ मिल जायेंगे।

रूपकिशोर पन्नालाल के चित्र तो अब क्या मिल सकते हैं ? 'विशाल भारत' से श्री अयोध्याप्रसाद पाठक जी का लेख नकल कराया जा सकता है। नारायणानन्द जी की किताब भी कहा मिल जायगी। मैं ज्यादा लिख पढ नही सकता। आप स्वय ही इस पवित्र काम को अपने हाथ म ले लें।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी का अपने पाठकों के नाम पत्र

'प्रकाशित [illegible]' १७ १० ६९

(२२०)

प्रियवर

मैं गत जून को आगरे के अस्पताल में भरती हो गया था। दो महीने के बाद २० अगस्त को प्रोस्टेट ग्रंथि का ऑपरेशन हुआ जो आप लोगों की सद्भावना से सफल हो गया। चौदह सितम्बर को मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई और [illegible] का घर आ गया। मुझे इस बात की आशंका थी कि कहीं ऑपरेशन असफल न हो और मुझे परलोक यात्रा का टिकट न कटवाना पड़े। ७७ वर्ष की उम्र में यह बात दुर्घटना तो न होती पर मेरा बहुत सा काम अधूरा पड़ा रह जाता।

यद्यपि कमजोरी बहुत ज्यादा है—जो इस उम्र में स्वाभाविक ही है—तथापि कुछ लिखे पढ़े बिना मन नहीं मानता। बच्चों के विषय पर कुछ लिखने की इच्छा है उनके खेल-कूद, मनोरंजन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर। वर्षों से मेरी आदत रही है कि रोज सवेरे चार बजे उठकर अपनी चाय खुद बनाना फिर कुछ स्वाध्याय और तत्पश्चात् लेख या पत्र लिखना। मेरा प्रथम लेख सन् १९१२ में काशी के नव जीवन में छपा था, और तब से मैं निरन्तर लिखता ही रहा हूँ। मेरे लेखक जीवन का अब अट्ठावनवां वर्ष चल रहा है। इस बीच न जाने कितना ऊल जलूल मैंने लिखा होगा, मेरे पाठक भी तंग आ गये होंगे।

अगले २४ सितम्बर को मेरी ७८ वीं साल शुरू हो जायगी और मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं सार्वजनिक साहित्य क्षेत्र से रिटायर हो जाऊँगा। पेश्तर इसके कि दिमाग पिलपिला हो जाय और जमुना जी के कछुवे रास्ता देखने लगें। मुझे रिटायर हो ही जाना चाहिए।

पर रिटायर होना कोई आसान काम नहीं। पचास-साठ वर्ष से पड़ी हुई बद आदतें एक दम नहीं छूट सकती। मैं हर महीने पचास रुपये पोस्टेज पर खर्च करता रहा हूँ। चालीस रुपये टाइपिस्ट पर और घर से घर के लिए मुझे तीन सहायक भी रखने पड़े थे।

अपने से पत्र व्यवहार करने वाले किसी सज्जन की मैंने कभी उपेक्षा नहीं की। पत्रों का उत्तर मेरे यहाँ से बराबर भेजा जाता है। अब इस चलते हुए [illegible] को एक साथ रोक देना मेरे लिए कठिन हो रहा है।

आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि मेरी सात आठ किताबें अधूरी पडी हुई हैं और 'पत्र व्यवहार—मेरा व्यसन'' नामक पुस्तक का सब मसाला इकट्ठा हो चुका है मगर उसके लिखने के लिए पाच-सात महीने तो चाहिए ही। मेरे एक आत्मीय ने मजाक मे कहा था तुम तो महीने मे इकत्तीस रोज चिट्ठिया लिखने मे ही बिताते हो। पत्र-व्यवहार से मुझे घाटा ही रहा हो सो बात नही। पत्रो का जैसा, अमूल्य सग्रह मेरे पास इकट्ठा हो गया है यद्यपि वह सब अव्यवस्थित पड़ा हुआ है वैसा हिन्दी जगत मे थोडे से ही व्यक्तियो के पास होगा।

चिट्ठी पत्री फोटोग्राफी और चाय के साथ गप्पाष्टक इन तीन व्यसनो मे मेरे समय, शक्ति और पैसा की बहुत बर्बादी हुई है। फोटोग्राफी पर दस बारह हजार से कम खर्च नही हुए होंगे और उससे तिगुनी चौगुनी रकम पत्र व्यवहार पर।

बीस अगस्त के आपरेशन के बाद कमजोरी इतनी अधिक आ गई है कि तीन महीने पूर्ण विश्राम करना अनिवार्य हो गया है। जब चिट्ठियो का ढेर लग जाता है और मैं उनका उत्तर नही दे पाता तब बड़ी हार्दिक वेदना होती है। पर क्या किया जाय लाचारी है।

इस छोटे से लेख द्वारा मैं अपने से पत्र व्यवहार करने वालो से पेशगी क्षमा याचना किये लेता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

सैनिक मे प्रकाशित प० श्रीराम शर्मा को लिखा हुआ पत्र

(२२१)

[हिंदी समार के ख्यातनामा पत्रकार और साहित्यसेवी प० बनारसीदास चतुर्वेदी ने निम्नाकित पत्र प० श्रीराम शर्मा को भेजा है। इस पत्र की प्रतिलिपि हमारे पास भी आई है। चूकि प० श्रीराम शर्मा अभी सरकारी अफसर हैं और सरकारी नौकरी छोड देने पर भी उनको उसी कायदे कानून की पाबन्दी करनी है जिसकी एक सरकारी अफसर काम करते हुए करता है इसलिये हम जानते हैं कि उनकी ओर से वह पत्र गुप्त ही रखा जायगा और हम यह भी जानते हैं कि इस पत्र के छपने से उन्हे क्षोभ भी होगा। पर इसमे उनकी जिम्मेदारी क्या? हम तो समझते हैं कि उनके छुट्टी पर जाने के मानी हैं कि उनकी कलम का चुप रहना और जबान का न खुलना। जब इस पत्र की नकल

हमारे पास भेजे गये तब हम शर्मा जी से क्षमा याचना करते हैं और आशा करते हैं कि वे सार्वजनिक हित के नाते कोई बुरा न मानेंगे।

यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि चतुर्वेदी जी पत्र लिखने की कला में हिन्दी भाषा भाषियों में अपना सानी नहीं रखते। पत्र लिखना एक कला है और इस कला में कलाविद् होने के लिए संयम की बड़ी गम्भीरता और पटुता से काम लेना पड़ता है। बड़ी ज़रूरत इस बात की होती है कि पत्र-लेखक को क्या नहीं लिखना चाहिए। निम्नलिखित पत्र में जितना कुछ हास्य है, जितनी तीखी आलोचना है और जितनी बारीक चुटकी ली गई है इसका प्रमाण पाठकों को पत्र के पढ़ने से मिल जायगा। हम यह जानते हैं कि पं० बनारसीदास चतुर्वेदी किसी दल विशेष के आदमी नहीं हैं और अपने मित्रों से भी वे अपनी स्वतन्त्रता तथा व्यक्तित्व कायम रख सके हैं—इस दृष्टि से यह पत्र और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। —सहायक सम्पादक]

टीकमगढ़
३०. ८. ३८

प्रिय श्रीराम जी,

मैं अनेक बार सफर कर चुका हूँ और सबसे अधिक खेद मुझे तब हुआ है जब मैंने चाय को आग के कुण्ड में से कूदते हुए देखा है, जब कि उसका ड्राइवर पीछे खड़ा दिख रहा था। लखनऊ में आपको अथवा पालीवाल जी को सेक्रेटेरियट में काम करते हुए देखकर मेरे मन में वही भाव उत्पन्न होते। अच्छा हुआ कि उन दिनों मैं लखनऊ नहीं गया। क्या आप मुझे बधाई न देंगे?

हाँ, एक बात तो बताइए। क्या काश्मीर में पहाड़ों पर हिन्दू धर्म इतना विकृत हो गया है कि मुर्दे को शास्त्र द्वारा न जला कर उनका अन्त्येष्टि करने लगे हैं? श्री पालीवाल जी के चले जाने से ग्राम सुधार विभाग की आत्मा निकल गई अब आपके जाने से उसका हृदय भी चला गया। इस 'ग्राम-सुधार' का ढाँचा को माननीय पन्त जी तथा आनरेबुल काटजू साहब इधर-उधर क्यों किये दिये हैं? इस दफ्तर को बन्द न करिये?

जिस कोठी में मैं यहाँ रहता हूँ। वहाँ पहले बिजली की रोशनी थी। सारा-सामान स्विच, झाड़फानूस लट्टू (यहाँ तक कि बत्तियाँ भी!) सब ज्यों का त्यों सुरक्षित हैं बस लालटेन नहीं है। एक लाख ग्रामों में बिना लालटेन के बिजली का प्रकाश पहुँचाने वालों को मेरा साष्टांग दण्डवत् कहिए।

विनीत
बनारसीदास

परिशिष्ट अ

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और उनके पत्र

(श्री वृन्दावनदास)

प० बनारसीदास जी चतुर्वेदी को मैं बचपन से जानता हूँ। लगभग ४० वर्ष हुए एक बार जब मैं आगरा कालेज में विद्यार्थी था उनका किसी छात्रावास में भाषण हुआ था। उस समय सर्वप्रथम मैंने उनके दर्शन किये और भाषण भी सुना। उनकी विद्वत्ता और निरभिमानता से तो मैं उसी समय से प्रभावित हूँ। उसके बाद यद्यपि कदा वे मथुरा भी आया करते थे। तब यद्यपि मुझे कभी-कभी उनके दर्शन हो जाया करते थे उनसे व्यक्तिगत परिचय न हुआ था।

यों तो मैं हिन्दी में चालीस वर्षों से लिखता रहा हूँ परन्तु चतुर्वेदी जी से व्यक्तिगत परिचय तो मुझे सन् १९६३ से ही हुआ है। सन् १९६३ में मैं अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल का कार्यवाहक अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था और सन् १९६४ से ब्रजभारती सम्पादक के रूप में हिन्दी की सेवा करता रहा हूँ। कदाचित् ब्रज साहित्य मण्डल से सम्बन्धित एक हिन्दी सेवी होने के नाते चतुर्वेदी जी ने मुझे अपने निकटस्थ और घनिष्ठ साहित्यिक परिचय तथा कृपा के लिये उपयुक्त समझा। उसी समय से चतुर्वेदी जी जिस आत्मीयता और घनिष्ठता से मेरे ऊपर कृपा करते रहे है उसका मैं आभारी हूँ।

चतुर्वेदी जी इस देश के उन महान व्यक्तियों में से एक हैं जो पत्र व्यवहार द्वारा अपने मित्रों परिचितों और सामाजिक कार्य कर्त्ताओं को सतत प्रेरणा प्रदान करते रहते है तथा क्या करणीय है इस दिशा की ओर सदैव इंगित करते रहते है। मैं चतुर्वेदी जी के उन आत्मीय परिचितों में से एक हूँ जिसको कभी कभी तो प्रतिदिन एक पत्र प्राप्त होता रहता है और जिसकी कार्य पूर्ति करना वह अपना अहोभाग्य समझता है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों से उनका महान व्यक्तित्व अनायास ही परिलक्षित होता है। ये पत्र उनकी शालीनता, विद्वत्ता, नम्रता और सदाशयता को स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित करते हैं। भाई रामचरण जी हयारण मित्र ने ब्रजभारती के ज्येष्ठ अंक में चतुर्वेदी जी के पत्रों के विषय में अपने संस्मरण लिखे थे। स्वयं चतुर्वेदी जी ने स्वर्गवासी डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों पर सम्मेलन

पत्रिका म एक विद्वत्तापूर्ण सस्मरणात्मक लेख लिखा है। मुझे भी ऐसा लगा कि जब मैं स्वय चतुर्वेदी जी के पत्रों के रूप म एक स्थायी साहित्यिक निधि का स्वामी हूँ तो क्यो न उनके पत्रों के सम्बध म एक गवेषणापूर्ण एव विचारोत्तेजक निबध लिख डालूँ।

प० बनारसीदास जी चतुर्वेदी ब्रज-साहित्य मण्डल के सस्थापको म से हैं। ब्रज साहित्य मण्डल की स्थापना सन् १८४० ई० म हुई थी। वह दिन दूर नहीं है जब मण्डल का एक विस्तृत इतिवृत्त जनता के सम्मुख आवेगा जिसम उनके दीर्घ जीवन की एक उज्ज्वल झाँकी प्रस्तुत होगी। उस झाँकी म निस्सन्देह चतुर्वेदी जी का स्थान अत्यन्त उच्च होगा।

ब्रज साहित्य मण्डल म कुछ वर्षों तक गतिरोध रहा। इधर जब म मैंने उसका काय भार सम्हाला और ब्रजभारती को पुन चालू किया तब तो चतुर्वेदी जी के हष का ठिकाना न रहा। उनका 'ब्रज साहित्य मण्डल का पुनरुद्धार' शीषक एक लेख अनेक समाचार पत्रों म प्रकाशित हुआ। उस लेख की एक प्रति उन्होंने मेरे पास भी भेजी तथा ब्रज-साहित्य मण्डल की स्थापना म सम्बधित समस्त उस पत्र व्यवहार की प्रतिलिपियाँ भी भेजी जो उनके तथा स्थानीय साहित्य सेवियों के मध्य हुआ था। तद्विषयक अ य पत्रों के अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण पत्रों को ही यहाँ उद्धृत किया जाता है।

२ ३ ६६

प्रियवर,

हम ब्रजमण्डल के साधन सम्पन्न निवासियों म कवियों तथा लेखकों से प्रेम के मालिकों म और पत्रकारों म अपने काय म सहायता लेना चाहिए। यद् मैं जानता हूँ कि शायद दस फीसदी व्यक्ति भी सहायता न देंगे, फिर भी प्रयत्न तो करना ही है। सम्भवत क्या यह असम्भव है कि कोई प्रेमाध्यक्ष सत्यनारायण कविरत्न का दश भक्त हरिशस पुन छाप दे। उसम दो सौ रुपये का भी व्यय न होगा। ब्रजभाषा की परीक्षाएँ यदि कभी चालू हो तो पाठ्य पुस्तकें स्वय मण्डल को ही छापनी चाहिए। जो भी महानुभाव अम तुम बठे हो उनसे अनुनय विनय करके उन्हें पुन मण्डल म लाना है। ब्रज के वतमान कवियों के नाम तथा पते आप अपने यहाँ रखिए।

विनीत
बनारसीदास

इस पत्र म चतुर्वेदी जी ने मण्डल के लिए अनेक स्रोतों से सहायता की कल्पना की है तथा एतदथ सुझाव भी प्रस्तुत किया है परन्तु वास्तविक स्थिति

से पूणतया भिन्न होते हुए अपना सन्देह भी प्रगट कर दिया है। कविरत्न सत्यनारायण रचित देश भक्त होरेशस के प्रकाशन के लिए उनके मन म कितनी व्याकुलता है ? मण्डल के पुनर्निर्माण के लिए उनके सुझाव कितने हृदयग्राही एव आत्मीयमयी भावना से प्रेरित हैं ? इस सम्बन्ध मे ता० १६ ३ ६६ को पुन एक पत्र प्राप्त हुआ।

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

व दे। व्रजभारती के तृतीय अक लिए आपका कृतज्ञ हूँ। आपने मुझे जिन शब्दो म याद किया है तदर्थ धन्यवाद।

कल के मनिक म पढा कि ब्रज प्रदेश के लिए मथुरा म आन्दोलन शुरू हो गया है। मेरा ख्याल है कि पहले हमे साहित्यिक तथा सास्कृतिक आधार तैयार कर लेना चाहिये। केवल राजनैतिक विभाजन से काम नही चलेगा। अधिकार लिप्सा पदलोलुपता, राजनैतिक तिकडम, गुटबन्दी, उपसाम्प्रदायिकता या जातिवाद की बीमारियाँ हमारे जीवन रूपी शरीर मे बुरी तरह घर कर गई हैं और वे अच्छे से अच्छे यत्नो का विनाश कर सकती हैं। कुछ मन्त्रियो, उपमन्त्रियो और सचिवो के बढ जाने स व्रजमण्डल का उद्धार कदापि न होगा। क्या हमारे राजनैतिक नेताओ म व्रजभूमि के प्रति उसके साहित्य तथा सस्कृति के प्रति सच्ची लगन है ? यदि साहित्यिक तथा सास्कृतिक आधार शिला दृढतापूर्वक रक्खी जा सके तो यह आन्दोलन कल्याणकारी बन सकता है। आपकी क्या राय है ? विस्तार से फिर लिखूगा।

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी व्रजप्रान्त निर्माण के समर्थक हैं परन्तु उनका यह समर्थन व्रजप्रान्त के साहित्यिक और सास्कृतिक उन्नयन के हेतु ही है। यह तो स्पष्ट है कि व्रज-साहित्य और सस्कृति के प्रति वर्तमान राज्यस्तर पर जो उपेक्षा और उदासीनता है उसी स खिन्न और उद्विग्न होकर लोग व्रजप्रदेश के निर्माण की आवाज उठाते हैं। इस सम्बन्ध म चतुर्वेदी जी का दृष्टिकोण उनके पत्रो स पूर्णतया विदित हो जाता है। कुछ और पत्र भी उद्धृत करना उपयुक्त होगा।

फीरोजाबाद
५ ७ ६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे। एक विचारोत्तेजक सरक्यूलर लेटर भिन्न भिन्न व्यक्तियो को भेजने की जरूरत है—व्रजप्रान्त निर्माण के विषय म—जिससे प्रेरित होकर वे लोग अपनी सम्मति उस बारे म लिख भेजें।

प्रान्त बने या न बने पर चर्चा चलाने से कुछ जागृति तो आवेगी ही। वस्तुतः मेरी रुचि जितनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जागरण में है उतनी राजनैतिक पुनर्गठन में नहीं।

एक दूसरा लेख 'साहित्य जगत की एक आवश्यकता—छुटभइयों का प्रोत्साहन' इस विषय पर भी लिखना चाहता हूँ। सन् १९२८ से यानी विशाल भारत के प्रारम्भ से ही इस दिशा में काम करता रहा हूँ और आज हिन्दी जगत में जो चोटी के लेखक या कवि हैं उनमें कुछ विशाल भारत के काफी ऋणी हैं।

विनीत

बनारसीदास

उपरोक्त पत्र में ब्रजप्रान्त निर्माण के विषय के अतिरिक्त एक और विषय की चर्चा चतुर्वेदी जी ने की है और वह है उदीयमान साहित्यिक बन्धुओं का प्रोत्साहन की। कहना न होगा यह विषय चतुर्वेदी जी को अत्यन्त प्रिय है। वास्तव में इसको और शहीदों के श्राद्ध को तो उन्होंने अपने जीवन का ध्येय ही बना रक्खा है। इन दोनों क्षेत्रों में चतुर्वेदी जी ने जो महान् कार्य किया है वह अविस्मरणीय है और समाज उनका चिर ऋणी रहेगा। चतुर्वेदी जी से जिस समय में कोई मेरा परिचय न था और वे कलकत्ते में विशाल भारत के सम्पादक थे मैंने एक दो लेख उन्हें 'विशाल भारत' में प्रकाशनार्थ भेजे। उन्होंने न केवल उन्हें छापा वरन् उन पर पुरस्कार स्वरूप कुछ रुपया भी मनीआर्डर से भेजा। कहना न होगा कि 'विशाल भारत' के माध्यम से अनेकों व्यक्ति साहित्यिक क्षेत्र में बढ़े और इसका श्रेय उस पत्र और उसके यशस्वी सम्पादक श्री चतुर्वेदी जी को है। अब हम ब्रज प्रान्त के निर्माण सम्बन्धी विषय पर चतुर्वेदी जी के कुछ और पत्र भी यहाँ देना चाहते हैं।

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे! जब तक कि दो चार व्यक्ति ऐसे न हों जो ब्रजमण्डल के लिए जी जान से प्रयत्न करने को उद्यत हो जावें तब तक ब्रजप्रान्त की चर्चा उठाना सर्वथा निरर्थक होगा। एक अंग्रेजी कविता है If you give all and life retain I say that all your gift is in vain, वस्तुस्थिति यह है कि ब्रजभूमि में ऐसे बलिदानी काम करने वाले लोगों का अभाव है। फिर भी हम निराश नहीं होना है। जो कुछ अपनी सीमित शक्ति के अनुसार कर सकें करते रहना चाहिए। भविष्य में कोई न कोई त्यागी युवक उत्पन्न होगा।

२१ ता० को मथुरा रेडियो ने बुलाया है। मैं यात्रा कर नहीं पाता। करना चाहता भी नहीं। 'शहीदों का श्राद्ध' बस एक ही काम ले रक्खा है। उसी के लिये शेष दिन अर्पित हैं।

विनीत
बनारसीदास

फ़ीरोजाबाद
३० ६ ६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

व्रजभारती का ६४ पृष्ठ का एक विशेषांक व्रजप्रान्त निर्माण के विषय में निकालिये, जिसमें पक्ष तथा विपक्ष दोनों के लेख रहें। मधुकर' का मैंने बुंदेलखण्ड प्रान्त निर्माण अंक निकाला था, उससे आन्दोलन में पर्याप्त सहायता मिली।

व्रजभारती के प्रकाशन मे काफी व्यय होना होगा। उसका प्रबन्ध आप किस प्रकार करते हैं ?

डा० सत्येन्द्र प्रान्त निर्माण के पक्षपाती है। मेरी चिट्ठियाँ मिली होंगी, बम्बई से आपके पत्र मिले थे।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ने व्रजप्रान्त के निर्माण पर और भी अपने अनेक पत्रों मे चर्चा की है विस्तार भय से उन सब पत्रों का उद्धृत करना सम्भव नहीं है। साराश यह कि व्रजप्रान्त के निर्माण से चतुर्वेदी जी का आशय व्रज की सर्वांगीण उन्नति से है उसके साहित्यिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान से हैं। वे इस आन्दोलन के द्वारा इस जनपद मे एक चेतना एक जाग्रति पैदा करना चाहते हैं जो स्तुत्य है।

ग्रन्थालोचना

चतुर्वेदी जी इस बात के पक्षपाती हैं कि अच्छी पुस्तकों की विधिवत् विस्तृत आलोचना होनी चाहिये। उन्होंने अपनी पुस्तक साहित्य सौरभ' एक बार मुझे ज्ञान मण्डल काशी से भिजवाई थी और मुझे उसकी आलोचना करने को लिखा था। मैंने उस पुस्तक पर अपनी तीन पृष्ठ की आलोचना व्रजभारती में छाप दी थी। बाबू श्यामसुन्दर जी खत्री कलकत्ते वालों को तो वह बहुत

ही पसन्द आई तथा चतुर्वेदी जी ने भी मुझे लिखा था, 'आपकी सहृदयतापूर्ण आलोचना के लिए बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ।'

चतुर्वेदी जी ने पुनः एक बार पत्र लिख कर डाक्टर सत्येन्द्र द्वारा लिखित 'ब्रजभाषा-साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ की आलोचना करने का भी आग्रह किया था। उन्होंने लिखा था 'चूँकि सत्येन्द्र जी अपने प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता हैं उनकी पुस्तक की विधिवत् विस्तृत आलोचना होनी ही चाहिए।'

इसी प्रकार एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ श्री प्रभुदयाल मीतल रचित 'ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास' की आलोचना करने की बात भी उन्होंने मुझसे कही थी। इस प्रसंग में उन्होंने श्री मीतल जी को भी लिखा कि अपनी पुस्तक की खूबियाँ किसी से लिखवा भेजें। उन्होंने इस चीज को एक प्रकार का प्रोपेगैण्डा समझा और यही उनको लिख दिया। इस पर चतुर्वेदी जी ने जो पत्र मीतल जी को लिखा उसे हम उद्धृत करते हैं।

प्रिय भाई मीतल जी

वन्दे ! आप प्रोपेगैण्डा या प्रचार से इतना डरते क्यों हैं ? यदि कोई जानकार व्यक्ति आपकी पुस्तक की खूबियाँ सप्रमाण लिख भेजें और मैं उन्हें मान कर उसका उपयोग कर लूँ तो इसमें अनैतिकता तो कोई है नहीं।

आपको शायद पता न हो, चर्चिल के पास छः सहायक नौकर थे जो सम्पूर्ण सन्दर्भगत मसाला तैयार कर देते थे। तभी वे इतने महान ग्रन्थ लिख सके।

७८ वें वर्ष में मुझे केवल एक आंख पर जोर डालकर लिखना पड़ता है। जब कोई सहायक नहीं क्या किसी दूसरे से इस प्रकार की सहायता मांगने में कोई अनौचित्य है ? इसके विषय में ज्यादा की राय उस लेख की बातें उद्धृत नहीं कर दूँगा अपनी अक्ल से भी काम लूँगा।

स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल जी ने आचार्य नरेन्द्रदेव जी से अपनी पुस्तक (शायद Discovery of India) में मदद ली थी। बेईमानी से या असत्य का आश्रय लेकर किया हुआ प्रचार-कार्य निन्दनीय है पर सर्वथा सद्भाव से और ईमानदारी से किए हुए प्रचार कार्य में कोई पाप हरगिज नहीं।

अगर आपका ग्रन्थ साधारण कोटि का होता तो मैं उसकी चर्चा हरगिज न करता—चाहे कितने भी प्रलोभन क्यों न दिए जाते पर वह एक असाधारण कृति है और मेरे उद्देश्य की पूर्ति में सहायक भी। इसलिए दूसरों से मदद लेकर (यही पत्र लिखने का मतलब) मैं इस पर लिखना चाहता हूँ मैं ब्रजभूमि में

पूरे ५१ वर्ष (१६१३ स १६६४ तक) दूर ही रहा, इसके सिवाय मुझे व्रज-भाषा या ब्रजभूमि क अध्ययन करने का मौका ही नहीं मिला। उसका शास्त्रीय ज्ञान मुझे है ही नही। उन सज्जनो के आप मुझे नाम तथा पता बतला दे, जो आपके ग्रथ के बारे म कुछ अधिकार पूर्वक लिख सकते हैं। इससे अधिक आपकी कोई जिम्मेदारी नही।

आपके ग्रथ मे यदि कुछ त्रुटिया मुझे दीख पडी तो उन्ह भी निस्सकोच प्रगट कर दूगा, आप निश्चित रह।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

आप मेरे जिजमान हैं सो मथुरा पहुँचन पर बढ़िया पेडे लेने का मुझ जन्मसिद्ध अधिकार है। उससे अधिक कुछ नही चाहता। नवीन जी की वह कविता मैं प्राय गुनगुनाया करता हूँ।

अरे ! सतत अर्पण ही अर्पण, यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण मे मृत्यु निहित है, प्रतिफल केवल भ्रम है॥'

वास्तव मे हम चतुर्वेदी जी से पूर्णतया सहमत हैं कि अच्छी पुस्तको की समालोचना होनी ही चाहिये। आलोचना द्वारा पुस्तक को अपेक्षित प्रचार प्राप्त होता है जिससे उस उद्देश्य की पूर्ति अनायास ही हो जाती है जिससे प्रेरित होकर पुस्तक लिखी गई थी। मीतल जी के ग्रथ ने ब्रजक्षेत्र के इतिहास साहित्य की दिशा मे एक बहुत बडी कमी की पूर्ति की है। मुझे उनके महत्व-पूर्ण ग्रथ के इतिहास खण्ड का अवलोकन करने का अवसर मिला है। उन्होने व्रज के मिस से समस्त भारतीय इतिहास को ही बडी ओजपूर्ण और प्रवाहमयी भाषा म लिख डाला है। उन्होने इस इतिहास म इतनी नवीन मनोरजक सामग्री का समावेश कर दिया है कि ग्रथ को पढ़ने के लिए हाथ म लेने के बाद छोडने को जी नही चाहता। मीतल जी के इतिहास म हमें बहुत सी बात इसलिये नई मालूम होती हैं चूकि वे अन्य इतिहास ग्रथो म सहसा उपलब्ध नही हैं, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नही कि वे घटनाक्रम कल्पना के आधार पर लिखे गये हैं मीतल जी ने अपने द्वारा प्रस्तुत किये हुए तथ्यो को आधार और साक्ष्य समन्वित किया है। मीतल जी का ग्रन्थ उनके कई दशको के श्रम और खोज का सुफल है। उन्होंने अपने इस ग्रन्थ के द्वारा ब्रजक्षेत्र की जनता का जो उपकार किया है उससे वह सदा के लिय ऋणी रहेगी।

चतुर्वेदी जी का मतभेदों के प्रति उदारभाव

मैंने "हिन्दी भवन निर्माण योजना" शीर्षक के अन्तर्गत ब्रजभारती के [illegible] लेख में अपने विचार प्रकट किये थे। आदरणीय चतुर्वेदी जी ने उस पर एक समीक्षात्मक लेख अमर उजाला में लिखा। उन दोनों लेखों को यहाँ विस्तारभय से देना सम्भव नहीं है इसकी आवश्यकता भी नहीं है। इस प्रसंग में एक विशेष उल्लेखनीय बात ही प्रस्तुत करना अभीष्ट है। बात यह थी कि मेरे लेख का सामान्यतया समर्थन करते हुए चतुर्वेदी जी ने कुछ ऐसे तथ्य भी प्रस्तुत किये थे जिनसे मेरी प्रस्तावित योजना की उपादेयता में उनका मतभेद स्पष्ट प्रकट होता था। मैंने उनके तर्कों का विनम्र भाषा में खण्डन करते हुए प्रत्युत्तर स्वरूप एक लेख अमर उजाला में प्रकाशित कराया। लेख को अमर उजाला में भेजने के पूर्व मुझे संकोच तो हुआ कि एक हितैषी और गुरुतुल्य कृपालु मित्र की बात काटना ठीक नहीं परन्तु चतुर्वेदी जी की निष्पक्ष उदारता का ध्यान करके उसे भेज ही दिया। तदुपरान्त चतुर्वेदी जी ने जो पत्र लिखा उससे उनकी सहिष्णुता और महानता बोध होता है। वह पत्र इस प्रकार है।

फीरोजाबाद
१६ २ ६७

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। आज के अमर उजाला में आपका सुन्दर लेख पढ़ा। 'वादे वादे जायते तत्त्वबोध' इस नीति के अनुसार हम लोगों के वाद विवाद से कुछ लाभ ही होगा। मेरे हृदय में मतभेदों के लिए पूर्ण सम्मान है और रहेगा। हम दोनों ब्रज के भक्त हैं ब्रजभाषा के भी—यह बड़ा सम्बन्ध है। बहुत सम्भव है कि अगले रविवार को मैं भाई हरिशंकर जी के साथ वृन्दावन की यात्रा करूँ। भाई हरिशंकर जी के आग्रह से मैं श्रद्धेय प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के दर्शन करने वहाँ जाना चाहता हूँ। अमर उजाला में एक लेख ब्रजप्रान्त के निर्माण के विषय में भेजा है। कृपया उस पर अपने विचार प्रकट कीजिएगा।

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी की गुणग्राहिणी प्रतिभा और आत्मीयता

इन दुर्लभ गुणों के प्रतीक कुछ ऐसे पत्र भी उद्धृत करने योग्य हैं।

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई और यह ख्याल आया कि हम लोगों को बहुत पहिले ही मिल लेना चाहिए था। अब तो ७४ वें वर्ष में मेरे पास

समय ही कम रह गया है। फिर भी जो कुछ वर्ष, महीने, दिन या क्षण बचे हैं उनका भरपूर सदुपयोग कर लेना चाहता हूँ।

अमर उजाला के ५ ता० के अंक में मेरा लेख छप गया है कृपया उसे पढ़कर संक्षेप में लिखिये भी। चर्चा चलने से कुछ लाभ ही होगा। संस्थाओं में तो मेरा विश्वास रहा नहीं। समानशील और परस्परपूरक व्यक्तियों को मिल कर काम करना चाहिये। भाई श्रीराम शर्मा का निधन वस्तुतः एक महान दुर्घटना है। उन पर एक लेख सविता में भेजा है। यदि ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी ब्रजभूमि के लिये कुछ कर सकें तो बड़ी बात हो।

विनीत
बनारसीदास
३० ५ ६७

फीरोजाबाद
२१ ६ ६३

प्रियवर, जय जमुना मैया की।

ब्रजभारती मुझे बराबर मिल रही है और उसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। क्या ही अच्छा हो यदि आप इस पत्रिका में ब्रज के अन्य केन्द्रों की साहित्यिक प्रवृत्ति पर भी कुछ प्रकाश डाला करें। पत्रिका को अधिकाधिक शास्त्रीय बना देने से उसकी उपयोगिता कुछ कम हो जायगी। ब्रज जनपद की बहुमुखी उन्नति ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। क्या पृथिवी-पुत्र (स्व० अग्रवाल कृत) आपके पास है अग्रवाल जी इस विषय के आचार्य थे। कल ही उनके १०० पत्र टाइप होकर दिल्ली से मथुरा आये है १८३ पृष्ठों में। ८०) रुपये से ऊपर टाइपिंग में ही खर्च हो गया। खैर, यह तो श्राद्धकर्म है और हम तो करना ही था। स्व० अग्रवाल जी ने ब्रज के लिये बहुत कार्य किया था। ब्रजभारती में उनके बारे में विस्तार से लिखा जाना चाहिये। उनका बृहदाकार चित्र तो मण्डल में होना ही चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

फीरोजाबाद
५ ६ ६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

आपके दोनों कृपापत्र मिले। डाक्टर श्री चन्द्रभान जी रावत वाली मीटिंग में आपने जो कुछ कहा उसमें मैं अक्षरशः सहमत हूँ। ब्रज साहित्य-मण्डल

के पुनर्निर्माण के लिए इस प्रकार की गाड़ियाँ नितान्त आवश्यक हैं। हम ब्रज की सर्वांगीण उन्नति करनी है। आप डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक पृथिवी-पुत्र को बार-बार पढ़िए। उसकी आलोचना भी करिए। वह हमारी बाइबिल है। निस्सन्देह हम अपनी पूरी शक्ति से राष्ट्रभाषा के लिए काम करेंगे परन्तु इससे हमारे मातृ भाषा प्रेम में कोई कमी न आनी चाहिए। आप लगन से काम करते रहें परिणाम की चिन्ता न करें। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' यह बात किसी ब्रजवासी ने ही कही थी।

बनारसीदास

हिन्दी सम्वर्द्धिनी योजना

चतुर्वेदी जी का ब्रज भारती के माध्यम से चलाई हुई हमारी इस योजना को आशीर्वाद प्राप्त है। उनकी कृपा से हम जितने ही इस सज्जनों से सम्पर्क स्थापित कर चुके हैं जो इस विषय के ज्ञाता हैं तथा इसमें रुचि रखते हैं। लगभग तीस चालीस वर्ष पहिले डाक्टर वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने इस योजना को जनपदीय आन्दोलन के नाम से पण्डित बनारसीदास जी के माध्यम से ही चलाया था। उन्होंने चतुर्वेदी जी को इस विषय पर लगभग १०० ऐतिहासिक पत्र लिखे थे जिनमें से कुछ डा० अग्रवाल रचित पुस्तक पृथिवीपुत्र में निकल चुके हैं और कुछ को स्वयं चतुर्वेदी जी ने लेखबद्ध करके सम्मेलन पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित कराया है। इस विषय पर चतुर्वेदी जी का हमारे पास आया हुआ पत्र इस प्रकार है।

४ १० ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी, जै जमुना मैया की।

आपका कृपापत्र मिला। उसके लिए बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने जनपदीय आन्दोलन को हिन्दी सम्वर्द्धिनी योजना के नाम से आगे बढ़ाने का जो शुभ संकल्प किया है उसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। 'मधुकर' के कुछ पुराने अंक अभी प्राप्य हैं। उन्हें तलाश करके भिजवा दूंगा। जनपद अंक तो अब बिल्कुल अप्राप्य हो गया है। इस वर्ष एक विद्वान ने भी उसकी माँग की थी।

बनारसीदास

देशभक्त होरेशस

स्वर्गवासी सत्यनारायण कविरत्न कृत देशभक्त होरेशस की बाबत चतुर्वेदी जी के पत्र में जिक्र आ चुका है। उनका फिर एक पत्र इस सम्बन्ध में आया जो इस प्रकार था।

२५ ६ ६६

प्रियवर,

प्रणाम ! सत्यनारायण कविरत्न कृत देशभक्त होरेशस टाइप किये हुए २८ पृष्ठों में आया है। टाइप दूर-दूर है। क्या ब्रज भारती के दो अंको मे उसे छापा जा सकता है ? वह पुस्तिका अब अप्राप्य हो गई है। सत्यनारायण विषयक सारा सामान कोई प्रयाग के सम्मेलन की सत्यनारायण कुटीर से उठा ले गया। अब एक महिला उन पर शोध कर रही है। आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें अनुमति भी मिल गई है।

आप अपनी सुविधानुसार जब भी मुनासिब समझें करें। यदि लम्बी चीजों से ब्रज भारती के पाठकों का मन ऊब जाने की आशंका हो तो न छापें। बस कविरत्न की कीर्तिरक्षा के लिए जो कुछ हम कर सकते हैं हमें करना ही चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

प्राचीन कवियों की कीर्तिरक्षा, उपेक्षितों और छुटभइयों की यत्किंचित सेवा और शहीदों का श्राद्ध ये तीनों विषय ही ऐसे हैं जिनके ऊपर चिंतन करने, लिखने पढ़ने और चेष्टा करने में ही आजकल चतुर्वेदी जी का सारा समय व्यतीत हो जाता है। वे ७५ वें वर्ष में भी इस सम्बन्ध में इतना परिश्रम कर रहे हैं कि अच्छे से अच्छे कमठ नवयुवक को भी वह प्रेरणा का विषय हो सकता है। हमने चतुर्वेदी जी की इच्छानुसार देशभक्त होरेशस को पुस्तक के रूप में मुद्रित कर प्रकाशित कर दिया है।

चतुर्वेदी जी साहित्यिक क्षेत्र में भी विकेन्द्रीकरण के पक्षपाती हैं। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित पत्र महत्वपूर्ण है।

फीरोजाबाद
६ ७ ६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! वेद का एक मन्त्र है— केवलाघो भवति केवलादी" यानी जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। मैंने चतुर्वेदी होते हुए वेद नहीं पढ़े, पर अगर वेद के इस मन्त्र का ही जीवन में उपयोग कर सकूं तो उन महान् ग्रन्थों को पढ़ने की आवश्यकता भी नहीं।

इस समय जो ईर्ष्या हिन्दी जगत में फैली हुई है उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि हमारे चोटी के लेखक तथा कवि आत्मकेन्द्रित हो गये हैं—मिल बाँट कर खाने की नीति में उनका यकीन नहीं रहा। उनकी आलोचना करने की जरूरत नहीं स्वयं हम लोग अपने को ठीक मार्ग पर रखें, बस इतना ही पर्याप्त है। ब्रजप्रान्त बने या न बने पर ब्रज जनपद तो बना ही रहेगा और उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिए हम सबको मिलकर काम करना है। पारस्परिक ईर्ष्या विद्वेष से ब्रज-साहित्य मण्डल को जो क्षति हुई उससे हमें सबक लेना है।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ने मुझे अनेक पत्रों में उन विद्वानों के नाम व पते लिखकर भेजे जिनसे मुझे मण्डल और हिन्दी के हित में सम्पर्क स्थापित करना उन्होंने अभीष्ट समझा। मैंने उनकी प्रेरणा से अनेक ऐसे विद्वानों से पत्र-व्यवहार किया जो बड़े महत्व के व्यक्ति थे और हिन्दी सेवा के प्रति जिनकी लगन सराहनीय थी। कुछ लोग तो इनमें चतुर्वेदी जी के अनन्य भक्त और कट्टर समर्थक थे और उन्होंने अपने पत्रों में चतुर्वेदी जी की सहृदयता, मनस्विता और सदाशयता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। पंडित पद्मसिंह शर्मा ने ठीक ही कहा था कि चतुर्वेदी जी की दीनवत्सलता और पर दुःखकातरता जगत्प्रसिद्ध है।

चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य अगाध है। यह अभी और बढ़ेगा। इस सागर में अनगिनत बहुमूल्य मोती हैं। यदि वे किसी पारखी द्वारा संकलित और संग्रहीत हो गये तो हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि के रूप में माने जायेंगे।

स्वर्गीय बापू के बाद कार्यकर्ताओं में सौहार्द स्थापित करके उनसे काम लेने वालों में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम अग्रगण्य है। यदि श्रद्धेय बापू ने अपने जीवनकाल में राजनीतिक कार्यकर्ताओं की सेना तैयार कर दी तो चतुर्वेदी जी ने अनेक साहित्यिकों को सतत प्रेरणा से प्रोत्साहित किया और उनमें पारस्परिक सौहार्द की भी स्थापना की। चतुर्वेदी जी से प्रेरणा प्राप्त साहित्यिकों का एक विशाल परिवार हिन्दी के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवा कर रहा है।

चतुर्वेदी जी महामना हैं, उनमें सन्तों के से गुण हैं। वे आत्मसंयमित निर्वैर, पर दुःखकातर एवं सहयोगात्मक जीवन की ओर कार्यकर्ताओं को उत्प्रेरित करते हैं। वे इतने सरल निरभिमानी एवं महान हैं कि उन्हें व्यक्ति

गत रूप में इस बात का किंचित् भी आभास नहीं कि अपने जीवन के ७५ वें वर्ष में शारीरिक शक्तियों के स्वाभाविक ह्रास की दशा में व फीरोजाबाद के अपने भवन में बैठे हुए भी एक ऐसा स्वस्थ नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम हो रहे हैं जिससे न केवल हिन्दी के हित साधन अपितु अनेक मानवीय गुणों के प्रतिष्ठापन में बड़ा मार्गदान मिल रहा है।

चतुर्वेदी जी की साहित्य साधना एक पक्षीय न होकर बहुमुखी है। चतुर्वेदी जी की साहित्यिकता में साहित्य के साथ मानव जीवन के चहुँओर का वातावरण जैसे पशु पक्षी, वन, उपवन नगर नागरिकों की नैतिक सामाजिक एवं आर्थिक दशा आदि भी सम्मिलित हैं। वे स्वयं इन सब विषयों पर अत्यन्त मौलिकता पूर्ण लेख लिखकर साहित्यिकों को इस सम्बन्ध में एक दिशाबोध करा रहे हैं। वे साहित्यिकों से अपेक्षा रखते हैं कि वे लोग साहित्य के अतिरिक्त अपने चारों ओर के फैले वातावरण पर भी अपनी दृष्टि रखें और उस पर अपनी लेखनी उठावें।

(ब्रजभारती अंक ३ सम्वत् २०२४ में प्रकाशित)

परिशिष्ट ब

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि में

(श्री वृन्दावनदास)

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण श्रद्धेय प० बनारसीदास जी चतुर्वेदी का सुख स्वप्न है। वह इसके लिए सतत प्रयत्नशील हैं। उन्होंने अनेक लेखों तथा अपने मित्रों और प्रशंसकों को लिखे पत्रों में उसकी समय समय पर रूप रेखा खींची है। उनके अनेक भाषणों में भी यह तत्व मुख्य रूप से विद्यमान है।

इस सम्बन्ध में वह प्रचार कार्य बड़े अर्से से कर रहे हैं कदाचित तब ही से जब से उन्होंने कलम उठाई है। आज ७७ वर्ष की अवस्था में भी वह फीरोजाबाद के अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे इस दिशा में जो महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं उसके परिणामस्वरूप अनेक साहित्यिक बन्धुओं को पुष्कल प्रेरणा मिली है और वह ब्रजभूमि के उद्धार में लग पड़े हैं। कदाचित सहज सौजन्य से आपूरित अपने स्वभाव के कारण चतुर्वेदी जी को यह भान भी नहीं है कि वह इस प्रकार एक महान अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।

ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण से चतुर्वेदी जी का आशय क्या है यह बताने के लिये हम ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण की कहानी चतुर्वेदी जी की जुबानी ही

सुनानी पड़ेगी। सर्वप्रथम लीजिए एक उद्धरण जो ब्रजकोकिल पं० सत्यनारायण कविरत्न अर्द्ध शताब्दी समारोह के अवसर पर चतुर्वेदी जी के अध्यक्षीय भाषण में दिया गया है।

ब्रजभूमि शताब्दियों तक भारत का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है और ब्रजभाषा अखिल भारतीय भाषा, फिर भी उसकी एक निजी संस्कृति रही है। अपने जनपद की विशेषताओं की रक्षा करते हुए देश की सांस्कृतिक धारा में उसका मेल मिलाप करने में ही हमारा कल्याण है। आज से लगभग साठ वर्ष पहिले सत्यनारायण जी ने 'भ्रमर दूत' में कहा था।

पहिले के सो अब न निहारो यह वृन्दावन,
याके चारों ओर भये बहु विधि परिवर्तन।
बन सत चौरस भये काटि घन बन-कुंज
दरसन को बस रहि गये निधिबन सेवाकुंज।
कहाँ चरिहैं गऊ?

ब्रज का अर्थ है वह हरी भरी भूमि जहाँ गायें चरती हैं। ब्रज के हरे भरे वनों को कायम रखना और वहाँ गोसदनों का निर्माण करना है— शहरी सभ्यता के आक्रमणों तथा अनाचारों से इसे बचाना होगा।

उपरोक्त उद्धरण चतुर्वेदी जी के प्रकृति प्रेम का तो द्योतक है ही, इससे उनकी ब्रजभूमि के विषय में एक ऐसी भूमि की कल्पना का भी पता चलता है, जो सुन्दर वन उपवनों से पूर्ण, गौओं के प्राचुर्य से युक्त और हरी भरी शस्य श्यामला हो।

चतुर्वेदी जी जहाँ वृक्षारोपण-पर्वों और वनमहोत्सवों का समर्थन करते रहते हैं और कहा करते हैं कि उद्यानों और बाग-बगीचों के स्वामियों तथा निर्माताओं की स्मृति में प्रशंसा की जानी चाहिए, वहाँ उन्हें वृक्षों के अनर्गल काटे जाने से बड़ी वेदना होती है। उसी अध्यक्षीय भाषण में वे अन्यत्र कहते हैं

'रूसी लोगों ने अपनी राजधानी मास्को को संसार की सबसे हरी भरी राजधानी बनाने का निश्चय किया था और उन्होंने उस दिशा में काफी सफलता प्राप्त की है। इधर हम लोग बिल्कुल उल्टी दिशा में चल रहे हैं। मुझे यह बात बड़ी लज्जा के साथ स्वीकार करनी पड़ती है कि ब्रज को रेगिस्तान बनाने में हमारे नगर फीरोजाबाद का जबर्दस्त हाथ है। लाखों मन लकड़ी फीरोजाबाद के कारखानों में ईंधन की जगह जलती रही है और अब भी चल

मील के घेरे म वृक्षा का कत्लेआम होता रहता है। मैने तो यहाँ तक सुना है कि देहरादून तक के जगल फीरोजाबाद क कारखानो की बलिवेदिया पर कुर्बान हो गये। चकबन्दी के कानून की वजह से भी सहस्रा ही पेड कट गये। सडक के किनार क वृक्षा पर निरतर आघात होते रहते हैं। इन सब कारवाइयो को रोकना है और ब्रज को रेगिस्तान बनने से बचाना है।"

जिस प्रकार शरीर के बिना आत्मा रह ही नही सकती उसी प्रकार चतुर्वेदी जी की दृष्टि मे ब्रजभूमि की सस्कृति की रक्षाथ ब्रज के भौतिक शरीर की रक्षा तथा उसका पोषण तो किया ही जाना चाहिए। ब्रज की ओर बढते हुए रेगिस्तान को रोकने का काय उनकी दृष्टि मे किसी साहित्यिक आयोजन स कम महत्व का नही है।

ब्रज सस्कृति और ब्रज-जीवन के जीते जागत चित्र को आचाय विनोबा भावे के निम्नलिखित शब्दो म चित्रित करते हैं।

"गोपाल कृष्ण ने गाँवो का वभव बढाया गावा की सेवा की गावा पर प्रेम किया। गाव ही उनका देवता था। आग चलकर वह द्वारिकाधीश बने। लेकिन फिर भी गोकुल मे आते थे फिर गायें चराते थ, गोबर म हाथ डालते थे, गोशाला बुहारत थे—वनमाल पहिनते थे वशी बजात थे लडका के साथ—गोप बालो के साथ खेलत थे। ब्रजकिशोर उनका प्यारा नाम था। उ होने गोकुल मे असीम आनन्द और सुख पैदा किया।'

हम दहाता को हरा भरा गोकुल बनाना है—स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्य सम्पन्न, उद्यागशील और प्रेमपूण। ईख का कोल्हू चल रहा है चरखा चल रहा है धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कौल्हू चर चर बोल रहा है कुएँ पर मोट चल रही है चमार जूता बना रहा है और वशी बजा रहा है—ऐसा गाँव बनने दो। अपनी गल्ती स हमने गाँवा को मरघट बना दिया। आइये उनको गोकुल बनावें।"

यह है चतुर्वेदी जी की कल्पना का ब्रज और उसका जीवन जिसे वह आचाय विनोबा क शब्दा म हमार सम्मुख रखते हैं।

एक बार एक सज्जन न चतुर्वेदी जी से पूछा—'बुन्देलखण्ड है कहाँ ?" यह बात उस समय की है जब चतुर्वेदी जी बुन्देलखण्ड का एक पृथक प्रान्त के रूप म निमाण चाहते थे और उसक लिए अपन पत्र मधुकर' म आन्दोलन चला रहे थे। चतुर्वेदी जी ने उत्तर दिया, 'बुन्देलखण्ड है इस प्रान्त के लाखा साधारण स्त्री-पुरुषा क हृदया म, किसाना मजदूरा की भुजाओ म, इस प्रान्त

नदियों और सरोवरों के तट सुरम्य हों, जिन पर स्वास्थ्यागार बने हों, जहाँ सड़कों पर आमों और मौलसिरी के वृक्ष और अनेक गुलाब के बाग हों।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं को हवाई महल का सपना कहकर इनका उपहास समझा जाय? नहीं, कदापि नहीं। यदि हमारे युवकों में दृढ़ इच्छा शक्ति है, हमारे लेखकों और कवियों के हृदय सरस और मस्तिष्क विकसित हैं, हमारे राजनीतिज्ञ सत्ता के मद में न हों, मस्त न रह कर उन्नति में व्यावहारिक चिन्तन करते हैं तो चतुर्वेदी जी की कल्पना को साकार करना कोई कठिन काम नहीं है। चतुर्वेदी जी के ही शब्दों में आज एक ही ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो कहे कि मैं स्वयं ही ब्रज हूँ जिसके जीवन और चिन्तन में ब्रज रमा हो। वह वाल्मीकि रामायण के एक प्रसंग

'अहं हि लंका नगरी स्वयमेव प्लवंगम' (हे वानर! मैं स्वयं ही लंका नगरी हूँ) की बड़ी सुन्दर व्याख्या करते हैं। उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति हो, जो दृढ़तापूर्वक कह सके कि 'मैं ब्रज हूँ।'

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्यानों, रेडियो वार्ताओं और आयोजनों की व्यवस्था करने से न होगा। वे कहते हैं कि उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिए अपने जीवन, अपने प्राण अर्पित करने वाले व्यक्ति जब तक इस भूमि में उत्पन्न नहीं होंगे तब तक यह स्वप्न अधूरा ही रहेगा। एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति देते हुए

It you give all and life retain
I say all your gift is invain

वह अपना मत प्रकट करते हैं कि चाहे आप अपना सर्वस्व दे दें पर अपने जीवन, अपने प्राणों को बचाये रक्खें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक हो गया। 'ब्रज साहित्य मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन का पद्य।

अरे मधुर अर्पण ही अर्पण यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मृत्यु निहित है प्रतिग्रह केवल भ्रम है॥

चतुर्वेदी जी ब्रज के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए आदर्श वाक्य के रूप में मानते हैं।

'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना मुख्यतया चतुर्वेदी जी के मस्तिष्क की उपज है। जिस समय टीकमगढ़ में वह 'मधुकर' के सम्पादन का कार्य कर

छोड़कर एक डाली भी इस वन में से न काटी जायगी। प्राकृतिक और कृत्रिम सौन्दर्य का यहाँ अनुपम मेल पाया जाता है।

गोधूलि के समय यह वन बड़ा रम्य प्रतीत होता है। जिन्होंने पचास वर्ष पहले गाय बैल देखे थे उनकी आँखें आज के गाय बैल देखकर चौंधिया जायेंगी। तुलना के लिए उनके चित्र संग्रहालय में देखे जा सकते हैं। कहाँ छटाक भर दूध देने वाली, सूखे थन और रूखे बदन वाली चित्रलिखित गाय और कहाँ यह सामने खड़ी हुई गंगा, यमुना बलवा और जामनर नामक गोमाताएँ और उनके घड़ा भर दूध देने वाले स्तन। घी अब ढाई सेर का बिकता है और दूध बीस सेर का। बुन्देलखण्ड अब भारतवर्ष का उपवन है। इस प्रान्त में सरोवरों और उपवनों की भरमार है। यहाँ के आमों अमरूदों, आड़ूओं और नारंगियों ने आस पास के बाजारों को पाट दिया है।

यहाँ उपवनों में नदियों और सरोवरों के तट पर ग्राम विद्यालय है। यहाँ आप ग्रामगीत सुन सकते हैं और ग्रामनृत्य देख सकते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है जिसका ग्राम वन से घनिष्ट सम्बन्ध है। यहाँ कुंजें, सड़क की दोनों ओर लगे मौलिश्री के वृक्ष और गुलाब के खेत दर्शनीय हैं। यहाँ के उपवनों के नाम उन महापुरुषों के नाम पर हैं, जिन्होंने उनकी उन्नति में योगदान दिया है। प्रान्तीय साहित्य संघ का कार्यालय और उसके साथ चित्रशाला द्रष्टव्य हैं, उसमें प्रान्त के सभी साहित्यिकों की कृतियाँ और उनके चित्र संगृहीत हैं।

इतिहास परिषद भी इसी संस्था से सम्बद्ध है। मूर्तियों का संग्रहालय अलग में है। राज्य के सभी महाराजाओं के जीवन चरित छप चुके हैं और इस संग्रहालय में विद्यमान हैं। ऋतुओं के उत्सव होते हैं जिनमें स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध सभी भाग लेते हैं।"

यही चतुर्वेदी जी की कल्पना अथवा उनका सुख-स्वप्न ब्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के लिये भी है। उनका हृदय उस ब्रज के लिए अधीर है जिसमें दूध बीस सेर और घी ढाई सेर का बिके, जिसकी गायों के स्तनों से दूध घड़ा-भर निकले, जिसके ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा मिले जिसका ग्रामीण जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध हो, जिसमें ऋतुओं के उत्सव मनाये जाते हों, जहाँ महापुरुषों का सम्मान हो जहाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना प्रबुद्ध रूप से विद्यमान हो, जहाँ रमणीक वन और उपवन हों जहाँ अनावश्यक वृक्षों को छोड़कर एक डाली भी काटने पर निषेध हो जहाँ की

के लेखकों तथा कवियों की भावनाओं में पुरुषों तथा युवतियों की आकांक्षाओं में। बुन्देलखण्ड है, गाजर, मकुन्दार और बापू के रचयिताओं के हृदय में। और यदि भीतर जगत की बात करें तो बुन्देलखण्ड है यहाँ के पशु-पक्षियों में, नदी नद-नालाओं तीर प्रपातों में, गुफाओं, वनों उपवनों में, वनों के जन में, वनों के वायु में और इस भूमि के कण कण में।' यदि कोई व्यक्ति चतुर्वेदी जी से ब्रज के विषय में पूछे कि ब्रज क्या है तो भी उनका उत्तर कुछ इसी तरह के भाव लिये प्रकार का होगा। वास्तव में यह प्रश्न का सबसे सुन्दर और वास्तविक चित्र यहाँ है जो वहाँ के समाज का स्थान और प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव अर्थों में प्रस्तुत करता है। प्रश्न का एक नवीन चित्र उस स्थान के सदृश है जिसमें यहाँ की सामान्य जनता और उसके चारों ओर का वातावरण प्रतिबिम्बित होता है।

सन् १९४३ में एक बार चतुर्वेदी जी ने '२००० ईस्वी का बुन्देलखण्ड' शीर्षक एक लेख मधुकर में लिखकर सौ-पचास वर्ष बाद बुन्देलखण्ड की जिस दशा की कल्पना की थी उसका वृत्तान्त बड़ा दृश्यग्राही है। पुनर्निर्माण के बाद ब्रजभूमि कैसी होनी चाहिए, इसका अनुमान चतुर्वेदी जी की उस कल्पना से लगाया जा सकता है जो उन्होंने २००० ई० के बुन्देलखण्ड में की थी। उन्होंने कल्पना की है कि सन् २००० ई० में एक यात्री-दल बसन्त ऋतु में अपनी तरह की यात्रा के लिए निकलता है। इस दल में किसान, वनस्पति और ग्राम-स्वाध्याय वाले पच्चीस युवकों का एक टोला है जिसके साथ दो-चार प्रौढ़ व्यक्ति भी हैं। इस-ग्यारह मील रोज़ चलने का इनका नियम है। दूसरी तीसरी श्रेणी तामसी का और चौथा जानवर के तौर पर भ्रमण करेगी। हमारे विद्यालयों ने पुराना अनुभवजन्य (अर्थात बसन्त ऋतु में छात्रों को स्कूल की चहारदीवारी में बन्द रखना) छोड़ दिया है। बसन्त ऋतु में पाँच सप्ताह की छुट्टियाँ हुआ करती हैं। इसी ऋतु में बसन्त व्याख्यानमाला का प्रबन्ध होता है इसलिए जितना उपयोगी व्यावहारिक ज्ञान वे स्कूल में साल भर में प्राप्त नहीं कर पाते उससे अधिक इस महीने के भ्रमण में प्राप्त कर लेते हैं।

ये यात्री-दल ओरछा के कृषि महाविद्यालय में जाकर निवास करते हैं। कृषि महाविद्यालय के साथ वहीं पर ग्रामीण कार्यकर्ताओं का ट्रेनिंग स्कूल भी है। तुङ्गारण्य में प्रान्त का सबसे बड़ी गोशालाओं का निर्माण हो गया है। जिस वन में जानवर बनवाये गये हुआ है वहीं स्वास्थ्यागार (सनीटोरियम) बना दिया गया है। इस विश्राम में यात्री यहाँ आकर ठहरते हैं। आज से चालीस वर्ष पहले ही सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि अनावश्यक वृक्षों को

छोडकर एक डाली भी इस वन म से न काटी जायगी। प्राकृतिक और कृत्रिम सौन्दय का यहाँ अनुपम मेल पाया जाता है।

गोधूलि के समय यह वन बडा रम्य प्रतीत होता है। जिन्होंने पचास वष पहले गाय बैल देखे थ उनकी आँखें आज के गाय बैल देखकर चौंधिया जायेंगी। तुलना के लिए उनके चित्र सग्रहालय म देखे जा सकते है। कहाँ छटाक भर दूध देन वाली, सूखे थन और रूख वदन वाली चित्रलिखित गाय और कहा यह सामन खडी हुई गगा यमुना, बतवा और जामनेर नामक गोमाताएँ और उनके घडा भर दूध देने वाले स्तन। घी अब ढाई सेर का बिकता है और दूध बीस सर का। बुन्देलखण्ड अब भारतवष का उपवन है। इस प्रान्त म सरोवरा और उपवनो की भरमार है। यहा क आमो अमरूदो, आडुओ और नारगियो न आस-पास के बाजारो को पाट दिया है।

यहाँ उपवनो म नदियो और सरोवरो के तट पर ग्राम विद्यालय है। यहा आप ग्रामगीत सुन सकते हैं और ग्रामनृत्य देख सकते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है, जिसका ग्राम वन से घनिष्ट सम्बन्ध है। यहा कुजें, मडक की दाना ओर लगे मौलिश्री के वृक्ष और गुलाब के खेत दशनीय हैं। यहाँ के उपवना क नाम उन महापुरुषो के नाम पर हैं, जिन्होंने उनकी उन्नति म योगदान दिया है। प्रान्तीय साहित्य सघ का कार्यालय और उसके साथ चित्रशाला द्रष्टव्य है उसम प्रान्त के सभी साहित्यिको की कृतिया और उनके चित्र सगृहीत है।

इतिहास परिषद भी इसी सस्था स सम्बद्ध है। मूर्तिया का सग्रहालय अलग स है। राज्य के सभी महाराजाओ के जीवन चरित छप चुके हैं और इस सग्रहालय मे विद्यमान हैं। ऋतुओ के उत्सव होते हैं, जिनम स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध सभी भाग लेत है।"

यही चतुर्वेदी जी की कल्पना अथवा उनका सुख-स्वप्न व्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के लिये भी है। उनका हृदय उस व्रज के लिए अधीर है जिसम दूध बीस सेर और घी ढाई सेर का बिके, जिसकी गाया के स्तना से दूध घडा भर निकले जिसके ग्रामीण विद्यालयो म विद्यार्थियो को व्यावहारिक शिक्षा मिले जिसका ग्रामीण जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध हो जिसमे ऋतुओ क उत्सव मनाये जाते हो, जहाँ महापुरुषो का सम्मान हो जहाँ साहित्यिक और साम्कृतिक चेतना प्रबुद्ध रूप से विद्यमान हो जहाँ रमणीक वन और उपवन हो जहा अनावश्यक वृक्षो को छोडकर एक डाली भी काटने पर निषेध हो, जहाँ की

नदियों और सरोवरों के तट सुरम्य हों, जिन पर स्वास्थ्यागार बने हों, जहाँ सड़कों पर दोनों ओर मौलिश्री के वृक्ष और अनेक गुलाब के वन हों।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं का हवाई महल की संज्ञा देकर इनको उपहासीय समझा जाय ? नहीं, कदापि नहीं। यदि हमारे युवकों में दृढ़ इच्छा शक्ति है, हमारे लेखकों और कवियों के हृदय गरम और मस्तिष्क विकसित है हमारे राजनीतिक सत्ता के धनी मे हो सच्चे मन से वह ब्रज जनहित में व्यावहारिक चिंतन करते हैं तो चतुर्वेदी जी की कल्पना को साकार करना कोई कठिन काम नहीं है। चतुर्वेदी जी के ही शब्दों में आज तक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो कह कि मैं स्वयं ही ब्रज हूँ जिसके जीवन और चिन्तन में ब्रज रमा हो। वह वाल्मीकि रामायण के एक प्रसंग

'अयं हि लंका नगरी स्वयमेव प्लवंगम (हे वानर ! मैं स्वयं ही लंका नगरी हूँ) की बड़ी सुन्दर व्याख्या करते हैं। उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति हो, जो दृढ़तापूर्वक कह सके कि "मैं ब्रज हूँ।'

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्यानों, रेडियो वार्ताओं और आयोजनों की व्यवस्था करने से न होगा। वह कहते हैं कि उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिए अपना जीवन अपने प्राण अर्पित करने वाले व्यक्ति जब तक इस भूमि में उत्पन्न नहीं होते तब तक यह स्वप्न अधूरा ही रहेगा। एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति देते हुए

It you give all and life retain
I say all your gift is invain

वह अपना मत प्रकट करते हैं कि चाहे आप अपना सर्वस्व दे दें, पर अपने जीवन, अपने प्राणों को बचाये रक्खें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक ही गया। ब्रज साहित्य मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का पद्य :

अरे समुद अर्पण ही अपना यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मृत्यु निहित है प्रतिक्षण केवल भ्रम है॥

चतुर्वेदी जी ब्रज के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए आप्त वाक्य के रूप में मानते हैं।

ब्रजसाहित्य मण्डल की स्थापना मुख्यतया चतुर्वेदी जी के मस्तिष्क की उपज है। जिस समय टीकमगढ़ में वह 'मधुकर' के सम्पादन का कार्य कर

रहे थे उसी समय उन्होंने क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक मण्डलों की स्थापना का एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया था। विद्वानों का ध्यान उस सुझाव की ओर आकृष्ट हुआ और परिणाम स्वरूप 'व्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना सन् १६४० ई० में हुई।

चतुर्वेदी जी मण्डल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के लिए मुख्य परामर्शदाता के रूप में समझे जाते थे। चतुर्वेदी जी व्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष और उससे सम्बद्ध संस्था साहित्य परिषद के भी अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी अध्यक्षता के काल में मण्डल को एक प्रौढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

चतुर्वेदी जी के हृदय में व्रजभाषा के लिए बड़ा मृदुल स्थान है। वह ठीक ही कहते हैं कि किसी समय व्रजभाषा समस्त उत्तर भारत में बोलचाल की भाषा थी। वह उस भाषा की उन्नति चाहते हैं। उनका दृढ़ मत है कि व्रजभाषा का हितसम्वर्द्धन करने से उसका संरक्षण-सम्वर्द्धन और उन्नयन करने से हिन्दी का जिसके कि वह स्वयं एक अनन्य सेवक और साधक रहे हैं और जिसमें उनका एक अत्यन्त उच्च आसन सुरक्षित है, कोई अहित नहीं। चतुर्वेदी जी का मत है कि व्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। व्रजभाषा हिन्दी से अलग हो ही नहीं सकती। व्रजभाषा के कार्यकर्त्ता हिन्दी के अनिवार्यत कार्यकर्त्ता हैं। व्रजभाषा का पक्ष समर्थन कर हम हिन्दी की उन्नति करने की दिशा में ही अग्रसर होते हैं। यहाँ पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि चतुर्वेदी जी का हिन्दी की अन्य उपभाषाओं के प्रति, जैसे भोजपुरी, अवधी, बुन्देली राजस्थानी मगधी, बघेली मैथिली आदि के प्रति—भी यही दृष्टिकोण है। वह चाहते हैं कि इन सभी उपभाषाओं अथवा बोलियों के कार्यकर्ता अपने अपने क्षेत्र में इनका विकास करें, इनकी उन्नति की योजना बनावें, इनके साहित्यिक पक्ष को परिष्कृत और उन्नत बनावें तो इससे हिन्दी के अहित की कोई बात नहीं, अपितु इससे तो हिन्दी की समृद्धिशालिता बढ़ेगी। चतुर्वेदी जी के दृष्टिकोण में सदैव व्यापकता और एकरूपता रहती है। हमने उन्हें कभी संकीर्ण दायरों में सोचते नहीं देखा।

एक बार हमने समाचार पत्रों के माध्यम से व्रजभाषा भाषियों को सम्बोधित करते हुए उनसे जनगणना के अवसर पर अपनी भाषा व्रजभाषा (हिन्दी) लिखाने का आह्वान किया था। हमारे कुछ मित्रों ने इस पर आपत्ति की और इस कदम को हिन्दी के हित के विरुद्ध बताया। हम स्वयं अपने को हिन्दी का विनम्र कार्यकर्त्ता पहले और व्रजभाषा का पीछे मानते हैं। हमें उस आपत्ति पर कुछ आश्चर्य हुआ। हमने आपत्तिकर्त्ताओं को समाचार पत्रों में

नदियों और सरोवरों के तट सुरम्य हों, जिन पर स्वास्थ्यागार बने हों, जहाँ सड़कों पर दाना और मौलश्री के वृक्ष और अनेक गुलाब के वन हों।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं को हवाई महल की संज्ञा देकर इनको उपहासनीय समझा जाय? नहीं, कदापि नहीं। यदि हमारे युवकों में दृढ़ इच्छा शक्ति है, हमारे लेखकों और कवियों के हृदय सरस और मस्तिष्क विकसित हैं, हमारे राजनीतिक सत्ता के मन में हो सम्मान के साथ जनहित में व्यावहारिक चिंतन करते हैं तो चतुर्वेदी जी की कल्पना को साकार करना कोई कठिन कार्य नहीं है। चतुर्वेदी जी के ही शब्दों में आज एक हो ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो कहे कि मैं स्वयं ही ब्रज हूँ जिसके जीवन और चिन्तन में ब्रज रमा हो। वह वाल्मीकि रामायण के एक प्रसंग

'अयं हि त्वया नगरी स्वयमेव प्लवगम (हे वानर! मैं स्वयं ही लंका नगरी हूँ) की बड़ी सुन्दर व्याख्या करते हैं। उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति हो, जो दृढ़तापूर्वक कह सके कि "मैं ब्रज हूँ।"

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्यानों, रेडियो वार्ताओं और आयोजनों की व्यवस्था करने से न होगा। वह कहते हैं कि उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिए अपने जीवन अपने प्राण अर्पित करने वाले व्यक्ति जब तक इस भूमि में उत्पन्न नहीं होते तब तक यह स्वप्न अधूरा ही रहेगा। एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति देते हुए

It you give all and life retain
I say all your gift is invain

वह अपना मत प्रकट करते हैं कि चाहे आप अपना सर्वस्व दे दें, पर अपने जीवन, अपने प्राणों को बचाये रखें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक ही गया। ब्रज साहित्य मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन का पद।

अरे समुद्र अर्पण ही अपने यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मृत्यु निहित है प्रतिरक्षा केवल भ्रम है॥

चतुर्वेदी जी ब्रज के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए आप्त वाक्य के रूप में मानते हैं।

'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना मुख्यतया चतुर्वेदी जी के मस्तिष्क की उपज है। जिस समय टीकमगढ़ में वह 'मधुकर' के संपादन का कार्य कर

रहे थे उसी समय उन्होंने क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक मण्डलों की स्थापना का एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया था। विद्वानों का ध्यान उस सुझाव की ओर आकृष्ट हुआ और परिणाम स्वरूप 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना सन् १६४० ई० में हुई।

चतुर्वेदी जी मण्डल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के लिए मुख्य परामर्शदाता के रूप में समझे जाते थे। चतुर्वेदी जी ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष और उससे सम्बद्ध संस्था साहित्य परिषद के भी अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी अध्यक्षता के काल में मण्डल को एक प्रौढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

चतुर्वेदी जी के हृदय में ब्रजभाषा के लिए बड़ा मृदुल स्थान है। वह ठीक ही कहते हैं कि किसी समय ब्रजभाषा समस्त उत्तर भारत के बोलचाल की भाषा था। वह उस भाषा की उन्नति चाहते हैं। उनका दृढ़ मत है कि ब्रजभाषा का हितसम्वर्द्धन करने से उसका संरक्षण-सम्वर्द्धन और उन्नयन करने से हिन्दी का जिसके कि वह स्वयं एक अनन्य सेवक और साधक रहे हैं और जिसमें उनका एक अत्यन्त उच्च आसन सुरक्षित है, कोई अहित नहीं। चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। ब्रजभाषा हिन्दी से अलग हो ही नहीं सकती। ब्रजभाषा के कार्यकर्ता हिन्दी के अनिवार्यतः कार्यकर्ता हैं। ब्रजभाषा का पक्ष समर्थन कर हम हिन्दी की उन्नति करने की दिशा में ही अग्रसर होते हैं। यहाँ पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि चतुर्वेदी जी का हिन्दी की अन्य उपभाषाओं के प्रति, जैसे भोजपुरी, अवधी बुन्देली राजस्थानी, मगधी, बघेली मैथिली आदि के प्रति—भी यही दृष्टिकोण है। वह चाहते हैं कि इन सभी उपभाषाओं अथवा बोलियों के कार्यकर्ता अपने अपने क्षेत्र में इनका विकास करें इनकी उन्नति की योजना बनावें इनके साहित्यिक पक्ष को परिष्कृत और उन्नत बनावें तो इससे हिन्दी के अहित की कोई बात नहीं अपितु इससे तो हिन्दी की समृद्धिशालिता बढ़ेगी। चतुर्वेदी जी के दृष्टिकोण में सर्वत्र व्यापकता और एकरूपता रहती है। हमने उन्हें कभी संकीर्ण दायरों में सोचते नहीं देखा।

एक बार हमने समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रजभाषा भाषियों को सम्बोधित करते हुए उनसे जनगणना के अवसर पर अपनी भाषा ब्रजभाषा (हिन्दी) लिखाने का आह्वान किया था। हमारे कुछ मित्रों ने इस पर आपत्ति की और इस कदम को हिन्दी के हित के विरुद्ध बताया। हम स्वयं अपने को हिन्दी का विनम्र कार्यकर्ता पहले और ब्रजभाषा का पीछे मानते हैं। हमें उस आपत्ति पर कुछ आश्चर्य हुआ। हमने आपत्तिकर्त्ताओं को समाचार पत्रों में

का समुचित उत्तर दिया था और हमारे पत्र में आप विद्वानों ने अपना मत प्रगट किया था। चतुर्वेदी जी ने भी हमें इस प्रकार लिखा "ब्रजभाषा के विषय में जो कुछ आपने लिखा है, उससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ। उर्दू, अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलखण्डी के लिए भी हमारा मण्डल भरपूर प्रयत्न करे, क्योंकि ब्रजभाषा सब की बड़ी बहिन है, उर्दू की तो माता भी।

दुइ बिटिया ब्रजभाषा की हैं हिन्दी उर्दू सुन्दर नार।
जेठी महलन में है बैठी लहुरी बैठी जाइ बजार॥

मातृभाषा ब्रजभाषा अवश्य-अवश्य सिखाई जाय। इसमें डर किस बात का है। आखिर सच्चा ज्ञान देने का दूसरा उपाय है ही क्या? इस पवित्र कर्त्तव्य में संकोच किस बात का? इससे राष्ट्रभाषा हिन्दी को कोई हानि न पहुँचेगी। बाद में (हिन्दी) सिखाई जा सकती है।

जो लोग ब्रजभाषा को मातृभाषा लिखने में डरते हैं या संकोच करते हैं उनकी मोटी अक्ल पर मुझे तरस आता है। वे हृदय की भूल स्वयं करते हैं। ब्रजभाषा तो मेरी दादा की माँ है। इसे गौण समझना अक्ल के नम्बर की नासमझी है। आपका पत्र इतना प्रबल है कि उसकी विजय निश्चित है।' (ता० १/६/६८ का पत्र)

चतुर्वेदीजी सार्वजनिक संस्थाओं की अपेक्षा निजी प्रयास के रूप में ब्रज संग्रहालयों के निर्माण के पक्ष में हैं। उनकी आकांक्षा है कि ब्रजभूमि के प्रत्येक कार्यकर्ता का निवास स्थान एक छोटा-मोटा ब्रज संग्रहालय का रूप ही ग्रहण कर ले। उन्होंने मुझे लिखा, "आप अपने घर पर एक ब्रज-संग्रहालय की नींव डालें, तो अत्युत्तम हो। आपका भवन सभी ब्रजवासियों के लिए तीर्थ बन सकता है। यही बात आप श्री बालकृष्ण जी गुप्त से कह सकते हैं। जो भी सामग्री मेरे पास है उसकी नकल आपके संग्रहालय में रखनी ही चाहिए, यह कोई बहुत व्ययसाध्य कार्य भी नहीं है।

चित्रों का पूरा-पूरा संग्रह आपको रखना ही है। श्री जगन्नाथ 'सहगल' से मैंने फीरोजाबाद संग्रहालय की नींव डलवा दी है। सरकारी संग्रहालय में तो चोरी होती रहती है इसलिए मैं घरेलू संग्रहालय का प्रबल पक्षपाती बन गया हूँ।"

चतुर्वेदी जी नवीन मित्र बनाने के बड़े समर्थक हैं। उन्होंने इसी दृष्टि से मेरा अनेक साहित्यिक बन्धुओं से पत्र-व्यवहार द्वारा परिचय कराया। उनका विश्वास है कि इस प्रकार सहयोगात्मक कार्यकर्ताओं से ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण में

सुगमता होगी। उन्होंने लिखा, "सबसे अधिक आवश्यक काय है लोकसग्रह। सुप्रसिद्ध अग्रेजी समालोचक डा० जॉनसन ने कहा था

"Sir, I consider that day lost in which I do not make a new acquaintance'

अर्थात् श्रीमान, मैं उस दिन को व्यथ गया ही मानता हूँ जिसम मैं कोई नई जान-पहचान नही करता।' सो हम नवीन मित्र बनाते रहना है जो हमारे काय क पूरक हा।"

'यदि ब्रजभूमि की डाइरेक्टरी आप बना सकें तो वह बडे काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि से भी वह सफल होगी। ब्रज का सर्वांगीण रूप तो हमारे सामने आना ही चाहिए। युगधम का यही तकाजा है। ब्रजभूमि का हम पुनर्निर्माण करना है। इस रेगिस्तान मे जहाँ कहा भी हम हरियाली दीख पडे उसकी रक्षा करनी है फिर चाहे वह साहित्यिक हरियाली हा या कृषि सम्बन्धी। छुटभइया को प्रोत्साहन सबसे प्रथम मिलना चाहिए।

सम्पूण ब्रज का साहित्यिक तथा सास्कृतिक सर्वेक्षण हो जाना चाहिए। पर उसके साथ कृषि, व्यापार तथा उद्योग धन्धा को भी हमे नही भूलना है। जिस किसी क्षेत्र मे जो कुछ अच्छा काम हो रहा है उसकी कद्र होनी चाहिए।

यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तयार कर दी जाय तो भविष्य म यह बडे काम की चीज होगी। न जाने कितने व्यक्तिया की कीर्तिरक्षा उससे हो जायगी और कितनो का मार्ग प्रदशन होगा।" (ता० २४ १ ६६ का पत्र)

ब्रजमण्डल के जनपदीय सर्वेक्षण के लिए एक समिति तुरन्त स्थापित कीजिये।

ग्राम विभाग म डा० सत्येन्द्र
आधुनिक काव्य विभाग में सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी, डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी
कीर्तिरक्षा विभाग म सवश्री प्रभुदयाल मीतल जवाहरलाल चतुर्वेदी तथा मेरी (श्री बनारसीदास चतुर्वेदी) सेवाएँ भी आप ले सकते हैं।
वन, उपवन, स्वास्थ्य विभाग म आप (वृन्दावनदास)
अखाडे का सचित्र वृत्त आना ही चाहिए। औद्योगिक विभाग श्री बालकृष्ण गुप्त के अधीन रहे। यमुना जी तथा अन्य छोटी मोटी नदियो पर लेख रहने चाहिए आप इस सर्वेक्षण के मुख्य सचिव रह—उसकी चलती फिरती आत्मा के रूप म।" (ता० २१ ७ ६८ का पत्र)

ब्रजभूमि की सर्वांगीण उन्नति के लिए यह जरूरी है कि हम लोग कुछ भ्रमण करें। अब की बार फीरोजाबाद यात्रा के अवसर पर कोटला जरूर जाइए। वहाँ भाई बालकृष्ण जी का बढ़िया बगीचा है जिसके आम गतवर्ष २० हजार में बिके थे। भाई बालकृष्ण जी ने फीरोजाबाद में घर से एक मील दूर एक उपवन की नींव डाली है। उस पर वे पचास हजार व्यय करेंगे। स्नानागार भी उसमें होगा। उन्हें बधाई का पत्र तो भेज ही दीजिए।" (ता० २९-८-६६ का पत्र)

अपने जनपद से प्रेम करने के लिए यह अनिवार्यतः आवश्यक है कि हम उसकी प्रकृति से, पुष्पों से, नदी-नद, सरोवर, वृक्ष, वन, पशु पक्षी, द्रव्य साधन, खनिज पदार्थ और लोकवार्ता तथा सामाजिक जीवन इत्यादि से भली-भाँति परिचित हों। चतुर्वेदी जी अपने मित्रों को लिखे हुए अनेक पत्रों में तथा अपने लेखों में कुछ रमणीय स्थलों और उपयोगी संस्थाओं का बार-बार उल्लेख करते हैं और उनकी प्रशंसा करते नहीं अघाते। ये स्थल जिनको वे बहुधा तीर्थ कहकर पुकारते हैं उनके ब्रजभूमि के उस चित्र के अन्तर्गत आ जाते हैं जिसको उन्होंने अपने हृदय और मस्तिष्क में सजाकर रखा है। वे लिखते हैं

ब्रजभूमि में जहाँ जो भी अंकुर उग रहे हों, जिनमें आगे चलकर वृक्ष बनने की सम्भावना हो उन्हें पल्लवित करना हमारा कर्तव्य है। हमें ब्रज में नवीन तीर्थों का निर्माण करना है। यदि गोवर्द्धन में [illegible] सफलतापूर्वक हुआ है तो वह हमारे लिए केवल तीर्थ है और ब्रजसाहित्य मण्डल का भावी भवन भी कभी तीर्थ का रूप धारण कर सकता है। आचार्य ब्रह्मचारी स्वर्गीय जीवनदत्त जी का नरवर संस्कृत महाविद्यालय तो महान तीर्थ हो है। महामति शंकर का हरदुआगंज तीर्थ है। धौंधूपुर में सत्यनारायण कुटीर और जौंधरी में श्रीधर पाठक का स्मारक आज नहीं तो कल बन ही जायगा।

इनके अतिरिक्त गुरुकुल सिरसागंज, नागरी प्रचारिणी सभा आगरा, भारती भवन फीरोजाबाद, माथुर चतुर्वेद पुस्तकालय मैनपुरी, हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर आदि साहित्यिक संस्थाओं को चतुर्वेदी जी सदैव स्नेहमयी दृष्टि से देखते हैं और इनके लिए उनके पास सदैव प्रशंसा के चार शब्द रहते हैं। संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का कृषि ग्राम, श्रीराम शर्मा का नवजीवन ग्राम, छलेसर का बबूल वन, डा० प्रतापनारायण अग्रवाल (राजामण्डी) का इमली वाला बाग तथा श्री बालकृष्ण गुप्त का फाल्स का उपवन—ये तो चतुर्वेदी जी ब्रजभूमि के तीर्थ स्थान मानते हैं।

इन तीर्थों की झलक दिखाते हुए वह लिखते हैं हमने इन तीर्थों की एक अधूरी झलक ही यहाँ दिखलाई है—अधूरी इसलिए कि उसमें न तो नदी माताओं का उल्लेख हुआ है न सरोवरों का और न पहाड़ियों का। आशा है कि दूसरे ब्रजवासी भी अपने-अपने प्रिय स्थानों पर लिखेंगे।

इस जनपद में स्वस्थान प्रेम को विकसित करने की आवश्यकता है। यदि हम अपने-अपने स्थान को सुन्दर बना सकें तो हमारा जनपद अत्यन्त रमणीक बन सकता है। देश का भविष्य जनपदों के सर्वांगीण दृष्टि से रचनात्मक पुनर्निर्माण पर निर्भर है। ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।'

चतुर्वेदी जी जनपदीय आन्दोलन के नेता रहे हैं। उनका विश्वास है कि जनपदीय बोलियाँ अमर वाणियाँ हैं उनके आश्रय से हम अपना निरुक्त समृद्ध बना सकते हैं। वह स्वर्गीय डा० वासुदेवशरण अग्रवाल को इस आन्दोलन का प्रवर्तक मानते हैं तथा उनकी पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' को जनपदीय आन्दोलन की बाइबिल। उन्होंने लिखा, 'आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक पृथिवी-पुत्र' हमारी बाइबिल है और उसे साथ लेकर और उसके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करते हुए हमें अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है।

रक्त-हीनता के कारण पैरों में सूजन आ गई थी इसलिए कुछ दिनों के लिए टहलना बन्द हो गया था। परन्तु चतुर्वेदी जी पड़े-पड़े ब्रजभूमि का ही चिन्तन करते रहे। उन्होंने हमें लिखा, इस बीच में आप लोगों का चिन्तन करता रहा। इस बसंत ऋतु को ब्रजमण्डल के लिए चिरस्मरणीय बनाना है। बसंत पंचमी से रामनवमी तक का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम बना लेना चाहिए। केवल मथुरा में ही नहीं, फीरोजाबाद एटा, मैनपुरी इटावा अलीगढ़ इत्यादि में साहित्यिक उत्सव होने चाहिए। ये उत्सव कम से कम खर्च में हों। ज्यादा खर्च हम ब्रजवासी कर ही नहीं सकते

१ बसंत व्याख्यानमाला
२ आसपास के सुन्दर स्थानों में गोष्ठियाँ
३ छोटे छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन
४ हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों तथा स्मृति ग्रन्थों की तैयारी
५ स्थानीय लोगों का संगठन

इत्यादि विषयों पर विचार कीजिये। सबसे जरूरी चीज लोक-संग्रह है। अच्छे कार्य-कर्ताओं को जुटाना है। यजमानों का भी संग्रह करना है।' (दिनांक १७ १ ६८ का पत्र)

पोद्दार ग्रंथ के लिए के सम्पादकीय करने के पूर्व चतुर्वेदी जी आरम्भ की सफलता के प्रति आश्वस्त थे। यह उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का ही एक उदाहरण है। परन्तु व्रजभूमि के लिए मासिक भावों का उद्घाटन करते हुए उन्होंने लिखा था व्रजभूमि के लिए आप लोग प्रयत्नशील हैं इस आशाप्रद भावना के साथ ही मैं पदयात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो व्रजभूमि की सेवा में ही उसे बिताऊँगा। (ता० ८ ३ ६८ का पत्र)

चतुर्वेदी जी का आरम्भ पूर्णरूप से सफल हो गया। उनके साथी कार्यक्रम में निस्सन्देह व्रजभूमि के पुनर्निर्माण की ही प्राथमिकता प्राप्त है। सब नागरिकों में यही प्रार्थना है कि चतुर्वेदी जी चिरायु हों और इसी प्रकार व्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के प्रति मार्ग-दर्शन करते रहें। ●

(श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित)